Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167919

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

बिना परिश्रम धरती स्वयमेव धन उत्पन्न नहीं करती। इसी प्रकार बिना धरती (साधन) के परिश्रम मात्र धन उत्पन्न नहीं करता।

इस विषय पर एक अनुपम और रोचक उपन्यास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरती और धन

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

गुरुदत्त

Central Library
167919
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
167919

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110 005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-D

© ईशान दत्त

Central Library
162919

मूल्य : ₹ 300.00

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
2 बी. डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन : 23553624, 23551344; फैक्स : 23553624
email : indiabooks@rediffmail.com
hindisahityasadan@gmail.com
website : hindisahityasadan.com

संस्करण : 2016

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

सन् 1931 की बात है। लाहौर रेलवे स्टेशन पर थर्ड क्लास के वेटिंग रूम में एक प्रौढ़ावस्था की स्त्री और उसके दो लड़के, एक दरी में लपेटे, रस्सी में बँधे, बड़े-से बिस्तर पर बैठे, हाथ में रोटी लिये खा रहे थे। रोटी पर आम के अचार का एक-एक बड़ा टुकड़ा रखा था। स्त्री कुछ धीरे-धीरे चबा-चबाकर खा रही थी। वास्तव में वह अपने विचारों में लीन किसी अतीत स्मृति में खोई हुई थी। बड़ा लड़का पन्द्रह वर्ष की आयु का प्रतीत होता था। उसके अभी दाढ़ी मूँछें फूटी नहीं थीं। वह माँ के एक ओर बैठा जल्दी-जल्दी चबाकर रोटी खा रहा था। यह फकीरचन्द था। माँ के दूसरी ओर उसका दूसरा पुत्र, बिहारीलाल, ग्यारह वर्ष की आयु का, बैठा रोटी खा रहा था।

फकीरचन्द ने रोटी सबसे पहले समाप्त की और समीप रखे लोटे को ले, वेटिंग रूम के एक कोने में लगे नल से पानी लेने चला गया। नल के समीप पहुँच, हाथ का चुल्लू बना, उसने पानी पिया और लोटे को भली-भाँति धो, भर, अपनी माता तथा भाई के लिए पानी ले आया।

माँ ने अभी तक रोटी समाप्त नहीं की थी। इस पर फकीरचन्द ने कहा, "माँ, गाड़ी का समय हो रहा है और तुमने अभी तक रोटी समाप्त नहीं की? जल्दी करो न।"

माँ ने फकीरचन्द के मुख पर देखा और खाना बन्द कर दिया, "इसको उस कुत्ते के आगे डाल दो। खाई नहीं जाती।"

"क्यों?"

"कुछ नहीं बेटा! वह देखो, लालसा-भरी दृष्टि से, मुख से जीभ निकाले इधर ही देख रहा है। लो, इसे डाल दो।"

बिहारीलाल ने हाथ में पानी लिया। माँ ने भी हाथ का चुल्लू बना पी लिया और स्वयं उठ रोटी कुत्ते को डालने चल पड़ी। फकीरचन्द मुख देखता रह गया।

माँ ने कुत्ते के आगे रोटी फेंकी और वह उसको उठाकर एक कोने में ले गया और खाने लगा। माँ आकर पुनः बिस्तर पर बैठ गई। फकीरचन्द अभी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोटा लिये वहीं खड़ा था। उसने कुछ भर्त्सना के भाव में कहा, "माँ! इस प्रकार कब तक चलेगा। खाओगी नहीं तो बीमार पड़ जाओगी और फिर हमारा मन काम में कैसे लगेगा?"

"मैं बीमार नहीं पड़ूँगी बेटा!"

"पर तुमने रोटी क्यों नहीं खाई?"

माँ ने एक निःश्वास छोड़कर कहा, "तुम समझ नहीं सकोगे बेटा! आज से सत्रह वर्ष पूर्व की बात स्मरण हो आई है। तब तुम्हारे पिता मुझको एमिनाबाद से विवाह कर लाए थे और मुझको इसी स्थान पर बैठाकर ताँगा-टमटम का प्रबन्ध करने चले गए थे।

"मैं नव-वधुओं के से आभूषण और वस्त्र पहने हुई थी। तुम्हारे बाबा और तुम्हारे पिता के बड़े भाई तथा मेरी जेठानी और सास यहीं मेरे पास दरी बिछाकर बैठे थे। सास कह रही थीं कि बाजे का प्रबन्ध होना चाहिए। जेठ ने कहा, 'फजूल है। कौन बड़ा दहेज लेकर आई है, जो बाजे-गाजे से डोली ले जाएँ।'

"आज सत्रह वर्ष के पश्चात् इस नगर से ऐसे ही विदा हो रही हूँ। नहीं मालूम फिर कभी, यहाँ आने का अवसर मिलेगा अथवा नहीं।"

इतना कहते-कहते उस स्त्री की आँखों में आँसू भर आए। फकीरचन्द ने, माँ के समीप पुनः बिस्तर पर बैठते हुए कहा, "माँ! बीती बात को स्मरण करने से क्या लाभ? हमें आगे को देखना चाहिए। राह चलते पीछे को देखने लगे तो ठोकर खाकर गिर भी सकते हैं। माँ! यदि तुम इस प्रकार करने लगीं तो हम अभी साहस छोड़ बैठेंगे।"

माँ ने पुत्र की यह बात सुन, अपने आँचल से आँसू पोंछते हुए कहा, "बेटा! यह मन की दुर्बलता थी। तुम्हारे पिता का सौम्य मुख स्मरण हो आया था। वे देवता थे, अपने जीवन के अति कठिन समय में भी उनके माथे पर बल पड़ते नहीं देखा। अब वे नहीं हैं न। अच्छा, अब ऐसी दुर्बलता मन में नहीं आने दूँगी। पता करो न, गाड़ी कब आएगी।"

वेटिंग रूम में लगी घड़ी देख फकीरचन्द ने कहा, "मैं समझता हूँ कि अब प्लेटफार्म पर चलना चाहिए। दरवाजा तो खुल गया है।"

"पहले बाबू से तो पूछ लो। बेकार में सामान उठाकर आना-जाना ठीक नहीं।"

वेटिंग रूम के फाटक पर खड़े बाबू से फकीरचन्द ने पूछा, "बाबूजी! झाँसी की गाड़ी कब तक आने वाली है?"

"गाड़ी आने ही वाली है। प्लेटफार्म नम्बर तीन पर चले जाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाड़ी पेशावर से बम्बई जाती थी। इस औरत और इसके दो लड़कों को झाँसी जाना था। झाँसी के ढाई टिकट इन्होंने खरीदे हुए थे।

फकीरचन्द ने बिस्तर उठा कंधे पर रख लिया। बिहारी ने ट्रंक, जो छोटा-सा था, उठा लिया और माँ ने लोटे को कपड़े के थैले में रख, उसे हाथ में पकड़ लिया। सब प्लेटफार्म की ओर चल पड़े।

प्लेटफार्म पर पहुँचते ही गाड़ी आ गई। प्रायः सभी डिब्बे खचाखच भरे हुए थे। माँ और बेटे गाड़ी में चढ़ने का प्रयास कर रहे थे, परन्तु कहीं स्थान नहीं मिल रहा था। सवारियाँ जबरदस्ती गाड़ी में चढ़ने के लिए भीतर बैठी सवारियों से लड़ रही थीं।

बिस्तर उठाए हुए फकीरचन्द और उसके साथ-साथ हाथ में ट्रंक लटकाए हुए बिहारीलाल तथा उनके पीछे-पीछे हाथ में थैला लिये हुए उनकी माँ, गाड़ी को एक सिरे से दूसरे सिरे तक देख गए। किसी डिब्बे में पाँव रखने तक की भी जगह नहीं थी। इंजिन के पास फकीरचन्द को एक छोटा-सा डिब्बा दिखाई दिया। वह लगभग खाली था। उसमें केवल चार सवारियाँ बैठी थीं। बिहारीलाल ने उसको देखा तो कह दिया, "भापा! इसमें जगह है।"

फकीरचन्द ने डिब्बे को देखा। थर्ड क्लास का ही था और उस पर किसी प्रकार का रिजर्वेशन का लेबल लगा हुआ नहीं था। फकीरचन्द को विस्मय हुआ कि यह डिब्बा खाली क्यों रह गया है, जबकि और डिब्बे लदे-फदे हैं। उसने माँ से कहा, "माँ! दरवाजा खोलो तो।"

बिस्तर उठाए होने के कारण उसके दोनों हाथ रुके हुए थे। बिहारीलाल ने दरवाजा खोलने का यत्न किया तो पता चला कि उसको चाबी लगी है। भीतर बैठे एक आदमी ने आवाज दे दी, "ताली लगी है।"

"क्यों?" बिहारीलाल ने पूछा।

भीतर बैठे आदमी ने मुख मोड़ लिया। एक लड़का खिड़की के पास बैठा था। उसने कह दिया, "डिब्बा रिजर्व है।"

इसपर फकीरचन्द ने डिब्बे को पुनः बाहर से देखा। कुछ लिखा नहीं था। उसको सन्देह हो गया था कि यह झूठ बोल रहा है। उसने एक क्षण मन में विचार किया और फिर खिड़की में से बिस्तर भीतर फेंकने का यत्न किया। बिस्तर बड़ा था, इस कारण खिड़की में से भीतर जा नहीं सका। इसपर बिहारीलाल ने अपना छोटा-सा ट्रंक खिड़की में से भीतर कर, माँ को कहा, "माँ! तुम लपककर चढ़ जाओ।"

भीतर बैठे लड़के ने ट्रंक उठाकर बाहर फेंकने का यत्न किया। इसपर फकीरचन्द ने बिस्तर बाहर प्लेटफार्म पर रख दिया और लपककर खिड़की में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीतर जा पहुँचा। उसने लड़के को एक ओर धकेलकर ट्रंक को खाली स्थान पर रख दिया और बिहारीलाल को हाथ पकड़कर भीतर कर लिया। इसके बाद उसने माँ को कहा, "माँ! बिस्तर खोल दो और एक-एक कर सामान पकड़ा दो।"

माँ समझ गई कि बिस्तर खिड़की में से भीतर नहीं जा सकेगा। इस कारण उसने बिस्तर प्लेटफार्म पर ही खोल दिया।

"ओ लड़के!" भीतर बैठे आदमी ने फकीरचन्द को कहा, "बाबू अभी आकर उतार देगा। क्यों सामान खोल रहे हो?"

फकीरचन्द ने उस आदमी को घूरकर देखा तो वह चुप कर गया। फकीरचन्द ने कहा, "जाओ बाबू को बुला लाओ।"

"वह तो करूँगा ही।"

भीतर वालों के साथ एक स्त्री भी थी। उसने अपने आदमी को कहा, "फजूल का झगड़ा करते हो, आने दो न?"

इतने में माँ ने बिस्तर खोल दिया। वह सारा सामान उठा-उठाकर बिहारीलाल को पकड़ाने लग गई। बिहारीलाल उसको पकड़-पकड़कर भीतर, ऊपर तख्ते पर रखने लग गया। इस पर भीतर बैठे आदमी ने कहा, "देखो, हमारा और अपना सामान मिला न देना।"

फकीरचन्द की हँसी निकल गई। वह आदमी विस्मय से फकीरचन्द का मुख देखने लगा। फकीरचन्द ने उसकी अवहेलना करते हुए, सामान भीतर रख लिया और माँ का हाथ पकड़कर, उसको भीतर चढ़ा लिया। इस सब में पाँच मिनट लग गए। तब प्लेटफार्म की सवारियाँ गाड़ी में भर गई थीं। कोई बिरला अभी इधर-उधर भटक रहा था। कोई-कोई इस डिब्बे के पास भी आता था, परन्तु इसकी चाबी लगी देख लौट जाता था।

अब डिब्बे में सात प्राणी हो गए थे। यद्यपि वहाँ भीड़ नहीं थी, इस पर भी डिब्बा छोटा होने के कारण भरा हुआ-सा लगता था।

लाहौर स्टेशन पर गाड़ी आधा घण्टा खड़ी रही। जब गाड़ी चली तो भीतर बैठे आदमी ने फकीरचन्द का नाम-धाम, गन्तव्य स्थान और काम पूछकर परिचय प्राप्त करना आरम्भ कर दिया।

"कहाँ जा रहे हो जी?"

फकीरचन्द 'जी' सुनकर मुस्कराया और बोला, "झाँसी।"

"ओह, लम्बा सफर है!"

"जी।"

"लाहौर के रहने वाले हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रहने वाले थे।"

"क्या मतलब?"

"आज से लाहौर छोड़ रहे हैं। इरादा है कि लौटकर नहीं आएँगे।"

"ओह! क्यों छोड़ रहे हो?"

"जीविकोपार्जन के लिए।"

"तो कहीं नौकरी लग गई है।"

इस समय भीतर बैठी वह औरत भी फकीरचन्द की माँ से बातें करने लगी थी। वह पूछ रही थी, "क्या नाम है बहिन जी, आपका?"

"रामरखी। पर बहिन जी!" उसने मुस्कराते हुए कहा, "आपने व्यर्थ में हमको कष्ट दिया है। देखो न, गाड़ी में चढ़ते समय घुटने छिल गए हैं।" इतना कहकर उसने सलवार उठाकर घुटने दिखा दिए। मांस छिल गया था और रक्त दिखाई दे रहा था।

इस पर औरत ने कहा, "हमारे पास चोट पर लगाने का तेल है। रामू!" उसने उस लड़के को, जो कह रहा था कि डिब्बा रिजर्व है, सम्बोधन कर कहा, "जरा मेरी अटैचीकेस में से लाल तेल की शीशी निकालना।"

इस समय तक बिहारीलाल ने अपने बड़े बिस्तर का सामान समेटकर दो बिस्तर कर दिए थे। अब उसने अपने बड़े भाई को कहा, "भापा! अब ये खिड़की में से आसानी से निकल सकेंगे।"

फकीरचन्द हँस पड़ा और बोला, "क्या मार्ग में सब स्थानों पर ऐसा ही झगड़ा होगा?"

"हाँ, हो सकता है। मैं समझता हूँ कि हमको सदा तैयार रहना चाहिए।" इस पर दूसरे आदमी ने कह दिया, "लड़का ठीक कहता है। जीवन में बहुत मिलेंगे, जो बिना झगड़े के स्थान नहीं देंगे। प्रत्येक परिस्थिति के लिए सदा तैयार रहना चाहिए। क्या नाम है लड़के?"

उत्तर फकीरचन्द ने दिया, "मेरा छोटा भाई है बिहारीलाल।"

"देखो, मेरा नाम है करोड़ीमल। माता-पिता अति निर्धन थे। अपना मन बहलाने के लिए उन्होंने मेरा नाम करोड़ीमल रख दिया और अब वास्तव में मैं करोड़ीमल हूँ। देशभर में पाँच कोठियाँ हैं और उन पाँचों में लाखों रुपयों का सामान भरा रहता है। माता-पिता से विनोद में दिए हुए नाम को मैंने पुरुषार्थ से सार्थक कर दिया है।"

फकीरचन्द इस परिचय से करोड़ीमल और वास्तव में करोड़पति को विस्मय में देखने लगा। करोड़ीमल ने उसके विस्मय के कारण का अनुमान लगाते हुए कहा, "तुमको विश्वास नहीं आता न?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी नहीं! आप थर्ड क्लास में यात्रा कर रहे हैं और फिर भी आपका हमारे प्रति व्यवहार देखकर तो ऐसा प्रतीत होता है कि...।" फकीरचन्द कहता-कहता रुक गया है।

इसपर करोड़ीमल हँस पड़ा और फकीरचन्द का वाक्य पूर्ण करते हुआ बोला, "कोई कंगला हूँ। ठीक है न?"

"मैं तो आपको ऐसा नहीं कह सकता। मैं इतना जानता हूँ कि बड़े आदमी उदार हुआ करते हैं।"

"ठीक है, ठीक है। तुम्हारे स्कूल मास्टर ने ऐसा पढ़ाया है न? परन्तु उसने एक बात नहीं पढ़ाई। अधिकारी के साथ दिखाई उदारता ही फल लाती है। अनधिकारी के साथ ऐसा व्यवहार तो पाप हो जाता है। जब मुझको पता चला कि तुम लोग अधिकारी हो, तो मैं चुप कर गया और मैंने तुमको भीतर आने और बैठने दिया।"

अब हँसने की बारी फकीरचन्द की थी। इसपर भी उसने कुछ कहा नहीं। करोड़ीमल ने कहा, "देखो, क्या नाम है तुम्हारा?"

"फकीरचन्द।"

"देखो, फकीरचन्द। विश्वास करो कि मैं करोड़पति हूँ। इसपर भी मैं अपना धन व्यर्थ नहीं गँवाता। यदि मैं थर्ड क्लास में सवार होकर बम्बई पहुँच सकता हूँ, तो सैकण्ड और फर्स्ट क्लास में चढ़ना व्यर्थ समझता हूँ। यदि मैं सारे डिब्बे में बैठ सकता हूँ, तो मैं किसी दूसरे को डिब्बे में आने नहीं देता। जब पैसा कमाने का कोई भी उपाय सूझता हो, तो मैं उस उपाय को निस्संकोच प्रयोग में लाता हूँ। जब मैं देखता हूँ कि पैसा खर्च करने के लिए विवश हूँ तो फिर खर्च भी कर देता हूँ।"

फकीरचन्द इस स्वनिर्मित धनी की जीवन-मीमांसा का दर्शन कर विस्मय कर रहा था। उसकी शिक्षा इससे भिन्न थी।

: 2 :

फकीरचन्द के पिता का नाम धनराज था। वह म्युनिसिपल कमेटी लाहौर में चुंगी का मुंशी था। उसका देहान्त तपेदिक से सन् 1924 में हो गया था। तब वह चालीस रुपया वेतन पाता था।

सन् 1914 में, जब उसका विवाह हुआ था, धनराज केवल तीस रुपये ही वेतन पाता था। इसपर भी उसके विवाह का प्रबन्ध हो गया। जर्मन और अंग्रेजों के प्रथम युद्ध से पहिले पंजाब में जीवन अति सुलभ था। उस समय तीस रुपये वेतन एक जागीर समझी जाती थी। अतः जब धनराज का विवाह हुआ, तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत प्रसन्न था। कूचा कट्ठा सहगल की गली में, एक मकान, जिसमें उसका पिता और बड़ा भाई रहते थे, उसको भी पत्नी के साथ रहने के लिए एक तंग, बिना खिड़की वाला कमरा मिल गया।

जर्मनी से युद्ध हुआ तो वस्तुएँ महँगी होनी आरम्भ हो गईं। लट्ठा, जो पहले तीन और चार आने गज था, 1916 में आठ और दस आने गज हो गया। गेहूँ, जो पहिले ढाई रुपये मन था, अब छ: और सात रुपये मन बिकने लगा। दूध, जो एक तथा डेढ़ आने सेर था, अब पाँच और छ: आना सेर हो गया।

1916 में जब फकीरचन्द का जन्म हुआ था धनराज को निर्वाह में कठिनाई अनुभव होने लगी थी।

यह काल था, जब जनता की आवाज अधिकारियों तक पहुँच नहीं सकती थी और ईमानदार, कम वेतनधारियों की कठिनाइयों का ज्ञान अंग्रेज अफसरों को नहीं हो सकता था। अत: उस युद्धकाल में न तो महँगाई भत्ते का कोई प्रबन्ध किया गया और न ही किसी प्रकार से वेतन में वृद्धि का आयोजन हुआ।

परिणाम यह हुआ कि मनुष्य-प्रकृति ने, जो विकट कठिनाइयों में भी अपना मार्ग निकाल लेती है, अपना काम आरम्भ किया। प्राय: कर्मचारी जो किसी भी प्रकार के जन-सम्पर्क कार्य में काम करते थे, अपनी आय की वृद्धि करने का यत्न करने लगे। चुंगी एकत्रित करने वाले बाबुओं के लिए तो ऊपर की आय करने का सहज मार्ग निकल आया। पाँच रुपये के चुंगी के माल की एक रुपये की रसीद काटकर और दो रुपये लेकर माल छोड़ा जाने लगा।

इन दिनों धनराज के सामने भी यह प्रलोभन आया। महीने के अन्तिम दिन थे। वेतन समाप्त हो चुका था और बच्चे के लिए दूध पिलाने की बोतल चाहिए थी, जो सात आने की आती थी। धनराज की जेब में पैसे नहीं थे। रामरखी ने, यह धनराज की स्त्री का नाम था, अपने पति से कहा, ''बोतल रात टूट गई है, ले आइएगा। बच्चा चम्मच से दूध नहीं पीता।''

धनराज बिना उत्तर दिए, गम्भीर विचार में मग्न काम पर जा पहुँचा। उन दिनों उसकी शेरां वाले दरवाजे के बाहर वाली चुंगी पर नियुक्ति थी। जब वह काम पर पहुँचा तो पहले बाबू ने, जिसकी ड्यूटी समाप्त हो गई थी, धनराज को कहा, ''यह पाँच गाड़ी माल है। दो की चुंगी मैं काट चुका हूँ। शेष तीन की तुम ले लेना। देखो, एक-एक रुपये की रसीद काट देना और वे दो-दो रुपये दे जाएँगे।''

''क्यों?''

''इसलिए कि माल बीस मन है और चुंगी बनती है पाँच रुपये प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाड़ी। तीन रुपये उसको बच जाएँगे और एक रुपया तुमको।''

धनराज समझा तो घबरा उठा। जाने वाले बाबू ने कहा, ''समझ गए, धनराज?''

''समझ गया।'' धनराज ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा। जब वह चला गया तो चपरासी, जिसको मालिक ने चार आना प्रति गाड़ी दे रखे थे, खिड़की पर आया और कहने लगा, ''बाबू जी! तीन गाड़ियों की रसीद काट दो। माल साढ़े छः मन, चुंगी एक रुपया।''

इतना कह चपरासी ने खिड़की में से छः रुपये आगे कर दिए। धनराज ने ये रुपये पकड़े तो उसका हाथ काँप उठा। वह समझा कि यह पाप कर्म है। इस समय उसको बच्चे के लिए बोतल ले जाने का स्मरण हो आया। उसके मन में द्वन्द्व चल पड़ा। एक ओर धर्म संकट था, वह सरकार की ओर से चुंगी एकत्रित करने के लिए नियुक्त था, चुंगी लगभग पन्द्रह रुपये बनती थी। दूसरी ओर उसको अपने बच्चे का बिलख-बिलखकर रोना दिखाई देता था। उसके हाथ में छः रुपये चमचमाते हुए रखे थे। इनमें से, तीन उसकी जेब में जाने वाले थे और उन तीन रुपयों से न केवल दूध की बोतल खरीदी जा सकती है, प्रत्युत उसकी पत्नी के लिए धोती भी ली जा सकती है। साथ ही वह विचार कर रहा था कि इस प्रकार एक नियत आय बन सकती है, जिससे कुछ ही महीनों में वह पैसे वाला हो सकता है और किसी खुली हवादार जगह पर मकान लेकर जीवन को सुखमय कर सकता है।

उसने रुपये वाले हाथ की मुट्ठी बन्द कर ली। इस समय उसके हृदयस्थल पर एक टीस उठी। उसने मुट्ठी खोल दी। उसके मुख की मुद्रा दृढ़ बन गई और उसने रुपयों को काउण्टर पर रखकर चपरासी को कहा, ''गाड़ियों को लाकर तुलाओ।''

चपरासी ने मुस्कराते हुए धनराज की ओर देखकर कहा, ''बाबूजी! यह....।'' उसने रुपयों की ओर संकेत किया।

धनराज के मन में फिर विचार आया, 'कौन देखता है!' परन्तु अगले ही क्षण उसने कुर्सी से उठते हुए कहा, ''गाड़ी को काँटे पर लाओ। मैं बाहर आ रहा हूँ।''

उसकी अन्तरात्मा की पुकार प्रबल सिद्ध हुई और वह गुमटी से बाहर चला आया। गाड़ियाँ तोली गईं और सत्रह रुपये आठ आने चुंगी वसूल कर ली गई। पूर्ण रकम की रसीद बना दी गई।

इसी प्रकार दिनभर चलता रहा। सायंकाल वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने बच्चे के दूध पिलाने की बोतल माँगी। पत्नी का उदास मुख देख उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्साह भंग हो गया। वह अपनी ईमानदारी और धर्मपरायणता पर अति संतुष्ट मन घर आया था, परन्तु जब उसकी पत्नी ने कहा कि चम्मच से दूध देने पर बच्चा सब निकाल देता है, तो उसका मन बुझ गया। उसने आँखें नीची कर कहा, ''जेब में पैसे नहीं थे।''

''कब तक ला सकेंगे?''

''अब तो पाँच तारीख को वेतन मिलने पर ही ला सकूँगा।''

''तब तक यह जीता रहेगा क्या? कल से इसने एक घूँट नहीं पिया।''

धनराज की आँखें डबडबा आईं। उसकी आँखों के सामने वह चमचमाते तीन रुपये चक्कर काटने लगे। उसका मन भीतर-ही-भीतर बैठता जा रहा था।

रामरखी ने, जब अपने पति की आँखों में आँसू देखे, तो चिन्ता प्रकट करते हुए कहा, ''क्या हुआ है?''

धनराज ने आँखें पोंछते हुए कहा, ''मैं ला तो सकता था, परन्तु इसके लिए पाप करना पड़ता।'' इसपर उसने प्रातःकाल की घटना सुना दी। पूर्ण वृत्तांत सुनाकर उसने कहा, ''मेरे मन ने पाप करना स्वीकार नहीं किया। अब अपनी विवशता को देख चित्त अधीर हो उठा है। मैं समझता हूँ कि तुम कोसती होगी कि किन भूखे-नंगों के घर में आई हो, जो बच्चे के लिए आठ आने तक भी खर्च नहीं कर सकते।''

''छोड़िए इस चर्चा को। मैं बच्चे को चम्मच से दूध पीना सिखा दूँगी। आपने चोरी नहीं की तो अच्छा ही किया है। मुझे इसका गर्व है।''

बात चल गई। जहाँ उसके साथी सैकड़ों रुपये मासिक की आय करने लगे, वहाँ वह केवल चालीस रुपये महीने में निर्वाह करता रहा, महँगाई बढ़ती गई। खाना-पीना कम होता गया और धनराज के मन में एक बोझा-सा बना रहा कि वह अपनी पत्नी और बच्चे के प्रति अपना उत्तरदायित्व नहीं निभा रहा।

जब सन् 1920 में धनराज का दूसरा लड़का बिहारीलाल हुआ तो वह काम अधिक और खुराक कम, गंदी गली और तंग मकान में रहने के कारण बीमार पड़ गया। उसको ज्वर हुआ तो पहिले निदान किया गया कि न्योमोनिया है, जब ज्वर कुछ लम्बा चला तो कहा गया कि टाईफॉयड है। तत्पश्चात् यह निश्चय हो गया कि तपेदिक है।

दो वर्ष तक धनराज बीमार रहा। पहले पूरे वेतन पर छुट्टी मिली, फिर आधे वेतन पर, तदनन्तर बिना वेतन के छुट्टी पर रहा। रामरखी ने अपने सब आभूषण बेचकर चिकित्सा करवाई, परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ। जब फकीरचन्द छः वर्ष का था तो उसके पिता का देहान्त हो गया।

इस समय तक घर की आर्थिक अवस्था इतनी दुर्बल हो चुकी थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्त्येष्टि संस्कार करने के लिए भी उधार लेना पड़ा। धनराज का पिता स्वयं कठिनाई से निर्वाह करता था। इस कारण पतोहू की कुछ भी सहायता नहीं कर सका।

चौथे के दिन धनराज के सम्बन्धियों और मित्रों ने, रिवाज के अनुसार, रामरखी को रुपये दिए। फकीरचन्द तथा बिहारीलाल के कपड़े दिए। सब मिला-जुलाकर ढाई सौ रुपया और कुछ कपड़े एकत्रित हो गए। इसमें से अन्त्येष्टि संस्कार पर उधार लिये तीस रुपये वापस कर दिए गए। शेष को लेकर फकीरचन्द की माँ विचार करने लगी कि इतनी-सी पूँजी से वह अपना लम्बा जीवन तथा बच्चों का पालन-पोषण कैसे कर सकेगी।

क्रिया-कर्म हो चुकने पर उसकी सास और जेठानी ने पूछा, "क्यों रामरखी! तुम्हें तो अभी एक वर्ष तक शोक में बैठना है न?"

रामरखी तो अपनी विकट परिस्थिति पर पहिले ही विचार कर रही थी। लाहौर की रिवाज के अनुसार उसको एक वर्ष तक अपने मकान के नीचे के कमरे में, नित्य प्रातःकाल से सायंकाल तक शोक-मुद्रा में बैठना चाहिए। उसको मैले कपड़े पहिन शोक प्रकट करने आई स्त्रियों के साथ बैठकर रोना और शोक मनाना चाहिए। यदि कपड़े मैले न हों तो चादर और कुर्ते को स्लेटी रंग से मटियाला कर लेना चाहिए।

वह विचार करती थी कि यह सब कुछ किया जा सकता है, परन्तु पालन-पोषण का क्या होगा? क्या इस प्रकार वर्षभर बैठने से उनकी रोटी इत्यादि का प्रबन्ध हो जायगा? मन में उठ रहे इस प्रश्न को, उसने अपनी सास और जेठानी के सामने रख दिया। उसने कहा, "माता जी! फकीरचन्द के पिता के देहान्त का शोक मुझको कितना है यह कहने की बात नहीं। मैं इस प्रकार बैठूँगी, तब शोक का अनुमान लग सकता है, ऐसा मैं नहीं मानती। साथ ही मेरे सामने तो समस्या यह है कि अब जीवन कटेगा कैसे? यदि ये बच्चे न होते तो मैं आज ही रावी में डूबकर शरीर त्याग देती; परन्तु ये हैं। ये उनकी यादगार हैं। इनको पढ़ा-लिखाकर योग्य बनाना भी तो एक काम है। मैं यही विचार कर रही हूँ कि यह कैसे करूँगी। वर्षभर तक शोक में बैठे रहने से तो यह काम हो नहीं सकेगा।"

"तो क्या करोगी? तुम नौकरी तो कर नहीं सकतीं। यदि करोगी तो ससुर और जेठ की नाक कटवाओगी।"

"मैं क्या करूँगी, अभी नहीं जानती। जब कोई बात नाक कटाने की करूँगी, तो मना कर दीजिएगा। इतना तो स्पष्ट ही है कि मैं इस प्रकार बैठी-बैठी अपने बच्चों का जीवन व्यर्थ नहीं गँवा सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"घर पर कुछ पैसा-टका जमा नहीं है क्या?"

"एक फूटी कौड़ी नहीं है। सब कुछ, यहाँ तक कि अपने हाथ की चूड़ियाँ तक, उनकी चिकित्सा में व्यय कर चुकी हूँ।"

"और यह, जो बुरे दिन का रुपया आया है?"

"सब ढाई सौ रुपया था। उसमें से तीस रुपये संस्कार के दिन मोहन की माँ से उधार लिये थे, सो दे दिए हैं। शेष दो सौ बीस रुपये रखे हैं। उनसे कब तक जिया जा सकता है?"

रामरखी की सास को कोई उत्तर नहीं सूझा। इस कारण वह चुप रही और अगले दिन से रामरखी ने नीचे बैठना बन्द कर दिया। उसने मन में कई योजनाएँ बनाईं परन्तु सब किसी-न-किसी कारण से अव्यावहारिक मान छोड़ दीं।

उसने मोहन की माँ से राय की। मोहन की माँ ने मोहन के पिता से पूछा और मोहन के पिता ने सिंगर की सीने वाली मशीनों के एजेण्ट से बात की। उस सब परामर्श का परिणाम यह निकला कि धनराज के देहान्त के एक मास के भीतर, एक सौ बीस रुपये की सिंगर की सीने की मशीन और बीस रुपये का तख्ता, कैंची, गुनिया इत्यादि रामरखी ने मोल ले लिया। साथ ही उस एजेण्ट ने कपड़े की कटाई की कुछ बातें सिखाने के लिए एक औरत रामरखी के पास दस रुपये महीने पर भेज दी।

मोहन की माँ ने काम ले देने में सहायता की, तो रामरखी का काम चलने लगा। आठ-दस आने का काम नित्य निकलने लगा। मोहन के पिता ने एक दर्जी से, जो गली के बाहर बैठता था, सिलाई का काम ले देने का प्रबन्ध कर दिया।

रामरखी ने फकीरचन्द को स्कूल में भर्ती करा दिया। धीरे-धीरे रामरखी की योग्यता बढ़ने लगी और मुहल्ले के बच्चों के कपड़े सीने का काम उसको मिलने लगा। इस प्रकार फकीरचन्द का पालन-पोषण और पढ़ाई होने लगी।

रामरखी स्वयं तो केवल तीसरी श्रेणी तक पढ़ी-लिखी थी, इस पर भी बाल्यकाल से ही वह 'राम द्वारे' कथा सुनने जाया करती थी। इससे वह अपने बच्चों को चरित्र सम्बन्धी शिक्षा तो दे ही सकती थी।

सत्य बोलना चाहिए; अपनी भूल पता लगने पर स्वीकार कर लेनी चाहिए; पराई वस्तु नहीं लेनी चाहिए; मेहनत और ईमानदारी से परमात्मा प्रसन्न होता है; इस प्रकार की शिक्षा वह फकीरचन्द और बिहारीलाल को देती रहती थी।

समय व्यतीत होते देर नहीं लगती, विशेष रूप में जब एक व्यक्ति किसी उद्देश्य की पूर्ति में संलग्न हो। फकीरचन्द तीसरी श्रेणी में हुआ तो बिहारीलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भी स्कूल में भर्ती करा दिया गया। इस समय तक पुनः वस्तुएँ सस्ती होने लगी थीं और कम आय वालों का निर्वाह ठीक ढंग से होने लगा था। रामरखी दो-ढाई रुपये का काम नित्य करने लगी और घर का खर्चा निकाल उसके पास रुपया-आठ आने बचने लगा था।

यह सन् '26-'27 के दिन थे। उसने अपना गली वाला अंधेरा मकान छोड़कर ग्वाल मंडी में एक खुले मकान का एक भाग ले लिया था। वह अपनी गली में आती थी और परिचितों के घर से काम ले जाती थी।

जब से उसने कपड़े सीने का काम आरम्भ किया था, उसकी सास और जेठानी ने उसका बहिष्कार कर रखा था। किन्तु इसकी रामरखी को चिन्ता नहीं थी।

जब उसने गली का मकान छोड़ा और ग्वाल मंडी में जाकर रहने लगी, तो बहिष्कार के साथ-साथ निन्दा भी होने लगी। इसका भी रामरखी पर कुछ प्रभाव नहीं हुआ। एक दिन वह गली में सिले हुए कपड़े देने आई तो एक पड़ोसिन ने उसको घर पर बुलाकर कहा, "क्यों रामो! तुमने नया पति कर लिया है?"

"नहीं तो माँ! किसने कहा है तुम को?"

"किसी ने भी सही; तुम अपनी सास का घर छोड़कर क्यों चली गई हो?"

"उस घर में अँधेरा और गन्दगी थी। फकीर के पिता इसी कारण बीमार हुए थे और अब फकीर भी बीमार रहने लगा था। दूध का जला छाछ को भी फूँक-फूँककर पीता है। मुझको डर लगने लगा था।"

"तो वहाँ कोई आदमी तुम्हारे पास रहता है?"

"नहीं, कोई नहीं रहता।"

"तभी तो बदनाम हो रही हो।"

"पर मैंने अपनी सास और श्वसुर को चलने के लिए कहा था। वे माने नहीं। अब और तो मेरा कोई है नहीं, क्या करूँ?"

पड़ोसिन को कोई उत्तर नहीं सूझ पड़ा। उसने केवल इतना कहा, "रामो सावधानी से रहना। बदनाम हो गई तो न घर की रहोगी, न घाट की।"

: 3 :

फकीरचन्द को उसकी माँ ने उसके पिता की पूर्ण कथा सुना रखी थी। अतः जब वह विचार करने योग्य हुआ तो वह इस निर्धनता के पंजे से निकलने के विषय में विचार करने लगा। कभी माँ को वह रात-रात-भर कपड़े सीते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखता तो बहुत दुःखी होता। उससे कभी-कभी पूछ भी लेता, ''माँ! क्या हम कभी अमीर नहीं बन सकते?''

''बन सकते हैं, बेटा!''

''कैसे माँ?''

''मैं सब बात तो जानती नहीं। इतना है कि तुम पढ़-लिखकर होशियार हो जाओगे तो कहीं अच्छी नौकरी पर लग जाओगे। तब हमारी निर्धनता मिट जाएगी।''

''मैं दसवीं पास कर लूँगा, तो तीस रुपये की नौकरी मिल जायगी। इससे अधिक तो तुम ही कमा लेती हो, माँ!''

''पर पढ़ने-लिखने से उन्नति करने का ढंग आ जाता है इस कारण पहले मन लगाकर पढ़ो। पीछे अपने-आप रुपया आने लगेगा।''

वह मन लगाकर पढ़ने तो लगा, परन्तु उसको अपनी माँ द्वारा किया गया स्थिति का विश्लेषण संतोषजनक प्रतीत नहीं हुआ। उसका एक गणित का अध्यापक था पं० जयगोपाल। फकीरचन्द गणित में बहुत ही योग्य था। इसी कारण गणित का अध्यापक उससे बहुत प्रेम करता था। गणित की परीक्षाओं में उसको शत-प्रतिशत अंक मिला करते थे और मास्टर उससे बहुत आशा रखता था।

एक दिन वह अपना बस्ता कंधे पर लटकाए हुए, घर को जा रहा था। गणित का मास्टर भी उधर ही जा रहा था। वह उसके साथ-साथ हुआ तो फकीरचन्द से पूछने लगा, ''कहाँ रहते हो?''

''जी! ग्वाल मंडी, अमृतधारा स्ट्रीट में।''

''तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं?''

''पिता?....जी....जी वे नहीं हैं।''

''ओह! कब देहान्त हुआ है उनका?''

''आठ वर्ष से ऊपर हो चुके हैं?''

''तो किसके पास रहते हो?''

''अपनी माँ के पास। वे मशीन पर कपड़े सी कर हमारा पालन-पोषण करती हैं।''

''तुम्हारी फीस तो मुआफ नहीं?''

''जी नहीं। मैंने माँ से कहा था कि यदि मैं हैडमास्टर जी को कहूँ तो फीस मुआफ हो जायगी। इस पर माँ ने कहा था, 'बेटा भीख माँग कर जीना तो कुछ अच्छी बात नहीं। मैं तुम्हारी फीस दे सकती हूँ। तुमको चिन्ता नहीं करनी चाहिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तुम्हारी माँ के पास बहुत रुपया है क्या?''

''मैं नहीं जानता, मास्टर जी! इसपर भी वे नित्य रात को बारह-एक बजे तक काम करती रहती हैं।''

''तब तो तुम्हें अपनी और अपने भाई की फीस मुआफ करवा लेनी चाहिए।''

''हम दोनों भाइयों की फीस पाँच रुपये आठ आने ही तो होती है। इससे क्या होगा? मैं तो यह विचार करता हूँ कि कैसे अमीर हो जाऊँ, जिसमें बीसियों निर्धन लड़कों की फीस दे सकूँ।''

''बहुत अच्छे विचार हैं, फकीरचन्द! परन्तु विचारों को कार्य में लाने में कठिनाई होती है। इस कठिनाई को दूर करने का ढंग सीखना चाहिए।''

''क्या ढंग है मास्टर जी?''

मास्टर जयगोपाल कुछ देर तक चुपचाप चलता गया। फकीरचन्द अपने प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा में साथ-साथ चलते हुए मास्टर जी का मुख देख रहा था। एकाएक मास्टर ने फकीरचन्द की ओर देखा और पूछा, ''तुम्हारी माँ कपड़े हाथ से सीती है अथवा मशीन से?''

''मशीन से।''

''हाथ से क्यों नहीं सीतीं?''

''हाथ से एक कमीज पाँच घण्टे में सी जाती है और मशीन से एक-डेढ़ घण्टे में। हाथ से वे दिनभर में दो कमीजों से अधिक नहीं सी सकतीं और मशीन से वे दिनभर में छः कमीजें सी देती हैं।''

''बस यही गुर है अमीर होने का। मशीन मनुष्य की मेहनत को कई गुणा अधिक फलदायक बना देती है। परन्तु मशीन में रुपये लगते हैं।''

''यदि किसी के पास रुपये हों इसपर भी वह मशीन न खरीद हाथ से सीने का हठ करे, तो उसको लाभ नहीं हो सकता। मेरे कहने का मतलब यह है कि रुपया आवश्यक है, परन्तु रुपये का लाभ तब ही हो सकता है, जब उससे मशीन खरीदी जाय।

''देखो, यदि तुम्हारी माँ कुछ रुपया और जमा कर पाँवों से चलने वाली मशीन ले ले तो इससे उसके परिश्रम का फल और भी अधिक हो जायगा। तुम्हारी माँ उतनी ही रोटी खायगी, जितनी वह अब खाती है। परन्तु मशीन बदलने से उसकी आय बढ़ जायगी।

''इसको कहते हैं रुपये को पूँजी का रूप देना। जो व्यक्ति रुपये को पूँजी का रूप दे सकता है, वह धनी हो सकता है। रुपये को पूँजी का रूप देने के लिए मशीन खरीदनी ही चाहिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मास्टर जी! मशीन चलाने की भी तो योग्यता होनी चाहिए?"

"हाँ; पहिले कोई काम सीखो। फिर उस काम में रुपया ऐसे ढंग से लगाओ, जिससे परिश्रम कई गुणा होकर फल दे। तब वह रुपया पूँजी कहलायगा। पूँजी का रूप, मशीन, भूमि अथवा मनुष्यों की मजदूरी भी हो सकता है।

"सो फकीरचन्द! कोई ऐसा काम सीखो, जिसमें तुमको इन तीनों वस्तुओं का अथवा तीन में से दो अथवा एक का लाभ प्राप्त हो सके।"

यद्यपि फकीरचन्द मास्टर जयगोपाल की बात को भली-भाँति समझ नहीं सका, तो भी वह इतना तो समझ गया था कि मास्टरजी के विचार में उसका धनी हो सकना असम्भव नहीं। यह तो वह जान गया था कि कपड़ा सीने की मशीन से आठ आना रोज कमाने की अपेक्षा माँ ढाई-तीन रुपये नित्य कमा सकती है। मशीन एक सौ तीस रुपये की मिली थी अर्थात् एक सौ तीस रुपये का ठीक ढंग से प्रयोग करने से माँ की आय बढ़ गई। इसपर भी वह समझ नहीं सका कि स्वयं कौन-सा काम सीखे, जिसको किसी प्रकार की मशीन से अधिक लाभ वाला बना सके।

मास्टर तो अस्पताल के समीप से अपने किसी काम चला गया, परन्तु फकीरचन्द के लिए एक समस्या छोड़ गया। उस दिन से फकीरचन्द इस धुन में लीन हो गया कि वह कौन-सा काम करना सीखे, जिसमें वह थोड़ा-सा रुपया पूँजी के रूप में लगाकर, उसको अधिक फलदायक बना सके।

वह दसवीं श्रेणी में पढ़ता था और स्कूल के सब मास्टरों का विचार था कि वह मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में वजीफा लेगा और फिर कॉलेज में पढ़कर किसी ऊँची पदवी पर लग जायगा। मास्टरों के इस विचार को वह सुन रहा था। एक दिन स्कूल के अध्यापक ने फकीरचन्द से पूछा, "फकीरचन्द! कॉलेज में जाकर क्या विषय लोगे?"

"पंडितजी! मैं विचार करता हूँ कि पढ़कर क्या करूँगा? जब मैं माँ को काम करते देखता हूँ, तो बहुत दुःख होता है।"

"पर जब पढ़ जाओगे, तो अच्छा वेतन भी तो तुम ही पाओगे। तब तुम्हारी माँ अपने परिश्रम का फल देख गदगद हो जायगी।"

"मान लीजिए कि मैं संस्कृत में एम०ए० पास कर लूँ तो क्या काम कर सकूँगा?"

"तुम कहीं प्रोफेसर लग जाओगे। यदि गवर्नमेंट कालेज में लग गए तो डेढ़ सौ रुपया मिल जायगा।"

फकीरचन्द ने अधिक विवाद में न पड़ने के लिए कह दिया, "विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करूँगा।'' परन्तु वह मन में विचार करता था कि यदि वह प्रोफेसर बन भी गया तो कैसे अपने परिश्रम को कई गुणा अधिक कर सकेगा। उसको डी०ए०वी० कॉलेज के प्रोफेसरों का पता था कि दस-दस वर्ष से पढ़ा रहे थे और डेढ़-दो सौ तक ही वेतन पाते थे।

इस प्रकार विचार करते हुए वह किसी निश्चय पर पहुँच नहीं सका। मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में वह फर्स्ट डिवीजन में ऊँचे अंक लेकर पास तो हुआ, परन्तु उसको वजीफा नहीं मिल सका। अतः उसके लिए कॉलेज की पढ़ाई में रस भी उत्पन्न नहीं हो सका।

परीक्षा के परिणाम के घोषित होने पर माँ ने पूछा, ''फकीर! अब आगे पढ़ोगे?''

''माँ! तुमको काम कर घर का खर्चा चलाते देख मुझे बहुत दुःख होता है। मैं कोई ऐसा मार्ग ढूँढ़ना चाहता हूँ, जिससे तुमको जल्दी-से-जल्दी इस मेहनत-मशक्कत से छुट्टी दिला सकूँ। नित्य रोटी खाते, कपड़े पहिनते और अपने अन्य खर्च चलाते समय मुझको कुछ ऐसा अनुभव होता है कि मैं तुम्हारा खून पी रहा हूँ। इससे मुझे अपने पर ग्लानि होने लगी है। मैं ईमानदारी से धनोपार्जन का कोई उपाय ढूँढ़ रहा हूँ।''

''जैसा समझ में आए करो, परन्तु एक बात का स्मरण रखना कि मैं तुमको वैसा ही निर्धन देखना नहीं चाहती, जैसे तुम्हारे पिता थे। मैं समझती हूँ कि मेरी वर्तमान मुसीबत निर्धनता के कारण ही है। साथ ही तुम्हारे पिता ने बेईमानी से पैदा करने की अपेक्षा स्वयं बीमार हो मर जाना उचित समझा और मैं भी उनको राय नहीं दे सकी कि वे बेईमानी करें। तुम भी स्मरण रखना कि इतनी मुसीबत झेलने पर भी मैं तुमको बेईमानी से धन कमाने के लिए कभी नहीं कहूँगी। यदि तुमने ऐसा कुछ भी किया तो मैं अपना जीवन व्यर्थ समझ इस संसार को छोड़ जाऊँगी। धर्म ही तो मेरी इस घोर तपस्या का फल है और मैं उसको किसी भी मूल्य पर खोना नहीं चाहती।''

फकीरचन्द के लिए यह एक अति विकट समस्या थी। वह जानता था कि यदि कॉलेज में भर्ती हो गया तो माँ को अभी छः वर्ष और घोर तपस्या करनी पड़ेगी। यदि वह इस समय नौकरी के लिए यत्न करे तो भी जीवन की समस्या सुलझेगी नहीं। इस कारण उसको कुछ काम सीखना चाहिए, जिसके फल को वह पूँजी की सहायता से बढ़ा सके। यही शिक्षा उसके गणित के अध्यापक ने दी थी। इतना विचार कर वह ऐसे काम की खोज करने लगा, जिसको सीख वह उन्नति कर सके। इसके साथ ही पूँजी की खोज भी करने लगा। उसने माँ से पूछा तो पता चला कि वह दस वर्ष का कठोर परिश्रम करने पर केवल पाँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R089.9143
GUR-D
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ रुपये बचा सकी है। वह विचार करता था कि इतनी-सी पूँजी से क्या कर सकेगा?

: 4 :

जब वह इस उलझन में फँसा हुआ था, उसको एक दुकानदार से बात करने का अवसर मिला। उनकी गली के बाहर एक बिसाती की दुकान थी। दुकानदार का नाम था हेमराज। फकीरचन्द उससे साबुन, कलम, दवात इत्यादि आवश्यकता की वस्तुएँ खरीदने जाया करता था, जब से उसकी माँ ग्वाल मंडी में आई थी, तब से ही वह उसकी दुकान से वस्तुएँ खरीदा करता था। उसको स्मरण था कि हेमराज की दुकान पहिले बहुत छोटी-सी होती थी और उसमें फर्नीचर भी बहुत साधारण ही था। फकीरचन्द ने हेमराज की दुकान को दिन-प्रतिदिन उन्नति करते देखा था और इन दिनों, जब उसने मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास की थी, हेमराज की दुकान में बहुत बढ़िया सागवान का फर्नीचर लगा था और साथ ही वह माल से ठसाठस भरी हुई थी।

परीक्षा फल के घोषित होने के दो-तीन दिन पश्चात् वह हेमराज की दुकान पर कपड़े धोने का साबुन लेने गया। माँ ने उसको तीन रुपये दिए थे और पाँच सेर साबुन लाने के लिए कहा था। हेमराज स्वयं वहाँ बैठा था। दोपहर का समय होने के कारण, उस समय और ग्राहक नहीं थे। फकीरचन्द को देख हेमराज ने पूछ लिया, ''फकीरचन्द! पास हो गए हो?''

Central Library
167919
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Hari

''जी हाँ।''

''कौन-सी डिवीजन में पास हुए हो?''

''फर्स्ट डिवीजन में।''

''तब तो कॉलेज में पढ़ोगे?''

''यह जरूरी नहीं।''

''तो क्या करोगे?''

''आप ही बता दीजिए, क्या करूँ? आपकी दुकान में कितना रुपया लगा है?''

''मैंने कभी गिना नहीं। आज से आठ वर्ष पूर्व जब मैंने दुकान खोली थी, तो अपने एक सम्बन्धी से तीन सौ रुपया उधार लेकर लगाया था। अब मैं विचार करता हूँ कि दो हजार का तो फर्नीचर ही है।''

''तो बहुत कमाया है आपने?''

''हाँ, भगवान की कृपा है।''

''कमाई का गुर मुझको भी बता दीजिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गुर सीधा है। सबसे पहिले हिसाब करने का ढंग जानना चाहिए। मैंने मुंडी में हिसाब करना सीखा है। इस कारण कभी धोखा नहीं खाता। अभी दूसरे के मुख में बात होती ही है कि उसमें होने वाले हानि-लाभ का मुझको ज्ञान हो जाता है। साथ ही इस बात का भी ज्ञान रहता है कि मुझको कितनी लाभ-हानि हो रही है। इस कारण मैं अपने खर्चे का संचालन भली-भाँति कर सकता हूँ।

"मैं किसी से झगड़ा नहीं करता। न ग्राहकों से न उनसे, जिनसे मैं माल लाता हूँ। मीठा बोलता हूँ और झूठ नहीं बोलता। ये ही मेरे काम की सफलता के गुर हैं, इस सबके साथ-साथ भगवान की कृपा की भी आवश्यकता बनी रहती है।"

"सबसे अच्छा काम क्या है?"

"व्यापार बहुत अच्छा काम नहीं है। इसमें पाँसा उलट भी जाया करता है। लाभ से हानि भी होने लगती है। जहाँ लाभ द्रुत गति से होता है, वहाँ हानि भी द्रुत गति से हो सकती है। केवल एक काम है, जिसके विषय में सबका कहना है कि सर्वश्रेष्ठ है। वह है खेती-बाड़ी।"

"यह क्यों?"

"यह इसलिए कि उसमें घाटा कभी होता नहीं और जीवन सुलभ और सुखी रहता है।"

गणित के विषय में फकीरचन्द का विचार था कि वह अच्छी योग्यता रखता है। रही दुकान अथवा खेती-बाड़ी की बात, वह इनमें निर्णय नहीं कर पाता था।

कॉलेजों में प्रवेश का समय निकल गया और वह भर्ती नहीं हुआ। इस अनिश्चित अवस्था में उसने भारत बीमा कम्पनी में पैंतीस रुपये महीने की नौकरी कर ली। माँ ने पूछा तो उसने बता दिया, "माँ! बेकार बैठने से यह अच्छी है। अन्यथा मैं पैंतीस रुपये की नौकरी नहीं करूँगा।"

वह अपने वेतन के सब रुपये लाकर माँ को दे देता था और माँ उसमें से बहुत-सा भाग उसको अपने कपड़े इत्यादि के लिए वापस कर देती थी। इसपर भी वह केवल कुर्ता, पायजामा, जवाहर कोटी के अतिरिक्त और कुछ नहीं पहनता था इस कारण जो कुछ माँ देती थी, उसमें से भी बहुत कुछ बचा लेता था।

यह सन् 1931 था। एक दिन उसने ट्रिब्यून समाचार-पत्र में एक विज्ञापन पढ़ा। लिखा था 'परिश्रमी, उन्नति के अभिलाषी युवकों/पुरुषों के लिए स्वर्णिम अवसर। मध्य-भारत में नदी शील गंगा के किनारे जंगल की भूमि दस वर्ष के लिए बिना लगान के मिल सकती है। दस वर्ष के पश्चात् लगान पाँच रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति एकड़ के हिसाब से लिया जाएगा। इस अवसर से लाभ उठाने के लिए प्रार्थियों को राजा साहब 'ऊँट' सिविल लाइन्स, झाँसी को लिखना चाहिए।''

फकीरचन्द ने यह विज्ञापन पढ़ा तो उसको अपने गणित के मास्टर जयगोपाल का कथन स्मरण हो आया। मास्टर जी ने कहा था—सफलता के लिए पूँजी आवश्यक है और भूमि भी पूँजी का एक रूप है। उस विज्ञापन में भूमि बिन्ना मूल्य मिलने की बात थी। अर्थात् उसको अनायास ही अपनी मेहनत को कई गुणा करने के लिए पूँजी मिलने की बात थी। एक-दो दिन तक वह इस विज्ञापन पर मनन करता रहा और फिर उसने एक पत्र लिख दिया। उसने अपने मन में विचार किया था कि इस प्रकार पूँजी मिलने का यह अवसर तो भगवान् की कृपा से ही समझना चाहिए। उसने इस भूमि के विषय में अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए पत्र लिखा था।

उसके पत्र के उत्तर में राजा साहब की जमींदारी के मैनेजर का एक पत्र और साथ ही नीले कागज पर नक्शा आ गया। पत्र में तो केवल यह लिखा था कि भूमि उपजाऊ है, परन्तु उसके जंगल कटवाने में कठिनाई है। इसी कारण उस भूमि को काम के योग्य बनाने के लिए दस वर्ष तक भूमि, बिना किसी मुजराने के दी जा रही है। शेष यहाँ आकर भूमि देखी जा सकती है और पूछ-गीछ की जा सकती है।

इस पत्र के आने पर उसने अपनी माँ को अपनी योजना बता दी। माँ इस बात को समझ नहीं सकी। इस कारण वह पुत्र का मुख बितर-बितर देखती रह गई। माँ को विस्मय में मुख बनाए देख फकीरचन्द ने कहा, ''माँ! मैंने इस भूमि के मालिक को लिखा था और उसका पत्र आया है कि भूमि आकर देख लूँ और उनसे बात कर लूँ।''

''मैं यह नहीं पूछ रही फकीर! मैं तो यह जानना चाहती हूँ कि इतना कठिन कार्य तुम कर सकोगे क्या?''

''माँ! अभ्यास से सब कुछ किया जा सकता है।''

''किसान तो प्राय: निर्धन होते हैं। तो क्या मैं फिर जीवन-भर निर्धन ही बनी रहूँगी?''

''नहीं माँ। यदि पर्याप्त भूमि मिल गई तो निस्संदेह इस मशीन चलाने की अपेक्षा तो यह अच्छा ही रहेगा।''

''कितनी भूमि मिल जाएगी तुमको?''

''यह तो जाकर पता चलेगा।''

''मुझको कुछ विचित्र-सा लग रहा है। हम नगर में पैदा हुए और पले हैं। देहात में हमारा जीवन सुखी रह सकेगा क्या? यही समझ में नहीं आता।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ की यह आशंका सुन, फकीरचन्द चुप रहा। फिर कुछ विचार कर उसने कहा, ''माँ! तुम अभी यहीं रहना। मैं अकेला जाऊँगा। जब वहाँ रहने योग्य स्थान और खाने-पीने के योग्य सामान एकत्रित कर लूँगा, तो चली चलना। मेरा मन कहता है कि यह अवसर भगवान् ने दिया है और हमें इसको खोना नहीं चाहिए।''

माँ ने गम्भीर होकर कहा, ''अच्छी बात है। मैं भी भगवान् से प्रेरणा लूँगी। जैसे वह कहेगा, वैसा करूँगी।''

इस प्रकार बात तय हो गई। फकीरचन्द ने कम्पनी से पन्द्रह दिन की छुट्टी ली और माँ से पचास रुपये लेकर झाँसी जा पहुँचा।

राजा साहब का नाम श्री महेन्द्रपाल सिंह था। उनकी जमींदारी मध्य भारत में थी, परन्तु वे रहते झाँसी में थे। झाँसी और बीना के मध्य एक छोटे-से स्टेशन जिरौन से तीन मील पश्चिम की ओर देवगढ़ नामक गाँव था। इस गाँव के समीप ही एक घना जंगल था, जो बीस मील लम्बा-चौड़ा था। यह और इसके आस-पास की भूमि राजा साहब की थी। इस जंगल से कुछ विशेष आय की आशा नहीं थी। इस कारण राजा साहब के सलाहकारों ने उनको इस भूमि को पट्टे पर उठा देने की राय दी और इसको आबाद करने के लिए दस वर्ष का लगान छोड़ने का प्रस्ताव कर दिया। जंगल की लकड़ी के काटने के लिए कटी लकड़ी पर एक आना मन राजा साहब को देने का प्रस्ताव था।

फकीरचन्द झाँसी पहुँचा और वहाँ से स्वीकृति लेकर वह जिरौन जा पहुँचा। वहाँ की स्थिति देख, उसने अपने मन में यह निश्चय कर लिया कि वह इस भूमि को अवश्य लेगा।

जब उसने झाँसी पहुँचकर राजा साहब के मैनेजर से पट्टा करने को कहा तो उसने कह दिया कि वह अभी नाबालिग है, इस कारण उससे किसी प्रकार का वचन-पत्र नहीं किया जा सकता।

इससे तो फकीरचन्द का मन बुझ-सा गया। उसको सब कुछ स्वप्न ही प्रतीत होने लगा। इसपर भी उसने मैनेजर को समझाते हुए कहा, ''मैनेजर साहब! हमारे घर में कोई बड़ा आदमी नहीं है। इस पर भी जीने का अधिकार तो हमको है ही! मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि आपकी कोई भी हानि नहीं करूँगा।''

''तुम्हारे पिता कहाँ हैं?'' मैनेजर ने पूछा।

''उनका देहान्त हो चुका है। ग्यारह वर्ष से माँ कठोर परिश्रम कर हमारा पालन-पोषण करती रही है। मैं अब पढ़-लिखकर माँ को आराम देना चाहता हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो माँ से हस्ताक्षर करा दो।"

"पर काम तो मुझे करना है। उस बेचारी को इसमें क्यों घसीटूँ ? आप मान जाइए। मैं आपकी भूमि तो उठाकर ले नहीं जाऊँगा। केवल जंगल की लकड़ी का ही तो प्रश्न है। मैं आपकी उजरत देकर ही उसको उठाऊँगा। जब लगान देने का समय आएगा, तब मैं बालिग हो जाऊँगा।"

मैनेजर विचार कर रहा था कि विज्ञापन देने पर भी कोई प्रार्थी भूमि लेने आया नहीं; यह बालक आया है, तो क्या इसे इन्कार कर दे? इससे उसको भारी दुःख हो रहा था। इसपर उसने कहा, "राजा साहब से पूछ लूँ।"

"मुझको उनके सामने उपस्थित होकर स्वयं अपनी प्रार्थना करने का अवसर दीजिए।" फकीरचन्द का कथन था।

उसी सायंकाल फकीरचन्द को राजा साहब के सम्मुख उपस्थित कर दिया गया। राजा साहब प्रार्थी को केवल बालक-मात्र देख आश्चर्य करने लगा। मैनेजर से सब बात समझ राजा साहब ने कहा, "देखो बालक! भूमि देने में कोई आपत्ति नहीं। पट्टा तो तुम्हारी माँ के नाम ही दिया जा सकता है। यह कानून है। पट्टा अभी लिख दिया जायगा। तुम उसकी एक नकल अपने घर भेजकर माँ को लिख दो कि उसपर हस्ताक्षर कर यहाँ भेज दे। यह बहुत ही साधारण-सी बात है। इस पर भी क्या तुम यह काम कर सकोगे?"

"महाराज। मुझको पूर्ण विश्वास है कि मैं इस कार्य में सफल रहूँगा। इसपर भी यदि दो वर्ष तक काम न कर सकूँ, तो पट्टा वापस कर दूँगा।"

"कौन-सी भूमि चाहते हो?"

फकीरचन्द मौके पर जाकर भूमि देख आया था। इस कारण उसने मानचित्र निकालकर एक स्थान पर हाथ रख दिया। मानचित्र पर किते बने थे और उन पर नम्बर लिखे थे। यह तीन नम्बर का किता था। राजा साहब ने नम्बर पढ़कर मैनेजर से पूछा, "क्यों मैनेजर साहब! यह कैसी भूमि है?"

"यह भूमि सबसे अच्छी है, महाराज!"

"ठीक तो है। जो पहिले आयगा, वह अच्छी वस्तु छाँटकर लेगा। हम समझते हैं कि पट्टा इसकी माँ के नाम कर दिया जाय और उसको रजिस्ट्री के कागजात हस्ताक्षरों के लिए भेज दिए जाएँ। उस पट्टे पर एक शर्त लिख दो कि यदि काम दो वर्ष के भीतर आरम्भ न हुआ, तो पट्टा रद्द समझा जायगा।"

फकीरचन्द ने अपनी माँ का नाम और पता बता दिया। पट्टे के कागजात तैयार कर, रजिस्ट्री कराकर उस पते पर भेज दिए गए। फकीरचन्द उसकी नकल लेकर स्वयं लाहौर जा पहुँचा।

इस प्रकार एक क्लर्क का लड़का, और स्वयं क्लर्क, जमींदार बन गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्री लिफाफे में पट्टे के कागजात आए तो फकीरचन्द ने माँ से कहकर हस्ताक्षर करा, उन्हें वापस झाँसी भेज दिया।

: 5 :

पट्टे के कागजात पूर्ण होते ही फकीरचन्द ने कम्पनी की नौकरी छोड़ दी और जाने की तैयारी करने लगा। नौकरी छोड़ने के लिए एक मास का नोटिस देना पड़ा और उस काल में उसने सर गंगाराम पुस्तकालय में जाकर खेती-बाड़ी के विषय में बहुत-सी पुस्तकें पढ़ डालीं।

फकीरचन्द की माँ ने पट्टे पर हस्ताक्षर तो कर दिए, परन्तु अपने मस्तिष्क पर बहुत जोर देने पर भी, वह इस कार्य में सफलता की आशा नहीं कर सकी। इस कारण वह फकीरचन्द को भी उत्साहित नहीं कर सकी। जिस दिन उसने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दिया और माँ को बताया, तो वह सन्न रह गई। वह विचार करती थी कि जब पट्टे में ही, काम आरम्भ करने में दो वर्ष की अवधि मिली हुई है, तो इतनी जल्दी मचाने की क्या आवश्यकता थी? उसने कहा, ''फकीर! तुम अभी बहुत छोटे हो। तुम्हारा अनुभव भी बहुत ही कम है। इस कारण इतने कठिन काम के लिए मैं तुमको अपने से पृथक् नहीं कर सकती।''

फकीरचन्द माँ की बात सुन भौंचक्क उसका मुख देखता रह गया। वह माँ की आज्ञा का उल्लंघन करना नहीं चाहता था। साथ ही वह समझता था कि माँ स्नेहवश उसकी उन्नति में बाधक बन रही है।

उसने कहा, ''माँ! तुम जाने की आज्ञा नहीं दोगी, तो मैं नहीं जाऊँगा। इसपर भी यह समझ लो कि यह मेरे साथ और तुम्हारे साथ अन्याय हो जायगा। वह स्थान, जहाँ मैं जाना चाहता हूँ, एक बिना छीले-छांटे तथा बिना पालिश किए हीरे के समान है। इस समय वहाँ कुछ नहीं, परन्तु वह दस वर्ष में कामधेनु बन जायगा, इसमें किंचित भी सन्देह नहीं। माँ! मुझे जाने दो। बहुत यत्न से और भगवान् की अपार कृपा से यह अवसर मिला है। इसको व्यर्थ मत जाने दो।''

इतना कहते-कहते फकीरचन्द की आँखों में आँसू भर आए। माँ ने फकीर के आँसू देखे तो स्तब्ध रह गई। वह समझती थी कि फकीरचन्द उससे झगड़ा करेगा, परन्तु हुआ इसके विपरीत। वह आग्रह करने लगा। उसने पूछा, ''यदि नहीं कहूँगी तो नहीं जाओगे?''

''माँ की आज्ञा-उल्लंघन का तो प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।''

''तो जाओ; परन्तु अपनी सूचना भेजते रहना।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फकीरचन्द ने माँ के चरण स्पर्श करते हुए कहा, "माँ! इन चरणों की कृपा से मैं अवश्य सफल हूँगा।"

बीमा कम्पनी के कार्यालय से छुट्टी मिलते ही वह झाँसी जाने के लिए तैयार हो गया। माँ ने अपनी पूर्ण एकत्रित राशि, जो छः सौ रुपये से ऊपर थी, फकीरचन्द को दे दी। जिस सायंकाल को जाना निश्चित हुआ था, माँ एक बड़ा-सा बिस्तर बाँधे हुए बैठी थी। समीप ही बिहारीलाल कपड़े पहिने तैयार बैठा था। फकीरचन्द दिनभर मित्रों से मिलने में व्यस्त रहा था। गाड़ी के समय से दो घण्टे पूर्व वह आया, तो इतना बड़ा बिस्तर देख पूछने लगा, "माँ! बहुत बड़ा बिस्तर बाँध दिया है। इतना क्या करूँगा ले जाकर?"

"हमें भी तो बिस्तर चाहिए। तीन के स्थान एक ही बाँध दिया है।"

"तीन? और कौन जा रहा है?"

"बिहारी और मैं।"

"तुम? पर माँ! तुम्हें तो पीछे आना था।"

"बिहारी को तीन महीने की छुट्टी ले दी है। मैं समझती हूँ कि इतने में तुम्हारा प्रबन्ध भली-भाँति कर पाऊँगी। हाँ, यदि प्रबन्ध न हो सका, तो तुमको अपने साथ वापस लेती आऊँगी।"

"पर माँ! वहाँ तुमको बहुत कष्ट होगा।"

"यही जानकर तो जाने का निर्णय किया है। साथ-साथ रहेंगे तो कष्ट बँट जायगा।"

"नहीं माँ! अभी मुझे ही जाने दो।"

"देखो फकीर! मैं माँ हूँ और माँ अपने बच्चों को कष्ट में नहीं झोंक सकती। मैं जानती हूँ कि वहाँ कष्ट होगा और मैं साथ जाकर तुम्हारा कष्ट कम कर सकूँगी।"

फकीरचन्द को अपनी माँ के इस निर्णय पर विस्मय हुआ। इस निर्णय में उसको केवल माँ का अपने प्रति स्नेह ही दिखाई दिया। रामरखी ने अपने साथ कम-से-कम सामान लिया था और चलते समय मकान को ताला लगा, वे रेलवे स्टेशन पर जा पहुँचे।

: 6 :

जब करोड़ीमल अपने विचारों की व्याख्या कर रहा था, तो उसकी पत्नी फकीरचन्द की माँ को अपना परिचय दे रही थी। "सेठजी डीडवाना के रहने वाले हैं। इनकी माता पड़ोसियों के बर्तन मसला करती थीं। ये भागकर बम्बई चले गए और वहाँ एक आढ़त की दुकान पर मुनीमी करने लगे। तदुपरान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ रुपये एकत्रित कर ये सट्टा करने लगे और कुछ ही वर्षों में लखपति हो गए। तदनन्तर इन्होंने ऊन की आढ़त आरम्भ कर दी। अब बम्बई, नागपुर, दिल्ली, लाहौर और पेशावर में इनकी बड़ी-बड़ी कोठियाँ हैं। वहाँ पर माल खरीदा जाता है; छाँटा और बाँधा जाता है। फिर विदेशों को भेजा जाता है। कई लाख वार्षिक की आय है, पर ये हैं बड़े कंजूस। इस पर भी भगवान् की इन पर अपार कृपा है। इनकी एक लड़की, जो इनकी पहली पत्नी से थी, अब सेठ कुन्दनलाल भगेरिया के पुत्र से विवाह दी गई है। उसके विवाह पर इन्होंने पाँच लाख दहेज में दिया था। इनकी पहली पत्नी का देहान्त हुआ तो मुझको अपने गाँव से विवाह लाए। अब मेरे दो बच्चे हैं, एक लड़का और एक लड़की। सेठजी थर्ड क्लास में यात्रा करते हैं। यदि हम साथ न होते तो कदाचित् बिना टिकट के यात्रा करते और टिकट बाबू को पाँच रुपये देकर छूट जाते।

"इस पर भी ये हैं बहुत ही सज्जन व्यक्ति। नित्य भगवत भजन करते हैं और दान-दक्षिणा भी देते हैं। मेरा बहुत मान करते हैं। जब भी कोई बात कहती हूँ, तो तुरन्त मान जाते हैं।"

"यह लड़का क्या पढ़ता है?" रामरखी ने पूछा।

"यह मैट्रिक पास है। हिसाब-किताब का काम बहुत अच्छी तरह जानता है। आजकल यही विभिन्न कोठियों का निरीक्षण करता है।"

जब परस्पर परिचय हुआ तो सेठजी ने अपने कटोरदान में से खाना निकाल फकीरचन्द से कहा, "आओ खाएँ।"

"हम अभी खाकर आए हैं।"

सेठानी ने फकीरचन्द की माँ से भी भोजन के लिए पूछा। तदुपरान्त वे सब भोजन करने लगे। रोटियाँ काले रंग की थीं। रामरखी ने पूछा, "ये किस चीज के आटे की हैं?"

सेठानी ने बताया, "बाजरे की हैं।"

रोटी के साथ मिर्च का अचार था। इस प्रकार उन्होंने भोजन किया, पानी पिया और शेष बची हुई रोटियों को कटोरदान में बन्द कर दिया। फकीरचन्द मन में विचार करता था कि यह भी धनी होने का एक ढंग है। इस समय करोड़ीमल ने पूछा, "फकीरचन्द खेती-बाड़ी करने जा रहे हो?"

"जी।"

"मैं समझता हूँ कि तुम नहीं कर सकोगे।"

"मैं यत्न करने जा रहा हूँ। युक्ति से तो खेती-बाड़ी से धन कमाना सरल है। शेष चलकर देख लूँगा। देखिए सेठजी! मेरी योजना यह है—मैं जंगल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटवाऊँगा और लकड़ी बेचकर निर्वाह करूँगा। मुझको तो इसमें भारी लाभ प्रतीत होता है।''

''मैंने तो सोने के व्यापार में ही ये करोड़ों कमाए हैं। मैं इसको ही धन कमाने का सबसे सुगम उपाय समझता हूँ।''

''पर सेठजी! सोने के व्यापार में घाटा भी तो हो सकता है?''

''कौन-सा व्यापार ऐसा है, जिससे घाटे की सम्भावना न हो?''

''खेती-बाड़ी में घाटे की सम्भावना न के समान है। इसमें एक ही भय है कि कोई अपनी आय से अधिक खर्च कर सकता है। इसलिए यदि मनुष्य अपनी आवश्यकताएँ साधारण तथा कम रखे और उनको अपने घर में ही उत्पन्न करने का यत्न करे, तो लाभ-ही-लाभ है।''

''अपनी आवश्यकताएँ घर में कैसे उत्पन्न कर सकते हो?''

''मनुष्य की आवश्यकताएँ तो भोजन और वस्त्र ही हैं न? ये दोनों वस्तुएँ घर पर बन सकती हैं।''

सेठजी ने कह दिया, ''तुम अभी बच्चों की-सी बातें करते हो।''

: 7 :

सेठ करोड़ीमल दिल्ली में उतर गया, परन्तु फकीरचन्द के मन में एक विचित्र प्रशंसा और ग्लानि भर गया। दिल्ली में डिब्बा सवारियों से भर गया। इस कारण किसी व्यक्ति से विशेष बातचीत नहीं हो सकी। माँ और लड़कों ने दिल्ली स्टेशन पर ही हाथ-मुख धो जलपान किया।

गाड़ी चली तो फकीरचन्द पुनः सेठ के विषय में विचार करने लगा। सेठ ने कहा था कि खेती-बाड़ी के काम से आय की आशा बच्चों की-सी बात है। परन्तु फकीरचन्द समझता था कि सेठ कुछ अच्छा आदमी नहीं है। उसने एक रुपया बाबू को देकर डिब्बे को ताला लगवा रखा था। इसका परिणाम सेठ के लिए और फकीरचन्द के अपने लिये तो सुखकारक ही हुआ। इसपर भी था यह अनुचित।

फिर वह विचार करता था कि सट्टा करना तो जुआ है और यह काम ठीक नहीं। इसपर भी उसको यह जानकर विस्मय हुआ था कि इस बुरे काम से ही सेठ के पास करोड़ों रुपये एकत्रित हुए हैं।

सेठ की तुलना में वह अपने कार्य पर विचार कर रहा था। अपने कार्य से वह करोड़ों का स्वामी होने की तो आशा नहीं करता था। इस पर भी वह मन में विचार करता था कि उसका काम सम्मान-युक्त है। उसकी माँ ने उसको एक बार कहा था कि उसकी कठिनाई धनाभाव के कारण ही है। साथ ही माँ ने कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि धर्म का त्याग कर वह धन पाना नहीं चाहती। इस पर उसने माँ से, जो उसके सामने की सीट पर बैठी थी, पूछ लिया, ''माँ! तुम सेठ को कैसा आदमी समझती हो?''

''देखो बेटा, काम तो अच्छा नहीं है, परन्तु इसमें वह दोषी नहीं। कानून इस बात को वर्जित नहीं बताता। जैसे चोरी अथवा जुआ कानूनन वर्जित हैं, वैसे ही यह वर्जित नहीं है। इस कारण मैं कौन हूँ, उसको पापी कहने वाली! फिर भी मेरा कहना है कि वह काम हमारे करने योग्य नहीं है।''

फकीरचन्द को अपने गणित के मास्टर का कथन स्मरण हो आया था। मास्टर ने कहा था कि भूमि सबसे बड़ी पूँजी है। उसने खेती-बाड़ी की पुस्तकों में पढ़ा था कि गेहूँ का पेड़ दो वर्ग इंच भूमि पर पैदा होता है और एक बीज से दो सौ दाने उत्पन्न होते हैं। इतनी भूमि को जोतने और बोने के लिए बहुत कम मेहनत लगती है। अर्थात् एक दाना गेहूँ से और एक खुरफा चलाने से दो सौ गेहूँ के दाने उत्पन्न हो सकते हैं। सिद्धान्त से उसकी समझ में यह आ रहा था कि वह अतुल धन-सम्पदा का स्वामी बनने वाला है। वह समझता था कि यदि उसका गणित ठीक है, तो वह निर्धन नहीं रह सकता।

इस प्रकार कल्पना करते हुए वह गाड़ी में बैठा चला जा रहा था। सामने की सीट पर माँ चिन्तित मुद्रा बनाए हुए बैठी थी। उसको कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा था कि माँ को अभी भी उसके सफल होने की आशा नहीं। माँ दिन में दो-ढाई रुपया नित्य कमा लेती थी और वह भी तो नौकरी से रुपया-डेढ़-रुपया नित्य लाने लगा था। इस सबको छोड़-छाड़ वे काल्पनिक आय के पीछे भाग खड़े हुए थे। कहीं वह असफल हुआ तो माँ का तो दुःख से ही देहान्त हो जाएगा। इस विचार के आते ही उसका हृदय काँपने लगा।

मध्याह्नोत्तर वे झाँसी जा पहुँचे। उन्हें वहाँ पर गाड़ी बदलनी थी। वे डाक गाड़ी पर सवार थे, जो जिरौन स्टेशन पर खड़ी नहीं होती थी।

झाँसी पर उतर, फकीरचन्द माँ और भाई को धर्मशाला में ले गया। वहाँ उन्होंने स्नानादि किया और बाजार से सामग्री लाकर खाना बनाया और खाया। उसी सायंकाल वह राजा साहब के मैनेजर से मिलने गया और उसने बताया कि वह अपनी माता तथा भाई को लेकर आ गया है और अगले दिन प्रातःकाल ही भूमि पर जा रहा है।

मैनेजर को आशा नहीं थी कि वह इतनी जल्दी भूमि पर काम करने के लिए आ जायगा। वह फकीरचन्द को उत्साह से भरा हुआ देख कहने लगा, ''फकीरचन्द! मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि तुम यह कार्य करने के लिए उद्यत हो। किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो बताओ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी, इसी कारण तो आया हूँ। देवगढ़ राजा साहब की जमींदारी है। आपका वहाँ व्यवहार होना स्वाभाविक है। इस कारण यदि आप वहाँ के किसी आदमी के नाम चिट्ठी दे दें तो मुझको कोई जमादार के रूप में काम करने वाला आदमी मिल सकेगा। मैं इसके लिए आपका बहुत अनुगृहीत रहूँगा।"

"क्या करोगे जमादार रखकर?"

"मैं सब प्रकार से परदेशी हूँ। मुझको कोई सहायक, कम-से-कम एक वर्ष के लिए तो चाहिए ही।"

मैनेजर फकीरचन्द की कार्यपटुता देखकर चकित रह गया। इसपर भी उसने कहा, "देखो, यदि मैंने किसी आदमी को पत्र दिया, तो वह समझेगा कि तुम राजा साहब के कोई सम्बन्धी हो और वह तुमको लूटने का यत्न करेगा। इस कारण मेरी सम्मति तो यह है कि तुम अपने आप वहाँ के चौधरी रामहरष से मिल लेना। वह तुम्हारी सहायता कर देगा।"

मैनेजर की युक्ति फकीरचन्द की समझ में आ गई। उसने बिना किसी प्रकार का परिचय-पत्र लिये देवगढ़ जाने का विचार कर लिया। अगले दिन प्रातः दस बजे की गाड़ी से चलकर वे तीन बजे जिरौन जा पहुँचे। वहाँ से वे एक बैलगाड़ी में सवार हो देवगढ़ चले गए।

फकीरचन्द पूछता हुआ चौधरी रामहरष के घर जा पहुँचा। चौधरी अपने घर के बाहर चौपाल पर बैठा हुक्का पी रहा था।

फकीरचन्द ने गाड़ी दूर ही खड़ी कर दी और उतरकर चौधरी के पास आकर कहने लगा, पाँय लागूँ चौधरी!"

"आओ भाई, बैठो। बताओ क्या चाहते हो?"

फकीरचन्द ने कहा, "राजा साहब से हमने जंगल की भूमि का एक किता पट्टे पर लिया है। उसका प्रबन्ध करने आया हूँ। मैं हूँ, मेरी माँ है और मेरा भाई है। हम इस गाँव में रहना चाहते हैं। इस कारण मैं गाँव के चौधरी से सहायता लेने आया हूँ।"

"ओह? तो तुम हो, जो इस जंगल की भूमि में कमाने आए हो। राजा साहब बहुत ही चालाक आदमी हैं, जो गरीब आदमियों को धोखा देकर यहाँ बुलाते हैं और फिर यहाँ की जलवायु अनुकूल न होने से, उनके मर जाने पर और भूमि खाली होने पर, मरने वाले के संस्कार के लिए लकड़ी का भी मूल्य माँग लेते हैं।"

फकीरचन्द राजा साहब के चरित्र की यह व्याख्या सुन काँप उठा। इसपर भी वह इतनी दूर आकर वापस लौटने के विषय में विचार भी नहीं कर सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। वह कुछ देर तक चौधरी का मुख देखता रहा फिर बोला, ''चौधरी साहब! यह भयानक बात मेरी माँ को बताने की कृपा मत करना। यह सुन तो बेचारी का ऐसे ही प्राणांत हो जाएगा।

''मरने के विषय में तो यहाँ रहने के पश्चात् विचार कर लेंगे। पहले रहने की समस्या सुलझानी चाहिए। हम इतना ध्यान सदा रखेंगे कि हमारे संस्कार के लिए लकड़ी घर में जमा रहे, जिससे राजा साहब को उसके लिए कष्ट न करना पड़े।''

चौधरी हँस पड़ा। फकीरचन्द ने आगे कहा, ''हमें ठहरने के लिए एक मकान दीजिए। हम किराया देंगे।''

किराये की बात सुन चौधरी ने हुक्के की नाल को एक ओर कर पूछा, ''पाँच रुपये मासिक पेशगी दोगे? इतने पैसे जेब में हों तो मकान सामने है।''

''दे दूँगा।''

''तो चलो, देख लो।''

फकीरचन्द मकान देख, पसन्द कर, माँ, भाई और सामान को वहाँ ले गया। चौधरी के हाथ पर, जो अभी भी उस मकान के बाहर खड़ा था, उसने पाँच रुपये का नोट रख धन्यवाद कर दिया।

सबसे पहले मकान के दरवाजे खोल उसको हवा लगाई गई, फिर रसोई-घर को साफ किया गया और जलाने के लिए लैम्प तथा खाने के लिए आटा-दाल खरीद कर लाया गया।

उनको वहाँ पहुँचते-पहुँचते और खाना बनाते तथा खाते रात हो गई। उस रात तो वे मकान की छत पर ही सोए। मकान अभी भीतर से साफ नहीं हो सका था। अगले दिन स्नानादि से निवृत्त होकर फकीरचन्द लकड़ी कटवाने का प्रबन्ध करने घर से निकल गया और माँ मकान की सफाई कर, रहने योग्य बनाने में लग गई। जाने से पहले फकीरचन्द माँ को कह गया था कि मकान को इतना साफ-सुथरा बनाना है, जितना इस स्थान पर बन सकता है। वह कमाना चाहता है, जीने के लिए। वह कमाने के लिए जीना नहीं चाहता। उसने कहा, ''माँ! मैं करोड़ीमल बनने का विचार नहीं रखता। मैं अपनी कमाई अपने लिए, अपने बन्धु-बान्धवों के लिए तथा अन्य मित्रों और परिचितों के लिए व्यय करने की वस्तु समझता हूँ।''

''ठीक है, फकीर! पर शेखचिल्लियों की भाँति स्वप्न मत देखो। पहले कमाओ और पीछे व्यय करने की बात भी देख लेना।''

फकीरचन्द लकड़हारों के लिए चौधरी के पास गया और उससे कहने लगा, ''चौधरी! इस गाँव में लकड़हारे मिल सकेंगे क्या?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ बेटा! हैं तो, परन्तु ललितपुर गए हुए हैं। दो-तीन दिन में आएँगे तब तुमसे मिलवा दूँगा।"

फकीरचन्द मन में विचार करता था कि तीन दिन तक खाली बैठे रहना तो ठीक नहीं। अतः उसने कहा, "चौधरी! इतने बड़े गाँव में और जंगल के समीप होने पर लकड़ी काटने का काम केवल वे लोग ही करते हैं? और लोग नहीं हैं, जो यह काम कर सकें?"

"नहीं बेटा! यहाँ दूसरे लोग काम नहीं कर सकते। कोई करे तो वे नाराज हो जाएँगे।"

यह बात फकीरचन्द की समझ में नहीं आई। इस कारण उसने अपनी समस्या उस दुकानदार के सामने जाकर रख दी, जिससे उन्होंने रात और अब भोजन-सामग्री खरीदी थी। जब उस दुकानदार से लकड़हारों के विषय में पूछा गया तो उसने कहा, "बाबू! यहाँ मजदूर तो मिल जाएँगे। तुम उनको कुल्हाड़े ले दोगे तो वे लकड़ी काटने का काम भी कर देंगे।"

"चौधरी तो कहता है कि लकड़ी काटने का काम कोई और करेगा तो झगड़ा हो जाएगा।"

इसपर उस दुकानदार ने मुस्कराकर कहा, "तभी तो चौधरी की सब जायदाद और मकान गिरों रखे हैं।"

"कुल्हाड़े कहाँ मिल सकेंगे!"

"बने-बनाए तो मिल नहीं सकते। हाँ, लोहार के पास जाकर कहोगे, तो वह बना देगा।"

"लोहार किधर रहता है?"

फकीरचन्द समझता था कि समय ही धन है। इस कारण वह इसको व्यर्थ गँवाना नहीं चाहता था। वह लोहार के घर गया और उसको चार कुल्हाड़े बनाने के लिए कह, पुनः मजदूर ढूँढ़ने लगा। इसमें भी उस दुकानदार ने उसकी सहायता की। उसने तीन आदमियों को बुलाकर फैसला करा दिया। बीस रुपये महीने पर वे रख लिये गए। दुकानदार ने कहा, "बाबू! बीस रुपये कुछ अधिक अवश्य हैं, परन्तु ये आदमी काम मेहनत से करेंगे और छुट्टी बहुत कम करेंगे।"

फकीरचन्द ने उन मजदूरों को पाँच-पाँच रुपये पेशगी देकर अपने घर पर अगले दिन प्रातः छः बजे आने को कह दिया।

कुल्हाड़े सायंकाल मिलने वाले थे, इस कारण फकीरचन्द घर जाकर मध्याह्न का भोजन कर माँ और भाई को साथ लेकर जंगल देखने चला गया। वह निश्चय करना चाहता था कि कहाँ से काम आरम्भ करे।

जंगल के उस कोने से, जो गाँव के समीप था, वह कटाई आरम्भ करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता था। साथ ही उसने मकान बनवाने के लिए स्थान का भी निश्चय कर लिया और वहाँ से पचास गज लम्बी और पचास गज चौड़ी जगह चुनकर निशान लगा दिया गया।

अगले दिन प्रात:काल माँ और दोनों भाई, मजदूरों और कुल्हाड़ों को लेकर जंगल में जा पहुँचे। माँ एक थाली में रोली और धूप ले गई थी। वहाँ उस स्थान पर, जहाँ कटाई आरम्भ होने वाली थी, माँ ने थाली में रोली से 'ओ३म्' बनाकर गायत्री मन्त्र द्वारा उसका पूजन किया और परमात्मा से प्रार्थना की कि उनके कामों में ऋद्धि-सिद्धि प्रदान करे।

: 8 :

फकीरचन्द ने पहिला कुल्हाड़ा भगवान् का नाम लेकर स्वयं चलाया और पश्चात् मजदूर काम करने लगे। माँ घर लौट गई और फकीरचन्द अपने मजदूरों के काम में हाथ बँटाता रहा। माँ भोजन लेकर आई और फकीरचन्द ने नदी के किनारे, एक पीपल के पेड़ की छाया में बैठ भोजन किया और एक घण्टा विश्राम कर फिर मजदूरों से काम लेना आरम्भ कर दिया। इस समय तक मजदूर भी भोजन तथा विश्राम कर चुके थे।

माँ घर लौट गई। सायं छः बजे काम समाप्त किया गया। जब अगले दिन लकड़हारे काम कर रहे थे, फकीरचन्द अपना कार्यक्रम बना रहा था। अगले दिन उसने लकड़ी चीरने वालों को ढूँढ़ना आरम्भ कर दिया। इसके लिए उसको ललितपुर जाना पड़ा और वहाँ से आरे ले आया। उसने देवगढ़ के दो-तीन आदमियों को पेड़ चीरने के काम पर लगा दिया। पेड़ को चीरकर टुकड़े किए जाने लगे और फिर उनको छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा जाने लगा।

इस प्रकार एक मास तक काम चलता रहा। इस समय तक फकीरचन्द के पास एक अच्छा स्टॉक लकड़ी का जमा हो गया। काम करने वालों के वेतन का हिसाब किया गया। कुल वेतन एक सौ चालीस रुपये देना पड़ा। इस प्रकार दो सौ रुपये जमा पूँजी में से खर्च हो गए।

फकीरचन्द को इस बात का ज्ञान था कि उसके पास पूँजी कम है। इस कारण उसको लकड़ी बेचने की चिन्ता होने लगी। इसके लिए उसने गाँव के लकड़ी बेचने वाले से बात की, परन्तु वह नकद खरीद नहीं सकता था। उसका प्रस्ताव था कि अभी लकड़ी को सूखने दिया जाए और फिर ज्यों-ज्यों बिकती जाएँगी, वह दाम फकीरचन्द को देता जाएगा। यह बात फकीरचन्द की समझ में नहीं आई। वास्तव में गाँव में इस बात को समझने वाला कोई था ही नहीं कि पूर्ण जंगल गाँव वालों के पास बेचना होगा, तो वह सौ वर्ष में भी समाप्त नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। फकीरचन्द को गाँव के किसी आदमी से सहायता की आशा नहीं रही तो वह ललितपुर जा पहुँचा। वहाँ लकड़ी के कई थोक व्यापारियों से बात करने पर तीन व्यापारी देवगढ़ आकर लकड़ी को देखने के लिए तैयार हो गए।

व्यापारी यह बात भाँप गए थे कि फकीरचन्द को रुपये की जरूरत है। इस कारण वे माल बहुत ही सस्ते दामों पर पाने की आशा करके वहाँ आए थे। वे तीनों परस्पर मिल गए और माल का मूल्य गिराने का यत्न करने लगे। उन्होंने लकड़ी देखी और पाँच सौ रुपया मूल्य लगा दिया।

फकीरचन्द को इतने मूल्य की आशा नहीं थी। यद्यपि उसे लकड़ी के तोल का ठीक ज्ञान नहीं था, इस पर भी वह अपने खर्च से हिसाब लगाने लगा। उसका उस कटाई पर दो सौ रुपया खर्च आया था। घर के लिए जो उसने साठ रुपये खर्च किए थे, उसको वह अपना वेतन समझता था। एक सौ रुपया राजा साहब का भाग, इस प्रकार तीन-सौ तीस रुपये में बेच देने को तैयार था। अब व्यापारियों को उस लकड़ी का पाँच सौ रुपया मोल लगाते देख, वह अपनी गणना पर सन्देह करने लगा।

इसके साथ ही फकीरचन्द ने उनको इशारों से बातें करते देख लिया था। इससे वह सतर्क हो गया। उसने कह दिया, "आप मुझे बालक समझकर ऐसी बात कह रहे हैं। यह मूल्य बहुत कम है।"

"तो तुम बताओ कि कितना यह माल होगा और कितना इसका मूल्य तुम्हें चाहिए?"

"देखिए, मेरा इतना ज्ञान नहीं कि मैं इतना अनुमान लगा सकूँ। मुझको तो यह पता है कि मेरा इसपर कितना मूल्य लगा है और कितना मुझको मिलना चाहिए।"

"यही तो पूछ रहे हैं।"

फकीरचन्द ने कुछ विचार कर कहा, "यों तो इसका मूल्य डेढ़ हजार रुपये होना चाहिए, परन्तु मैं नकद रुपया चाहता हूँ, इस कारण एक सहस्र पर दे दूँगा।"

इसपर दुकानदार हँसने लगे। फकीरचन्द गम्भीर बना रहा। उससे व्यापारी भाव-ताव करने लगे। एक, जो उनमें सबसे बड़ी आयु का प्रतीत होता था, कहने लगा, "यह तो बहुत अधिक है बाबू! पचास-साठ और अधिक दे सकते हैं।"

इसपर फकीरचन्द ने कह दिया, "चलिए गाँव में। वहाँ माँ ने आपके लिए भोजन तैयार किया हुआ है, जिससे आप ढाई बजे की गाड़ी पकड़ सकें।"

दुकानदार इसका अर्थ समझने के लिए एक-दूसरे का मुख देखने लगे। फकीरचन्द समझा कि बात ठिकाने की हो गई है। वह गम्भीर बना हुआ देवगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर मुख कर खड़ा हो गया। बड़ी आयु वाला दुकानदार फिर कहने लगा, ''बाबू! एक बात बता दो कि कम-से कम कितना लोगे, जिससे समय व्यर्थ न जाए और हम घर लौट जाएँ।''

''आइए चलें। बात एक बार की जाती है, बार-बार नहीं। मैंने सब हिसाब लगाकर ही आपको मूल्य बताया था। मैं जानता हूँ कि यदि मेरे पास रुपया हो तो मैं लकड़ियों को छोटा चीला बनवा कर इसका ही दो हजार पैदा कर सकता हूँ। परन्तु मेरे पास न तो फालतू रुपया है और न ही समय। इस कारण आधा मूल्य ही बताया है।''

इस पर एक और बोल पड़ा, ''अच्छा सात सौ ले लो।''

फकीरचन्द समझ गया कि वे उसके दाम पर आ जाएँगे। इस कारण उसने कहा, ''देखिए, मैं व्यापारी नहीं हूँ। मैं भाव-ताव करना नहीं जानता। न ही मैं इस प्रकार के काम में समय गँवाना चाहता हूँ।''

सब लोग धीरे-धीरे गाँव की ओर चल पड़े। चलते हुए बड़ी आयु के दुकानदार ने फिर कहा, ''अच्छा, मैं अन्तिम बात कह देता हूँ। रुपया नौ सौ दे देंगे।''

फकीरचन्द समझ गया कि रुपया पाँच सौ से नौ सौ हो गया है इस कारण माल अवश्य हजार रुपये से अधिक का है। इस पर भी इस बार तो वह अपनी बात पर दृढ़ रहने में ही लाभ समझता था। उसने फिर कह दिया, ''मुझे जो कहना था, सो मैंने निवेदन कर दिया है। यदि स्वीकार हो तो लकड़ी पर सफेदी के निशान लगवा देता हूँ। माल तब उठाने दूँगा, जब रुपया दे दिया जाएगा।''

वे जंगल से आधा मार्ग गाँव की ओर आ चुके थे। एकाएक वही बड़ी आयु वाला खड़ा होकर और फकीरचन्द को रोककर कहने लगा, ''बाबू! ठहरो। हम तनिक पृथक् में बात कर लें।''

फकीरचन्द एक ओर हट गया और वे परस्पर कुछ फुस-फुस करने लगे। दो मिनट तक बात कर वे उसके पास आए और बोले, ''अच्छा, सारे जंगल का भाव कर लो। कटवाएँगे भी हम, चिरवाएँगे भी हम और यहाँ से उठवाकर भी हम ले जाएँगे। बताओ क्या लोगे!''

फकीरचन्द ने गाँव की ओर चलते हुए कहा, ''पहले एक बात का तो निर्णय होता नहीं। इतनी बड़ी बात का कैसे निर्णय हो जाएगा?''

''सारा सौदा एकदम करते हैं।''

''जी, नहीं; मैं एकदम सौदा करना नहीं चाहता। इतने माल का एक हजार रुपया देना हो तो बयाना दीजिए और बताइए, कब तक माल उठा लेंगे।''

''बहुत हठी हो, बाबू!''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसमें हठ की क्या बात है? यह मेरी माँग है। आप देना चाहते हैं, तो माल आपको मिलेगा। नहीं, तो मैं अन्य स्थान पर बेच दूँगा।"

"चलो छोड़ो। लिखत कहाँ होगी?" बड़ी आयु वाले ने कहा।

"गाँव चलकर। पाँच सौ इसी समय मिलना चाहिए। शेष पाँच सौ उस दिन, जिस दिन माल उठाना आरम्भ होगा।"

लकड़ी पर निशान तो आज ही लगाएँगे।"

"हाँ, यह अभी भोजन के पश्चात् हो जाएगा।"

इस प्रकार पहला सौदा फकीरचन्द ने अपने विचार में बहुत ही सन्तोषजनक किया। चौधरी रामहरष के सामने लिखत-पढ़त हो गई और व्यापारियों ने पाँच सौ रुपया फकीरचन्द को दे दिया।

भोजनोपरान्त फकीरचन्द पुनः व्यापारियों के साथ जंगल में गया और कटी लकड़ी पर निशान लगाकर, उनको स्टेशन पर छोड़ने चला गया। सायंकाल वह घर पहुँचा तो चौधरी ने कहा, "बाबू! व्यापारी तुमको लूटकर ले गए हैं।"

"सच चौधरी?" फकीरचन्द ने अविश्वास के भाव में पूछा।

"हाँ, माधो कह रहा था कि यह माल पाँच हजार का है।"

फकीरचन्द अभी तक यह समझ गया था कि चौधरी तो आलोचना करना जानता है। इस पर भी माधो की बात सुन उसने कहा, "चौधरी! जरा उसको बुलाओ तो।"

चौधरी ने माधो को बुला भेजा। जब वह आया तो कहने लगा, "बाबू! पाँच हजार नहीं तो चार हजार तो मैं दे देता। बात थी नकद देने की। वह मेरे पास था नहीं।"

इसपर फकीरचन्द को एक तरकीब सूझी। उसने कहा, "देखो माधो! तुम मेरी एजेण्टी कर लो। जिस भाव पर चाहो, माल बेचो, मैं तुमको पाँच आने मन दे दिया करूँगा। माल उठाकर तुमको ले जाना होगा। माल ललितपुर स्टेशन पर तोला हुआ मंजूर होगा। रुपया माल उठाने के एक मास के भीतर दे देना होगा।"

"स्वीकार है बाबू!" माधो ने कहा।

बात तय हो गई। फकीरचन्द को इससे यह सन्तोष था कि माल के तोलकर बिकने से किसी पक्ष को भी गिला नहीं रहेगा कि उसको हानि हुई है।

फकीरचन्द की माँ को इस सब सौदे से, जो ललितपुर के व्यापारियों के साथ हुआ था, कुछ दुःख हुआ था; परन्तु फकीरचन्द ने समझाया, "माँ! धोखा हो सकता है, परन्तु एक बात तो है कि मैंने जीवन में पहला सौदा किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा इस पर दो सौ रुपया खर्च हुआ था और राजा साहब का भाग एक सौ रुपये से अधिक नहीं हो सकता। इस प्रकार एक मास में मुझे सात सौ के लगभग लाभ हुआ है। मैं इससे सन्तुष्ट हूँ।''

माँ को संतोष हो गया। फकीरचन्द ने कहा, ''मुझको इन गाँव वालों पर बहुत अधिक विश्वास नहीं। विशेषरूप से चौधरी तो बातें बहुत बनाता है, परन्तु काम कुछ भी नहीं करता। इसपर भी मैं माधो इत्यादि को अवसर देना चाहता हूँ। वे यदि मेरे इस प्रयास से कुछ लाभ उठा सकें, तो मुझको प्रसन्नता होगी। यदि गाँव वाले कमाएँगे, तो भी मैं इसको अपना ही लाभ समझूँगा।''

दिन व्यतीत होने लगे। ललितपुर के व्यापारियों ने शेष रुपया देकर माल उठवा लिया। माल जिरौन स्टेशन पर वैगनों में लादते समय तुल गया और सब दो हजार मन निकला। इस प्रकार राजा साहब को सवा सौ रुपये देने पड़े। माधो ने जब यह बात सुनी तो उसे सन्देह हो गया कि बाबू उसको माल नहीं देगा। इस कारण वह चौधरी को लेकर उसके पास पहुँचा और बोला, ''बाबू! अब माल के विषय में क्या विचार है?''

''क्यों? वचन से भाग जाना चाहते हो?''

''नहीं बाबू! मैं समझता हूँ कि तुमको घाटा रहेगा।''

''माधो भैया! तुमको तो हानि नहीं होगी। जाओ माल बेच आओ। मेरी ओर से सौदा पक्का जानो।''

माधो को जहाँ विस्मय हुआ, वहाँ प्रसन्नता भी हुई। उसने कहा, ''बाबू! जुग-जुग जियो। वास्तव में मैं बीना में सौदा कर आया हूँ।''

''तो ठीक कर आए हो।''

फकीरचन्द के काम के कारण अब गाँव वालों को भी आय होने लगी थी। मजदूर, जो पहले दस-ग्यारह रुपया मासिक से अधिक पैदा नहीं कर सकते थे और वर्ष में कई-कई महीने खाली रहते थे, अब फकीरचन्द से बीस रुपये मासिक और बारह महीने का काम पा बहुत प्रसन्न थे। माधो के लकड़ी बेचने का ठेका ले लेने से गाँव में बैल-गाड़ियों को भी काम मिलने लगा। लकड़ी फाड़कर छोटा-छोटा चीला बनाने का काम करने के लिए बीसियों मजदूर काम करने लगे। ये माधो से ठेके पर काम लेते थे। दो पैसा मन चिराई दी जाती थी। माधो और चौधरी लकड़ी बेचने के काम में पत्तीदार हो गए। दोनों को भारी लाभ होने लगा।

दूसरी ओर फकीरचन्द के पास रुपया आने लगा। साथ ही राजा साहब के लिए आय का एक और स्रोत खुल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 9 :

जंगल कटवाना सुगम नहीं था, भारी परिश्रम की आवश्यकता थी। आरम्भ में तो फकीरचन्द का विचार था कि वह स्वयं भी कुल्हाड़ा लेकर काम करेगा, परन्तु एक-दो दिन में ही उसको पता चल गया था कि पेड़ काटने के अतिरिक्त और भी काम हैं, जो वहाँ करने के लिए हैं और वे काम अधिक आवश्यक हैं। इससे उसने लकड़हारे का काम छोड़कर, अब प्रबन्धक का काम करना आरम्भ कर दिया था।

नित्य प्रातःकाल लकड़हारों, आराकशों और मजदूरों को एकत्रित कर जंगल में लाना, वहाँ उनसे नियम से काम कराना, माल को ठीक ढंग से चिरवाना और फिर माधो और चौधरी से हिसाब-किताब करना, ये सब काम वह स्वयं करता था।

फकीरचन्द की माँ तीन महीने तक प्रबन्ध ठीक होता देख और वहाँ जीवन सुलभ होने की आशा बाँध लाहौर गई और घर का सामान कुछ बेच, कुछ बाँट और कुछ अपने साथ बाँध, रेल दारा बुक करवा वापस देवगढ़ आ गई।

बिहारीलाल गाँव के स्कूल में भर्ती हो गया था। खाली समय में वह घर का काम-काज करता था। माँ घर का प्रबन्ध करती थी। प्रातःकाल उठ स्नानादि से निवृत्त हो, फकीरचन्द को अल्पाहार करा, काम पर भेज देती थी। तदनन्तर पूजा समाप्त कर बिहारीलाल को खाना खिला स्कूल को तैयार कर देती थी। दोपहर के समय भोजन ले, फकीरचन्द को खिलाने जंगल में जाती थी। उसको खिला बर्तन लेकर वापस आ सूत कातती थी, कपड़े सीती थी और पहिनने के कपड़े धोती थी। सायंकाल बिहारीलाल और फकीरचन्द के आने से पहले भोजन तैयार कर रखती थी।

बिहारीलाल और फकीरचन्द को अपने पास बैठाकर खिलाती। मिट्टी के तेल के लैम्प के प्रकाश में बिहारीलाल अपना पाठ याद करता और फकीरचन्द दिनभर का हिसाब लिखता और अगले दिन का कार्यक्रम बनाता।

फकीरचन्द माँ को नित्य जंगल में रोटी देने आती देख दुःख अनुभव करता था। इस कारण उसने निश्चय कर लिया कि वह जंगल में ही मकान बनवा लेगा। एक दिन जब माँ उसे दोपहर का खाना खिलाने आई हुई थी, तो वह माँ को वहाँ ले गया, जहाँ उसने मकान के लिए भूमि छोड़ रखी थी। उसने माँ को बताया, ''माँ! यहाँ पर मैं अपना मकान बनवाना चाहता हूँ। मकान के सात कमरे होंगे, तीन बरामदे होंगे, रसोई, टट्टी, स्नानागार होगा। मकान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछवाड़े में कुआँ बनवाऊँगा और एक ओर फलों का बगीचा और फूलों का उद्यान होगा। उस ओर सब्जी के लिए एक खेत का प्रबन्ध कर रहा हूँ।''

माँ ने कहा, ''फकीर! हवाई किले नहीं बनाया करते। अपना ध्यान खेत तैयार करने में लगाओ। यह सब पीछे होता रहेगा।''

''होगा तो धीरे-धीरे ही; परन्तु विचार तो अभी से करना होगा। तुम नित्य दोपहर के समय इतनी धूप में खाना लेकर आती हो। यह ठीक नहीं। यहाँ मकान बन गया तो निस्सन्देह तुमको आराम मिलेगा।''

''मेरे आराम की बात छोड़ो। पाँच सौ एकड़ भूमि का ढाई हजार रुपया लगान देना पड़ेगा। इसका प्रबन्ध पहले होना चाहिए।''

''वह तो होगा ही माँ! उसके बिना काम कैसे चलेगा? माँ! जानती हो, इन पाँच महीनों में हमारे पास कितना रुपया जमा हो गया है? पाँच हजार; और अभी तो जंगल का छोटा-सा अंश ही कटा है।

''मैंने एक बात और की है। शहतूत, शीशम और नीम के पेड़ों को कटवा-कटवाकर मैं पृथक् रखता रहा हूँ। नदी के किनारे एक ऊँची जगह पर एक इंजिन और आरा-मशीन लगवा रहा हूँ। इस लकड़ी के तख्ते बनवाकर इमारती लकड़ी के रूप में बेचूँगा। इससे तो लाभ और भी अधिक होगा।

''इंजिन, जहाँ आरा चलाएगा, वहाँ खेतों में पानी भी देगा। साथ ही खाली समय में आटा पीसने की चक्की चलाएगा।''

''कितना रुपया लगेगा इसमें।''

''ढाई हजार इंजिन लगवाने में और दो हजार आरा-मशीन तथा चक्की लगवाने में। पाँच सौ रुपया पम्प में भी लगेगा। इस प्रकार पाँच हजार के लगभग व्यय हो जाएगा।''

''फकीर!'' माँ ने कहा, ''सोच-विचार कर आगे बढ़ो। ऐसा न हो कि वेग से भागते-भागते शीघ्र ही दम तोड़ दो।''

''माँ! मैंने सब गिनती-मिनती कर ली हैं। मुझको पूर्ण विश्वास है कि इंजिन लग जाने से इमारती लकड़ी तैयार होने लगेगी और खूब पैसा आने लगेगा।''

फकीरचन्द को एक गुर का पता चल गया था। वह समझ गया था कि रुपये को पूँजी का रूप देने से रुपया ही रुपया उगलता है। पूँजी से अपने परिश्रम के फल को कई गुणा अधिक किया जा सकता है। इससे धन मिलता है और उस धन को पुन: काम में लगाकर और अधिक धन पैदा किया जा सकता है।

इस कारण वह मजदूरों को काम पर लगा, उनकी मेहनत को संगठित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर, उनसे लाभ उठा रहा था। अब वह इस बात पर तुल गया था कि अपने मजदूरों की मेहनत को भी कई गुणा करने के लिए मशीनें लगाएगा। इसमें वह और भी अधिक आय होने की आशा करता था।

वह मजदूरों को प्रचलित वेतन से अधिक देता था। अधिक वेतन देने का अर्थ था मानो वह मशीन को तेल दे रहा है।

माँ की सूझ-बूझ इतनी दूर तक नहीं जाती थी, परन्तु काम होता और रुपया आता देख, लड़के के काम में हस्तक्षेप करने का कोई कारण नहीं पाती थी।

एक वर्ष व्यतीत होने तक पचास एकड़ भूमि खेती योग्य हो गई थी। नदी पर इंजिन तथा आरा लग चुका था। पम्प के लिए आर्डर दिया जा चुका था और कुछ ही दिनों में लगने वाला था।

फकीरचन्द ने एक वर्ष का हिसाब बनाया और माँ को सुनाने चला आया। उसने बताया, ''माँ! कल हमको काम का मुहूर्त किए एक वर्ष हो चुका है। इतनी अवधि में हमने पर्याप्त उन्नति की है। अतः भगवान् का धन्यवाद करना चाहता हूँ। कल मैं मकान की नींव रखवा इस काम का नया अध्याय आरम्भ करूँगा।''

माँ ने कुछ विचारकर कहा, ''कितना लाभ हुआ है तुमको एक वर्ष में?''

''माँ! मैंने हिसाब बनाया है। हमने छः सौ रुपये की पूँजी से काम आरम्भ किया था। अब वह बीस हजार से ऊपर हो गई है। अर्थात् उन्नीस हजार से ऊपर आय हुई है। इसमें वह धन सम्मिलित नहीं, जो हम अपने खाने-पीने के लिए निकाल चुके हैं।''

माँ ने यह आँकड़े सुनकर संतोष अनुभव किया और कहा, ''कुछ धर्म-कर्म भी तो करना चाहिए।''

''हाँ, बताओ माँ! क्या करूँ?''

''जो कहूँगी, मानोगे न?''

''माँ ये खेत तुम्हारे हैं, इनकी आय तुम्हारी है, मैं भी तो तुम्हारा ही पुत्र हूँ। भला तुम्हारी बात नहीं मानूँगा तो किसकी मानूँगा?''

''मेरा मन कहता है कि एक दिन काम पर छुट्टी करो। सब काम करने वालों को और उनकी पत्नियों तथा बच्चों को कपड़े बाँटो और प्रत्येक वयस्क को बीस-बीस रुपये और अल्पायु वालों को दस-दस रुपये भत्ता दो। सबको घर बुलाकर भोजन कराओ और मिठाई बाँटो। इसके अतिरिक्त स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को छात्र-वृत्ति देने के लिए तीन हजार पृथक् रख दो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बस? यह तो कुछ भी नहीं माँ! तुमने कैसे समझ लिया कि मैं इतना भी नहीं करूँगा?"

"कल प्रातःकाल मकान की नींव रखो और उस अवसर पर पण्डित को दान-दक्षिणा दो।"

"और कुछ?"

"अपने मकान का नाम अपने पिताजी के नाम पर रखो।"

इस प्रकार मकान की नींव रखकर, फार्म की वर्षगाँठ मनाने का निश्चय हो गया। उसी दिन काम पर जाकर फकीरचन्द ने सभी काम करने वालों के घर वालों की गणना करनी आरम्भ कर दी। वह जानना चाहता था कि कितना कपड़ा और कितना रुपया व्यय होगा। साथ ही वह यह जानना चाहता था कितने लोग भोजन करने वाले होंगे। एक-एक कर्मचारी को वह बुलाता और उससे विवरण लिखता जाता। एक मजदूर से उसने पूछा—

"क्या नाम है?"

"मनोहर।" उसने उत्तर दिया।

"विवाह हुआ है अथवा नहीं?"

उत्तर देने वाला विस्मय में मुख देखता रह गया। फकीरचन्द को उत्तर की प्रतीक्षा करते देख बोला, "हाँ बाबू! पाँच बच्चे हैं, दो लड़के, तीन लड़कियाँ।"

"सब की आयु लिखवाओ।"

"क्या बात है बाबू?"

"कल बताऊँगा।"

कर्मचारी ने बता दिया, बड़ा लड़का बीस वर्ष का है। उसका विवाह हो चुका है और उसका एक वर्ष का लड़का भी है। तीन लड़कियाँ हैं, एक की आयु अठारह वर्ष की है, दूसरी की पन्द्रह वर्ष और तीसरी की बारह वर्ष। बड़ी का विवाह अगले मास होने वाला है। अन्य दोनों स्कूल में पढ़ती हैं। सबसे छोटा लड़का नौ वर्ष का है और स्कूल में पढ़ता है।"

"अच्छा, कल काम पर छुट्टी है। माँ ने तुमको, तुम्हारी पत्नी, पतोहू और सब बच्चों को निमन्त्रण दिया है। कल बारह बजे भोज होगा।"

"क्या है बाबू?"

"यह माँ से पूछना।"

"तुम्हारा विवाह होने वाला है क्या?"

"क्या होने वाला है कल पता चल जाएगा।"

इस प्रकार वह सब कर्मचारियों के विषय में पूरी जानकारी लिखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीस वयस्क व्यक्ति थे, जिनको सपरिवार निमन्त्रण दिया गया था। पचास बच्चे थे। इन सब को देने के लिए उसने कपड़ों का, रुपयों का और भोज के सामान का हिसाब लिख लिया। अगले दिन फकीरचन्द की माँ के घर हलवाई लग गए और पूरी-हलुवा, शाक, भाजी, मिठाई आदि बनने लगा। प्रात:काल मकान की नींव रखी गई और पण्डित को दान-दक्षिणा तथा रेशमी वस्त्र दिए गए। मध्याह्न के समय उसके यहाँ काम करने वाले तथा उनके बाल-बच्चे और अन्य गाँव के आदमी, जिनसे फकीरचन्द का किसी प्रकार का भी सम्बन्ध था, एकत्रित हो गए और सबको पेट-भर खाना दिया गया।

जब सब खा चुके और सबको वस्त्र तथा रुपये मिल चुके तो फकीरचन्द की माँ ने उनको उस दिन के आयोजन का उद्देश्य बताया। उसने कहा, "आज हमको जंगल में काम आरम्भ किए एक वर्ष हुआ है। इस दिन हमने भगवान् का नाम लेकर धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की थी। ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान ने हमारी सुन ली है। उसने ही हमको पुरुषार्थ करने के लिए उत्साह दिया और फिर उस उत्साह का फल दिया है।

"मैंने भगवान् से उन सब के लिए, जो हमारे खेतों में काम करने आए थे अथवा आने वाले हैं, प्रार्थना की थी। अत: जब भगवान् ने हम सब के प्रयत्न का फल देना आरम्भ किया है, तो आपको उस फल के भोग करने के लिए निमन्त्रण दिया है।

"आज आप सबकी ओर से और अपनी ओर से मैं पुन: परमात्मा से कर-बद्ध प्रार्थना करती हूँ कि वे हम में भला-बुरा पहचानने की बुद्धि दें, काम करने की शक्ति दें, सुख-दु:ख सहन करने की क्षमता दें और सबके कल्याण की भावना दें।"

सब कर्मचारी प्रसन्न हो अति संतुष्ट मन अपने-अपने घरों को लौट गए। जब सब लोग चले गए तो फकीरचन्द ने माँ के पास जाकर कहा, "माँ, तुमने तो बहुत अच्छा भाषण दे डाला। सब लोग तुम्हारे व्यवहार और बातों से संतुष्ट होकर गए हैं।"

"बेटा!" रामरखी ने कहा, "तुम्हारे पिता के देहान्त के पश्चात् जब मैं कपड़ा सीने की मशीन लाई थी और उसपर काम प्रारम्भ करने लगी थी, तो तुम्हारे सिर पर हाथ रखकर यह सौगन्ध खाई थी कि तुमको धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष, सबकी प्राप्ति में लीन करने के लिए यत्नशील रहूँगी। इस कारण जब तुमने बताया कि तुमको इस काम में इतना लाभ हुआ है, तो स्वाभाविक रूप में मुझको अपने बचपन की याद आ गई और मैंने तुमको काम की प्राप्ति के लिए संलग्न करने से पूर्व पुन: धर्म का स्मरण कराया है। मुझे इन निर्धन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहयोगियों को प्रसन्न और सन्तुष्ट करने से अधिक धर्म का कोई काम सूझ नहीं पड़ा। इस कारण अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार मैंने आज के इस आयोजन का विचार कर लिया।

"भगवान् तुमको सौ गुणा अधिक दे और तुम सौ गुणा ही अधिक अपने आस-पास निर्धन तथा असहाय लोगों के सहायक बने रहो।"

"माँ! एक बात मैं भी तुमसे कहने वाला था। मैं समझता हूँ कि तुम अस्वीकार नहीं करोगी।"

"अस्वीकार क्यों करूँगी?"

"तो माँ! यह लो। यह मैं तुमको अपनी कमाई में से दे रहा हूँ।" इतना कह उसने एक स्वर्ण कंगन अपनी जेब में से निकाल माँ के सामने रख दिया।

"माँ! यह तुम पहन लो। पिताजी की बीमारी में तुम्हारे सब आभूषण बिक गए थे। वे सब तो लाकर देने की मुझ में सामर्थ्य नहीं है। मैं तो केवल यह ही दे सकता हूँ।"

माँ विस्मय में देखती रह गई। उसके मन में अनेकानेक भावनाएँ और कामनाएँ उत्पन्न होने लगीं। उसने विचार कर मुस्कराते हुए कहा, "बेटा! मैं यह पहनती, जब तुम्हारा विवाह होता। अब तुम कहते हो तो अस्वीकार नहीं कर सकती।" इतना कह उसने वह कंगन पहन लिया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे थे।

: 10 :

फकीरचन्द की माँ द्वारा दिए गए इस भोज से सब प्रसन्न ही हुए हों, ऐसा नहीं था। कर्मचारियों की संख्या तो बहुत ही कम थी। उनके अतिरिक्त गाँव में बहुत लोग थे, जिनको इस आयोजन से लाभ नहीं हुआ था। उनमें इस परिवार को उन्नति करते देख कुछ तो प्रसन्न थे, कुछ अलिप्त थे और कुछ ऐसे भी थे जो ईर्ष्या करते थे। इन ईर्ष्या करने वालों में एक-दो ऐसे भी थे, जो ईर्ष्या के साथ द्वेष भी करने लगे थे।

जब फकीरचन्द की माँ यह सब आयोजन कर रही थी, गाँव में एक आदमी के सीने में साँप लोट रहा था। पण्डित मंगतराम का एक पुत्र शेषराम तो फकीरचन्द की नौकरी में था और दूसरा पुत्र द्वेष की अग्नि से जल रहा था। ऐसा क्यों था, कहना कठिन है। वास्तव में दुर्जन के कामों में कारण ढूँढ़ना अति कठिन होता है।

पण्डित मंगतराम था तो ब्राह्मण, परन्तु उसके बड़े कई पीढ़ियों से पुरोहिताई छोड़ कृषक का कार्य करने लगे थे। एक छोटा-सा खेत था, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगतराम के भाग में आया था। इतने खेत में निर्वाह होना कठिन था। साथ ही इतने खेत में एक युवक पुरुष के लिए भी पर्याप्त काम नहीं था।

मंगतराम के दो लड़के और एक लड़की थी। बड़े लड़के का नाम मोतीराम था। जब वह तेरह वर्ष का हुआ और खाने-पहिनने को उसका शरीर माँगने लगा तो वह आस-पड़ोस वालों का धन-माल उठा-उठाकर प्रयोग में लाने लगा। कभी किसी के खेत से गाजर-मूली उखाड़ लाता और कभी कोई वस्तु मिल जाती तो उठा लाता और उससे अपना काम निकालता। इसपर भी उसका काम नहीं चलता था। अतः एक दिन वह घर छोड़ पैदल ही ललितपुर को चल पड़ा।

उसके चले जाने पर मंगतराम को और उसकी पत्नी सौभाग्यवती को बहुत दुःख हुआ था, परन्तु एक जीव के पालन-पोषण के भार से मुक्ति मिल जाने पर वे शीघ्र ही सन्तोष कर शान्त हो गए।

मोतीराम को घर से गए तीन वर्ष हो चुके थे कि वह एकाएक ही घर लौट आया। पूछने पर उसने बताया, "बाबा! तुम्हारे घर में तो पेट-भर खाने को भी नहीं मिलता था। इस कारण खाने-पहनने का प्रबन्ध करने चल पड़ा था, परन्तु यहाँ से जाने के एक मास के भीतर ही पुलिस ने पकड़कर जेल में डाल दिया। जेल में उन्होंने मुझको दरी बुनने का काम सिखाया है और अब मैं दरी बुनने का काम करने के लिए गाँव में आया हूँ।"

"कब से काम आरम्भ करोगे?"

"काम आरम्भ करने के लिए दो सौ रुपये चाहिएँ, जिससे कर्घा, सूत और अन्य सामान ला सकूँ।"

"तो यह दो सौ रुपया कहाँ से आएगा?"

"बाबा! तुम दोगे। तुमने मुझको जन्म दिया है, तो क्या यह दो सौ रुपया भी नहीं दोगे?"

"मेरे पास तो है नहीं।"

"तो किसी से ऋण ले दो।"

"ऋण कौन देगा?"

इस बात को सुन मोतीराम बहुत परेशान हुआ। आखिर स्वभाववश दो सौ रुपया उसने चुराकर पैदा करने का विचार किया। तीन वर्ष जेल में रहने के कारण वह अब पहले की भाँति सरल-चित्त चोर नहीं रहा था। वह जानता था कि वह गाँव में तीन वर्ष पश्चात् आया है और यदि आते ही किसी के घर चोरी हो गई तो पुलिस तथा और लोगों को उस पर ही सन्देह होगा और वह पकड़ा जाएगा। इस कारण वह विचार करता था कि चोरी करनी है तो किसी दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर में जाकर करनी चाहिए। ऐसा विचार कर वह पुन: घर से निकल गया। इस बार गया तो वह पाँच वर्ष के पश्चात् लौटा। इस समय तक उसकी बहिन का विवाह हो चुका था। विवाह होने के पश्चात् उसके बच्चा हुआ और उसका घरवाला, उसको वहीं घर में छोड़ नौकरी करने बम्बई चला गया। वहाँ उसको साठ रुपये महीना मिलते थे, जिसमें से बीस रुपया वह अपनी पत्नी और बच्चे के लिए घर भेज देता था।

मोतीराम का छोटा भाई शेषराम गाँव में ही था और एक वर्ष से फकीरचन्द के पास नौकर हो गया था। शेषराम समझदार और परिश्रमी मजदूर था। कुछ मास तक उसका काम देखने पर फकीरचन्द ने उसको अन्य मजदूरों पर मेट बना दिया। वह उन सबसे काम करवाता था।

फकीरचन्द की माँ द्वारा दिए भोज के केवल दो दिन पूर्व मोतीराम लौटा था। इस बार वह अपने साथ पाँच हजार से ऊपर रुपये लाया था। मंगतराम ने पूछा, ''मोतीराम! इतना रुपया कहाँ से मिला?''

उसने झूठ बोल दिया। उसने कहा, ''बाबा! कमाकर लाया हूँ। अब तुम मेरा विवाह कर दो, जिससे सुखपूर्वक जीवन चल सके।''

मंगतराम इससे अति प्रसन्न हुआ।

पहले ही दिन मोतीराम ने शेषराम को काम पर जाते देख पूछ लिया, ''कहाँ काम करते हो?''

''एक पंजाबी ने राजा साहब के जंगल का पट्टा लिया है और वह जंगल कटवाकर बेच रहा है। उसने मुझको मजदूरों से काम करवाने पर लगाया हुआ है। तीस रुपये महीना देता है।''

''बस? यह तो कुछ नहीं।''

''पर दादा! यहाँ तो मुझको तीस छोड़ बीस रुपये भी देने वाला कोई नहीं। जब से मैं नौकर हुआ हूँ घर पर सुख से रोटी मिलने लगी है। उससे पहिले तो हम दान-भिक्षा ले-लेकर ही पेट पालते थे।''

''पर शेष! यह तीस रुपये तो बहुत कम हैं। कम-से-कम पचास होने चाहिएँ।''

''दादा! तुम बताओ। तुमने पाँच वर्ष में पाँच हजार कैसे कमा लिया है? तुम कुछ करना-धरना तो जानते नहीं।''

मोतीराम हँस पड़ा और कहने लगा, ''मेहनत-मजदूरी से तो इतना कुछ मिल नहीं सकता। जानते हो गिरधारी बम्बई में साठ रुपये कमाता है और चालीस आप ही खर्च कर जाता है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वह अब जीते-जी घर लौटकर नहीं आ सकता।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो फिर धन कैसे कमाया जा सकता है ?"

"जैसे धनी लोग कमाते हैं। थोड़ी चतुराई से दूसरों के परिश्रम का मूल्य अपनी जेब में डाल लेने से।"

"तो तुमने यह भी चोरी किया है ?"

"यह चोरी कैसे हो गई ? बम्बई में एक करोड़ीमल है। उसकी बहुत बड़ी ऊन की कोठी है। किसान ऊन लेकर आते हैं और सेठ रुपये के माल के दो आने देकर उनको टाल देता है। इस प्रकार वह करोडों रुपयों का मालिक बन गया है। मैंने उसके साथ वही किया, जो वह दूसरों के साथ करता है। उसके यहाँ नौकरी कर ली। एक दिन उसने मुझको पाँच हजार का चेक देकर बैंक से रुपया निकालने के लिए भेजा और मेरे साथ एक नैपाली चौकीदार भेज दिया।

"नैपाली बहुत ही ईमानदार और मूर्ख होते हैं। वे चालीस-पचास रुपये महीने पर अपने मालिक के लिए जान तक दे देते हैं।

"जब चेक मेरे हाथ में आया, तो मैंने रुपया उड़ा लेने की तरकीब सोच ली। हम दोनों बैंक में गए। वहाँ रुपया लेने वालों की भारी भीड़ थी। मैंने चेक दिया और टोकन ले नैपाली को बैंक के बाहर ले आया। हम दोनों बाहर दरवाजे पर बैठ गए और चेक पास होने की प्रतीक्षा करने लगे। इसमें आधा घण्टा लगा। नैपाली को मैंने अपने पास से चाय पिलाई और उसको बैंक के बाहर बैठा, स्वयं भीतर जा, रुपया ले, बैंक के दूसरे दरवाजे से निकल गया। मैंने रुपया एक डिब्बे में बन्द कर, कोठरी, जिसमें मैं रहता था, के एक कोने की भूमि में गाड़ दिया।

तत्पश्चात् मैं सेठजी के पास चला गया, मैंने जाकर कहा, "सेठ जी! रुपया तो कोई हाथ से छीनकर ले गया।"

"मेरे पहुँचने से पहले नैपाली वहाँ पहुँच चुका था और पुलिस में रिपोर्ट लिखाई जा चुकी थी। मेरे पहुँचते ही पुलिस को बुलाकर मेरा चोरी करने के अपराध में चालान कर दिया गया।

"पहले तो मैं टाल-मटोल करता रहा; फिर मुझे खूब पीटा गया, इस पर भी मैंने कुछ नहीं बताया। मुझको चोरी के आरोप में तीन वर्ष का कठोर दण्ड हुआ।

"तीन वर्ष दण्ड भोगकर मैंने रुपया निकालने का यत्न किया। जिस कोठरी में मैं रहता था उसमें अब एक अन्य नौकर रहने लगा था। मैंने उससे मित्रता कर ली और एक दिन उसको शराबखाने में ले जाकर खूब शराब पिलाई। उसको वहीं बेहोश छोड़ मैं उसकी कोठरी पर जा पहुँचा। चाबी मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी जेब में से निकाल ली थी। भूमि खोद, डिब्बा निकाल, पाँच हजार के नोट लेकर यहाँ चला आया हूँ।''

शेषराम को धन कमाने की यह विधि पसन्द नहीं आई। इसपर मोतीराम ने कहा, ''जेल में अनपढ़ कैदियों को पढ़ाने के लिए एक बाबू सूर्यकान्त था। वह बम्बई में एक कपड़ा मिल में हड़ताल के समय मैनेजर का गला घोंटकर मार देने के अपराध में पाँच वर्ष का कठोर दण्ड भोग रहा था। वहाँ उसको कैदियों को पढ़ाने पर लगाया हुआ था। मैं भी उससे पढ़ता रहा। यह उसका मत है कि आज संसार में चोर और ठगों का राज्य है। ये सब धनी आदमी पक्के चोर हैं, इनका रुपया लेना कोई चोरी नहीं। इस कारण यह रुपया मैं अपना समझता हूँ।''

''पर दादा! यह चोरी है। कानून से वर्जित है।''

''कानून भी चोरों का बनाया हुआ है। मैं ऐसे कानून को कानून नहीं मानता।''

''मानो न मानो, पर दण्ड के भागी तो बन ही जाओगे।''

''मैं अब पहले से अधिक अनुभवी हो गया हूँ। पहली बार मैंने एक खुली दुकान पर से रुपया उठाने का यत्न किया था। रुपया भी नहीं मिला और पकड़ा भी गया। दूसरी बार मैंने कुछ चतुराई से काम लिया। परिणाम यह हुआ है कि पकड़ा तो गया, परन्तु रुपया मिल गया। अब भविष्य में मैं ऐसा प्रबन्ध करना चाहता हूँ कि रुपया भी पा जाऊँ और पकड़ा भी न जाऊँ। अर्थात् मैं उन सब धनियों की भाँति हो जाऊँ, जो दूसरों के भाग का धन चुराते तो हैं परन्तु पकड़े नहीं जाते।''

शेषराम एक सरल-चित्त मजदूर था। वह इस प्रकार के प्रलोभन की बात सुनकर भौंचक्क रह गया। इसपर भी उसको कुछ भीतर-ही-भीतर भय लगता था। उसकी अन्तरात्मा कहती थी कि यह ठीक नहीं है, यह ठीक नहीं हो सकता।

: 11 :

फकीरचन्द के काम की वर्षगाँठ के निमन्त्रण में प्राप्त कपड़ों की गठरी और हाथ में दो दस-दस रुपये के नोट लिये हुए जब शेषराम घर पहुँचा तो मोतीराम द्वार पर बैठा सिगरेट पी रहा था। उसने शेषराम से पूछा, ''यह क्या है?''

''बाबूजी की माता ने भोज दिया था और साथ में ये रुपये तथा कपड़े भी दिए हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दिखाओ तो क्या कपड़े हैं?"

शेषराम ने दिखाए। एक धोती थी और कुर्ते के लिए कपड़ा था। पाँच रुपये की लागत के कपड़े होंगे। उनको देख मोतीराम ने नाक चढ़ाकर कहा, "बस? पचीस रुपये में खरीद लिया।"

"खरीद लिया? खरीदना कैसा?" शेषराम ने विस्मय में अपने भाई का मुख देखते हुए पूछा।

भीतर से उसकी माँ और पिता भी आ गए। वे भी कपड़े देखने लगे। शेषराम ने कहा, "भैया! यह तो पुरस्कार है।"

मोतीराम नाक चढ़ाकर दूसरी ओर देखने लगा। इसपर माँ ने कहा, "मोती! तुम भी बाबू की नौकरी कर लो तो ठीक रहेगा।"

"न माँ! एक रुपया नित्य पर मैं अपनी जान घोलकर नहीं दे सकता। यह नौ घण्टे काम करता है और मिलता है एक रुपया।"

"पर इससे अधिक कहाँ मिल सकता है?"

"इसका अभिप्राय यह थोड़े ही है कि मैं अपना मूल्य कम कर लूँ?"

शेषराम की समझ में यह युक्ति नहीं आई। इसपर भी उसने कहा, "भैया! एक रुपया नित्य घर में आने से हमारी हालत बहुत सुधर गई है। मैं तो जीजाजी को भी लिखने वाला हूँ कि वे यहाँ आ जाएँ और मैं बाबू से कहकर, उनको भी काम दिलवा दूँगा।"

"वह भी तुम्हारी तरह दिनभर कोल्हू के बैल की भाँति जुट जायगा।"

"पर तुमने ही तो कहा था कि वहाँ वह बहुत दुःखी है।"

"वह इस कारण कि वहाँ उसको वेतन बहुत कम मिलता है।"

"पर देखो न, मैं तीस रुपये लाता हूँ तो आनन्द से परिवार भर को खाना मिलता है। वह यहाँ आ जायगा तो बहिन सुखी हो जायगी।"

इसका उत्तर मोतीराम के पास नहीं था। बात समाप्त हो गई। इसपर भी मोतीराम नौकरी करने नहीं गया। मोतीराम मन-ही-मन सोच रहा था कि इस पंजाबी ने गाँव वालों की भूमि पर अधिकार कर गुलछर्रे उड़ाने आरम्भ कर दिए है। अतः इसको यहाँ से निकालना चाहिए। वह इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगा था।

एक दिन शेषराम ने फकीरचन्द से कहा, "बाबू! मेरा एक बहनोई है। वह बम्बई में नौकरी करने गया हुआ है और चार वर्ष से घर नहीं आया। उसको वहाँ साठ रुपये महीना मिलते हैं। बीस रुपये महीना वह बहिन को भेज देता है और शेष चालीस में बहुत कठिनाई से गुजर कर रहा है। उसके पास तो यहाँ आने तक के लिए खर्चा नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहिन बहुत दुःखी है। कोई उपाय बताओ कि क्या किया जाय?"

फकीरचन्द ने विचार कर कहा, "एक औरत के लिए बीस रुपये बहुत हैं। उसको अपने रुपयों में से कुछ-न-कुछ बचा लेना चाहिए था।"

"बहिन का एक बच्चा भी है। वह इस समय पाँच वर्ष का है। स्कूल में जाता है। इस कारण उसके पास कुछ बचता नहीं। कुछ होगा भी तो मैं जानता नहीं।"

"देखो शेष! मैं तुमको दस-बीस रुपये दे सकता हूँ, जिससे तुम्हारा बहनोई यहाँ आ जाय, परन्तु यह शोभाजनक नहीं। मेरा कहा मानो तो तुम अपनी बहिन को मेरी माँ के पास भेज दो। माँ कल कह रही थी कि उनको घर का काम-काज करने वाली एक औरत चाहिए, जो गाय की सानी, दूध दुहना, घर की लीपा-पोती आदि कर सके। माँ उसको पाँच रुपया महीना और रोटी-कपड़ा देगी। इस प्रकार उसके पास शीघ्र ही अपने पति को बुलाने के लिए रुपये हो जाएँगे।"

"जब वह यहाँ आएँगे, तो आप उनको काम पर लगा लेंगे क्या?"

"काम तो मेरे पास है। इस वर्ष खेत भी तैयार हो रहे हैं। मैं कुछ को तो बोऊँ-काटूँगा। करना चाहेगा तो उसको काम मिल जायगा।"

शेषराम इससे सन्तुष्ट था। जंगल से लौट वह सीधा बहिन के घर गया और उसने बहिन को फकीरचन्द का प्रस्ताव सुना दिया। शेषराम की बहिन मीना गम्भीर विचार में पड़ गई। उसे चुप देख शेषराम ने पूछा, "क्यों, क्या विचार कर रही हो?"

"यही कि गाँव में निन्दा होने लगेगी।"

शेषराम का इस ओर तो ध्यान गया ही नहीं था। वह जानता था कि बाबू फकीरचन्द बहुत ही भला आदमी है। परन्तु लोग क्या कहेंगे, यह भी विचारणीय बात थी। शेषराम ने कहा, "मीना! बाबू बहुत अच्छा आदमी है। उसकी माँ भी देवी है। अतः मुझे तो कोई निन्दा की बात प्रतीत नहीं होती। फिर भी तुम माँ से राय कर लो।"

मीना अपनी माँ के घर गई और शेषराम की बात बताकर पूछने लगी, "माँ! क्या कहती हो तुम?"

मोतीराम समीप बैठा मीना की बात सुन रहा था। माँ के कुछ कहने से पूर्व ही वह बोला, "नहीं मीना! यह नहीं होगा। हमारे घर की लड़कियाँ पंजाबी के घर नौकरी नहीं करेंगी।"

"परन्तु भैया! वह खाने को देगा और वेतन भी। साथ ही दिनभर तो वह जंगल में रहता है। रात को मैं अपने घर आ जाया करूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम अपना मुख काला करोगी और हमको भी बदनाम करोगी।"

मीना मौन रही। और तो और, उसके भाई को भी उसपर विश्वास नहीं था। इससे वह मन मसोसकर उठ, अपने घर चली गई। शेषराम अपने बड़े भाई का कथन सुन इस समस्या का सुझाव ढूँढ़ रहा था। उस समय तो वह चुप रहा, परन्तु रात को खाना खा मोतीराम जब सिगरेट पीने बाजार को गया तो उसने अपने पिता को कहा, "मोतीराम तो बहिन की दुर्दशा करके छोड़ेगा। मैं चाहता हूँ कि जीजा जी को किसी-न-किसी प्रकार यहाँ बुला लूँ। अतः मैं वह बीस रुपये, जो बाबू ने उस दिन दिए थे, उसको भेज रहा हूँ और उसको लिख देना चाहता हूँ कि एक बार वह यहाँ आ जाय। पीछे आवश्यकता होने पर वह फिर बम्बई लौट सकता है। मैं तो समझता हूँ कि बाबू उसको यहाँ ही काम दे देगा।"

शेषराम ने अगले दिन अपने जीजा को बीस रुपये मनीआर्डर द्वारा भेज दिए और नीचे कूपन पर लिख दिया कि रुपये उसको रेलगाड़ी के टिकट के लिए भेजे जाते हैं। वह शीघ्रातिशीघ्र यहाँ चला आवे।

यह बात न तो मोतीराम को बताई गई और न ही मीना को। मीना तो मोतीराम के कटु वचन सुन, मन मारकर घर में ही बैठी रह गई। वह फकीरचन्द की माँ से मिलने का विचार छोड़, अपने पति के घर लौटने की आशा को भी सदा के लिए छोड़ बैठी थी।

मोतीराम को इस बात से क्रोध चढ़ आया कि फकीरचन्द ने एक ब्राह्मण की लड़की को घर के काम-काज के लिए नौकरी करने के लिए कहा है। वह समझता था कि इस नौकरी के लिए निमंत्रण मात्र से ही उसके परिवार का अपमान हो गया है। अगले दिन वह चौधरी रामहरष के पास गया और बाबू फकीरचन्द की निन्दा करने लगा। उसने चौधरी के सामने भूमि पर बैठते हुए कहा, "चौधरी! अब तो यह पंजाबी बाबू फकीरचन्द गाँव की बहू-बेटियों का अपमान करने लगा है।"

चौधरी को इस बात से विस्मय हुआ। उसका फकीरचन्द से घनिष्ट परिचय था। साथ ही वह उसका आभारी भी था। उसके कारण ही उसे हजारों रुपये की आय हो रही थी। उसे मोतीराम की बात पर विश्वास नहीं आया। उसने पूछा, "क्या कहते हो मोतीराम.? किस औरत का अपमान किया है बाबू ने।"

"मेरी बहिन का?"

"मीना का? उस बिचारी से क्या लेना है बाबू ने? क्या मीना ने स्वयं कहा है तुमसे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"फकीरचन्द ने शेषराम के हाथ कहला भेजा है कि मीना उसके घर नौकरी कर ले।"

चौधरी ने पूछा, "नौकरी कहा है या कुछ और भी?"

"कहा तो नौकरी के लिए ही है, परन्तु चौधरी! एक युवा औरत को, जिसका पति परदेश गया हो, एक युवक की ओर से निमंत्रण एक ही अर्थ रखता है। मैं इस पजाबी को मार डालूँगा।"

चौधरी ने हँसते हुए कहा, "इससे अपमान बढ़ेगा अथवा कम होगा? मान लो कि फकीरचन्द की नीयत में फर्क है। अभी खराबी तो कुछ भी नहीं हुई प्रतीत होती है। इसपर भी मार डालोगे तो सभी, विशेष रूप में तुम्हारा जीजा तो यही समझेगा कि खराबी हो चुकी है। इससे तुम फाँसी पर लटकोगे और बहन को तुम्हारा जीजा छोड़ देगा। उसके लड़के की तो जिन्दगी ही खराब हो जायगी।

"देखो, मेरा कहा मानो। जाकर मीना को कह दो कि नौकरी करने न जाय। साथ ही अपने जीजाजी को घर बुला लो। बहुत देर से पति के वियोग में तड़प रही होगी।"

"पर उसने ऐसी बात मन में विचारी ही क्यों?"

"नौकरी के लिए कहना बिना इस विचार के भी हो सकता है। तुम उसके मन की बात का अनुमान ही तो लगाते हो न? पक्की बात कोई नहीं कह सकता। तुम उस बिचारी के पति को घर पर बुलाते क्यों नहीं?"

"उसके पास बचता तो कुछ है नहीं। वह कैसे आ सकता है?"

"तुम्हारे पास जो पाँच हजार रुपया बच गया है, उसमें से बीस-तीस भेज दो न। देखो, मैं तुमको एक बात और कहता हूँ। तुम्हारे पास पाँच हजार रुपया है। चलो राजा साहब से नदी पार की दो सौ एकड़ भूमि का किता हम पट्टे पर ले लें। तुम रुपया लगाना और मैं काम करूँगा, लाभ आधा-आधा रहेगा।"

मोतीराम की समझ में प्रस्ताव आ गया। वह जानता था कि उससे काम नहीं हो सकता। चौधरी काम करेगा और फल दोनों को मिलेगा। परन्तु अभी भी फकीरचन्द के प्रति उसकी घृणा कम नहीं हुई थी। उसने कह दिया, "फकीरचन्द वाला किता क्यों न ले लें?"

"भाई! यह कैसे हो सकता? इस भूमि का पट्टा हो चुका है। सुना है राजा साहब ने कह दिया है कि वे न तो पट्टा तोड़ना चाहते हैं और न तोड़ सकते हैं।"

"तो क्या तुमने यत्न किया था?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं! बम्बई का एक सेठ करोड़ीमल भूमि लेने आया था और फकीरचन्द वाली भूमि चाहता था। राजा साहब नहीं माने।"

"करोड़ीमल इस भूमि के लिए आया था। कैसे जानते हो"

"राजा साहब का मुंशी जंगल की लकड़ी का हिसाब लेने यहाँ आया करता है। एक बार उसने बताया था। उसका कहना था कि राजा साहब फकीरचन्द के काम से सन्तुष्ट हैं।"

"चौधरी! मैं तो यही किता लूँगा, नदी के पार वाले किते में इतनी लकड़ी नहीं जितनी इधर है। साथ ही मैं परदेशी को इस गाँव से भगा देना चाहता हूँ।"

"देखो मोतीराम! नदी के इस पार वाली भूमि से तो लकड़ी बहुत कुछ कट चुकी है। उसमें व्यर्थ के झगड़े में समय गँवाने की बात है। झगड़ा समाप्त होने तक शेष लकड़ी भी कट जायगी।

"मेरी राय मानो, तुम्हारे पास रुपया है, इस रुपये को बेकार बैंठे-बैठे खाने की अपेक्षा कारोबार में लगा दो। मालामाल हो जाओगे। इस बाबू ने हमें रास्ता दिखाया है। हमें इससे लाभ उठाना चाहिए।"

"अच्छा, यह बताओ चौधरी! तुम मेरा काम करोगे या फकीरचन्द का?"

"दोनों में से, जो मुझको अधिक कमीशन देगा, उसका।"

"धत् तेरे की। तो तुम मेरे और फकीरचन्द में स्पर्धा पैदा करना चाहते हो? यह तो बहुत बुरी बात है, चौधरी!"

"तुम एक का बना-बनाया काम बिगाड़ना चाहते हो। मुझको यह बुरा प्रतीत हो रहा है। जब तुम स्वयं अन्याय करते हो तो मुझसे न्याय की आशा क्यों रखते हो?"

"अच्छा देखा जायगा। मैं तो इस परदेशी को यहाँ से भगाकर ही दम लूँगा। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। जब यह रहेगा ही नहीं, तो स्पर्धा किससे होगी?"

: 12 :

मोतीराम झाँसी चला गया। चौधरी रामहरष के सुझाव में उसको अपने पाँच हजार रुपये का सदुपयोग दृष्टिगोचर हुआ। उसको विश्वास था कि वह राजा से मिलकर, उनको अपने अनुकूल कर लेगा।

चौधरी को मोतीराम की मनोवृत्ति अति क्षुद्र प्रतीत हुई। उसको भय लग गया कि यह आदमी, स्वयं तो कुछ कर नहीं सकेगा, किन्तु दूसरे का काम बिगाड़ सकता है। उसको जहाँ अपने काम की चिन्ता थी, वहाँ गाँव के सैकड़ों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणियों के सुख-सुविधा का भी ध्यान था। वह प्रकृति से चौधरी था।

इस नई कठिनाई को देख वह इसका निराकरण करने के विषय में विचार करने लगा। इसके लिए वह अपने पत्तीदार के पास पहुँच, उसको पूर्ण परिस्थिति से अवगत करा, उसकी राय पूछने लगा। माधो ने सब बात सुनकर कहा, ''चौधरी! हमको इस झगड़े में तटस्थ रहना चाहिए। जो काम करेगा, हम उसकी एजेण्टी कर लेंगे।''

''पर माधो!'' चौधरी ने कहा, ''फकीरचन्द के यहाँ आने से पहिले इन जंगलों में कोई जाता नहीं था। ललितपुर और झाँसी के कुछ लोगों ने जंगल काटने का ठेका लिया था और काम चला न सकने के कारण यहाँ से भाग गए थे। अब इस पंजाबी ने जब काम चालू कर दिया है तो उसके काम में विघ्न डालने से किसी का भी कल्याण नहीं हो सकता।''

''पर हम इसमें कर ही क्या सकते हैं? जब कर नहीं सकते तो व्यर्थ में दिमाग क्यों लड़ाएँ? जो होगा देख लिया जाएगा।''

चौधरी को इससे सन्तोष नहीं हुआ। इस विषय में उसे अपनी आर्थिक हानि की भी सम्भावना थी। अतएव वह माधो से मिलकर फकीरचन्द के पास जा पहुँचा। सायंकाल का समय था। फकीरचन्द अपना हिसाब-किताब लिख रहा था। चौधरी उसके पास बैठ पूछने लगा, ''बाबू! काम कैसा चल रहा है?''

''चौधरी! इस मास के अन्त तक खेती के लायक भूमि चालीस बीघा तक हो जायगी। यहाँ पानी का प्रबन्ध हो गया है। नदी में पम्प लग रहा है। उससे सिंचाई हो सकेगी। मैं समझता हूँ कि इस वर्ष इतनी भूमि में बोआई हो जायगी।''

''और आदमी नौकर रखोगे?''

''हाँ, बीस आदमी रखने पड़ेंगे। ललितपुर के सरकारी कृषि-विभाग वालों से मेरी बातचीत हुई है। वहाँ के सुपरिन्टेंडेण्ट ने आकर देखने का वचन दिया है। साथ ही वे चाहते हैं कि वहाँ के एक आदमी से नए प्रकार के हल चलाने का ढंग मुझको सीख लेना चाहिए। ऐसे आदमी को यहाँ भेजने के लिए मुझको पचास रुपये उनके पास जमा कराने पड़ेंगे। मैं यह जमा करा रहा हूँ।''

''पर बाबू!'' चौधरी ने अपने आने का प्रयोजन बताने के लिए कहा, ''तुम्हारी उन्नति को देख लोग तुमसे ईर्ष्या करने लगे हैं।''

''चौधरी! ईर्ष्या करने से ऐसा करने वाले को ही हानि होती है।''

''ठीक है, परन्तु ईर्ष्या के पश्चात् घृणा आ जाती है और घृणा का अन्त द्वेष में होता है।''

''मैं समझता हूँ कि गाँव में तुमसे द्वेष करने वाले उत्पन्न हो गए हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''पर मैं तो किसी का बुरा नहीं कर रहा। चौधरी जी! आप बताइए वह है कौन? मैं उसको समझाने का यत्न करूँगा और मुझसे यदि कुछ सहायता हो सकी, तो मैं वह भी करूँगा।''

''सहायता की उसको आवश्यकता नहीं, इस पर भी वह तुमको खेतों में से तथा जंगल से निकलवाने का यत्न करेगा।''

''महा भयंकर आदमी है! कौन है वह?''

''जिसकी बहिन को तुमने अपने घर में नौकरी करने को कहा था।''

''कौन, शेषराम?''

''नहीं, शेषराम का भाई मोतीराम। सुना है वह बम्बई से पाँच हजार कमाकर लाया है और तुमसे ईर्ष्या, द्वेष और घृणा करने लगा है।''

''मुझको इस द्वेष का कोई कारण प्रतीत नहीं होता। शेषराम मेरे पास आया था और कहता था कि उसकी बहिन बहुत दुःखी है। इसपर मैंने कहा था कि माँ को एक सहायक की आवश्यकता है। वहाँ उसको खाने और पहनने के अतिरिक्त पाँच रुपये मासिक वेतन भी मिलेगा।''

''पर बाबू!'' चौधरी ने कहा, ''मोतीराम इसको अपना और ब्राह्मण जाति का अपमान समझता है।''

''तो वह नौकरी करने न आए, मैं उसको जबरदस्ती तो पकड़कर लाऊँगा नहीं।''

''वह मूर्ख तो है, पर क्या किया जाए? यह देहातियों का समाज है। इसकी धारणाएँ विलक्षण हैं। तुम मोतीराम से मिलकर कह देना कि तुमको किसी नौकरानी की आवश्यकता नहीं।''

इसपर भी फकीरचन्द मोतीराम से मिल नहीं सका। अगले दिन वह शेषराम के पिता के घर गया तो उसको पता लगा कि वह देवगढ़ से कहीं बाहर चला गया है।

वह दो-तीन दिन तक शेषराम से पता करता रहा कि मोतीराम आया है अथवा नहीं। जब मोतीराम का कुछ पता नहीं चला, तो फकीरचन्द ने पूछना छोड़ दिया।

उस घटना को एक सप्ताह से ऊपर हो चुका था कि मीना का घरवाला गिरधारी देवगढ़ में आ पहुँचा। मीना उसे देख चकित रह गई। उसने पूछा, ''आपने आने की सूचना तक नहीं दी?''

''तुमने बुलाने के लिए रुपया नहीं भेजा था?''

मीना समझ गई कि शेषराम ने अपने पास से अथवा पंजाबी बाबू से लेकर यह रुपये भेजे हैं। इस कारण उसने कह दिया, ''ऐसा प्रतीत होता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेष ने रुपये भेजे हैं। वह कह रहा था कि आपको यहाँ काम मिल सकता है। एक वर्ष से एक पंजाबी बाबू यहाँ आया हुआ है। उसने राजा साहब से जंगल का पट्टा लिया है और बहुत से आदमियों को नौकर रख रहा है।''

''तो शेष भी उसकी नौकरी करने लगा है?''

''हाँ, अब पिताजी के घर की हालत सुधर रही प्रतीत होती है। मोतीराम भी, सुना है, बम्बई से बहुत-सा रुपया कमाकर लाया है।''

''तो वह भी यहाँ है? वह तो जेल में था। वह एक सेठ के पास नौकरी करता था और उसका पाँच हजार रुपया चोरी करने पर तीन वर्ष की कैद का दण्ड पा रहा था।''

मीना चोरी की बात सुनकर सन्न रह गई। मोतीराम ने कहा था कि वह बम्बई से पाँच हजार कमाकर लाया है। उसने मीना को डाँटा था। इसपर भी मीना के मन में भाई के लिए स्नेह उमड़ आया और उसने अपने पति से कहा, ''यह बात किसी से बताइएगा नहीं। यहाँ वह विख्यात कर रहा है कि रुपया कमाकर लाया है।''

''बड़ा धूर्त है! पर मुझे क्या? मैं किसी से क्यों कुछ कहूँगा? पर मीना! वह अच्छा आदमी नहीं है। कैद होने से पहले वह मुझको भी अपने मार्ग पर ले चलने का यत्न कर रहा था। यह तो भगवान् की कृपा ही समझो कि मेरे मन में कभी मैल नहीं आया।

''मैं एक दुकान पर चौकीदारी करता था और वह मुझको कहता था कि उस दुकान की चोरी करने में मैं उसकी सहायता करूँ। उसका कहना था कि जितना मिलेगा, उसमें से आधा मुझको देगा।

''मुझको वहाँ पर बहुत कष्ट था। चालीस रुपये में बहुत कठिनाई से निर्वाह होता था। दूध तो तीन वर्ष में एक-आध बार ही पीया होगा। कपड़े फट जाते थे, तो चाय-पानी बन्द करना पड़ता था। कभी बीमार हो जाता तो हस्पताल की औषधि खानी पड़ती थी। अपने पास तो दवाई के लिए एक पैसा भी नहीं बचता था। दो वर्ष से मैं यत्न कर रहा था कि कुछ रुपये बचें तो घर आऊँ, परन्तु बचते ही नहीं थे।

''इसपर भी मेरी आत्मा चोरी में सहायता करने के लिए नहीं मानी। मैं इस पाप कर्म से बच गया।''

अपनी पत्नी से मिल गिरधारी अपने साले शेषराम से और श्वसुर मंगतराम से मिलने गया। वहाँ जाकर उसको पता चला कि रुपये शेष ने भेजे हैं। उसको यह भी पता चला कि उसको देवगढ़ में ही नौकरी मिल सकती है। वह अपने परिवार से दूर रहते हुए ऊब गया था। इस कारण जब उसको पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चला कि पंजाबी बाबू ने उसको नौकर रख लेने का वचन दिया है, तो उसको संतोष हुआ।

अगले दिन शेषराम उसको फकीरचन्द के पास ले गया। गिरधारी देखने में स्वस्थ और समझदार प्रतीत होता था। इस कारण फकीरचन्द ने न केवल उसको नौकर ही रख लिया, प्रस्तुत उसने गिरधारी को नए प्रकार के हलों पर काम करने के लिए कृषि-विभाग के कर्मचारी के पास काम सीखने के लिए भेज दिया। उसको यह बता दिया गया कि जब वह काम सीख जाएगा तो उसको चालीस रुपया महीना वेतन मिला करेगा। शेषराम भी इस शर्त पर काम सीख रहा था। साथ ही शेषराम को इंजिन चलाने अथवा आरा मशीन पर काम करने का ढंग सिखाया जा रहा था।

नए प्रकार के हल चलाए तो बैलों से ही जाते थे, परन्तु बैल बलवन्त होने चाहिए थे। इन हलों से कम परिश्रम से और थोड़े काल में खेत जोते जाते थे। इस कारण फकीरचन्द पहले ही वर्ष में पचीस बीघा भूमि में गेहूँ बो सका। शेष में से दस बीघा में उसने गन्ना लगा दिया और पाँच बीघा में नींबू और आम के पेड़ लगा दिए। इस सबका परिणाम यह हो रहा था कि आदमी तो कम रखने पड़ रहे थे और काम अच्छा हो रहा था।

फकीरचन्द ने आदमी वेतन पर रखे हुए थे और वह जानता था कि खेती-बाड़ी का काम वर्ष-भर नहीं चलता। किसान वर्ष में नौ मास खाली रहता है। अत: उसके लिए यह समस्या थी कि वह वेतनधारी नौकर के लिए निरन्तर काम उत्पन्न करता रहे।

वह शेषराम और गिरधारी को चालीस रुपये मासिक देता था, अर्थात् प्रत्येक को वर्ष में चार सौ अस्सी रुपया। इंजिन चलाने वाले को वह पचास रुपये देता था, अर्थात् वर्ष में छ: सौ रुपया। अत: वह इनसे चक्की चलाने, आरा मशीन चलाने और पम्प को ठीक रखने का काम भी लेता था।

इंजिन का मिस्त्री तो नित्य काम करता था, परन्तु आटा चक्की और आरा तथा पम्प तो उस दिन चलते थे, जिस दिन उन पर काम करने वाला आदमी खाली होता। इसके साथ ही लकड़ी कटवाने का काम और फिर उससे इमारती सामान बनवाने का काम भी होता था।

मजदूर जो खेतों में काम करते थे, जब खाली होते थे, तब जंगल में कटाई का काम करते थे। यह सब बात उसने 'सरल अर्थव्यवस्था' नामक पुस्तक में पढ़ी थी। उसने इसको काम में लाने में अपनी प्रतिभा का प्रयोग किया था। पुस्तक में लिखा था कि देहातों की निर्धनता का कारण यह नहीं है कि खेती-बाड़ी घाटे का व्यवसाय है। इसका कारण यह है कि इसका काम करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले बहुत-सा समय खाली रहते हैं और वे नहीं जानते कि अपना रिक्त समय किस प्रकार उपयोगी कामों में लगा सकें। जो किसान अपने रिक्त काल को उपयोगी कामों में लगा सकता है, वह निर्धन नहीं रह सकता।

अतः फकीरचन्द ने यह समझ रखा था कि खेतों में तो मिल-मिलाकर वर्ष में तीन मास ही काम होता है। इस कारण शेष नौ मास का काम ढूँढ़ना ही इस काम में सफलता प्राप्त करने का गुर है। वह यही कर रहा था और उसको इसमें आशातीत सफलता मिल रही थी।

अभी गेहूँ की बोआई हो रही थी कि राजा साहब का मैनेजर देवगढ़ में आ गया। फकीरचन्द उससे मिलने गया। मैनेजर ने उसको पृथक् में ले जाकर पूछा, ''फकीरचन्द काम कैसा चल रहा है?''

''काम कठिन अवश्य है, परन्तु मुझे इसमें सफलता मिल रही है।''

''कितनी भूमि खाली हो गई है?''

''जंगल तो पचास बीघा पर से कट गया है, परन्तु मैं बोआई चालीस बीघा पर ही कर सका हूँ।''

''मैं तुमको तुम्हारी सफलता पर बधाई देता हूँ, परन्तु इस सब सफलता के साथ कुछ ऐसी खबरें आने लगी हैं कि तुम अपना जीवन ठीक नहीं रख सके। राजा साहब इसको पसन्द नहीं करते।''

''मैं समझता हूँ कि किसी ने आपको ऐसी बात कही है, जिसमें कुछ भी सच्चाई नहीं। क्या सूचना मिली है आपको?''

''यह मीना कौन है?''

फकीरचन्द शेषराम की बहिन का नाम नहीं जानता था। इस कारण उसने कह दिया, ''मैं इस नाम की किसी स्त्री को नहीं जानता।''

''मैंने सुना है कि वह यहाँ की रहने वाली एक युवती है, जिसका घरवाला बम्बई में नौकरी करने गया हुआ है। उससे तुम्हारी मित्रता है।''

''मैं ऐसी किसी औरत को नहीं जानता।''

''मैं इस विषय की जाँच करने आया हूँ।''

''तो करिए, यह समाचार असत्य है।''

''तुम्हारे पास कोई शेषराम नाम का मजदूर काम करता है?''

''हाँ, करता है।''

''उसको तुम अपने सब कर्मचारियों से अधिक वेतन देते हो?''

''जी नहीं। मेरा इंजिन चलाने वाला पचास रुपये वेतन पाता है।''

''और शेषराम को तुम तीस रुपये देते हो?''

''जी नहीं, चालीस देता हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और किसी को भी चालीस रुपये देते हो?"

"जी हाँ, एक और है। उसका नाम गिरधारीलाल है।"

"औरों को क्या देते हो?"

"किसी को बीस और किसी को पच्चीस रुपये। इनको अधिक इस कारण देता हूँ कि ये दोनों नए प्रकार के हल चलाना जानते हैं। कटाई और पिसाई की मशीन भी चला सकते हैं। वे आरा मशीन चलाते हैं, आटे की चक्की भी चलाते हैं। अन्य मजदूर यह काम नहीं कर सकते।"

"शेषराम की बहिन कहाँ रहती है।"

"गाँव में ही रहती है।"

"उसका नाम मीना है क्या?"

"मैं नहीं जानता। उसका घरवाला, जो बम्बई में था, अब यहाँ आ गया है। उसका नाम ही गिरधारी है।"

"देखो फकीरचन्द तुम अभी बालक मात्र हो। यहाँ के देहाती बहुत ही क्रूर स्वभाव के हैं। यदि तुमने किसी भले घर की औरत को खराब किया, तो ये लोग बलवा कर देंगे और फिर तुम्हारा यहाँ रहना असम्भव हो जायगा।"

"तो मैनेजर साहब! मेरी अनुपस्थिति में यहाँ के लोगों से जाँच कर लीजिए और उसके पश्चात मुझको आज्ञा करिए। मैं तो आपकी प्रजा हूँ। आपको रुष्ट कर तो मैं यहाँ रह नहीं सकता।"

: 13 :

वास्तव में मैनेजर मोतीराम के राजा साहब से शिकायत करने पर जाँच करने आया था। मोतीराम झाँसी में जाकर पहले मैनेजर साहब से ही मिला था। उसका कहना था कि राजा साहब की भूमि के किता नम्बर तीन का पट्टा उसको दे दिया जाय। मैनेजर ने कह दिया था कि उस भूमि का पट्टा एक औरत रामरखी को दिया जा चुका है। इसपर मोतीराम ने रामरखी के लड़के फकीरचन्द की निन्दा करनी आरम्भ कर दी। मैनेजर ने कहा भी था कि पट्टेदार के पुत्र के चरित्र को देखना उनका काम नहीं है, परन्तु मोतीराम झाँसी में पड़ा रहा और राजा साहब से मिल-मिलकर उनके कान भरता रहा।

एक दिन राजा साहब ने मोतीराम के सामने ही मैनेजर को बुलाकर पूछा, "यदि कोई पट्टेदार भ्रष्ट-चरित्र का हो और उसके हमारे इलाके में रहने से हमारी प्रजा को कष्ट हो रहा हो तथा उसका चरित्र भी बिगड़ रहा हो तो क्या हम उसका पट्टा रद्द करने में अन्याय करते हैं?"

मोतीराम को वहाँ बैठे देख मैनेजर इस प्रश्न का अर्थ समझ गया। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण उसने निवेदन कर दिया, ''महाराज! यह आदमी मेरे पास भी आया था और मुझसे रामरखी पंजाबन को दी गई भूमि का पट्टा माँगता था। जब मैंने पट्टा रद्द करने में अपनी असमर्थता प्रकट की, तो यह कहने लगा कि पट्टेदार का लड़का फकीरचन्द चरित्रहीन है। वह वहाँ औरतों का चरित्र बिगाड़ रहा है। इस कारण ही यह उसके पट्टे को रद्द करवाना चाहता है। साथ ही उस भूमि का पट्टा यह स्वयं लेना चाहता है, जिससे महाराज को हानि न हो।

''यह फकीरचन्द वही लड़का है, जो यहाँ आया था। एक तो मुझे विश्वास नहीं आता कि वह इतना दुश्चरित्र हो गया है कि गाँव की औरतों को उससे भय उत्पन्न हो गया हो। वह बहुत ही सुकुमार, पढ़ा-लखा, सभ्य और सुशील प्रतीत होता था। साथ ही उसके चरित्रहीन होने की जाँच पुलिस को करनी चाहिए। इन कारणों से मैं चुप था।

''अब यह भला पुरुष आपके पास आया है।''

''हम समझते हैं कि प्रजागणों की रक्षा करना हमारा भी कर्त्तव्य है। यदि यह बात सत्य है कि उसने देवगढ़ में उधम मचाया हुआ है, जैसा यह कहता है, तो फिर हम उसके पट्टे को रद्द कराने का यत्न करेंगे।''

''यह ठीक है कि हमने यह पट्टा दिया है, परन्तु उस वचन-पत्र में कोई-न-कोई कानूनी दोष निकालकर पट्टे को रद्द किया जा सकता है। मोतीराम यह कहता है कि यदि हम चाहें तो कानूनी खर्चा यह देगा और ढाई हजार उस दिन ही दे देगा, जिस दिन पट्टा इसके नाम होगा।''

मैनेजर इस बात को सुन भौंचक्का हो मुख देखने लगा। इसपर भी वह महाराज को यह प्रकट होने देना नहीं चाहता था कि वह महाराज की आय में वृद्धि का विरोध कर रहा है। इस कारण उसने कहा, ''महाराज! विचार तो सुन्दर है। परन्तु यदि यह चरित्र-सम्बन्धी आरोप सत्य न हुआ, तब भी आप वह पट्टा रद्द कराने का विचार रखते हैं क्या?''

''हम समझते हैं कि उस अवस्था में पट्टे पर झगड़ा करने की आवश्यकता नहीं। हम पट्टा रद्द इसलिए करना नहीं चाहते कि हमारी आय में वृद्धि होगी, प्रत्युत इसलिए कि किसी दुष्ट आदमी को हम अपने इलाके में बसने देना नहीं चाहते।''

''तब तो महाराज! सबसे पूर्व इस व्यक्ति के बयान लिख लिये जाएँ। जिन-जिन औरतों को उस लड़के ने भ्रष्ट किया है, उनके नाम और उसमें साक्षियों के नाम लिख लिये जाएँ। मेरा विचार है कि प्रारम्भिक जाँच तो इसकी रिपोर्ट लिखने के पश्चात् ही हो सकती है। पीछे यदि यह चाहे, तो इसके सम्मुख भी जाँच की जा सकती है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है महाराज!" मोतीराम ने कह दिया, "परन्तु यह जाँच फकीरचन्द और चौधरी रामहरष की उपस्थिति में न की जाय!"

"रामहरष में तुमको क्या खराबी प्रतीत हुई है?"

"वह लकड़ी बेचने में फकीरचन्द का एजेण्ट बना हुआ है। इससे उसको सैकड़ों रुपये की आय हो रही है।"

"यदि पट्टा तुम्हारे नाम होगा तो क्या तुम उससे काम नहीं लोगे?"

"मैं विचार करूँगा। जिससे मुझको अधिक लाभ होगा, मैं उसको ही रखूँगा।"

इसपर महाराज ने आज्ञा दे दी—"मोतीराम ठीक कहता है। जिनको फकीरचन्द से लाभ हो रहा है, उनसे जाँच करने का कुछ भी लाभ नहीं।"

"अच्छा मोतीरामजी! लिखाओ, क्या लिखाते हो?"

मोतीराम ने बताया, "फकीरचन्द के पास एक मजदूर शेषराम है। उसको वह तीस रुपये मासिक वेतन देता है, जबकि अन्य सबको यह बीस रुपये देता है। शेषराम की एक बहिन है मीना। मीना का पति बम्बई गया हुआ है और बेचारा घर के खर्च के लिए काफी धन नहीं भेजता। फकीरचन्द शेषराम के द्वारा मीना से सम्बन्ध बनाए हुए है और उसको रुपये देता रहता है।

"मीना के द्वारा गाँव की और भी लड़कियाँ खराब की जा रही हैं।"

जब मोतीराम के बयान लिखे जा चुके तो राजा साहब ने मोतीराम को कहा, "अच्छी बात है, हम जाँच करेंगे। साथ ही पट्टे की नकल वकील को दिखाकर मालूम करेंगे कि क्या किया जा सकता है?"

मोतीराम इस आश्वासन से प्रसन्न था। वह समझता था कि किसी बेलदार को भेजा जायगा। इस कारण उसने वहाँ के कर्मचारियों से पता करना आरम्भ कर दिया कि कौन जाँच करने जा रहा है।

जब मोतीराम बयान देकर चला गया तो राजा साहब ने मैनेजर से कहा, "हम चाहते हैं कि इस विषय में आप स्वयं जाँच करें। यदि इसमें कोई तथ्य है, तो इसका उपाय करने के विषय में विचार कर लिया जायगा। इतना ध्यान रखिएगा कि मोतीराम को पता न चले कि आप जाँच करने जा रहे हैं।"

मैनेजर देवगढ़ पहुँचा तो उसने जाँच आरम्भ कर दी। अभी वह गाँव के लोगों से पूछ-गीछ ही कर रहा था कि फकीरचन्द मिलने के लिए आ गया। जब वह आया तो मैनेजर उसकी निर्भीक आँखों को देख समझ गया कि मोतीराम के लगाए आरोप सत्य नहीं हो सकते। मैनेजर ने यह बताए बिना कि आरोप लगाने वाला कौन है, फकीरचन्द से भी प्रश्न पूछे। तदनन्तर मैनेजर ने शेषराम, गिरधारी और अन्य गाँव वालों से पूछना आरम्भ कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैनेजर को यह जानकर भारी आश्चर्य हुआ कि मोतीराम शेषराम का भाई है। जब गिरधारीलाल को यह पता चला कि मोतीराम उसकी पत्नी और फकीरचन्द के विरुद्ध आरोप लगा रहा है, तो उसने मैनेजर को बता दिया कि वह बम्बई के एक सेठ का पाँच हजार रुपया चुराने के अपराध में तीन वर्ष की कैद भोग चुका है और उसने रुपया ऐसे छिपाकर रखा हुआ था कि वह पुलिस को मिल नहीं सका। गिरधारी ने सेठ का नाम और पता भी बता दिया।

मैनेजर इस आदमी के साहस पर चकित रह गया। अपनी ही बहिन की चरित्रहीनता के विषय में झूठे आरोप लगाकर, वह अपने चोरी किए हुए रुपये का दुरुपयोग करना चाहता है। इस घृणित प्राणी की करतूत देख वह मन में निश्चय कर बैठा कि इसको दण्ड दिलवाना चाहिए।

इस प्रकार दिन-भर देवगढ़ में रहकर मैनेजर झाँसी लौट गया। उसने राजा साहब को पूर्ण वृत्तान्त बताकर मोतीराम की दुष्टता का भंडा फोड़ दिया। राजा साहब सुनकर क्रोध से भर गए। उनका कहना था कि सेठ करोड़ीमल का रुपया उनको वापस दिलवाना चाहिए। उनका विचार था कि जब इस आदमी के पास रुपया नहीं रहेगा, तो साँप के दाँत निकाल लिये जाने की भाँति यह हानिकर नहीं रहेगा।

मोतीराम को बुलाया गया। यह धर्मशाला में टिका हुआ था। जब वह उपस्थित हुआ तो राजा साहब ने कहा, ''मोतीराम! हमने एक आदमी कल देवगढ़ जाँच करने के लिए भेजा था। उसकी जाँच से हमको विश्वास हो गया है कि तुम्हारी बातें प्राय: ठीक हैं।

''हम यह तो समझ गए हैं कि फकीरचन्द जैसे आदमी को देवगढ़ से निकाल देना चाहिए, परन्तु पट्टा रद्द करवाने की बात बहुत कठिन है। वकील साहब की सम्मति है कि मुकद्दमा हाईकोर्ट तक जरूर जायगा और पूरा मुकद्दमा लड़ने के लिए वकील पाँच हजार रुपये एकदम माँगता है। हम इतना रुपया खर्च करना पसन्द नहीं करते। यदि तुमको इस विषय में कुछ करना है, तो कम-से-कम पाँच हजार रुपये हमारे खजान्ची के पास जमा करा दो। तभी हम इस काम में आगे चल सकते हैं। हम यह वचन देते हैं कि इस भूमि का पट्टा हम तुमको दे देंगे और इस पाँच हजार रुपये के बदले में दस वर्ष तक तुमसे कोई लगान नहीं लेंगे।''

''पर महाराज। इतना रुपया तो मेरे पास है नहीं।''

''यह तो तुमने ही कहा था कि पट्टा रद्द कराने के लिए खर्चा तुम दोगे। यदि तुम यह नहीं कर सकते तो हमारे लिये यह मुकद्दमा चलाना बहुत कठिन है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महाराज। यदि इस मुकद्दमे में हमको सफलता न मिली तो मेरे रुपये का क्या होगा?"

"उस अवस्था में हम तुमको नदी पार की भूमि का पट्टा दे देंगे और उसमें इतनी रिआयत देंगे कि तुम्हारा पाँच हजार रुपया वसूल हो जायगा।"

"क्या रिआयत दी जाएँगी महाराज?"

"हम लकड़ी पर एक आना मन का नजराना तुमसे नहीं लेंगे।"

इससे मोतीराम बहुत प्रसन्न हुआ। वह समझता था कि उसके पाँच हजार रुपये से, उसको लकड़ी पर नजराने के बिना भूमि तो मिल ही जायगी और यदि फकीरचन्द निकल सकेगा तो नदी के इस पार की भूमि पा जायगा। इसपर वह रुपया महाराज के खजान्ची के पास जमा कराने के लिए तैयार हो गया। दो दिन के भीतर ही उसने रुपया देवगढ़ से लाकर जमा करा दिया और मैनेजर साहब से वचन-पत्र माँगने लगा।

रुपया जमा होते ही करोड़ीमल को तार देकर झाँसी बुला लिया गया। उसको लिखा गया कि उसका चोरी का पाँच हजार रुपया मिल गया है। करोड़ीमल झाँसी आया और मोतीराम को राजा साहब के पास बैठा देख चकित रह गया। सेठ ने पुलिस में रिपोर्ट लिखा दी और मोतीराम को पकड़वा दिया।

पुलिस ने मोतीराम को पकड़ लिया और राजा साहब के खजाने से मोतीराम का पाँच हजार रुपया अपने अधिकार में ले लिया।

मोतीराम के विरुद्ध क्या मुकद्दमा चलाया जाय, पुलिस समझ नहीं सकी। चोरी के अपराध के लिए तो तीन वर्ष दण्ड वह भोग चुका था। इसके लिए अब और दण्ड मिल नहीं सकता था। एक ही अपराध के लिए दूसरी बार दण्ड नहीं दिया जा सकता था। रुपया कोई धरोहर तो थी नहीं, जो धरोहर की चोरी मानी जाती। इस कारण मोतीराम का नाम दस नम्बर के रजिस्टर में लिखकर, उसे छोड़ दिया गया और रुपया सेठ साहब को दे दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

रुपया प्राप्त करने के लिए करोड़ीमल को झाँसी में दस-बारह दिन ठहरना पड़ा। इस सब काल में वह राजा साहब का मेहमान रहा।

राजा महेन्द्रपालसिंह अति सज्जन व्यक्ति थे। इसपर भी राजा के पुत्र होने से और सदा चापलूसों से घिरा रहने के कारण उनकी बुद्धि कुछ मोटी थी। साथ ही लाखों की जमींदारी का स्वामी होने के कारण उनकी सज्जनता पर अभिमान और आडम्बर की एक हल्की-सी परत चढ़ गई थी।

महेन्द्रपाल की माता, जो एक साधारण-से आदमी की लड़की थी, अपने भगवत-भजन तथा कठोर जीवन के कारण लड़के के अभिमान इत्यादि की परत को पतला करती रहती थी। जो कुछ भी उलटा प्रभाव खुशामदियों की चाटुकारी से उत्पन्न होता था, माता अपने सदुपदेश से कम करने का यत्न करती रहती थी। इसका परिणाम यह हो रहा था कि राजा साहब कम अनुभवी होते हुए भी, अपने को ज्ञानवान् समझते थे। साथ ही अपनी भूल का ज्ञान हो जाने पर तुरन्त उसे सुधार लेते थे। जहाँ नेकी को सदा प्रचलन देने की चिन्ता में रहते थे, वहाँ कभी किसी दुष्ट आदमी को भी कष्ट में देख पिघल जाते थे और उसकी सहायता के लिए तत्पर हो जाते थे।

मोतीराम ने जब फकीरचन्द की निन्दा की तो राजा साहब उसकी निन्दा पर विश्वास कर क्रोध से भर गए। तदनन्तर जब मैनेजर ने मोतीराम के आरोपों की जाँच की, और जाँच करने पर मोतीराम की दुष्टता का ज्ञान हुआ तो मोतीराम को फँसाने के लिए यत्नशील हो गए। साथ ही करोड़ीमल की सहायता करने लगे। करोड़ीमल को रुपया मिल गया तो सन्तोष अनुभव कर मोतीराम का नाम दस नम्बर के रजिस्टर में लिखा जाता देख उसपर दया का भाव अनुभव करने लगे।

मोतीराम को नित्य पुलिस के पास हाजिर होना पड़ता था। इससे मोतीराम न तो झाँसी छोड़ सका और न ही वह किसी काम में लग सका। राजा साहब ने उसको इस कठोर यन्त्रणा से छुटकारा दिलवाने के लिए उसे अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास ही नौकर रख लिया। नौकर हो जाने से उसका नाम रजिस्टर से निकलवाने में आसानी हो गई। मोतीराम राजा साहब के मैनेजर के कार्यालय में चपरासी के काम पर नियुक्त हो गया। मैनेजर ने कहा भी कि यह आदमी सहायता का अधिकारी नहीं, परन्तु राजा साहब का मत था कि संसार में प्रत्येक व्यक्ति को अपना सुधार तथा उन्नति करने का अवसर मिलना चाहिए।

करोड़ीमल ने जब फकीरचन्द से रेल में, लाहौर से दिल्ली आते समय राजा साहब की भूमि के विषय में सुना था, तो एक किता भूमि लेने के विचार से, अपने मुंशी को पता करने झाँसी भेजा था। मुंशी यहाँ आया था और उसने भूमि को देख और पट्टे की शर्तों के विषय में जाँच कर सेठ साहब को बताया कि इस काम में लाभ की कुछ भी सम्भावना नहीं। मुंशी ने फकीरचन्द के प्रयास को भी देखा था। उस समय तक खेत तैयार नहीं हुए थे और उसका विचार था कि फकीरचन्द का दिवाला निकलेगा।

जब रुपये के लिए करोड़ीमल को झाँसी में रहना पड़ा और वहाँ मैनेजर से फकीरचन्द की भूरि-भूरि प्रशंसा सुनी तो उसके मन में पुनः फार्म खोलने का विचार उठने लगा। उसने मैनेजर से इस विषय में राय की। सेठ की बात सुन मैनेजर ने बताया, ''मैं भी समझता था कि फकीरचन्द इस काम को कर नहीं सकेगा। ऐसा प्रतीत होता है कि यह लड़का बहुत अच्छा प्रबन्धक है। जंगल की कटाई और लकड़ी को मार्केट में ले जाकर बेचना अति कठिन कार्य था, परन्तु इसने यह सब कुछ ऐसे ढंग से किया है कि जंगल में मंगल कर दिया है। मैंने उसको इस काम में हाथ डालने से मना किया था, परन्तु वह हठ करता रहा और मैं अब समझता हूँ कि वह स्वयं को भली-भाँति समझता था।

''अभी मैं इस लड़के के चरित्र के विषय में जाँच करने वहाँ गया था। वहाँ मैंने उसके खेत और काम का भी निरीक्षण किया था। उसने काम को ऐसे ढंग से चलाया है कि भूमि धन उगलती प्रतीत होती है।''

करोड़ीमल फकीरचन्द की प्रशंसा सुन देवगढ़ जा पहुँचा। वहाँ वह फकीरचन्द को खेत में काम करते देख उसको पहचान गया कि यह वही लड़का है जो उसको रेल के डिब्बे में लाहौर के स्टेशन पर मिला था।

फकीरचन्द भूमि में बीज डलवा रहा था। शेषराम बीज डालने की मशीन पर बैठा बीज डालता हुआ मशीन को खेत में घुमा रहा था और फकीरचन्द देख रहा था कि काम ठीक हो रहा है अथवा नहीं। इस समय करोड़ीमल अपने नौकर के साथ उसके समीप आकर खड़ा हो गया। फकीरचन्द ने सेठ को देखा तो पहचान गया। उसने हाथ जोड़कर नमस्कार की और पूछने लगा, ''आपने पहिचाना है मुझको?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हाँ, मैं तुम्हारे बलपूर्वक डिब्बे में चढ़ जाने को भूल नहीं सकता। कदाचित् तुमको स्मरण होगा कि मैंने कहा था कि अधिकारी को मैं अधिकार देता हूँ। तुमने जब भीतर घुस आने का साहस किया तो मैं जान गया कि तुम भीतर बैठने के अधिकारी हो। मैंने स्थान दे दिया। संसार में वे ही सुख और धन प्राप्त कर सकते हैं, जो अपने लिये स्थान बनाने का साहस रखते हैं और उसके लिए प्रयत्न करते हैं।''

यद्यपि यह सिद्धान्त पूर्णरूप में ठीक तो नहीं कहा जा सकता था, इसपर भी जितना वह था, ठीक ही था। फकीरचन्द मन में विचार कर रहा था कि इतना बड़ा काम केवल छ: सौ रुपये की पूँजी से करने के लिए साहस और पुरुषार्थ ही चाहिए थे। यदि वह साहस न करता तो अभी तक भारत बीमा कम्पनी में पैंतीस रुपये महीने का क्लर्क ही होता।

सेठ करोड़ीमल ने उसके फार्म के विषय में प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिए और फकीरचन्द ने बिना कुछ भी छिपाए सब वृत्तान्त बता दिया। इसपर करोड़ीमल ने अपना विचार बताया, ''मैं यहाँ एक फार्म खोल रहा हूँ, तुम मुझे क्या राय देते हो?''

''वैसे तो मैंने एक उड़ती-उड़ती खबर सुनी थी कि एक बम्बई के सेठ यहाँ फार्म खोलना चाहते हैं, परन्तु मैं यह नहीं जानता था कि वह आप ही हैं। आप तो व्यापार की बातों को मुझसे अधिक समझ सकते हैं। इस कारण मैं क्या राय दे सकता हूँ? यदि कोई ऐसा आदमी आपके पास हो, जो इस काम को अपना मान, इसमें दस घंटे नित्य परिश्रम कर सके और दूसरों से करा सके तो सफलता निश्चित है।''

''मैं अपने लड़के रामचन्द्र को इस काम पर लगा दूँगा।''

''वह तो बहुत ही छोटी आयु का प्रतीत होता है। बारह-तेरह के लगभग होगा?''

''नहीं। उसकी आयु अठारह वर्ष की हो गई है। नगरों में रहने के कारण वह दुबला-पतला प्रतीत होता है।''

''पर उसका, उस दिन रेल के डिब्बे में खिड़की के पास खड़े होकर यह कहना कि डिब्बा रिजर्व्ड है, उसके मानसिक विकास पर कुछ अच्छा प्रकाश नहीं डालता।''

''वह बचपन की बात अब समाप्त हो गई है। अच्छा, यह बताओ कि यदि मैं उसको यहाँ भेजूँ तो उसकी सहायता करोगे?''

''हाँ, यथासम्भव सहायता करूँगा। आप उसको भेज दीजिए।''

''तुम्हारे विचार में कौन-सा किता ठीक रहेगा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह नदी के पास की भूमि अच्छी है। कुछ ऊँची है परन्तु आज विज्ञान के युग में यह कोई भारी बाधा नहीं कही जा सकती।''

इसके पश्चात् करोड़ीमल ने फकीरचन्द का इंजिन, आरा मशीन और चक्की देखी। उसने देखा कि प्रत्येक कर्मचारी काम पर लगा हुआ है और फकीरचन्द भली-भाँति जानता और समझता है कि वे क्या कर रहे हैं और कैसे कर रहे हैं। मार्ग में चलता हुआ वह प्रत्येक के काम के विषय में पूछता हुआ जा रहा था। सेठ ने गन्ने के खेतों में पेड़ी लगी देखी और नींबू के बगीचों में पानी दिया जाते देखा।

आरा चल रहा था। कटे हुए शीशम के पेड़ों में से तख्ते काटे जा रहे थे। सेठजी ने पूछा, ''क्या यहाँ ऐसे तख्तों की खपत है?''

''हाँ, गाँव में इमारती लकड़ी बहुत महंगी है। यह लकड़ी इमारत में लगाई जा रही है। मैं ये तख्ते अपने मकान के लिए बनवा रहा हूँ।''

''किधर बनवा रहे हो मकान?''

''खेतों के उस किनारे पर।''

''मकान कब तक बन जायगा?''

''इस वर्ष के अन्त तक मकान बनकर रहने योग्य हो जायगा।''

फकीरचन्द को फलते-फूलते देख करोड़ीमल के मुख में लार टपक आई। मध्याह्न के समय फकीरचन्द सेठ को अपने घर ले गया। उसको भोजन कराकर विदा कर दिया। फकीरचन्द की माँ ने सेठ की पहचान कर कहा, ''इस सेठ का यहाँ आना शुभ नहीं होगा।''

''परन्तु माँ जो कुछ होने वाला है, उसको हम रोक तो सकते नहीं। हाँ, उस गड़बड़ से स्वयं को बचाने का यत्न कर सकते हैं।''

''तुमको इन पैसे वालों से सतर्क रहना चाहिए। ये लोग परिश्रम करना तो जानते नहीं। केवल जोड़-तोड़ लगाना जानते हैं। ये व्यापारी हैं, तुम मजदूर हो। दोनों में भारी अन्तर है।''

''मैं समझता हूँ, माँ! हमने जो कुछ किया है, उसको बहुत कम लोग समझते हैं। हमने परिश्रम किया है और उसके फल को अधिक करने के लिए पूँजी और संगठन का परिश्रम के साथ समन्वय किया है।''

करोड़ीमल झाँसी गया और राजा साहब को एक बहुत बढ़िया सोने-चाँदी का सिगार-केस भेंट में देकर, नदी पार की भूमि के दो कितों का पट्टा ले गया।

: 2 :

फकीरचन्द मकान की इमारत समाप्त कर और उसमें फर्नीचर लगवा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ रहने आ गया था। मकान के पिछवाड़े के आँगन में उसने एक कुआँ बनवा लिया और कुएँ के दोनों ओर बगिया लगवा ली थी। एक ओर तो घर के प्रयोग के लिए सब्जी-भाजी लगवाई थी और दूसरी ओर फूलों का उद्यान था।

एक दिन सेठ करोड़ीमल का लड़का रामचन्द्र, उसकी माँ और बहिन वहाँ आ पहुँचे। फकीरचन्द कटी फसल को खलिहानों में एकत्रित करवा रहा था। एक ओर गेहूँ जमा किया जा रहा था और दूसरी ओर भूसा। फकीरचन्द इनका निरीक्षण कर रहा था कि एक बैल-ताँगे में सवार अतिथि आ गए। उनको ताँगे में से उतरते देख फकीरचन्द उनका स्वागत कर उनको घर माँ के पास ले गया। माँ को उनके खाने-पीने का प्रबन्ध करने को कह स्वयं काम पर चला गया।

मध्याह्न तक काम की देखभाल कर फकीरचन्द घर आया तो रामचन्द्र, उसकी माँ तथा बहिन स्नानादि कर, भोजन कर चुके थे। फकीरचन्द ने भी स्नान किया और भोजन करने चौके में जा बैठा। उस समय रामचन्द्र और उसकी माँ वहाँ आ बैठे।

रामचन्द्र की माँ का नाम पन्नादेवी था और उसकी बहिन का ललिता। इस समय ललिता तो अपने कमरे में आराम कर रही थी। पन्नादेवी ने फकीरचन्द को सम्बोधन कर कहा, ''बेटा देखो! यह तुम्हारा छोटा भाई है। इसका काम चालू करवा दो। भगवान तुम्हारा भला करेगा।''

''माँ जी! आप मेरी ओर से निश्चिन्त रहें। जो कुछ मेरे बस में होगा, वह मैं कर दूँगा। शेष तो इसके करने की बातें हैं, जो यह स्वयं ही कर सकेगा। मैं कल इसके साथ इसकी भूमि देखने चलूँगा और कहाँ से काम आरम्भ करना चाहिए तथा क्या काम होना चाहिए, बता दूँगा। मजदूर भी मिल जाएँगे। मजदूरों से काम लेना तो इसका ही काम होगा। इसके लिए इसको तैयार रहना चाहिए।''

इस समय रामचन्द्र बोल उठा, ''फकीर भैया! वह मैं सब कर लूँगा। तुम निश्चिन्त रहो, जैसा तुम कहोगे वैसा ही करूँगा। बम्बई में भी मैं अपनी कोठी में काम कराता हूँ। यहाँ भी करा लूँगा।''

''अच्छा, एक बात करो! तीन बजे के लगभग गाँव में चले जाना और रामहरष चौधरी को बुला लाना। मैं मजदूरों का प्रबन्ध उसके द्वारा करवा दूँगा।''

''जाऊँगा। कहाँ मिलेगा वह?''

''गाँव में किसी से पूछ लेना। सब उसके घर को जानते हैं। तीन बजे वह अपने मकान के सामने चौपाल पर बैठा, हुक्का गुड़गुड़ाता मिलेगा। एक बात का ध्यान रखना। उसमें स्वाभिमान की मात्रा कुछ अधिक है। इस कारण उसकी कोई बात पसन्द न भी हो तो चुप रहना, झगड़ा न करना।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फकीरचन्द दो बजे पम्प पर जा पहुँचा। गन्ने के खेतों की सिंचाई हो रही थी। फकीरचन्द का स्वभाव था कि वह प्रत्येक कार्य नित्य देखता था। पम्प ठीक काम कर रहा था। वहाँ से गन्ने के खेतों के निरीक्षण के लिए चला गया। गन्ने तीन फुट ऊँचे हो चुके थे और पर्याप्त पुष्ट तथा रसयुक्त प्रतीत होते थे। इस खेत को देख वह गेहूँ राही जाती देखने चला गया। वहाँ से वह माधो से मिलने गया। माधो नदी के किनारे पीपल की छाया में बैठा हुआ लकड़ी की ढुलाई देख रहा था। गेहूँ और भूसे का सौदा भी वही कर रहा था।

माधो ने बताया कि गेहूँ खलिहान में साढ़े तीन रुपये मन बिक जायगा और भूसा दो रुपये मन।

माधो को इस भाव पर सौदा करने को कह, वह जंगल में चला गया। वहाँ लकड़हारे कटाई और चिराई कर रहे थे। उनके काम से सन्तुष्ट हो वह फलों के बगीचे में जा पहुँचा। चार बीघा भूमि में नींबू लगाए हुए थे। पेड़ अभी दो फुट तक ऊँचे हुए थे और अभी दो वर्ष में फल देने वाले थे। कुल पाँच सौ पेड़ थे। फकीरचन्द एक-एक पेड़ की देखभाल रखता था। उचित खाद, उचित मात्रा में जल और कीड़े-मकोड़ों से उचित रक्षा की जाती थी। वहाँ से वह आम के बगीचे में चला गया। पचास पेड़ आम के थे।

सायंकाल वह घर पर आ पहुँचा। वहाँ लकड़ी के व्यापारी और माधो बैठे थे। व्यापारी लकड़ी का एक हजार रुपया जमा कराने आए हुए थे। रुपया गिन, तिजोरी में रख, फकीरचन्द ने रसीद दे दी और अपनी किताब में भी लिख लिया। तदनन्तर व्यापारी से हिसाब किया। उसकी बकाया रकम बता, शीघ्र देने को कह, उसको विदा कर दिया। अब वह अपना दिन का हिसाब करने लगा। जब हिसाब कर चुका तो अगले दिन के काम पर, किस-किसको कहाँ-कहाँ भेजना चाहिए, विचार करने लगा। सबका काम कागज पर लिख, उसने शेषराम और गिरधारी को, जो बाहर बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे, बुलाकर बता दिया।

अब फकीरचन्द ने स्नान किया और भोजन तैयार होने तक वह रामचन्द्र के विषय में पूछ-गीछ करने लगा। उसको मालूम हुआ कि वह दोपहर का गया हुआ अभी तक नहीं आया। इससे उसको चिन्ता लग गई। उसने घर के नौकर सन्तू को बुलाकर कहा, ''जरा चौधरी के पास जाना और देखना कि मेहमान बाबू क्यों नहीं आए?''

सन्तू गया और आधे घण्टे में लौट आया। उसके साथ ही रामचन्द्र और चौधरी भी आ गए। चौधरी ने बैठते ही कहा, ''बाबू! यह सेठ काम चला नहीं सकेगा। ऐसा प्रतीत होता है कि यह मेरे घर पहुँचने से पहले ही मजदूरों के घर में जाकर पूछने का यत्न करता रहा है। यह कहीं से पता लगाकर आया है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार रुपये महीने पर मजदूर मिल जाएँगे। जब यह मेरे पास आया और मैंने बताया कि आप मजदूर को कम-से-कम बीस रुपये मासिक देते हैं तो कहने लगा कि मैं इसको धोखा दे रहा हूँ। मैं इसमें कमीशन खा रहा हूँ।

''मैं तो इससे बात भी न करता, परन्तु यह सुन कि आपने भेजा है, मैं इसको समझा रहा था कि चार रुपये वाले मजदूर काम नहीं करेंगे। वे प्रात: हाजिरी लगवा अपने खेतों में काम करने चले जाया करेंगे।''

फकीरचन्द ने पूरी बात समझकर कहा, ''चौधरी! एक बात तुम नहीं समझते। किसी मजदूर ने चार रुपये महीने पर काम करना स्वीकार किया है, तो गलती मजदूर की है न कि मालिक की। मालिक, यदि मुँह माँगा वेतन देकर मजदूर से काम नहीं कराता, तो दोष मजदूर का नहीं, प्रत्युत मालिक का है। इस कारण जो चार रुपये पर काम करने वाले हैं, उनको काम करने दो। यह मालिक की चतुराई है कि वह उनसे कितना काम लेता है।''

चौधरी हँस पड़ा। रामचन्द्र उसकी हँसी का अर्थ नहीं समझ सका और उसका मुख देखने लगा। रामचन्द्र को अपनी बात पर विस्मय करते हुए देख, चौधरी ने फकीरचन्द से पूछा, ''बाबू! तुम चार रुपये मासिक पर मजदूर क्यों नहीं रखते?''

''चौधरी! इसलिए कि मैं चतुर मालिक नहीं हूँ। मैं अपनी अयोग्यता की पूर्ति करने के लिए वेतन अधिक देता हूँ।''

चौधरी समझ गया कि फकीरचन्द अपने मेहमान की हँसी उड़ा रहा है। इसपर भी रामचन्द्र इस व्यंग्य का अर्थ न समझ पूछने लगा, ''तो भैया! मैं उनको नौकर रख लूँ?''

''यही तो मैं कह रहा हूँ। अभी चले जाओ। चौधरी के सामने उनसे बातचीत कर लो और उनको कल काम पर बुला लो। सबसे पहले तो लकड़हारे चाहिएँ। जंगल कटवाना है।''

''आइए चौधरी साहब!'' रामचन्द्र ने प्रसन्न हो कहा, ''हमें अभी चलना चाहिए।''

रात को खाने के समय पन्नादेवी ने फिर फकीरचन्द से रामचन्द्र की देखभाल के लिए कहा। फकीरचन्द ने कह दिया, ''माँ जी! यह काम अति कठिन है। इसपर भी मैं समझता हूँ कि यदि मन में दृढ़ संकल्प हो तो इस संसार में कोई भी काम नहीं, जो न किया जा सके। अभ्यास से सब-कुछ हो सकता है। कभी मनुष्य गलती भी कर सकता है। गलती को मानकर उसको सुधारना ही सफलता का लक्षण है।''

इसपर पन्नादेवी ने अपने मन की बात कह दी। उसने कहा, ''मेरी सबसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी सन्तान तो यह लड़का है। अब उन्नीस वर्ष का हो रहा है। सेठ जी की पहली पत्नी से एक लड़की है। उसका विवाह हुए चार वर्ष हो चुके हैं। अब उसकी दो सन्तान हैं—एक लड़का है और दूसरी लड़की। सेठ जी की रुचि लड़की के बच्चों की ओर देख, मैंने अपने लिये कुछ स्वतन्त्र आश्रय बनाने का विचार किया है। सेठजी ने इन खेतों के विषय में विज्ञापन पढ़ा तो अपने मुंशी को पता करने के लिए यहाँ भेजा था। मुंशी का विचार था कि इन खेतों में लाभ नहीं हो सकता। इसपर सेठजी ने इन खेतों का विचार छोड़ दिया। लगभन तीन महीने हुए वे स्वयं यहाँ आए थे और तुमको सफलतापूर्वक काम करते हुए देख, यहाँ पर पाँच सौ एकड़ भूमि पट्टे पर ले गए। इस भूमि को अपने विचार पूरे करने का साधन मान, रामचन्द्र को लेकर मैं यहाँ चली आई हूँ।

''मैं कहती हूँ कि मैंने सेठजी से हठ करके खेत रामचन्द्र के लिए ले दिए हैं। इस कारण उसको इसमें अवश्य सफल होना चाहिए। मेरी इच्छा है कि कुछ काल तक मैं यहाँ उसके पास रहूँ। जिस समय मैं देखूँगी कि इसका काम चलने लगा है, मैं वापस बम्बई चली जाऊँगी और इसी प्रकार अपने अन्य बच्चों का प्रबन्ध करने का यत्न करूँगी।''

फकीरचन्द को यह कथा सुन प्रसन्नता नहीं हुई। वह अपने मन में विचार कर रहा था कि रामचन्द्र परिश्रम कर नहीं सकेगा। उसको इस काम से कुछ लाभ होगा नहीं। इससे उसकी माँ को निराशा होगी। उसकी आशाएँ अपने पुत्र से अपूर्ण रह जाएँगी।

इसपर भी यह इसको अपना अनुमान मात्र समझ, किसी प्रकार की भविष्यवाणी करना नहीं चाहता था। साथ ही वह समझता था कि यदि उसके थोड़े से सहयोग से किसी का भला हो सकता है, तो उसको सहायता देने में संकोच नहीं करना चाहिए।

यह विचार कर उसने कहा, ''माँजी! मैंने आपको वचन दिया है कि मैं उसकी यथासम्भव सहायता करूँगा। इसपर भी यह आपको समझ ही लेना चाहिए कि बहुत-कुछ उसके अपने प्रयास पर निर्भर है। यदि राम ने स्वयं परिश्रम नहीं किया तो सफलता बहुत कठिन हो जाएगी।''

''तुमको यहाँ की भूमि और कर्मचारियों का ज्ञान है और तुम एक सफल कृषक हो। मैं उसको कहूँगी और वह तुम्हारे कहने के अनुसार करेगा। वह तुम्हारे छोटे भाई की भाँति यहाँ रहेगा।''

''माँजी वैसे तो मैं उसका छोटा भाई हूँ। मेरी आयु अभी सत्रह वर्ष की हुई है।''

''सच? तुम देखने में तो बड़े प्रतीत होते हो। वह अगले मास उन्नीसवाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष समाप्त कर बीसवें में प्रवेश करेगा। कुछ भी हो, तुम ज्ञान और अनुभव में उससे बड़े हो।''

: 3 :

परन्तु रामचन्द्र की माँ के कहे अनुसार काम हो नहीं सका। अगले दिन के लिए फकीरचन्द ने शेषराम को अपने खेतों में करने योग्य काम बताकर कहा, ''मैं कुछ देर से आऊँगा। तुम देखना कि काम भली-भाँति आरम्भ हो जाए।''

उसे रामचन्द्र के साथ उसके खेतों पर काम आरम्भ कराने के लिए जाना था। अल्पाहार लेकर वह रामचन्द्र की प्रतीक्षा करने लगा। जब वह नहीं आया तो उसके कमरे के बाहर जाकर फकीरचन्द ने दरवाजा खटखटाया। रामचन्द्र की माँ फकीरचन्द की माँ के कमरे में सोई हुई थी। अपने पुत्र के कमरे के दरवाजे की खटाक सुन वह बाहर आ गई। अभी सूर्य नहीं निकला था। उषाकाल का प्रकाश-मात्र ही था। इस कारण पन्नादेवी ने पूछा, ''फकीरचन्द! क्या बात है?''

''माँजी, मैं राम को काम पर साथ ले चलने के लिए बुला रहा हूँ।''

''पर अभी तो बहुत सवेरा है।''

''नहीं माँजी, देर हो गई है। मैं तो स्नान-ध्यान से निवृत्त हो चुका हूँ। राम के लिए भी अल्पाहार तैयार रखा है और मैं खा चुका हूँ।''

''तो क्या नित्य तुम इस समय काम पर चले जाते हो?''

''हाँ माँजी! मेरे आदमी काम पर चले गए हैं। हम खेतों में ही होते हैं, जब सूर्य भगवान् क्षितिज पर दिखाई देते हैं।''

रामचन्द्र की माँ अपने लड़के के अभी तक सोये रहने पर बहुत लज्जित हुई और वह उसको जगाने के लिए स्वयं दरवाजा खटखटाने लगी। बहुत कठिनाई से रामचन्द्र उठा और आँखें मलता हुआ कमरे से बाहर निकल आया।

''राम!'' उसकी माँ ने कहा, ''यह काम करने वालों के तरीके नहीं हैं। देखो, फकीर तो अल्पाहार इत्यादि कर खेतों में जाने के लिए तैयार खड़ा है। इधर तुम अभी आँखें ही मल रहे हो।''

''माँ! रात मजदूरों से बातचीत करते-करते बारह बज गए थे। उसके पश्चात् घर आ खाना खाकर एक बजे ही सो पाया था। इतनी सवेरे कैसे उठ सकता था?''

''पर मजदूर तो काम पर जा पहुँचे होंगे?''

''नहीं माँ। मैंने उनको कह दिया था कि आठ बजे नदी के तट पर मिलें।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो ठीक है परन्तु यह नित्य के लिए तो नहीं हो सकता।"

"अभी तो आज के लिए ही कहा है, परन्तु मैं विचार करता हूँ कि नित्य आठ बजे ही काम आरम्भ हुआ करे तो क्या हानि है?"

"हानि तो बहुत है। काम उतना नहीं हो सकेगा, जितना होना चाहिए।" फकीरचन्द का कहना था।

"क्यों नहीं होगा? मध्याह्न की छुट्टी कम कर दूँगा।"

"अच्छा, मैं चलता हूँ। तुम स्नानादि से निवृत्त होकर वहाँ आ जाना। मैं भी पहुँच जाऊँगा।" इतना कह फकीरचन्द काम पर चला गया। फकीरचन्द के चले जाने पर पन्नादेवी ने कहा, "राम! इस प्रकार काम नहीं चलेगा। जैसे फकीरचन्द करता है, वैसे ही करना चाहिए।"

"माँ, उसमें और मुझमें भारी अन्तर है। देखो, उसने लकड़हारे बीस रुपये मासिक वेतन पर रखे हुए हैं। वह अधिक वेतन इस कारण देता है कि उसे काम कराने का ढंग नहीं आता। यह बात कल चौधरी के सामने उसने मानी थी। मैंने लकड़हारे दस रुपये पर रखे हैं। आधा वेतन जो दूँगा और यदि काम कुछ कम भी होगा तो भी घाटे में नहीं रहूँगा।"

"देख लो। काम होना चाहिए। काम नहीं होगा तो लाभ नहीं होगा और लाभ नहीं हुआ तो तुम्हारे पिता को, जिनसे झगड़ा कर मैं तुमको यहाँ लाई हूँ, कैसे मुख दिखाऊँगी।"

रामचन्द्र शौचादि के लिए चला गया। उसकी माँ ने तो कभी भी खाना नहीं बनाया था। वह यहाँ पर खाना नहीं बना सकी। हाँ, राम की बहन ललिता रसोईघर में थोड़ा-बहुत काम कर रही थी। जब रामचन्द्र खाना खाने आया तो बिहारीलाल खाना खा रहा था और ललिता उसको खिला रही थी। रामचन्द्र को यह भला प्रतीत नहीं हुआ। वह समझता था कि वह फकीरचन्द से अधिक धनी की बेटी है और उसको इस प्रकार काम कर, अपने को छोटा नहीं बनना चाहिए। इसपर भी वह कुछ कह नहीं सका। वह चौके में आकर बैठा तो ललिता ने उसके सामने भी थाली रख दी और कटोरे में दाल डालने लगी।

बिहारीलाल को वह रोटी देने लगी तो उसने कह दिया, "ललिता बहन! भैया को पहले दो। इनको पहिले ही बहुत देरी हो गई है।"

ललिता ने रोटी बिहारीलाल की थाली में डालते-डालते रामचन्द्र की थाली में रख दी। इसपर भी रामचन्द्र के खेतों में जाने से पहले बिहारीलाल स्कूल चला गया था। रामचन्द्र ने जाने से पूर्व माँ से कहा, "माँ! तुमने ललिता को इनके घर में नौकर बना दिया है।"

"नौकर? यह उसके रसोईघर में काम करने के कारण कहते हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ।"

"तो फकीर की माँ को क्या समझते हो? क्या वह हमारी नौकरानी है?"

रामचन्द्र निरुत्तर हो गया और बिना एक भी शब्द कहे घर से निकल नदी-तट पर जा पहुँचा, जहाँ उसने अपने मजदूरों को आने को कहा हुआ था। मजदूरों को आठ बजे का समय दिया गया था, परन्तु रामचन्द्र नौ बजे पहुँच सका। उसने दस लकड़हारों को नौकर रखा था। उन दस में से तीन खड़े थे। उन खड़े मजदूरों ने बताया कि वे आठ बजे के वहाँ आए हुए हैं।

"और कोई नहीं आया क्या?"

"एक और आया था और आधा घण्टा प्रतीक्षा कर चला गया है। कहता था कि थोड़ी देर में आएगा।"

"फकीरचन्द बाबू आया था क्या?"

"जी हाँ। वे आपको न देख नदी पार चले गए हैं। चौधरी उनके साथ गया है।"

"तो चलो, तुम भी चलो।"

ये चारों किनारों पर बँधी नौका पर सवार हो पार चले गए। नाविक उनको किनारे पर उतार, नौका एक ओर बाँध, उनके साथ-साथ चल पड़ा। रामचन्द्र ने उसकी ओर घूरकर देखा तो उसने कह दिया, "फकीरचन्द बाबू ने बुलाया था। वे कह गए थे कि जब तुमको इधर लाऊँ, तो उससे मिल लूँ। मैं समझता हूँ कि वे वापस जाना चाहते होंगे।"

फकीरचन्द चौधरी के साथ एक ऊँचे स्थान पर खड़ा देख रहा था कि कहाँ से कटाई आरम्भ की जाए। इस समय रामचन्द्र आ गया। साथ आए मजदूरों को फकीरचन्द ने बताना आरम्भ कर दिया कि उनको कहाँ से कटाई आरम्भ करनी चाहिए। उसने कहा, "वर्षा ऋतु में नदी यहाँ तक आ जाती है। यहाँ से सौ गज और छोड़ दी जाए। अतः उस स्थान से कटाई आरम्भ कर देनी चाहिए। आगे वह भूमि समतल है। उसको ही पहले साफ करना चाहिए। उसमें जंगल भी कम है। मेरा विचार है कि लकड़ी को नदी पार ले जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। जखलौन स्टेशन पर से माल बाहर भेजा जा सकता है। स्टेशन से चाहो तो ललितपुर और झाँसी भेज सकोगे और चाहो तो बीना भी भेज सकोगे।

"वह देखो, वह कुछ ऊँचा स्थान है। मैं चाहता हूँ कि वहाँ अपने मकान के लिए स्थान साफ करा लो।"

रामचन्द्र अपने चारों ओर देख रहा था। एकाएक उसने पेड़ों के एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झुरमुट की ओर उँगली कर पूछा, "कटाई वहाँ से आरम्भ क्यों न की जाए?"

"वह स्थान आपके किता में नहीं है।"

"हमें कोशिश करनी चाहिए कि वह स्थान हमको मिल जाए। मैं समझता हूँ कि सेठजी ने भूमि को देखे बिना ही पट्टा करा लिया है।"

"उन्होंने देखा तो था। वह भूमि उनको मिल नहीं सकती थी।"

"क्यों?"

"इसलिए कि उसका पट्टा पहले हो चुका था।"

"किसके नाम हो चुका था?"

"मेरे नाम। वह मैं आपके आने से दो वर्ष पूर्व ले चुका था।"

"ओह! तो सबसे अच्छी जगह तुमने ले ली है।"

"अच्छी है अथवा बुरी, जो कुछ भी है, वह तो ले ली गई है।"

"मुझसे अदला-बदली कर लो।"

फकीरचन्द हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "यह बात तो आज विचारणीय नहीं है। आज तो तुम अपनी भूमि को काम में लाने योग्य बनाने के लिए आए हो। पहले तो उसकी बात करनी चाहिए।"

"इसपर अपनी जिन्दगी बरबाद कर दूँ?"

"तो रामचन्द्र! सेठजी को लिख दो। राजा साहब की भूमि और भी है। उसको भी देख लिया जाय। अभी तो कुछ हानि नहीं हुई।"

"मैं भी यही समझता हूँ कि काम आरम्भ करने से पहले, तनिक अपनी भूमि को और राजा साहब की दूसरी भूमि को देख लूँ। तभी काम आरम्भ करने का विचार कर सकता हूँ।"

"तो यह भूमि तो तुम आज ही देख लो। कल जखलौन स्टेशन पर चले जाना। नदी पर पाँच मील ऊपर पुल है। वहाँ से ताँगा जाता है। स्टेशन के समीप से ही राजा साहब की भूमि आरम्भ होती है।"

"आप चौधरी को मेरे पास छोड़ दीजिए। मैं इस भूमि के विषय में जानकारी इससे लूँगा।"

"हाँ, यह ठीक रहेगा।" इतना कह फकीरचन्द वहाँ से चला गया।

फकीरचन्द के लौट जाने पर रामचन्द्र ने चौधरी से कहा, "फकीरचन्द मुझको मूर्ख समझता है। इसी कारण जो काम मुझे करना चाहिए, वह स्वयं करने लगा था।"

चौधरी रामहरष पिछले दिन से ही देख रहा था कि इस सेठ में और फकीरचन्द में बन नहीं सकती। इस कारण उसने मन में यह निश्चय कर लिया था कि इस सेठ को यहाँ से भगा देगा। पिछली रात मजदूरों के विषय में, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानता था कि वे उसकी हँसी कर रहे थे। मजदूरों से बातचीत होते समय भी वह जानता था कि जिनको बयाना दिया जा रहा है वे काम नहीं कर सकते।

मध्याह्न के समय फकीरचन्द जब भोजन करने आया तो पन्नादेवी उससे आकर पूछने लगी, "काम आरम्भ हो गया बेटा?"

"नहीं माँजी! रामचन्द्र को वह भूमि, जिसका पट्टा सेठ साहब ले गए हैं, पसन्द नहीं। वह काम आरम्भ करने से पूर्व यह देखना चाहता है कि क्या वह इस भूमि पर काम कर कुछ लाभ भी उठा सकता है अथवा नहीं। वह राजा साहब की दूसरी भूमि देखना चाहता है। यदि और अच्छी भूमि दिखाई दी, तो वह पट्टा बदलवाना चाहेगा।"

"वह मूर्ख है फकीर! मैं उसको यहाँ इसलिए नहीं लाई कि वह अपने पिता के काम में मीन-मेख निकाले।"

फकीरचन्द कपड़े बदल स्नानागार में चला गया। वहाँ हाथ-मुख धोकर बाहर आ भोजन करने चौके में चला गया। रामचन्द्र की माँ कितनी ही देर तक वहाँ खड़ी विचार करती रही, जहाँ फकीरचन्द ने उसको रामचन्द्र के विचार बताए थे। पश्चात् वह चौके में आकर फकीरचन्द के पास बैठ पूछने लगी, "बेटा! तुम क्या समझते हो कि यह भूमि ठीक रहेगी अथवा नहीं?"

"माँजी यह भूमि उतनी अच्छी नहीं, जितनी मेरी है। इस पर भी मैं ऐसा नहीं समझता कि वह लाभ नहीं देगी। एक बात में सेठजी ने भूल की है। वह भूमि लेने में नहीं, प्रत्युत रामचन्द्र को इस काम के लिए यहाँ भेजने में है। रामचन्द्र व्यापारी का बेटा है। व्यापारी लोग शरीर से मेहनत करना नहीं जानते। ये तो गणित के अंकों से खेलना जानते हैं। यहाँ तो वह सफल हो सकता है जो फावड़ा चलाने के मूल्य को समझता हो।"

"तो क्या तुम, जब तुम यहाँ आए थे, फावड़ा चला सकते थे?"

"जी हाँ, मैं फावड़ा चलाने की कीमत को समझता था और समय की कीमत को भी जानता था।"

"तो बेटा! उसको समझा दो न। वह भी समझ जाएगा।"

"यत्न तो कर रहा हूँ। इसमें सफलता की आशा कम है।"

"उसको आने दो, मैं समझाने का यत्न करूँगी।"

पन्नादेवी तो फकीरचन्द का अर्थशास्त्र समझती थी। वह एक गरीब की लड़की थी। कठिनाई रामचन्द्र की थी। वह, जहाँ मेहनत का प्रश्न आता था, वहीं अपनी वस्तुओं की समालोचना आरम्भ कर देता था। इसमें कारण था। उसे पिता के पास अटूट सम्पत्ति होने का ज्ञान था। वह देखता था कि जो कुछ उसके पास है, रुपया खर्च कर उसको अधिक अच्छा कर सकता है। इसके विपरीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फकीरचन्द जानता था कि उसके पास कुछ विशेष सम्पत्ति नहीं है। अपने पास की वस्तुओं को अच्छा करने का एक ही उपाय उसके पास था और वह था परिश्रम। इस कारण वह समझता था कि अदल-बदल से उन्नति करने के स्थान, उसको भूमि पर परिश्रम करना है। इससे ही वह इसको बढ़िया बना सकता है।

कई दिन तक रामचन्द्र जंगलों में घूमता रहा और ऊबड़-खाबड़ भूमि को देख, वह मन में यह निश्चय नहीं कर सका कि कौन-सी भूमि वह ले, जिससे उसको पर्याप्त लाभ हो सके। एक दिन वह माँ से आकर बोला, ''माँ! मैंने सब हिसाब-किताब लगाकर देख लिया है कि खून-पसीना एक करने पर भी दो-तीन हजार से अधिक लाभ नहीं हो सकता।''

''बेटा! फकीरचन्द की माँ मुझको बता रही थी कि पहले ही वर्ष उनको यहाँ से पन्द्रह हजार रुपये का लाभ हुआ था। इस वर्ष वे हिसाब करनेवाले हैं और यह आशा कर रहे हैं कि तीस से चालीस हजार के बीच लाभ होगा।''

रामचन्द्र ने कहा, ''माँ! यह सब बकवास है। इतना लाभ खेतीबाड़ी से हो नहीं सकता।''

''फकीरचन्द से बात कर लो न?''

''वह तो मुझे धोखे में डाल रहा है। मैंने इसके एक आदमी से पता किया है कि जो कुछ इसको लाभ हुआ है, वह जंगल की लकड़ी बेचने से हुआ है। हमारी भूमि में लकड़ी बहुत कम है। जब इसकी लकड़ी दो-तीन वर्ष में बिक जायगी, तब यह यहाँ भूखा मरने लगेगा।''

माँ रामचन्द्र की बात सुनकर भारी परेशानी अनुभव करने लगी थी। उसको चिन्ता इस बात की लगने लगी थी कि उसका लड़का फकीरचन्द से लड़ पड़ेगा। इस कारण वह दोनों में उत्पन्न हो रहे मिथ्या भ्रम को दूर करना चाहती थी। उसने कहा, ''राम! आओ मेरे साथ। फकीरचन्द से संशयों का निवारण करना अत्यावश्यक है। मैं चाहती हूँ कि उसके अनुभव से लाभ उठाया जाय।''

: 4 :

आज फकीरचन्द अपने काम के दूसरे वर्ष की हानि-लाभ का ब्यौरा बना रहा था। उसने सब-कुछ गिन, पूर्ण हिसाब का चिट्ठा बना लिया था। अपने चिट्ठे में लाभ की राशि देख तो वह स्वयं भी चकित हो गया। उसने अपनी माँ को बुलाया और उसको हिसाब समझाने लगा। इस समय पन्नादेवी राम को साथ लिये हुए वहाँ आ पहुँची। पन्नादेवी ने उसके लाभ के विषय में राम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्देह का उल्लेख कर कहा, ''तनिक इसको समझाओ बेटा! कि इस काम में लाभ कैसे सम्भव हो सकता है?''

फकीरचन्द ने कहा, ''माँजी! पिछले वर्ष बीस हजार के लगभग लाभ हुआ था। माँ ने उसमें से पाँच हजार दान-दक्षिणा में दिलवा दिया था। इस वर्ष मेरी सम्पत्ति, जो मैंने आज ही गिनी है, पचपन हजार के लगभग है। इसका अर्थ यह हुआ कि मुझको चालीस हजार के लगभग लाभ हुआ है। देखें, इसमें से माँ कितना दान करवाती है।''

इसपर रामचन्द्र बोल उठा, ''फकीर भैया! मुझको इसमें सन्देह है। क्या तुम इसका ब्यौरा बता सकते हो?''

''हाँ, क्यों नहीं? देखो, जब मैं इस गाँव में आया था, तब मेरे पास छः सौ रुपया ही था। मेरे डाकखाने की किताब से यह बात प्रकट होती है। अब आज की बात सुन लो। ललितपुर के बीकानेर बैंक में मेरा नकद बीस हजार रुपया जमा है। यहाँ के डाकखाने में भी मेरा दो हजार रुपया रखा है। लकड़ी बेचनेवालों से मैंने पाँच हजार रुपया लेना है। मेरा इंजिन, आरा मशीन, आटा चक्की और लकड़ी का स्टाक लगभग दस हजार का है। गेहूँ और भूसा, जो बिक चुका है, परन्तु जिसका दाम अभी वसूल नहीं हुआ, आठ हजार छ सौ रुपये से ऊपर का है। इसके अतिरिक्त मेरा नकद मकान पर जो खर्च हुआ है, वह दस हजार रुपया है। ये मोटी-मोटी रकमें ही पचपन हजार की हैं। इसके अतिरिक्त नीबू, गन्ने, आम के पेड़ हैं। मेरा सब्जी-भाजी का उद्यान है; गाय और भैंस हैं। इन सबका मैंने मूल्य नहीं लगाया। इसमें कीमत कम-अधिक हो सकती है। अब बताओ, क्या पूछना चाहते हो?''

रामचन्द्र चकित था। इसपर भी उसने कहा, ''इस सबमें कहीं धोखा है। पूर्ण हिसाब-किताब देखने पर यह बात पता चल जायगी।''

फकीरचन्द ने हँसते हुए कहा, ''राम भैया! धोखाधड़ी में क्या कारण हो सकता है! किसको धोखा देना है, जो यह गड़बड़ करूँगा?''

''मैं आज पिताजी को लिख रहा हूँ कि यहाँ काम में किसी प्रकार का भी लाभ नहीं। इसके कारण वे स्वयं यहाँ आकर देख लें। जब वे आएँगे, तो उनको तुम बता देना कि तुम्हारे बही-खाते कितने ठीक हैं।''

इस विवाद को बन्द करने के लिए फकीरचन्द की माँ ने अपनी बात कह दी, ''फकीर! मैं चाहती हूँ कि हिसाब का पूरा चिट्ठा तैयार कर दो। मैं उसको सुनकर एक-दो बातें करना चाहती हूँ।''

''चिट्ठा तो माँ तैयार हो गया है। मैं इसपर कई दिन से लगा हुआ था। इस वर्ष चालीस हजार रुपये का लाभ हुआ है। इससे कुछ अधिक तो हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है, कम नहीं। अब बताओ, तुम क्या चाहती हो?''

''एक तो पिछले वर्ष की भाँति सब कर्मचारियों को कपड़े, भत्ता और भोज देना होगा। दूसरे, विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति और देनी चाहिए। तीसरे, कर्मचारियों के बच्चों को पढ़ने में प्रत्येक प्रकार की सुविधा मिलनी चाहिए। उन सबका शुल्क और पुस्तकों का खर्चा तुमको देना होगा। साथ ही जहाँ आवश्यकता हो, उनके कपड़ों और दूध का प्रबन्ध तुम कर दो। और एक बात मैं तुमको अपने लिये करने को भी कहना चाहती हूँ।''

''वह भी कह दो माँ। तभी तो मैं इन सब बातों पर व्यय का अनुमान लगा सकूँगा।''

''वह तो घर के विषय में है।'' रामरखी ने कुछ झिझकते हुए कहा, ''मैं चाहती हूँ कि अब मेरी सहायता के लिए तुमको घर में किसी और को भी लाना चाहिए। मैं तुम्हारे घर के बढ़ते हुए काम को अकेली सँभाल नहीं सकती।''

''तो माँ! नौकर और नौकरानियाँ, जितनी चाहिएँ रख लो न।''

''कैसी बच्चों की-सी बातें करते हो? क्या मेरे काम का मूल्य एक नौकर के बराबर मानते हो तुम?''

फकीर कुछ न समझते हुए भौंचक्का रह गया। उसने पूछ लिया, ''तो माँ! तुम क्या चाहती हो?''

''बेटा! नौकर नहीं चाहती। मैं तो घर में एक और ऐसा व्यक्ति चाहती हूँ, जो मेरे स्वामित्व में बँटवारा कर सके।''

फकीरचन्द के मन में प्रकाश होने लगा था। इसपर भी वह इस विषय में अभी बातचीत को पसन्द नहीं करता था। उसने कहा, ''माँ! अब तुम अपने कामों में मुझसे राय माँगना आरम्भ कर रही हो। मैं स्वयं को इस योग्य नहीं मानता।''

इसपर रामरखी ने एक और बात आरम्भ कर दी—''हाँ, एक बात तो भूल ही चली थी। मैं चाहती हूँ कि जहाँ अपनी भूमि की उपज में तुम अपना हिस्सा निकाल रहे हो, उनपर काम करनेवालों का भाग दे रहे हो, वहाँ भूमिपति को भी उसका भाग देना चाहिए, नहीं तो अन्याय हो जाएगा। मैं चाहती हूँ कि जितनी भी भूमि काश्त में आ गई है, उसका लगान तुम राजा साहब को दे आओ।''

''पर माँ! पट्टे में तो ऐसा लिखा नहीं है?''

''पट्टे में तो इस कारण नहीं लिखा गया कि राजा साहब के कर्मचारियों को न तो काम करने का ढंग आता है, न हिसाब गिनने की विधि। हम तो जानते हैं कि भूमि से आय हुई है और उस आय का भाग भूमि के मालिक को मिलना चाहिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर माँ! भूमि का मालिक राजा कैसे हो गया? उसको भूमि को प्राप्त करने के लिए न तो कुछ व्यय करना पड़ा है और न ही कुछ परिश्रम। मालिक कहाने का तो उससे अधिक अधिकार हमको है।"

"देखो फकीर! यह विधान की बात हम घर बैठे कैसे कह सकते हैं? यदि वह स्वामी नहीं होगा, तो सरकार होगी। सरकार तो हमारे साथ इतनी भी रिआयत नहीं करेगी, जितनी राजा साहब ने की है। यह विधान की बात राजा साहब जानें और सरकार जाने। हम विधान बनानेवाले नहीं हैं और न ही विधान के विषय में निर्णय देनेवाले हैं। मेरी बात तो बहुत ही सरल है।

"मान लो, एक बालक की उँगली में अँगूठी पड़ी है और वह उस अँगूठी का मूल्य नहीं जानता। वह अँगूठी को पीतल की मान बेचने चला जाता है। खरीदनेवाले को पता चल जाय कि अँगूठी पीतल की नहीं, सोने की है, तो उसको दो पैसे में खरीद लेने में पाप नहीं लगेगा क्या?

"मैं तो यही बात कह रही हूँ। राजा साहब को इस भूमि का मूल्य पता नहीं था और उन्होंने हमको बिना मूल्य के दे दी है। जब हम जान गए हैं कि यह बहुत ही अधिक मूल्य की वस्तु है, तो इसका उचित मूल्य हमको देना ही चाहिए।"

फकीरचन्द की समझ में बात आ गई। इस कारण उसने कहा, "माँ! हमने अभी तक पचास बीघा भूमि जोती है। इस हिसाब से हमें राजा साहब को ढाई सौ रुपये देने चाहिएँ। यह मैं कल दे आऊँगा।"

: 5 :

जब फकीरचन्द राजा साहब के पास ढाई सौ रुपये लेकर पहुँचा तो राजा साहब के कर्मचारियों और राजा साहब को विस्मय हुआ। फकीरचन्द ने ढाई सौ रुपये एक चाँदी की तश्तरी में राजा साहब के सामने रख दिए। राजा साहब ने पूछा, "यह क्या है?"

"महाराज! मैं आपकी प्रजा हूँ। आपको स्मरण होगा कि दो वर्ष से कुछ ऊपर हो गए हैं कि आपने मेरी माँ के नाम जंगल की भूमि के एक किता का पट्टा दिया था। आपका, कदाचित्, विचार था कि भूमि को खेतीबाड़ी के योग्य करने में दस वर्ष लग जाएँगे। परन्तु महाराज। मैंने थोड़ी-थोड़ी भूमि से जंगल कटवाना और काश्त करनी आरम्भ कर दी है। इस वर्ष मैं पचास बीघा भूमि पर काश्त करने में सफल हो गया हूँ। अतः माता जी ने कहा है कि हमको अपने भाग का लाभ मिला है, तो भूमि के मालिक को भी उनका भाग मिलना चाहिए। अतः मैं पचास बीघा का लगान देने के लिए सेवा में उपस्थित हुआ हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मैंने सुना है कि तुमको लकड़ी बेचकर बहुत आय हुई है ?"

"हाँ महाराज! उसमें से आपका भाग मैं नियमानुकूल दे रहा हूँ। एक आना मन आपका भाग लिखा है। वह मैं आपके मुंशी को सदैव देता रहता हूँ।"

"ठीक है। हम उससे असन्तुष्ट नहीं। मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि नकद प्रति मन तुमको क्या बच जाता है ?"

"महाराज! छः आने मन लकड़ी बिकती है। पेड़ों की कटाई, चिरवाई और स्टेशन तक ढुलवाई ढाई आना, तीन आना मन पड़ जाती है। फिर दो पैसा मन अपने एजेण्टों को, जो बेचने का काम करते हैं, देता हूँ। इस प्रकार मुझे लगभग एक-डेढ़ आना मन बचत होती है।"

"तब तो ठीक है। यह तो कुछ अधिक नहीं। इसपर भी यह रुपया तो हम अपने पट्टे की शर्त के अनुसार ले नहीं सकते।"

"पर यह तो हम अपनी इच्छा से दे रहे हैं। इसमें लिखे या न लिखे की बात ही नहीं उठती।"

महाराज ने मैनेजर को बुलाकर फकीरचन्द की बात बताई। मैनेजर के मन में एक विचार तो यह आया कि इन माँ-बेटे का मस्तिष्क बिगड़ गया है; परन्तु कुछ विचारकर बोला, "महाराज! यह रुपया लगान के रूप में तो आप ले नहीं सकते। न ही मैं इस रुपये की रसीद दे सकता हूँ। हाँ, यह भेंट के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।"

"पर भेंट तो राजमाता ही लेती हैं, हम नहीं लेते।"

"तो महाराज!" फकीरचन्द ने कह दिया, "मेरी माताजी की वह भेंट राजमाता के चरणों में भेज दी जाय।"

राजा साहब ने कुछ विचारकर क़हा, "ठीक तो है। यह तुम्हारी भेंट माताजी के पास भेज दी जायगी। वे इसको लेती हैं अथवा नहीं, यह हम तुम्हें कल तक बता सकेंगे।"

उसी सायंकाल फकीरचन्द को, जो धर्मशाला में ठहरा हुआ था, यह सन्देश मिला कि राजमाता उसको बुला रही हैं।

फकीरचन्द राजप्रासाद के द्वार पर उपस्थित हुआ तो तुरन्त भीतर बुला लिया गया। राजमाता के पास राजा साहब भी उपस्थित थे। फकीरचन्द ने हाथ जोड़कर जब नमस्कार किया, तो उसको सामने बैठने का आदेश देकर राजमाता ने पूछा, "कहाँ के निवासी हो ?"

"माताजी! हम लाहौर के रहने वाले हैं; परन्तु अब हमारा वहाँ से कोई सम्बन्ध नहीं रहा। हमारा कोई मकान-सम्पत्ति वहाँ नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''कोई सम्बन्धी भी नहीं?''

''सम्बन्धी तो हैं, पर सम्बन्ध नहीं। ताऊ हैं, ताई हैं और उनके लड़के-लड़कियाँ भी हैं। उन्होंने हमसे सम्बन्ध तोड़ दिया है।

''मेरे पिताजी का दो वर्ष की लम्बी बीमारी के पश्चात् देहान्त हुआ तो मेरी माता के पास हमारे पालन-पोषण के लिए एक पैसा भी नहीं था। इसपर माताजी ने पड़ोसियों के कपड़े सी-सीकर हमारे पालन-पोषण का प्रबन्ध किया। इसको हमारे बाबा और ताऊजी ने पसन्द नहीं किया और हमारा बहिष्कार कर दिया।''

राजमाता इस स्थिति पर चकित रह गई। अब उन्होंने भूमि के विषय में प्रश्न पूछ लिया, ''कितनी भूमि आपने पट्टे पर ली थी?''

''पाँच सौ एकड़।''

''अभी कितनी काश्त में आई है?''

''इस वर्ष केवल पचास बीधा ही काश्त में आई है। अगले वर्ष तक दो सौ बीघा हो जाएँगी।''

''तो तुम हमको अगले वर्ष दो सौ बीघा का लगान देना चाहोगे?''

''ऐसा ही विचार है माताजी!''

''तुम्हारे आने से पूर्व कई लोग भूमि लेने आए, परन्तु वे भूमि देख घबरा गए और बिना पट्टा लिये ही लौट गए। राजा साहब और मैनेजर साहब तुमसे भी यही आशा करते थे; विशेष रूप में जब उनको मालूम हुआ था कि तुम नगर-निवासी हो। इसलिए जबसे हमें तुम्हारे अपने प्रयास में सफल होने का समाचार मिला है, हम बहुत प्रसन्न हैं।

''इसपर तुम अपने-आप ही, समय से पूर्व लगान देने चले आए हो। यह तो आशातीत है और तुम यह भी कहते हो कि तुम भूमि का लगान निरन्तर देते जाओगे।''

इसपर फकीरचन्द ने वह बालक और अँगूठीवाली कहानी सुना दी, जो उसकी माँ ने सुनाई थी। इससे राजमाता बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने पूछा, ''यह पट्टा तो तुम्हारी माँ के नाम है न? क्या यह सबकुछ उनकी जानकारी में कर रहे हो?''

''जी, यह सब जो मैं निवेदन कर रहा हूँ, उनके कहे अनुसार ही कर रहा हूँ। यह सबकुछ उनका ही है। मैं तो केवल उनका प्रतिनिधि मात्र ही हूँ।''

''मैं तुम लोगों से बहुत प्रसन्न हूँ और तुम्हारी माताजी को यह अपने स्नेह की सूचक भेंट देना चाहती हूँ।''

इतना कह उसने अपने पीछे की ओर देखा। एक नौकरानी परदे के पीछे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से निकली और एक रेशमी साड़ी तथा एक स्वर्ण-कण्ठी राजमाता के सामने रख दी। राजमाता ने इन वस्तुओं को देते हुए कहा, ''अपनी माताजी को यह देते हुए कहना कि कभी झाँसी आएँ तो अवश्य मिलें।''

फकीरचन्द ने भेंट ली और प्रणाम कर कहा, ''मैं आपका सन्देश दे दूँगा और मुझे आशा है कि माँ शीघ्र ही आपके दर्शन का लाभ उठाएँगी।''

फकीरचन्द ने घर आकर राजमाता का सन्देश और स्नेह-सूचक भेंट की बात बताई तो रामरखी चकित रह गई। उसने समझ लिया कि ऐसे भूमिपति से सम्बन्ध तो परमात्मा की महान् अनुकम्पा के कारण ही हो सकता है। इसके अतिरिक्त जब फकीरचन्द ने राजमाता की अन्य बातें बताईं, तो अपने सौभाग्य पर उसके आँसू निकल आए।

परन्तु रामचन्द्र को तो यह बात सुनकर और भी अविश्वास होने लगा। उसने अभी तक काम आरम्भ नहीं किया था। उसने सेठजी को बम्बई में एक पत्र लिखकर अपने विचार व्यक्त कर दिए थे। वह और उसकी माता पन्नादेवी, दोनों अब सेठजी के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे।

रामचन्द्र प्रातः नौ बजे सोकर उठता था। स्नानादि से छुट्टी पाने तक ग्यारह बज जाते थे। भोजन तो वह फकीरचन्द के काम से लौटने के पहले ही कर लेता था। तदुपरान्त वह गाँव में नदी के किनारे पर शिवालय में शतरंज खेलने चला जाता। सायंकाल चार बजे तक शतरंज चलती, तदनन्तर वह शौचादि के लिए जंगल में चला जाता। वहाँ से लौटकर वह हलवाई की दुकान से कभी मलाई और कभी रबड़ी लेकर खाता। इसके बाद वह नदी के किनारे चला जाता। जहाँ नदी गाँव के समीप से बहती हुई निकल जाती थी, वहाँ एक पक्का घाट बना हुआ था। उस स्थान पर गाँव के लोग स्नानादि करते थे और सायंकाल गाँव के बेकार आदमी बैठ भांग छानते थे। रामचन्द्र उनमें जा पहुँचता। परिणाम यह होने लगा था कि उसकी मित्रता गाँव के बेकारों से हो रही थी।

जिस समय फकीरचन्द झाँसी से लौटा, रामचन्द्र घर पर था और स्नान कर भोजन करने को तैयार बैठा था। फकीरचन्द आया तो रामचन्द्र ने पूछ लिया, ''किधर से आ रहे हो भैया?''

''झाँसी से। सुनाओ क्या निश्चय किया है तुमने काम का?''

रामचन्द्र ने अपनी बात को टालते हुए पूछ लिया, ''झाँसी किस काम से गए थे?''

''जमींदार से कुछ काम था।''

''क्या काम था?''

इस समय रामचन्द्र की माँ और फकीरचन्द की माँ, दोनों आ खड़ी हुईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फकीरचन्द मकान के बड़े कमरे में बैठ जूता उतारने लगा। जूता उतारते हुए उसने माँ को राजमाता का सन्देश दे दिया। माँ अभी परमात्मा का धन्यवाद ही कर रही थी कि फकीरचन्द जूता उतार अपना सूटकेस ले बिछी दरी पर बैठ गया तथा उसको खोल, उसमें से कण्ठी और साड़ी निकालकर माँ को दिखाने लगा। माँ ने दोनों वस्तुएँ देखीं और विस्मय करते हुए कहा, ''ये तो काफी मूल्य की मालूम होती हैं?''

रामचन्द्र की माँ ने साड़ी और कण्ठी हाथ में पकड़कर देखीं और कहा, ''साड़ी तो तीस-चालीस रुपये की मालूम होती है और कण्ठी यदि असली सोने की हुई तो चालीस की यह भी होगी।''

''कुछ भी हो। मैं राजमाता की आभारी हूँ। मैंने तो उनके दर्शन भी नहीं किए, फिर भी उन्होंने अपना स्नेह मुझपर प्रकट किया है।'' इसपर रामचन्द्र फकीरचन्द के समीप आ बैठा था, कहने लगा, ''और माताजी! आपने क्या नजराना भेजा था?''

''हमने पचास बीघा भूमि का, जो इस वर्ष जोती है, लगान ढाई सौ रुपया भेजा था।''

''वह तो पट्टे के अनुसार अभी आपको आठ वर्ष बाद देना चाहिए था। आपने ढाई सौ रुपया आठ वर्ष पहले ही दे दिया और अब प्रतिवर्ष देते रहेंगे। उसके मुकाबले में यह सत्तर-अस्सी रुपये की भेंट कुछ अर्थ नहीं रखती।''

''तुम ठीक कहते हो राम।'' रामरखी ने कहा, ''यह अपना-अपना दृष्टिकोण है। मैंने जब लगान की रकम भेजी थी, तो इस विचार से नहीं कि मुझको राजमाता कुछ भेंट में भेजेगी। मैंने तो वह अपना कर्त्तव्य समझा था।''

''कर्त्तव्य कैसे? कर्त्तव्य होता तो पट्टे में न लिख दिया जाता?''

''तुम क्या समझते हो कि जो बात लिखी जाय, वही करने योग्य होती है? क्या यह सच नहीं कि पट्टा मनुष्य का लिखा हुआ है और मनुष्य भूल कर सकता है? मेरी समझ में आया कि पट्टे में कुछ छूट गया है, इस कारण मैंने उसकी पूर्ति कर दी है।''

''माताजी! अपनी बुद्धि तो प्रायः भूल करती है। इसी कारण लिखत-पढ़त कर ली जाती है और सरकार विधान बनाती है। देखिए, हमारे पिताजी ने करोड़ों रुपये कमाए हैं और वे आपकी भाँति बुद्धि का प्रयोग नहीं करते। यदि वे भी अपनी आय में दूसरों के भाग का विचार करने लगते, तो आज तक कंगाल के कंगाल बने रहते।''

''राम! तुम्हारे पिता और हमारे में भारी अन्तर है। हम मजदूर हैं और तुम सेठ-साहूकार। तुम रुपये को धो-धोकर प्रयोग में लाते हो और धोवन ही पीते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो। हम तो परिश्रम के फल को बढ़ाने का यत्न करते रहते हैं। इस कारण हमको अपने परिश्रम और दूसरे के परिश्रम में तुलना करनी ही पड़ती है।''

: 6 :

इस वर्ष भी मजदूरों और कर्मचारियों को भोज दिया गया, पुरस्कार बांटे गए और कपड़े दिए गए। सब कर्मचारियों के परिवार के वे लोग भी इस बाँट में पत्तीदार हो गए थे, जो कर्मचारियों के आश्रय पलते थे। इस बार कर्मचारियों के वृद्ध माता-पिता भी अपना भाग पा गए थे।

यह संयोग की बात थी कि जब भोज हो रहा था, करोड़ीमल वहाँ आ पहुँचा। उसको रामचन्द्र की चिट्ठी मिली थी और चिट्ठी का उत्तर भेजने की अपेक्षा उसने स्वयं ही वहाँ आना उचित समझा। अब तो फकीरचन्द के पास काम करने वालों की संख्या तीस से ऊपर हो चुकी थी और इस आयोजन से लाभ उठाने वाले लोग डेढ़ सौ से अधिक हो गए थे। भोज में सबको खीर, पूरी, शाक-भाजी और आम दिए गए थे।

करोड़ीमल आया तो कोठी के बाहर वाले मैदान में खाने वालों को पक्तियों में बैठे देख चकित रह गया। उसे आया देख फकीरचन्द आगे आ, उसका स्वागत करने लगा। सेठ ने उससे पूछा, ''फकीरचन्द यह भोज कैसा हो रहा है ?''

''जी, यह अपने खेतों पर काम करने की दूसरी वर्षगाँठ है। मालिक-नौकर मिलकर आने वाले वर्ष में ऋद्धि-सिद्धि की प्रार्थना कर रहे हैं।''

करोड़ीमल हँस पड़ा और बिना कुछ कहे, पूछने लगा, ''हमारे सुपुत्र क्या कर रहे हैं ?''

''भोजन कर मन्दिर में गया है।''

''मन्दिर में क्या है ?''

''यह पास ही तो है। जाकर पता कर लीजिए न! चलिए भीतर। माँजी खाने की देखभाल कर रही हैं।''

''माँजी कौन ? राम की माँ कहाँ हैं ?''

''उनके विषय में ही मैं कह रहा हूँ।''

''तो वह यहाँ आकर काम करने लगी है ? घर पर तो तिनका भी नहीं तोड़ती थी।''

''यह काम भी तो एक छूत की बीमारी है।'' फकीरचन्द मुस्कराया और फिर अपने काम में लग गया। नौकर सेठजीको भीतर ले गया। भीतर सेहन में हलवाई पूरी-कचौड़ी तल रहे थे। बड़े-बड़े कड़ाहों में खीर, भाजी बनी तैयार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखी थी। खिलाने वाले रामचन्द्र की माँ के पास आते तो वह उनको परातों में डाल-डालकर देती जाती थी।

सेठजी को आया देख उसने मुस्कराकर उनकी ओर देखा और कहा, "बस आधे घण्टे का काम और है। आप भीतर चलिए और कपड़े बदल स्नानादि कर लीजिए।"

"ओ सन्तू!" उसने नौकर को आवाज दी। सन्तू आया तो वह कहने लगी, "सेठजी के स्नान इत्यादि का प्रबन्ध कर दो।"

सेठ करोड़ीमल स्नान कर आया तो उसने देखा कि मकान के बड़े कमरे में रामरखी बैठी कपड़े बाँट रही है। बण्डल बँधे रखे थे। उसके पास कर्मचारी आते थे, उनको अथवा उनके परिवार वालों को रामरखी उनके योग्य उचित कपड़ों का बंडल देती जाती थी। करोड़ीमल विस्मय में देखता रह गया। इस समय पन्नादेवी आई और बोली, "चलिए, आपके लिए भोजन लग गया है।"

सेठ भोजन करने लगा और पन्नादेवी उसके सामने भूमि पर ही बैठ गई। सेठ ने पूछ लिया, "राम कहाँ है?"

"भोजन कर वह मन्दिर में दिल बहलाने के लिए चला जाया करता है। मैंने सन्तू को भेज दिया है कि उसको बुला लाए।"

"जिस काम के लिए उसको भेजा था, उसका क्या हुआ है?"

"उसका विचार है कि इस काम में घाटा ही रहेगा। इस विषय में एक पत्र उसने आपको लिख दिया था। आपके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। वह आपने भेजा नहीं।"

"मैं उत्तर देने स्वयं आ गया हूँ। राम ने लिखा है कि फकीरचन्द ने उसको धोखा दिया है। उसने मुझको भी धोखा दिया है। यही कारण है मेरे आने का। मैं स्वयं जाँच करना चाहता हूँ। परन्तु वह आया नहीं। कितनी दूर है मन्दिर यहाँ से?"

"है तो समीप ही। उसको अब तक आ जाना चाहिए था।"

सेठ ने भोजन समाप्त किया। तब भी उसका लड़का नहीं आया था। इस कारण सेठ स्वयं ही देखने के लिए चल पड़ा। उसने मकान से बाहर निकल एक आदमी से पूछा, "चौधरी! मन्दिर किधर है?"

"वह है। वह पीपल के पेड़ के पीछे कलश दिखाई दे रहा है।"

करोड़ीमल उस ओर ही चल पड़ा। यह शिवालय था। बाहर पत्थर का नन्दी बैठा था और मन्दिर में शिवलिंग के ऊपर एक साँकल के आश्रय कलश लटक रहा था। सेठ ने देखा कि वहाँ कोई नहीं। इस समय मन्दिर के पिछवाडे से कई लोगो के हँसने का शब्द सुनाई दिया। सेठ उधर ही चल पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फकीरचन्द के घर का नौकर सन्तू एक कोठरी के बाहर खड़ा था और चार-पाँच आदमी भीतर बैठे शतरंज का खेल देख रहे थे। एक ओर रामचन्द्र और दूसरी ओर गले में रुद्राक्ष की माला पहने, माथे पर त्रिपुंड चित्रित किए पुजारी खेलनेवाले थे।

सेठ राम को वहाँ बैठा देख क्रोध से भर गया। इसपर सन्तू ने कह दिया, "बाबू कहते थे कि खेल खतम कर चलते हैं।"

"राम! उठो। यह बेकारों के खेल खेलने में लज्जा नहीं लगती?"

"ओह! पिताजी! आप यहीं आ गए हैं!" रामचन्द्र ने खेल छोड़ते हुए कहा, "मैं तो आने ही वाला था।"

"अरे मूर्ख! तुमको यहाँ जंगल काटने भेजा था या शतरंज खेलने?"

दोनों घर की ओर चल पड़े। चलते हुए रामचन्द्र ने कहा, "उस विषय में तो मैंने अपने विचार आपको लिख दिए थे। आपके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था।"

"पर मैंने तुमको काम पर टीका-टिप्पणी करने नहीं भेजा था। तुमको तो जंगल कटवाना था। लाभ अथवा हानि होती, तो मेरी थी। तुम कामचोर हो। चलो बम्बई, तुम यहाँ काम नहीं कर सकते।"

"पिताजी! एक नौकर और मालिक के लड़के में यही तो अन्तर है। नौकर मशीन की भाँति काम करता है, परन्तु मालिक मशीन की भाँति काम नहीं कर सकता। वह तो इन्सान की भाँति काम करना चाहता है। लाभ-हानि देखना उसका काम होता है। वही मैंने किया है।"

"ओह! तुम मालिक कब से बने हो?"

"जब से आपने मुझे स्वतन्त्र रूप से काम करने के लिए भेजा है। अब आप आ गए हैं। आप ही देख लीजिए कि मैं ठीक कहता हूँ अथवा नहीं।"

"अच्छी बात है। अब आज तो बहुत देर हो गई है। कल सवेरे चलकर अपनी भूमि देखेंगे। मैं यह जानना चाहता हूँ कि वहाँ क्या बाधा है, जिसको तुम पार नहीं कर सके।"

सायंकाल सेठानी ने सेठजी के समक्ष एक और समस्या उपस्थित कर दी। उसने कहा, ललिता अब चौदहवाँ वर्ष पार कर चुकी है। उसको मैं बम्बई में अकेले छोड़कर नहीं आ सकी। यही कारण है कि उसको साथ लेकर घूमना पड़ता है। मेरा मन चाहता है कि उसके विषय में भी विचार कर लिया जाय और अगले वर्ष उसके हाथ पीले कर दिए जाएँ।"

"भाग्यवान्! बहुत जल्दी-जल्दी, तुम इन बच्चों को घर से निकालने का विचार कर रही हो। क्या दुःख देते हैं ये तुम्हें?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दुःख क्यों होगा? सज्ञान लड़की के लिए वर ढूँढ़ना कोई बुरी बात है क्या?"

"पर मैं पूछता हूँ कि लड़के की समस्या तो अभी सुलझी नहीं और लड़की की यह नई समस्या चला दी?"

"क्या आप एक व्यापार करते हुए दूसरे पर विचार नहीं करते?"

"व्यापार और लड़की के विवाह में अन्तर नहीं है क्या?"

"आपने ही तो एक दिन कहा था कि एक व्यापारी को सबकुछ रुपये-पैसे के रूप में दिखाई देता है।"

"वह तो ठीक है। हम जब एक काम में लाभ कर लेते हैं, तभी किसी दूसरे काम में जाने का साहस करते हैं। यह लड़के के काम में लाभ तो दिखाई दिया नहीं इस कारण लड़की के विषय में विचार करने के लिए मस्तिष्क काम नहीं करता।"

"ठीक है; परन्तु अब तो लड़का दिखाई दे रहा है। उसको बाँध लीजिए। विवाह पीछे सुभीते से किया जा सकेगा।"

"कहाँ देखा है तुमने लड़के को?"

"फकीरचन्द की माँ से मेरी बातचीत हुई है।"

"फकीरचन्द? पर वह तो हमारी बिरादरी का नहीं है?"

"आपने ही तो कहा था कि आपकी बिरादरी रुपये-पैसेवालों की है। भूल गए हैं आप?"

"बहुत बातें याद रखती हो? परन्तु फकीरचन्द कहाँ का धनी है?"

"काम चलता है। बढ़िया खाना-पीना होता है। सुखी है और गाँव में यश कमा रहा है।"

"कितना होगा इसके पास?"

"उस दिन माँ को हिसाब सुना रहा था। पन्द्रह हजार बचा था पिछले वर्ष और तीस हजार नकद बचा है इस वर्ष।"

"कहीं तुम्हारी लड़की को ठगने के लिए धोखा तो नहीं दे रहा!"

"तो ऐसा करो न, किसी बहाने उसका हिसाब देख लो। सब बात स्पष्ट हो जाएगी।"

"फकीरचन्द की माँ ने क्या उत्तर दिया था?"

"एक दिन बात हुई थी। उसने कहा था, 'बहन! तुम यहाँ ठहर ही रही हो। एक-दूसरे को जानने का बहुत अच्छा अवसर मिलेगा और समय पाकर यह सम्बन्ध बन सका तो अच्छा ही होगा।"

"ठीक तो कहती थी। तुम्हें इस विषय में जाँच करनी चाहिए थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जाँच तो की है। पर पहले आपसे बात करके ही तो इसको आगे चला सकती थी।"

"अच्छा अब मुझे अपने ढंग से जाँच कर लेने दो। पीछे राय दूँगा।"

"लड़का अच्छा है, सुन्दर है, स्वस्थ है, सुशील है और समझदार है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि परिश्रमी है। किसी प्रकार का ऐब नहीं। सिगरेट तक तो पीता नहीं।"

"पहले रामचन्द्र की बात समझ लूँ, पीछे इसपर विचार करूँगा। यदि ये खेत रहते हैं तब तो यहाँ रिश्तेदारी बनाई जा सकती है, अन्यथा इसमें कुछ भी लाभ प्रतीत नहीं होता।"

"खेतों का लड़की के विवाह से क्या सम्बन्ध हो सकता है?"

"हमारे यहाँ तो हर एक बात का सम्बन्ध व्यापार से होता है।"

पन्नादेवी इसका अर्थ समझ नहीं सकी। वह प्रश्न-भरी दृष्टि से अपने पति की ओर देखती रही। इसपर सेठ ने आगे कहा, "मैं तो अब खेतों का प्रबन्ध करके ही जाऊँगा। या तो इन खेतों को छोड़ने का प्रबन्ध कर दूँगा, अन्यथा यहाँ काम आरम्भ करा दूँगा। इस अवस्था में फकीरचन्द की सहायता की आवश्यकता पड़ेगी। इस बात को जानकर ही तो इस विवाह के विषय में विचार किया जा सकता है।"

पन्नादेवी को विचार करने का वह ढंग ठीक प्रतीत नहीं हुआ। उसने कहा भी कि इन दोनों बातों को मिलाना ठीक नहीं, परन्तु सेठ ने बात बदलकर इस विषय को समाप्त कर दिया।

अगले दिन सेठ उस समय जाग पड़ा, जब फकीरचन्द उठता था। पिता ने पुत्र को जबरदस्ती उठाया और तैयार हो तीनों चल पड़े। फकीरचन्द ने काम की दूसरी वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में खेतों में छुट्टी की थी। उसने घर के दो नौकर साथ ले लिये और सेठ तथा रामचन्द्र को साथ लेकर, नदी-पार सेठजी की भूमि पर जा पहुँचा। वह उनको उस टीले पर ले गया, जिसपर उसने घर बनाने का प्रस्ताव किया था। वहाँ खड़े होकर उसने चारों ओर का जंगल दिखाया और अपनी योजना बताते हुए कहा, "मैंने जब इस भूमि पर काम आरम्भ किया था, तो मेरे पास केवल छः सौ रुपया था। इस कारण मैं न तो मकान बनवा सकता था और न ही खेती-बाड़ी आरम्भ कर सकता था। मुझे तो लकड़ी बेच-बेचकर जहाँ अपना निर्वाह करना था, वहाँ साथ ही आगे के लिए पूँजी तैयार करनी थी। मुझे इंजिन, आरा, चक्की, मकान बनवाना था और खेतों को समतल कर तैयार करना था। सब-के-सब काम लकड़ी की आय पर निर्भर थे। साथ ही मुझको केवल तीन लकड़हारों से काम आरम्भ करना पड़ा। यदि मेरे पास प्रारम्भिक छः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ भी नहीं होता, तो कदाचित् मैं अपने हाथ से लकड़ी काटकर और उसको बेचकर काम आरम्भ करता। इससे तो काम और भी धीरे-धीरे होता। परन्तु आपके पास तो अतुल धन है, जो आप पूँजी के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। आपको लकड़ी की आय की इतनी आवश्यकता नहीं, जितनी मुझको थी। आप तो एकदम पम्प लगवा सकते हैं, भूमि समतल करवा सकते हैं। मेरे पास लकड़ी ढोने का सामान नहीं था। इस कारण मुझे लकड़ी बहुत ही सस्ते दाम पर यहाँ गाँव में ही बेचनी पड़ती थी। आप तो मोटर ट्रक यहाँ ला सकते हैं और लकड़ी का स्टाक कर मुझसे कई गुना अधिक लाभ कर सकते हैं।''

इस पर राम ने कहा, ''पर भैया! तुम नौकरों को अधिक वेतन देकर खराब कर चुके हो।''

''इसपर भी मुझको लाभ होता है। कारण यह कि मैं दस घण्टे जमकर काम लेता हूँ। मजदूर भी अपने वेतन के अनुसार ही काम करता है।''

''पर तुमको वास्तव में लाभ हो रहा है क्या? यह भी एक विचारणीय बात है।''

''आपके विचार से इसको लाभ नहीं कह सकते। क्योंकि मैं केवल खेती-बाड़ी का काम ही नहीं करता। लकड़ी बेचना, आरा चलाना, चक्की चलाना, अथवा दूध-घी बेचना खेती-बाड़ी के काम नहीं हैं। इसपर भी मेरा कहना है कि ये सब खेती-बाड़ी की 'बाई प्रोडक्ट्स' (उपसृष्टि) हैं। मैं यह करता हूँ कि खेती-बाड़ी के काम से बचा हुआ समय इन वस्तुओं के तैयार करवाने में लगवाता हूँ। यही कारण है कि इनको अधिक वेतन देने पर भी मुझको लाभ होता है।

''मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि केवल खेती-बाड़ी तो कदाचित् लाभ नहीं दे सकती। उससे बचे समय को अन्य कामों में व्यय करने से जो इस भूमि से सम्बन्ध रखते हैं, लाभ होता है।''

इसपर सेठ करोड़ीमल ने पूछा, ''क्या इससे अच्छी भूमि राजा साहब के क़ितों में और कहीं है?''

''मेरी जानकारी में तो नहीं। सब भूमि नदी से दूर है। उसकी सिंचाई कुओं के बल पर होगी और वह महँगी पड़ेगी।''

सेठ साहब ने फकीरचन्द की बातें सुनकर राम को सम्बोधन कर कहा, ''अब बताओ राम।''

''फकीरचन्द की सब बातें भ्रममूलक हैं। इसको लाभ इस कारण नहीं हो रहा कि यह परिश्रम कर रहा है और इसके काम का ढंग उत्तम है। इसके लाभ का कारण केवल इसकी अच्छी भूमि है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसका अर्थ यह हुआ कि हमारी भूमि पर, जो-कुछ फकीरचन्द ने बताया है, करने पर भी लाभ नहीं होगा?"

"जी, नहीं होगा।"

"अर्थात् तुमसे यह काम नहीं हो सकता।"

"नहीं।"

"तो आज सायंकाल की गाड़ी से यहाँ से चल दो। तुम्हारा यहाँ कुछ काम नहीं। मैंने तुमको शतरंज खेलने के लिए नहीं भेजा।

जाकर मनमाड में ऊन के कारखाने तथा डिपो का काम देखो और वहाँ के काम का ब्यौरा प्रतिदिन लिखते रहना।"

"तो आप यहाँ ठहरेंगे क्या?"

"हाँ; मुझको फकीरचन्द की बात में तथ्य प्रतीत होता है। मैं उसके कथन की परीक्षा करना चाहता हूँ।"

रामचन्द्र आश्चर्य में पिता का मुख देखता रह गया। कुछ विचार कर उसने कहा, "तनिक मैं भी तो देखूँ कि किस प्रकार आप असम्भव को सम्भव करते हैं।"

"कोई आवश्यकता नहीं। तुम अभी भोजन कर यहाँ से चल दो। जरौन से सायं छः बजे गाड़ी चलती है। फिर बीना से पंजाब मेल रात के नौ बजे मिल जायगी।"

"और माताजी?"

"वे मेरे साथ आएँगी।"

फकीरचन्द को यह समझ आया कि बेटे से बाप अधिक स्थिर-बुद्धि है। इसमें ही उसके धनवान् बनने का रहस्य है। वह समझने लगा था कि यह आदमी है, जो यहाँ सफल हो सकेगा; परन्तु क्या यह खेतों के काम पर स्वयं ठहरेगा? उसको यह सम्भव प्रतीत नहीं हुआ।

: 7 :

फकीरचन्द का अनुमान सत्य था। करोड़ीमल उस जंगल पर अपना जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार नहीं था।

जब रामचन्द्र अपना बिस्तर बाँध चला गया तो रात के भोजन के समय सेठ ने फकीरचन्द से उसके काम की आय के विषय में पूछ-गीछ करनी आरम्भ कर दी। उससे उसको फकीरचन्द की आर्थिक अवस्था का ज्ञान हो गया और उसने सन्तोष अनुभव किया। इसपर फकीरचन्द ने पूछा, "तो अब आप खेतों पर स्वयं काम कराएँगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठ करोड़ीमल हँस पड़ा। उसने कहा, "बेटा! यह तो मैं मान गया हूँ कि यहाँ काम करने से लाभ होगा, परन्तु मैं उससे कहीं अधिक लाभ अपनी कोठियों में कर सकता हूँ। स्वयं यहाँ रहकर मैं काम नहीं करूँगा।"

"तो फिर?"

"मैं अपने खेतों के लिए कोई ईमानदार प्रबन्धक ढूँढ़ना चाहता हूँ। इसकी खोज मैं कल से आरम्भ करूँगा।"

"विचार तो ठीक है। यदि कोई परिश्रमी और ईमानदार प्रबन्धक मिल जाय तो कुछ तो हो ही जायगा।"

"तुम्हीं यह काम क्यों नहीं कर लेते?"

"कौन-सा काम?"

"सेठ करोड़ीमल के खेतों का काम।"

"तो अपना काम छोड़ दूँ क्या?"

"दोनों काम एक साथ नहीं हो सकते क्या?"

"बहुत कठिन है।"

"मैं तुमको पाँच सौ रुपया महीना वेतन दूँगा।"

"मैं समझता हूँ कि यह हो नहीं सकेगा।"

"मेरे विचार में तुम कर लोगे। एक-दो दिन में विचारकर बताना।"

"अच्छी बात है, विचार करूँगा। इसपर भी इतना तो कह ही सकता हूँ कि अभी तक मुझको यह बात उचित प्रतीत नहीं होती।"

उस दिन तो बात इतनी ही हुई। अगले दिन सेठ किसी ऐसे आदमी की खोज करता रहा जिसको वह इन खेतों का काम सौंप सके और जो ईमानदारी से काम कर सके। यह खोज कई दिन तक जारी रही। एक दिन सेठ ने फकीरचन्द के सामने प्रश्न उपस्थित कर दिया। सेठजी ने पूछा, "फकीरचन्द! मेरे उस दिन के प्रश्न का क्या उत्तर देते हो?"

"आपके खेतों के प्रबन्ध का काम?"

"हाँ।"

"मैंने तो समझा था कि आप कोई अन्य व्यक्ति ढूँढ़ रहे हैं।"

"ढूँढ़ रहा था परन्तु तुम्हारा स्थानापन्न तो नहीं मिला। हाँ, एक आदमी मिला है, जो सब काम करेगा—एक हाथ की भाँति और उस हाथ का मस्तिष्क तुमको बनना पड़ेगा।"

"मैंने तो यह निर्णय किया है कि आपका यह काम कर नहीं सकूँगा। मेरे अपने खेतों पर इतना काम होगा कि मैं उसके अतिरिक्त कुछ भी समय नहीं निकाल सकूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''इसपर भी मैं समझता कि यदि तुम मेरी योजना समझ लो तो काम कर सकोगे। मैंने एक आदमी ऐसा ढूँढ़ा है, जो सब काम करेगा। तुम उसको पहली सायंकाल काम बता दिया करोगे। ऐसे ही, जैसे तुम अपने खेतों का काम अपने कर्मचारियों को बता दिया करते हो। वह आदमी अगले दिन सायंकाल किए हुए काम का ब्यौरा बता दिया करेगा। सब आय तुम्हारे हाथ में रहेगी और खर्चा भी तुम्हीं करोगे। कभी-कभी सप्ताह में एक-आध बार, आवश्यकता पड़ने पर खेतों में जाकर देख आया करना। बस इतने मात्र के लिए तुम प्रबन्धक हो। वह तुम्हारा सहायक प्रबन्धकर्त्ता रहेगा। इसके लिए भी तुमको मैं पाँच सौ रुपया दूँगा।''

''और उस सहायक को क्या दे रहे हैं?''

''एक सौ रुपया महीना।''

''मैं विचार करता हूँ कि मैं नहीं कर सकूँगा।''

''नहीं, तुम कर सकोगे। देखो, तुम कुछ काल के लिए काम करके देखो। मुझको विश्वास है कि तुम दोनों काम कर सकोगे।''

''पर एक बात और है। मैं, यदि यह काम करूँगा, तो बिना वेतन के करूँगा।''

''क्यों?''

''इस कारण कि मैं आपका पड़ोसी होने के नाते, अपने घर पर बैठे-बैठे यह काम कर दूँगा। कुछ लूँगा नहीं।''

सेठ ने, यह सुन कि फकीरचन्द उसकी नौकरी करना नहीं चाहता, उसकी सेवाएँ बिना वेतन के भी लेने का निर्णय कर लिया। इसपर भी वह, मन में वेतन से अधिक सुदृढ़ सम्बन्ध बना, उससे ईमानदारी से काम लेने की योजना बनाने लगा। उसने अपने मन में उसको अपना दामाद बनाने का निश्चय कर लिया। परन्तु अभी इस विषय में बात नहीं की। उसने केवल यह कहा, ''देखो फकीरचन्द! मैं समझता हूँ कि तुम्हारे जैसा आदमी, इन दोनों खेतों का काम कर लेगा। मैं तुमको इस काम के लिए पाँच सौ रुपया महीना देकर बहुत ही प्रसन्न होता। इसको लेने में यदि तुम संकोच अनुभव करते हो, तो भी मैं काम तो तुमसे लूँगा ही। रहा उस काम के प्रतिकार में मुझको तुम्हें क्या देना चाहिए, यह प्रश्न अभी खुला रखना चाहता हूँ। भविष्य में इसपर विचार कर लेंगे।''

फकीरचन्द इसका अर्थ न समझ चुप रहा। सेठ ने उसको चुप देखकर एक हजार रुपये के नोट उसके पास रख दिए और कहा, ''मैं सायंकाल उस आदमी को तुम्हारे पास ले आऊँगा, जिसको तुम्हारे कहे अनुसार काम करना होगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायंकाल फकीरचन्द काम से लौटा तो सेठ मोतीराम को लिये हुए उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। फकीरचन्द को जब बताया गया कि मोतीराम उसके अधीन काम करेगा, तो उसने काम करने से इन्कार कर दिया। सेठ ने कारण पूछा। फकीरचन्द ने मोतीराम का पूर्व वृत्तान्त बता दिया। उस वृत्तान्त को सुन सेठ ने कहा, "यह सब तो मैं पहले से ही जानता था। बात यह है कि उस घटना के उपरान्त, जिसमें यह तुम्हारी भूमि लेने का प्रयत्न कर रहा था, इसको बहुत पश्चात्ताप करना पड़ा है। राजा साहब ने भी इसकी सिफारिश की है और उनका कहना है कि मानवता के नाते हमको प्रत्येक मनुष्य को उन्नति करने का अवसर देना चाहिए। यह अपने पिछले कर्मों पर पश्चात्ताप करता है। मैंने इसको कह दिया है कि यदि वह तुम्हारे कहे अनुसार काम नहीं करेगा, तो तुम इसको काम से निकाल भी सकते हो। साथ ही यदि अब इसने बेईमानी की, तो पाँच वर्ष से कम दण्ड नहीं होगा।"

फकीरचन्द अनुभव कर रहा था कि वह किसी झंझट में फँस रहा है। इसपर भी उसने सोचा कि जब वह कह चुका है कि वह देखभाल तो रखेगा ही, चाहे कुछ भी हो। इस कारण उसने मोतीराम से कहा, "मोतीराम! कल नन्दू, कामता, लखू और महतू को लेकर प्रातः पाँच बजे जंगल में पहुँच जाना।"

"हाँ, काम कल से आरम्भ करा दो। फकीर! मैं तुम्हारे इस अनुग्रह को जीवन-भर स्मरण रखूँगा।"

उसी रात को, जब फकीर सोने के लिए नीचे सेहन में अपनी खाट पर पहुँचा, तो उसकी माँ उसके पास आकर बैठ गई। सेठ इत्यादि तो सोने के लिए छत पर चले गए थे। रामरखी ने कहा, "सो गए हो बेटा!"

"अभी नहीं माँ! क्या बात है?"

"एक बात तुमसे कहना चाहती हूँ। एक दिन पहले भी कहने का यत्न किया था, परन्तु पूरी बात हो नहीं सकी थी। मैंने कहा था न कि तुम अब विवाह कर लो।"

"हाँ माँ! मुझको स्मरण है। साथ ही मैंने भी कुछ कहा था।"

"वह मुझको याद है। इसलिए कहना चाहती हूँ कि जब से पन्नादेवी यहाँ आई है अपनी लड़की ललिता के लिए कह रही है। मैं उसको टालमटोल करती रही हूँ। आज उसने कहा है कि सेठजी मान गए हैं और हमको भी मान जाना चाहिए।"

इतना कहकर फकीरचन्द की माँ अपने पुत्र का मुख देखने लगी। फकीरचन्द का कहना था, "माँ! तुमने क्या विचार किया?"

"ललिता को तुम भी तो नित्य देखते हो। कैसी लगती है तुमको?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने उसके रूप-रंग को देखा है। परन्तु उसके मन के विकास को तो नहीं देखा। एक धनी बाप की बेटी है, एक मूर्ख अभिमानी भाई की बहन है और वह स्वयं क्या है, मैं नहीं जानता।"

"अभी बच्ची है। वह तो बन जाएगी, जैसा बनाओगे। रूप-रंग कुछ बुरा नहीं। स्वभाव अच्छा है, काम-काज करती है। अभिमान और मूर्खता अभी तो दिखाई नहीं दी। आगे क्या होगा, यह भगवान् और भाग्य के हाथ में है।"

"माँ! तुम जानो और तुम्हारा काम जाने। यदि वह आई तो सबसे अधिक वास्ता तो तुम्हारे साथ ही पड़ेगा। तुम्हीं उसको कुछ सिखाओगी। इस विषय में जैसा तुम कहोगी मैं मान जाऊँगा।"

इतना कह फकीरचन्द, जो उठकर खाट पर बैठ गया था, पुनः लेट गया और सोने के लिए उसने करवट बदल ली। माँ समझ गई कि वह इससे अधिक कुछ नहीं कहेगा। इस कारण अपने व्यवहार पर मनन करती हुई, अपनी खाट पर जा लेट गई।

अगले दिन फकीरचन्द स्नानादि से निवृत्त हो अल्पाहार के लिए चौके में आया तो उसने ललिता को एक पृथक् चूल्हे पर कुछ पकाते देखा। उसने माँ से पूछा, "यह क्या बन रहा है माँ?"

"सेठजी के लिए दलिया।"

"तो हमने कौन पाप किए हैं जो हमें नहीं मिलेगा?"

माँ ने केवल यह कह दिया, "इसके बनने में देर है। तुम्हें जल्दी काम पर जाना है।"

वास्तविक बात यह थी कि सेठानी ने फकीरचन्द की माँ से जब ललिता की सगाई की बात पक्की कर ली तो उसने और उसके पति ने मन में विचार कर लिया कि अब ललिता की सास के घर का नहीं खाएँगे। इस कारण रात ही उन्होंने दलिया, चीनी और घी गाँव से मोल लेकर ललिता को दे दिया था और कहा था कि खाना पृथक् बनाए।

ललिता को इस व्यवहार से विस्मय हुआ था और उसने कहा भी, "माताजी से कहे बिना कैसे बनाऊँगी?"

"तुम बनाओ। यदि वे कुछ कहें तो कहना कि मुझसे पूछ लें।"

जब ललिता पृथक् चूल्हे पर आग चलाने लगी तो रामरखी ने पूछा, "ललिता! क्या हो रहा है?"

"दलिया बना रही हूँ माताजी।"

"किसके लिए?"

"हम सबके लिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह दलिया आया कहाँ से? यहाँ तो तैयार नहीं था।"

"माँजी को पता है।"

"लाओ, मैं बना दूँ।"

"नही; उनकी आज्ञा है कि पृथक् बनाऊँ।"

फकीरचन्द की माँ कुछ-कुछ तो समझ गई। इसपर भी वह इस प्रकार नहीं चाहती थी। उसने केवल यह कहा, "अच्छी बात है। वे स्नान कर आएँगी तो पूछ लूँगी।"

ललिता समझी कि सेठजी और फकीरचन्द में किसी बात का झगड़ा हो गया है और खाना-पीना पृथक् हो गया है। इसपर भी वह विस्मय कर रही थी। उसका विचार था कि यदि झगड़ा हुआ है तो यहाँ से चला जाना ठीक है, न कि इनके घर में रहते हुए, इनके ही चौके में पृथक् चूल्हा जलाना।

फकीरचन्द चला गया तो पन्नादेवी चौके में देखने आई कि दलिया बनने में कितना विलम्ब है। वह आई तो रामरखी ने कह दिया, "बहिन जी! यह पृथक् चूल्हा-चौका तो शोभा नहीं देता।"

ललिता के कान खड़े हो गए। वह भूमि की ओर देख रही थी। उसकी माँ ने मुस्कराते हुए कहा, "लड़की के घर का खाते हुए लज्जा लगती है न!"

इसपर रामरखी ने उत्तर दिया, "तो मूल्य दे देते।"

"इसके पिता कहते थे कि शाक-भाजी अन्नादि का मूल्य तो दे सकते हैं, परन्तु समधिन के परिश्रम का मूल्यांकन सम्भव नहीं होगा।"

"कुछ अधिक ही दे देते। इससे टोटा पड़ने वाला था क्या?"

"तो उनसे पूछ लूँगी। साथ ही मैंने समझा कि लड़की को अब काम का अभ्यास भी डालना चाहिए।"

इस वार्तालाप का प्रभाव ललिता पर हुए बिना नहीं रहा। वह स्वयं को इस घर का प्राणी समझने लगी, जहाँ उसका जीवन व्यतीत होने वाला था। साथ ही वह यह अनुभव करने लगी थी कि उसका एक-एक काम अब उसके होने वाले पति की दृष्टि में आने लगेगा, इससे उसको संकोच भी होने लगा।

पन्नादेवी तो पूजा करने अपने कमरे में चली गई। रामरखी बिहारीलाल के लिए खाना परस रही थी। बिहारीलाल आया और पीढ़े पर बैठ बोला, "माँ!" परन्तु कहता-कहता रुक गया। उसका ध्यान ललिता की ओर चला गया था। उसको भी ललिता को पृथक् चूल्हे पर खाना बनाते देख विस्मय हुआ। उसने पूछ लिया, "यह क्या हो रहा है ललिता?"

"देखो बिहारीलाल!" उसकी माँ ने कहा, "अब वह तुम्हारी भाभी बनने वाली है। इसलिए आदर से बात किया करो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तव में घर में केवल बिहारीलाल ही था जो ललिता से खुलकर बात किया करता था। दोनों बड़ी औरतें तो उसपर नियन्त्रण रखने के लिए केवल आज्ञा ही दिया करती थीं। रामचन्द्र को अपने मनोरंजन से अवकाश नहीं था और फकीरचन्द काम-काज में व्यस्त रहता था। बिहारीलाल को पर्याप्त अवकाश रहता था और वे खुलकर बातचीत करने लगे थे। सायंकाल जब वह स्कूल से लौटता तो घर के पिछवाड़े वाली पुष्पवाटिका में वे प्रायः मिल जाते और बातचीत होती रहती थी।

ललिता घर पर ही पढ़ती रही थी। हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भी कुछ-कुछ पढ़ने और बोलने लगी थी। बिहारीलाल उसको अपनी पुस्तकें पढ़ने के लिए दिया करता था।

बिहारीलाल ने ललिता को कभी भी अपनी भाभी के रूप में नहीं देखा था। वह उसको एक अभ्यागत लड़की के रूप में ही जानता था और समझता था कि वह और उसकी माँ एक दिन वहाँ से चले जाएँगे और फिर एक रेल के यात्री की भाँति आँखों से ओझल हो जाएँगे। अब यह जान कि वह उनके घर का एक अभिन्न अंग बनने वाली है, उसको विस्मय हुआ। कुछ विचारकर वह हँस पड़ा।

माँ ने पूछा, "क्यों बिहारी! क्या बात है?"

"माँ! तुमने बहुत अच्छा किया है, जो भैया से इसको नत्थी कर रही हो। कहीं मेरे लिये कहती, तो मैं अस्वीकार कर देता।"

ललिता ने बिहारीलाल को देख दाँत चिढ़ा दिए। माँ का ध्यान खाना परसने की ओर था, इस कारण उसने नहीं देखा। बिहारीलाल ने देख लिया था। इस कारण वह और भी जोर से हँसने लगा।

माँ ने पूछा, "इसमें हँसी की क्या बात है? तुमसे इसका विवाह नहीं कर रही तो केवल इसलिए कि तुम इसके योग्य नहीं हो। पहिले इतनी योग्यता प्राप्त करो, फिर विवाह की बात करना।"

"क्या अयोग्यता है मुझमें?"

"तुममें अभी तक मानव को पहचानने की योग्यता नहीं आई। तुमने इसका साफ गन्दमी रंग देखा है, इसीसे इसको कुरूप समझने लगे हो। तुम इसके मन और आत्मा को नहीं देख सके।"

"माँ! यह गन्दमी नहीं है। यह तो काली है।"

"आँखों को ऐनक लगवाओ बिहारी!"

बिहारीलाल हँस पड़ा और हाथ में गिलास पकड़ बोला, "अच्छा माँ! तुम कहती हो तो मानता हूँ कि ललिता भाभी पार्वती समान गोरी है। अब तो ठीक है न?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ; और सीता समान पवित्र। समझे।"

"और माँ! मैं लक्ष्मण समान देवर।"

तीनों हँसने लगे।

: 8 :

बिहारीलाल से सीता के देवर लक्ष्मण बनने का आश्वासन ले, ललिता उससे यह पूछने के लिए उत्सुक हो उठी कि उसके भैया अपनी होनेवाली पत्नी के विषय में क्या विचार करते हैं। यद्यपि अब तो उसको बिहारीलाल से भी एकान्त में मिलने में संकोच होने लगा था, तो भी उसका मन किसी ऐसे अवसर को पाने के लिए व्याकुल हो रहा था। यह अवसर उसे शीघ्र ही मिल गया।

कुएँ से पानी भरकर घर के भीतर ले जाया जाता था। सेठ साहब तो झाँसी गए हुए थे। घर का नौकर दोपहर के समय कहीं चला गया था। घर में पानी की आवश्यकता पड़ी, तो ललिता गगरा ले कुएँ पर जा पहुँची। स्कूल में छुट्टी होने के कारण बिहारी कुएँ की जगत पर बैठा कपड़ों को साबुन लगा रहा था।

ललिता गगरे को रस्सी बाँधने लगी तो बिहारीलाल ने कहा, "छोड़ो भाभी! मैं पानी निकाल देता हूँ।"

"अभी तो सगाई भी नहीं हुई, भाभी कैसे हो गई?"

"किन्तु अब इसमें सन्देह भी क्या है?" बिहारीलाल ने गगरा उसके हाथ से लेते हुए पूछा।

"कौन जाने तुम्हारे भैया भी काली बहू पसन्द न करें तो?"

"माँ ने तो कह दिया है कि तुम पार्वती के समान गोरी हो।"

"पर माँ के बेटे ने तो नहीं कहा और वे भी तो अपने छुटके भैया की तरह कह सकते हैं। कौन जाने?"

"तब तो यह बात जानने की है।"

"तो जानते क्यों नहीं? सगाई के उपरान्त जानने से क्या लाभ होगा?"

"अच्छी बात है। आज रात को पूछूँगा।"

"और मुझे कब बताओगे?"

"तुमको क्यों बताऊँगा? माँ को बता दूँगा। तुम उनसे पूछ लेना।"

"नहीं, मुझे बताना।"

"किसलिए?"

"मुझको बहिन जो कहते हो।"

इतने में पानी भरा गगरा कुएँ से खींच लिया गया और ललिता उसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोल, उठाकर चल दी। बिहारीलाल मुख देखता रह गया। बहिन और भाई के शब्दों में माधुर्य अवर्णनीय है। इसका प्रतिकार करना अति कठिन है। अतः बिहारीलाल ने उसी सायंकाल भैया से इस विषय पर बात चलाने का निश्चय कर लिया।

फकीरचन्द सायंकाल का हिसाब-किताब कर चुका था। इस समय करोड़ीमल झाँसी से आया और सीधा फकीरचन्द के कमरे में आ खड़ा हुआ। फकीरचन्द ने उसको अपने समीप बिठाया, तो वह कहने लगा, "देखो बेटा फकीरचन्द! आज मेरा यहाँ का काम समाप्त हुआ। मेरे पीछे अब तुम जंगल का काम कराना। मैं परसों चला जाऊँगा।"

"अभी तक तो मोतीराम काम ठीक कर रहा है। फिर भी इससे मन डरता है।"

"मैंने इसके बाप से कहा है कि वह इसका विवाह कर दे। विवाह हो जाने पर यह ठीक हो जाएगा।"

इतना कह सेठ उठकर अपने कमरे में चला गया। बिहारीलाल उसी कमरे के एक कोने में बैठा, अपनी स्कूल की पुस्तकें देख रहा था। सेठ के चले जाने पर उसने फकीरचन्द की ओर देखकर पूछ लिया, "भैया!"

"हाँ, बिहारी!"

"तुम्हारा विवाह होनेवाला है क्या?"

"किसने कहा है तुमको?"

"ललिता ने।"

"क्या कहा है?"

"यही, सेठजी के जाने की बात हो रही थी। मैंने कहा था, 'ललिता! अब तो खेतों का प्रबन्ध हो गया है। तुम लोग कब जा रहे हो?' उसने कहा, 'अभी एक काम और रहता है।' मेरे पूछने पर उसने बताया कि मेरे भैया की सगाई होनेवाली है और हमारी माताजी ने सेठजी को उस अवसर पर यहीं ठहरने का निमन्त्रण दिया है।"

"तो तुमको उसके कहने पर विश्वास नहीं आया?"

"भैया! वह बहुत झूठी है। मुझको कहती थी कि बम्बई में बहुत ऊँचे-ऊँचे मकान हैं। इतने ऊँचे कि लोग मकानों की छतों पर चढ़कर आकाश के ऊपर चले जाते हैं और वहाँ स्वर्ग की सैर कर फिर मकान की छतों पर आकर बम्बई में आ जाते हैं।"

फकीरचन्द हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "तो यह तुमको गप्प मालूम हुई है? यह बात तो ठीक ही है। बम्बई में गगनचुम्बी मकान तो बने ही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनमें ऐसे आदमी भी रहते ही हैं, जो अपने धन के बल पर स्वर्ग की सैर करते रहते हैं और फिर अपने कर्मों के कारण बम्बई की पापमय भूमि पर आ जाते हैं।''

''तो वह यह बात सत्य कहती थी? तब तो विवाह की बात भी सत्य होगी। पर भैया! विवाह किससे हो रहा है?''

''यह उससे पूछा नहीं क्या?''

''पूछा था, पर उसके मुख से उत्तर नहीं निकला और उसका मुख लाल हो गया। इसके उपरान्त वह भाग गई।''

''तो क्या समझा तुमने?''

''तो क्या तुम्हारा विवाह ललिता से होगा?''

''माँ ने कहा है कि होगा, तो होगा।''

''ललिता से?''

''क्यों? उससे नहीं होना चाहिए क्या?''

''तो ललिता मेरी भाभी बनेगी? पर भैया! वह भाभी बनने योग्य दिखाई नहीं देती।''

''क्या कमी है उसमें!''

''कुछ काली है, नाक मोटी है, मारवाड़ी बोली बोलती है और फिर मुझको चिढ़ाती है।''

''बस, या कुछ और भी दोष हैं उसमें?''

''बस एक और है। वह राम की बहन है।''

''बिहारी ये सब बातें किसी भी आँखों वाले को दिखाई दे जाती हैं और तुम क्या समझते हो कि माँ की दृष्टि दुर्बल पड़ रही है। देखो, वह कहती है, रंग तो देश-देश का मेवा है। भगवान् विष्णु और भगवान कृष्ण भी तो श्यामवर्ण थे। तीखी नाक क्रोधी और लड़ाकू स्वभाव की सूचक होती है मारवाड़ी बोलती है, तो अपनी माँ से बोलती है, जैसे हम अपनी पंजाबी बोलते हैं। तुमको चिढ़ाती इस कारण है कि तुम उससे हँसी करते हो, जो भाभियों से नहीं की जाती। रही राम की बात, वह विवाह के पश्चात् विचार करेंगे। कुछ और बात हो तो बताओ।''

''तो भैया! तुमको वह पसन्द है? तुम उससे विवाह करोगे तो उसको भाभी मानना ही पड़ेगा।''

''हाँ, नहीं मानोगे तो जानते हो ऐसे देवर को भाभियाँ क्या दण्ड देती हैं?''

''क्या दण्ड देती हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कोई झगड़ालू, कुरूप, काली देवरानी लाकर देवर के पल्ले बाँध देती हैं।"

"तब तो भैया! मान जाऊँगा।"

दोनों हँसने लगे। खाने का समय हो गया था, सन्तू उनको बुलाने आया। दोनों उठ तथा हाथ-पाँव और मुख धो-पोंछकर चौके में जा बैठे।

माँ ने दोनों के सामने थाली रखते हुए कहा, "बहुत हँसी हो रही है आज?"

"हाँ, माँ!" बिहारीलाल फकीरचन्द के कहने से पहले ही बोल उठा, "भैया कहते हैं कि यदि मैं ललिता को भाभी नहीं मानूँगा, तो वह मेरे लिये कोई झगड़ालू और कुरूप बहू ढूँढ़ लाएगी।"

माँ ने हँसते हुए कहा, "हाँ देखो, तुमने उसको एक दिन काली कहा था और वह रात-भर रोती रही थी और न जाने मन में क्या-क्या प्रतिकार लेने के लिए विचार करती रही होगी।"

"तब तो बहुत भूल हुई माँ! मैं उनसे क्षमा माँग लूँगा और कह दूँगा कि वह पार्वती समान गोरी और सीता समान पवित्र है।"

"इस प्रकार नहीं बेटा! जब सगाई होगी तो भाभी के चरण-स्पर्श करना। वह तुम्हारी दूसरी माँ बन जाएँगी। ऐसा करोगे तो वह सदा माँ के समान तुमसे वात्सल्यता का व्यवहार रखेगी।"

"तो मेरी दो माँ होंगी?"

"और उसके मुझसे छोटा होने के कारण, मेरे पश्चात् भी, वह तुम को माँ की वात्सल्यता से वंचित नहीं होने देगी।"

"तब तो अवश्य चरण-रज माथे पर चढ़ाऊँगा।"

"और फिर उसकी हँसी उड़ाई तो कान भी खींचेगी।" फकीरचन्द ने कहा।

"नहीं, अब नहीं उड़ाऊँगा। यह तो तब तक ही था, जब तक वह भाभी नहीं बनी थी।"

उसी रात को सेठजी ने फकीरचन्द को अपना बम्बई जाने का कार्यक्रम बता दिया। उसने कहा, परसों सगाई की विधि होगी। मैं इसी प्रयोजन में झाँसी गया था। कुछ वस्तुएँ खरीदनी थीं। साथ ही वहाँ मैं राजा साहब को निमन्त्रण दे आया हूँ। वास्तव में उनके घर में पन्द्रह दिन तक मेहमान रहा था, इसी कारण रस्मी तौर पर निमन्त्रण देने गया था, परन्तु वे तो उस अवसर पर आने के लिए तैयार प्रतीत होते हैं। उन्होंने कहा, 'हम वहाँ जाने का विचार तो कई दिन से कर रहे थे। अब सगाई की बात सुन *एक पन्थ दो काज* वाली बात हो जाएगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसपर मैंने पन्नादेवी की ओर से राजमाता को भी निमन्त्रण दे दिया है। इस विषय में उन्होंने कुछ नहीं कहा। सो मैं आशा करता हूँ कि परसों राजा साहब ग्यारह बजे के लगभग यहाँ पहुँच जाएँगे। वे मोटर में आ रहे हैं। सगाई की विधि पूर्ण कर सायंकाल मोटर से वापस चले जाएँगे।''

फकीरचन्द राजा साहब के, सम्भवतः राजमाता के साथ, आने की बात सुन कुछ चिन्ता अनुभव करने लगा था। यह देख सेठ ने कहा, ''इसकी तुम चिन्ता न करो। मैं सब प्रबन्ध कर आया हूँ। मैं झाँसी में एक शामियाना और एक टैंट तथा फर्नीचर का प्रबन्ध कर आया हूँ। टैंट इत्यादि तो आज ही रेल में आ जाएँगे और उनको लगाने वाले कल आ जाएँगे। साथ ही राजा साहब की सेवा-सुश्रूषा करने के लिए वहाँ के होटल का प्रबन्ध कर आया हूँ।''

इससे फकीरचन्द को कुछ शांति मिली। वह नहीं जानता था कि किस प्रकार एक राजा का स्वागत करना चाहिए। अब पूर्ण उत्तरदायित्व सेठजी को अपने ऊपर लेते देख उसको सन्तोष हुआ।

फकीरचन्द ने गाँव के प्रायः सब नर-नारियों को निमन्त्रण दे उन सब में मिठाई बाँटने का प्रबन्ध कर दिया। इसके लिए उसने ललितपुर से हलवाई बुलाकर एक दिन पूर्व ही मिठाई बनवानी आरम्भ कर दी थी।

निश्चित दिन सेठजी ने ललिता की फकीरचन्द से सगाई कर दी। उस समय राजा साहब और रानी तथा राजमाता भी उपस्थित हो गई थीं। यह बात तो गाँव में पहली बार हुई थी। इसलिए गाँव के खाते-पीते लोगों की ओर से राजमाता को भेंट देने का आयोजन कर दिया गया। राजमाता यह नहीं चाहती थीं; परन्तु रामहरष ने गाँव के लोगों की ओर से आग्रह किया तो वे मान गईं। अतएव सगाई की विधि के तुरन्त ही पश्चात् गाँव के रहने वालों ने राजमाता को भेंटें दीं। एक सौ एक रुपये से लेकर, दो-दो रुपये तक भेंट दी गईं। इससे एक हजार से ऊपर रुपया राजा साहब को मिला। फकीरचंद ने इक्यावन रुपये और सेठ ने एक सौ एक रुपया भेंट किया।

इस आयोजन के उपरान्त राजमाता और रानी साहिबा लड़की को आशीर्वाद देने आईं। ललिता, पन्नादेवी और रामरखी एक बड़े कमरे में उनका स्वागत करने के लिए बैठी थीं। वे दोनों आईं, तो उनके सम्मानार्थ वे उठ खड़ी हुईं। तदनन्तर उनको जल-पान कराया गया। राजमाता ने ललिता को आशीर्वादसूचक चौदह छुहारे और नारियल दिया। इससे तो फकीरचन्द की माँ की आँखों में आँसू छलक आए। उसने पुनः अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए हाथ जोड़कर धन्यवाद किया।

राजमाता ने केवल यह कहा, ''हमने फकीरचन्द के हाथ कहला भेजा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि आप जब झाँसी आएँ तो दर्शन दें। इस कारण जब यह अवसर आया तो हम स्वयं ही चली आई हैं।

"भूमि देते समय न तो राजा साहब को और न ही हमारे मैनेजर को यह विश्वास होता था कि यह लड़का इस कठिन काम में सफल हो सकेगा। तदुपरान्त आप लोग यहाँ आए और काम आरम्भ हो गया। इसपर भी हमारा सन्देह बना ही रहा। हम समझते थे कि जंगल कटवा कर लकड़ी सस्ते भाव पर बेचकर रुपया एकत्रित कर लेना तो हो गया, परन्तु खेती-बाड़ी यहाँ हो सकेगी, यह कहना कठिन था। इस वर्ष जब वह हमको बिना माँगे और समय से बहुत पहले ही लगान देने आया, तो हम आश्चर्य करते रह गए। साथ ही यह जानकर कि फकीरचन्द का पालन-पोषण उसकी माँ ने ही किया है, तो उसकी माँ के दर्शन करने की लालसा जाग पड़ी। आज आपके दर्शन कर हम कृतकृत्य हो गए।"

: 9 :

राजमाता के मन के भावों का रामरखी पर बहुत ही प्रभाव हुआ था। जब यह बात हो रही थी, ललिता समीप ही बैठी थी। उसके मन में भी उथल-पुथल मचनी आरम्भ हो गई। राजमाता ने उसकी सास को पूजा-योग्य देवी कहा था। इससे उसके मन में अपनी सास और फिर उसके लड़के के लिए बहुत ही अच्छे विचार उत्पन्न हुए। वह विचार कर रही थी कि जिस स्त्री ने अपने पुत्र को इतना योग्य बना दिया है कि बड़े-बड़े आदमी जिसकी प्रशंसा करते हैं, वह उसके साथ भी तो अच्छा ही व्यवहार करेगी। ऐसी सास के पुत्र के लिए उसके मन में अनुराग उत्पन्न होने लगा।

जब राजा साहब इत्यादि चले गए तो फकीरचन्द की माँ ने गाँव की औरतों को मिठाई देकर विदा किया। फकीरचन्द और बिहारीलाल ने गाँव के छोटे-बड़े लोगों को सत्कार सहित विदा किया।

जब सब लोग बधाई देकर विदा हो गए तो बिहारीलाल को अपनी माँ की हँसी में कही बात स्मरण हो आई। वह वहाँ जा पहुँचा, जहाँ माँ ललिता को लिये बैठी थी। पन्नादेवी भी उसके पास बैठी आगे के कार्यक्रम पर विचार कर रही थी। बिहारीलाल आया तो माँ ने पूछा, "हाँ, बिहारी! किस काम से आए हो?"

"माँ! तुमने कहा था न कि सगाई के पश्चात् भाभी के चरण स्पर्श करना।"

रामरखी ने हँसते हुए कहा, "हाँ, कहा तो था। भला क्षमा माँग कर देखो तो, मिलती है वात्सल्यता अथवा नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँ! क्षमा माँगने नहीं आया। मैं तो दूसरी माँ बनाने आया हूँ।"

इतना कह वह घुटने टेक ललिता के चरण स्पर्श कर कहने लगा, "भाभी! आशीर्वाद दो।"

ललिता ने पाँव समेट लिये; परन्तु पन्नादेवी ने पूछ लिया, "क्या आशीर्वाद चाहते हो?"

"जो भाभी प्रसन्न होकर दें।"

रामरखी ने कह दिया, "ललिता बेटी! इसको आशीर्वाद दो कि इस वर्ष मैट्रिक की परीक्षा पास कर ले और फिर समय पर तुम्हारे जैसी सुशील देवरानी लाकर घर की शोभा बढ़ावे।"

ललिता मन में विचार कर रही थी कि कह दे कि भगवान करे उसको भी उस जैसी काली और मोटी नाक वाली बहू मिले, परन्तु माँ और सास के समीप होने के कारण कुछ नहीं कह सकी।

इसपर माँ ने कह दिया, "बिहारी! अब जाओ। आशीर्वाद मिल गया। देखो, सेठजी को कहो कि माँजी बुला रही हैं।"

बिहारी गया तो दोनों औरतें हँस पड़ीं। सेठानी ने कहा, "बहुत हँसमुख लड़का है।"

जब सेठ भीतर आया तो ललिता की माँ ने कहा, "ललिता की सास कह रही हैं कि विवाह की तारीख आज ही निश्चित हो जानी चाहिए।"

"यह बम्बई चलकर निर्णय करेंगे।"

"किससे निर्णय करना है? निर्णय करनेवाले तो आप और लड़के की माँ हैं।"

"विचारणीय बात तो यह है कि क्या ये बारात लेकर बम्बई आवेंगी?" सेठ ने कहा।

"आ तो सकती हूँ। इसपर भी यह स्पष्ट है कि हम अपनी आर्थिक स्थिति के अनुकूल ही तो बरात ला सकेंगे। वह आपको अपने मान के अनुरूप प्रतीत होगी अथवा नहीं, यह आपके विचार करने की बात है। ऐसी अवस्था में मेरी सम्मति है कि विवाह चुपचाप हो जाय। जिस दिन आप कहेंगे, मैं, फकीरचन्द तथा उसके भाई के साथ वहाँ आ जाऊँगी। जो कुछ विवाह की प्रसन्नता में आप अपने मित्रों तथा भाई-बाँधवों में लेना-देना चाहते हैं, वह एक दिन पीछे ले-दे लीजिएगा। हमको जो कुछ करना होगा, हम यहाँ आकर कर लेंगे।"

"ठीक है, मैं आपको बम्बई जाकर लिखूँगा।"

"आपके पहले समधी बहुत धनी सुने जाते हैं।" रामरखी ने कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हमको बताया गया है कि वे पाँच हजार बरातियों को साथ लेकर आए थे और आपका, बरात को खाने-पिलाने में तीस हजार खर्च हो गया था। हम यह नहीं कर सकेंगे। हमारी सामर्थ्य तो दस-बीस बराती लेकर आने की है। यह आपकी स्थिति के अनुकूल प्रतीत नहीं होगा। अत: विवाह तो केवल घर के आदमियों में ही होना चाहिए। शेष आप जानें, आपका काम जाने।''

''देखो समधिन! मैं सब-कुछ समझता हूँ। यदि कुछ अधिक करने की आवश्यकता समझी गई तो आपको उसका खर्चा दे देंगे।''

फकीरचन्द ऐसा नहीं मानेगा। उसका कहना है कि ससुराल से रुपया लेकर शान दिखाना उचित नहीं। आपके पास धन है, आप खर्च करें। हमारे पास उतना नहीं है, तो हम कम खर्च करेंगे।''

''ठीक है। आपकी इच्छा और रुचि के अनुसार ही काम होगा।''

इस प्रकार सेठ ने लड़की की सगाई की और अपने जंगल की कटाई का प्रबन्ध कर लिया। सगाई के दिन ही सायंकाल की गाड़ी से वे बम्बई के लिए चल पड़े। मार्ग में पन्नादेवी ने सेठ से कहा, ''आप भी खूब हैं। जिन्होंने आपसे किसी प्रकार भी कुछ नहीं माँगा, उनको आपने कुछ भी नहीं दिया।''

''सगाई पर देने की बात कह रही हो? मैंने यही उचित समझा है। यह मेरा सिद्धान्त है कि जब कोई काम एक रुपये में निकल सकता है, तो मैं उस पर एक आना भी अधिक खर्च करना उचित नहीं समझता। यह तो तुम जानती हो कि जब थर्ड क्लास में चढ़कर भी मैं बम्बई पहुँच जाता हूँ, तो मैं फर्स्ट क्लास अथवा सैकेण्ड क्लास में सवार होकर रुपया व्यर्थ गँवाना ठीक नहीं समझता।''

''तो आप ललिता के ससुराल वालों को थर्ड क्लास का डिब्बा समझते हैं?''

सेठ मुस्कराकर चुप हो रहा; परन्तु पन्नादेवी ने आगे पूछ लिया, ''और सेठ कुन्दनलाल भगेरिया को आप फर्स्ट क्लास वाले समझते हैं।''

''क्यों? तुमको उनसे कोई शिकायत है?''

''मुझको तो कोई नहीं। हाँ, शकुन्तला अपनी सास से तंग आ गई प्रतीत होती है। उसकी सास उसको कहती रहती है कि वह अपने मायके से कुछ भी नहीं लाई।''

''कुछ नहीं लाई? क्या मतलब? पाँच लाख नकद कुछ नहीं और पचास हजार विवाह पर कुछ नहीं? पर रानी! सुन्दरलाल तो ठीक है न? सुन्दरलाल का पाना ही तो उद्देश्य था। शेष बात रही खर्च की, उसको पाने के लिए जो कुछ खर्च करना पड़ा, किया।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझती हूँ कि सुन्दरलाल के माता-पिता तो निकृष्ट व्यक्ति हैं। इतना कुछ लेकर भी कह रहे हैं कि कुछ नहीं मिला। रही सुन्दरलाल की बात, अभी जीवन बहुत लम्बा है। कौन जाने क्या होगा?"

"अच्छा, आप फकीरचन्द को शादी पर क्या देना चाहते हैं?"

"मैंने फकीरचन्द से पूछा था कि वह क्या दहेज चाहेगा? इस पर उसने कहा कि उसको कुछ नहीं चाहिए। जो कुछ हम अपनी लड़की को देना चाहें, दें। इसीलिए मैं विचार कर रहा हूँ कि जो कुछ शकुन्तला को दिया है, वह ललिता को दे दूँ।"

"तो इसका अर्थ हुआ कि कुछ भी नहीं। मैं यह पसन्द नहीं करती। मैं समझती हूँ कि जो कुछ आपने शकुन्तला को तथा उसकी सास-श्वसुर को और उसके पति को दिया है, वह सबकुछ आप ललिता को दें। यदि इसके ससुराल वाले, सबकुछ, जो इसको तथा इसके ससुराल वालों को मिल रहा है इसके पास ही रहने देते हैं तो इसके भाग्य की बात है।"

सेठ पन्नादेवी से, जो उसकी दूसरी पत्नी थी, अधिक बहस नहीं कर सकता था। इस कारण उसकी बात मानने में ही भलाई समझ उसने कह दिया, "अच्छी बात है। जैसा तुम कहोगी, वैसा ही कर दूँगा।"

इस वार्तालाप को ललिता ने सुना तो वह अपने पिता के विषय में हीन विचार बना बैठी। उसकी समझ में आया कि पिता जी शकुन्तला से अधिक प्रेम करते हैं और उसको कम मानते हैं। साथ ही वह अपने पति को, यह कहने पर कि उसको कुछ नहीं चाहिए, देवता मानने लगी थी। जहाँ अच्छे आदमियों से अपना वास्ता पड़ने से वह अपने भाग्य की सराहना करती थी, वहाँ अपने पिता के व्यवहार को देख खिन्न थी।

बम्बई पहुँचने पर सेठजी के सम्बन्धी उनसे मिलने आए और जब उनको यह पता चला कि सेठ अपनी लड़की की सगाई एक ऐसे लड़के से कर आया है, जो न तो उनकी बिरादरी का है और न ही कुछ अधिक धनी है, तो सब सेठ से रुष्ट हो गए। रुष्ट होने वालों में सबसे अधिक क्रुद्ध उसका छोटा भाई नेमचन्द था। नेमचन्द बम्बई में एक व्यापारी की दुकान पर मुनीमी करता था और साथ ही कभी-कभी रुई और ऊन का सट्टा भी करता रहता था। मुनीमी से उसको केवल एक सौ रुपया मासिक मिलता था, परन्तु सट्टे से उसको हजारों रुपये की आय हो जाती थी। नेमचन्द आया और यह जानकर कि ललिता की सगाई एक पंजाबी से कर दी गई है, पूछने लगा, "कोई बड़ी आसामी है भैया?"

"कुछ बहुत अमीर तो वे हैं नहीं। हाँ, लड़का समझदार है और परिश्रमी है। जीवन-निर्वाह भली-भाँति हो जाएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भैया! जीवन-निर्वाह तो कुलियों का भी हो सकता है। हमें तो यह देखना चाहिए कि वह हमारे बराबर का आदमी है अथवा नहीं।"

"देखो नेमचन्द! यह माया तो आनी-जानी है। जब मैं बम्बई में आया था, तो मेरे पास ही क्या था?"

"पर भैया! तुम्हारी शादी तो तब ही हुई थी, जब तुम्हारे पास दो-चार लाख जमा हो गया था।"

"यह तो यहाँ भी हो जाएगा। नहीं होगा तो मैं उसको बम्बई में ले आऊँगा और यहाँ कुछ काम करा दूँगा।"

इससे नेमचन्द को सन्तोष नहीं हुआ। उसने पूछा, "भैया मालूम होता है कि यह नाता भाभी का ढूँढ़ा हुआ है?"

"है तो यही बात।"

"तब भैया! तुम हमारी बात मानोगे थोड़े ही। जबसे तुम्हारा यह नवीन विवाह हुआ है तुम तो भाभी के गुलाम हो गए हो।"

सेठ करोड़ीमल ने हँसकर बात टाल दी।

परन्तु इससे भी प्रबल विरोध शकुन्तला के ससुराल वालों की ओर से हुआ। कुन्दनलाल भगेरिया सगाई का समाचार सुनकर, नाक-भौं चढ़ाकर कहने लगा, "सेठ करोड़ीमल! क्या व्यापार कुछ पतला हो रहा है?"

"नहीं तो सेठजी!"

"अब गरीबों से सम्बन्ध बनने लगे हैं। दहेज देने में कष्ट हो रहा है क्या?"

"ऐसी कोई बात नहीं। लड़का बहुत ही योग्य है। इससे मन पसीज गया है।"

"किसी बड़े ओहदे पर नौकर है क्या?"

"खेती-बाड़ी कर निर्वाह करता है और इस धन्धे से भी उसने एक वर्ष में ही बीस-तीस हजार बचा लिये हैं।"

"सेठ करोड़ीमल! इन बिरादरी से बाहर और कंगालों से विवाह-सम्बन्ध बनाया तो हमारा बहुत अपमान हो जाएगा। हमारी पतोहू के बाप अपनी लड़की को एक कंगलों के घर ब्याह रहे हैं, यह हम सहन नहीं कर सकेंगे।"

"मेरी राय यह है कि आपका लड़का सुन्दरलाल एक बार वहाँ चलकर अपने साढ़ू को देख ले। पीछे उसकी राय इसके पक्ष में हुई तो विवाह होगा और यदि सुन्दरलाल ने भी उसको पसन्द नहीं किया तो फिर विचार करने की बात हो जाएँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुन्दरलाल जाने और तुम जानो। मैं तो अपनी बात अभी ही बता देता हूँ। यदि तुम्हें उन लोगों से अपना सम्बन्ध बनाना ही है तो फिर शकुन्तला का क्या होगा, मैं कह नहीं सकता।

"हाँ, अच्छी तरह से सोच-विचार कर लो।"

: 10 :

फकीरचन्द को तो ललिता से सगाई की बात एक स्वप्न-मात्र ही प्रतीत होती थी। यह इसलिए नहीं कि सेठ बहुत धनी आदमी था और फकीरचन्द एक मध्यम श्रेणी का किसान; प्रत्युत वह यह समझता था कि दोनों के स्वभाव मिलते नहीं हैं। एक पाई-पाई के लिए जान देने वाला था तो दूसरा अपनी कमाई के एक भाग को दान-दक्षिणा में दे देने वाला था।

जब सेठ, सेठानी और उनकी लड़की चले गए, तो घर पर रात के समय विचार-विनिमय होने लगा। फकीरचन्द ने माँ को अपने मन का संदेह बता दिया। उसने कहा, "माँ! मुझको तो यह बेल मढ़े चढ़ती दिखाई देती नहीं। मुझे यह संदेह हो रहा है कि सेठ ने अपने खेतों का प्रबन्ध कराने के लिए यह सगाई की बात चला दी है।"

माँ इस संदेह को सुनकर गम्भीर हो गई। उसने कहा, "भगवान् करे ऐसा न हो। सेठजी के मन में क्या है, सो तो मैं जानती नहीं; परन्तु ललिता की माँ ने तो सगाई की बात उस समय चलाई थी, जब खेतों का काम तुमको देने की कोई बात नहीं थी।"

इसपर बिहारीलाल ने अपना अनुमान बता दिया, "भैया! यदि यह बात है तो ललिता बिचारी विष खाकर मर जाएगी। वह अति भावुक लड़की है। वह अपने मन में आपका वरण कर चुकी है और आपको मन से निकाल सकना उसके लिए कठिन हो जाएगा।"

"यह सब व्यर्थ की बात है।" फकीरचन्द ने कह दिया, "वह क्या करेगी और क्या नहीं करेगी, यह हमारे सोचने का विषय नहीं है। मैं तो यह समझता हूँ कि सेठ ने मुझको लड़की की सगाई का लालच देकर अपने खेतों के प्रबन्ध का आयोजन कर लिया है।"

इसपर भी फकीरचन्द सेठ के जंगल की कटाई का प्रबन्ध करने लगा। अभी काम एक सप्ताह भी नहीं चल सका था कि वर्षा आरम्भ हो गई और कटाई का काम बन्द हो गया। मोतीराम ने आकर बता दिया कि उसने लकड़हारों को छुट्टी दे दी है। इससे फकीरचन्द को विस्मय हुआ। उसने कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मोतीराम! काम बन्द कर दिया है और नौकरों को काम से निकाल दिया है, तो अपना क्या करोगे?"

"मैं क्या कर सकता हूँ?"

"मैं यह पूछ रहा हूँ कि तुम अपना वेतन भी लोगे अथवा नहीं?"

"लूँगा नहीं तो खाऊँगा कहाँ से?"

"मैं यह पूछ रहा हूँ कि जिनको तुमने माहवारी के हिसाब से नौकर रखा था, वे अब कहाँ से खाएँगे?"

"तो बाबू! आपका मतलब है कि व्यर्थ में उनको वेतन दिया जाए?"

"ऐसे ही, जैसे कि बिना काम के तुम वेतन लेना चाहते हो।"

"मेरी बात और उनकी बात भिन्न-भिन्न है।"

"क्या भिन्नता है तुममें और उनमें? देखो, मैं समझता हूँ कि उनको काम पर आने दो। इस मौसम में जंगल नहीं कट सकता, तो उनके लिए कोई और काम ढूँढ़ो। काम लेते रहो और वेतन देते रहो।"

"तो आप कोई काम बता दें, मैं उनको अभी बुला लाता हूँ।"

"हाँ, कल से पुनः काम पर आना चाहिए। देखो, जंगल के पश्चिम की ओर दस बीघा के लगभग खाली जगह है, जो ऊँची-नीची है। उसको समतल कराना आरम्भ कर दो। मैं समझता हूँ कि इन दो महीनों में यह भूमि समतल हो जाएगी और इसी वर्ष हम उसमें कुछ बो सकेंगे।"

"पानी के बिना उस ऊँची भूमि में क्या बो सकते हैं हम?"

"यह विचार करना तुम्हारा काम नहीं है। तुमको जैसा मैं कहता हूँ, करना चाहिए।"

मोतीराम को यह बात पसन्द नहीं थी। इस कारण जहाँ उसने निकाले हुए आदमियों को वापस बुला लिया, वहाँ एक लम्बा-चौड़ा पत्र सेठजी को लिख दिया। फकीरचन्द के मस्तिष्क में एक योजना थी। वह उस ऊँची भूमि पर कपास की खेती कराना चाहता था। कपास पानी कम माँगती है और जो कुछ पानी चाहिए था, वह अपने ही पम्प से वहाँ पहुँचाने की योजना बनाने लगा। यूँ तो उसका विचार था कि एक पम्प सेठजी की भूमि की ओर नदी के किनारे लगवाएगा, परन्तु इस दस बीघा के लिए तो यह नदी के इस किनारे से ही पानी भेजने के लिए विचार करने लगा था।

अगले ही दिन ललितपुर के उस दुकानदार को, जिसने उसका पम्प और इंजिन लगाया था, उसने लिख दिया कि वे अपने इंजीनियर को एक दिन के लिए भेज दें।

अभी भूमि समतल हो रही थी कि एक बड़ा कैनवस का पाइप नदी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार से उस पार तक ले जाने के लिए लगा दिया गया और ऊँची भूमि तक पहुँचा दिया गया। इस प्रबन्ध को देख मोतीराम चकित रह गया। उसने सेठ को इस प्रबन्ध के विषय में भी लिख दिया।

वर्षाकाल तक तो किसी प्रकार की आय नहीं हुई। इसके उपरान्त कटाई आरम्भ कर दी गई, और माधो तथा चौधरी को उधर की लकड़ी बेचने के लिए भी कह दिया गया।

समतल भूमि पर कपास बो दी गई। जंगल की लकड़ी के बेचने में कठिनाई यह हुई कि जंगल के इस हिस्से से जरौन रेलवे स्टेशन तक जाने के लिए नदी पार करनी पड़ती थी और जिखलौन का स्टेशन, जो नदी के इस ओर था, जंगल से बहुत दूर था। फकीरचन्द ने लकड़ी को तैयार कर नदी के पार ले जाने का प्रबन्ध कर दिया। बहुत-सी लकड़ियों को बाँध-बाँधकर तरणी बनाकर पार ले जाने लगे। इस सब में मेहनत तो लगी, परन्तु माल उसी भाव पर बिकने लगा, जिस भाव पर फकीरचन्द का अपना बिक रहा था। इसपर भी रुपया आने में देरी होती गई। मोतीराम इन सब योजनाओं को सेठजी को लिखता रहता था। उसका सबमें एक ही विचार था कि सब प्रबन्ध इतना महँगा हो रहा है कि इसमें आय कुछ नहीं हो सकेगी। इसपर भी फकीरचन्द काम करता जाता था।

: 11 :

इस समय बिहारीलाल की परीक्षा हुई और परीक्षा के उपरान्त वह खाली हो गया। एक दिन वह अपनी माँ के सम्मुख फकीरचन्द से कहने लगा, "भैया! मैं, जब तक परीक्षाफल नहीं निकलता, घूमने के लिए बम्बई जाना चाहता हूँ।"

"क्यों?"

"खाली जो हूँ।"

"काम तो बहुत रखा है करने को। कल से मेरे साथ खेत में जाना आरम्भ कर दो।"

"नहीं भैया! यह परीक्षाफल निकलने के पश्चात् करूँगा। अभी दस वर्ष पढ़ाई के पश्चात् दो महीने का तो अवकाश मिला है। मुझको इन अवकाश के दिनों में भ्रमण करने का अवसर मिलना चाहिए।"

"मैंने तो परीक्षा के पश्चात् ऐसी कोई छुट्टी नहीं माँगी थी।"

"भैया! पिताजी जीवित होते, तो तुम अवश्य माँगते और मिलती भी। मेरे पिता तो जीवित हैं। उनसे ही माँग रहा हूँ।"

"पिताजी जीवित हैं? क्या मतलब?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब भाभी माँ बन गई तो भैया पिता क्यों नहीं हो गए? मुझको इन दिनों के लिए बम्बई जाने दो। देखो, मैंने भाभी को पत्र लिखा था और उनका उत्तर आ गया है।"

"क्या उत्तर आया है?"

"वे लिखती हैं कि मेरा पत्र माताजी को दिखाया था। उन्होंने कहा है कि वम्बई में आना है, तो उनके घर में ही ठहरूँ। मुझे उनको सूचित करना चाहिए कि किस गाड़ी से और किस दिन वहाँ पहुँच रहा हूँ, जिससे वे स्टेशन पर मोटर भेज सकें।"

फकीरचन्द गम्भीर विचार में पड़ गया। वह विचार करता था कि इसका क्या परिणाम हो सकता है। उसको बिहारीलाल में अपनी बात पूरी करने की प्रबल इच्छा का पहली बार दर्शन हुआ। वह इस इच्छा के होने और उसको पूरा करने की तल्लीनता से रुष्ट नहीं था, परन्तु वह इससे अनिष्ट होने की आशंका पर विचार कर रहा था। माँ ने फकीरचन्द को चिन्ता में देख पूछ लिया, "क्या सोच रहे हो?"

"यही कि कच्ची रिश्तेदारी में कुछ बिगाड़ न हो जाए।"

"बेटा! बिगाड़ होना है तो कच्ची में ही हो जाना ठीक है। जब सम्बन्ध अटूट हो गया, तब तो बिगाड़ बहुत ही दु:खदायक होगा। यदि सम्बन्ध टूटना है तो अभी टूट जाना ठीक होगा।"

बिहारीलाल को जाने के समय फकीरचन्द ने तीन सौ रुपये खर्च करने के लिए दिए। माँ ने यह कहा, "देखो बिहारी! कोई झगड़े वाली बात न करना। यदि कोई ऐसी बात कहे, जो पसन्द न हो तो उत्तर देना ठीक नहीं। तुम छोटे हो। तुमको चुप रहना चाहिए। ललिता से बहुत हँसी-ठट्ठा मत करना। यहाँ की बात दूसरी थी। वहाँ कोई गलत बात समझ लेगा तो ठीक नहीं होगा।

"उस पर भी यदि कोई बात असह्य हो तो झगड़ा करने की अपेक्षा वहाँ से चला आना ठीक है।"

वास्तव में इन सब सावधानियों का कारण यह था कि फकीरचन्द और उसकी माँ के मन में यह बात बैठी हुई थी कि यह सगाई टिकी रह नहीं सकती। वे अपने और सेठ के आर्थिक स्तर में बहुत बड़ा अन्तर समझते थे। जहाँ तक लड़की का सम्बन्ध था, वे उसके गुण, कर्म और स्वभाव को देख चुके थे और उन्होंने उसको पसन्द किया था; परन्तु सेठ और उनके सम्बन्धियों के विषय में वे सदा संशय में रहते थे।

बिहारीलाल बम्बई पहुँचा तो ललिता की माता अपनी मोटर में उसको लेने स्टेशन पर पहुँची हुई थी। बिहारीलाल ने स्टेशन पर ही ललिता की माँ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरण स्पर्श किए, तो उसने आशीर्वाद दिया और उसको लेकर घर आ गई।

मकान में घुसते ही सामने रामचन्द्र के दर्शन हुए। बिहारीलाल ने देखा तो हाथ जोड़ *जय राम जी की* कह दी। रामचन्द्र सिर हिलाकर मुस्कराया, परन्तु वह उसके यहाँ आने का कारण समझ नहीं सका। बिहारी के पीछे-पीछे माँ को आते देख तथा नौकर को एक बिस्तर और ट्रंक उठाकर लाते देख, दुकान जाने के स्थान वह वापस उनके पीछे लौट आया और बिहारीलाल के साथ-साथ सेठजी के कमरे में पहुँच गया। सेठजी ने बहुत ही आदर से उसको अपने समीप बैठाया और फकीरचन्द तथा उसकी माता का कुशल समाचार पूछा।

बिहारी ने सब प्रश्नों का एक ही वाक्य में उत्तर दे दिया—सब भगवान् की कृपा है। आपका स्वास्थ्य तो ठीक है!'' इसके उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही उसने रामचन्द्र से पूछ लिया, ''कैसे हो दादा राम! शतरंज चलती है यहाँ भी!''

''अच्छा जाओ, स्नानादि से छुट्टी पा अपनी माता तुल्य भाभी के हाथ का बना अल्पाहार कर लो।'' इतना कह सेठ हँस पड़ा।

बिहारीलाल भी हँसने लगा। उसने उठते हुए कहा, ''पिता जी! उनको भूल नहीं सकता। चलो राम भैया! बता दो कहाँ चलना चाहिए।''

विवश राम को उठकर उसका मार्ग-प्रदर्शन करने जाना पड़ा। वह उसको माँ के कमरे में ले गया। वहाँ माँ ने कहा, ''राम! बिहारी को अपने बगल वाले कमरे में ले जाओ। वहाँ इसका सामान गया है। देखो, इसको स्नानागार दिखा देना; जिससे यह स्नानादि से निवृत्त हो जाए। मैं अल्पाहार भेज रही हूँ।''

राम उसको वहाँ ले गया, जहाँ माँ ने बताया था। वहाँ ललिता बिहारी का बिस्तर खुलवा कर सामान ठीक करवा रही थी। बिहारी ने ललिता को देखा तो उसके चरण स्पर्श करने के लिए झुका। ललिता कुछ पीछे हट गई। इसपर बिहारी ने कह दिया, ''भाभी! पाय लागूँ।''

राम हँस पड़ा। ललिता को लज्जा लगी तो राम को बोली, ''भैया! अब तुम आ गए हो, सो तुम देख लेना।'' यह कहकर वह चली गई।

राम ने हँसकर कहा, ''पर भाभी ने आशीर्वाद तो दिया ही नहीं।''

''राम भैया! तुम कुछ ऊँचा सुनते प्रतीत होते हो। भाभी ने आशीर्वाद तो दिया है।''

''क्या दिया है?''

''वे जाती हुई कह गई हैं कि भगवान् करे मेरी और राम भैया की गहरी मित्रता हो जाए।''

''इसकी क्या आवश्यकता है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो भैया! वे ही जानें। मैंने जो सुना वह बता दिया है।"

"पर मित्रता होगी नहीं।"

बिहारीलाल ने कुछ गम्भीर होकर कह दिया, "भाभी जैसी देवी का आशीर्वाद निष्फल नहीं जा सकता।"

"मैं समझता हूँ कि उसने कहा है कि तुम बम्बई के बाजारों में मार्ग भूल जाओ और फिर इतने दु:खी होओ कि पुन: यहाँ आने का नाम न लो।"

"सच? अच्छा देखें किसकी बात ठीक होती है। मैंने ठीक सुना है अथवा तुमने?"

"पर बिहारी! यहाँ आए किस काम से हो?"

"सैर करने। बताओ सैर कराओगे न?"

"तो तुम सैर करोगे? क्या रखा है यहाँ सैर करने को? ऊँचे-ऊँचे मकान और चौड़े, पर भीड़ से भरे बाजार। और यहाँ है ही क्या?"

"मैंने समुद्र कभी नहीं देखा था, सो देखने चला आया हूँ।"

"क्या होगा उसके देखने से?"

"मैं भी लखपति बन जाऊँगा।"

इसपर दोनों हँस पड़े। बिहारीलाल इस समय तक स्नान करने के कपड़े पहन चुका था। रामचन्द्र उसको स्नानागार के सामने ले जाकर कहने लगा, "बिहारी! इसमें स्नान का सामान रखा है। जल्दी स्नान कर बाहर आ जाना। अल्पाहार तैयार है।"

स्नान कर बिहारीलाल जब अपने कमरे में आया, जहाँ वह अपने कपड़े रख गया था, तो उसने देखा कि उसके पहनने के कपड़े तैयार रखे हैं। उसने कपड़े पहन लिये और कमरे में रखी कुर्सी पर बैठ अपने बम्बई के कार्यक्रम पर विचार करने लगा। इस समय उसे रामचन्द्र का व्यंग्य स्मरण हो आया। वह समझ गया कि राम उसके आने पर प्रसन्न नहीं है। इसपर भी सेठानी और सेठ के व्यवहार में उसको किसी प्रकार की कमी प्रतीत नहीं हुई थी। वह अपना वहाँ पन्द्रह दिन का कार्यक्रम बना रहा था। इस समय पन्नादेवी, ललिता और उसकी बहन शकुन्तला देवी आईं और उसके लिए मिठाई और दूध ले आईं। सब भूमि पर, जहाँ एक कालीन बिछा था, बैठ गईं। बिहारीलाल भी कुर्सी से उठकर उनके सामने आ बैठा। मिठाई आदि उसके सामने रखकर पन्नादेवी ने पूछा, "परीक्षाफल कब तक निकलने वाला है?"

"इस मास के अन्त तक निकलने की आशा है।"

"अच्छे नम्बर लेकर पास हो सकोगे?"

बिहारीलाल ने उत्तर देने के स्थान ललिता की बहन की ओर देखते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछ लिया, ''आप भाभी की बड़ी बहिन हैं न ? आकृति कुछ-कुछ मिलती है।''

शकुन्तला ने मुस्कराते हुए कहा, ''भाभी की बहन न भी हुई, तब भी आपकी बहन तो बन सकती हूँ।''

''पर मैं तो मौसी बनाने की सोच रहा था। बताइए, जीजाजी के कब दर्शन होंगे ?''

''कदाचित् दो मास में हो सकेंगे। वे यूरोप घूमने गए हैं।''

''तो आपको साथ नहीं ले गए ?''

''हम अनपढ़ औरतों को कौन पूछता है !'' शकुन्तला ने कहा और दीर्घ निःश्वास छोड़ दिया।

इसके आगे बिहारीलाल बात नहीं चला सका। उसकी समझ में आ गया कि कोई दुःखद घटना घटी है। वह चुपचाप अल्पाहार करता रहा।

वास्तव में शकुन्तला का पति अपने घर वालों और शकुन्तला, दोनों से लड़कर गया था। बात इस प्रकार हुई थी कि जब करोड़ीमल ने अपनी छोटी लड़की ललिता का विवाह बिरादरी से बाहर करने का विचार किया तो शकुन्तला का श्वसुर सेठ कुन्दनलाल भगेरिया करोड़ीमल को सबक सिखाने के लिए अपने लड़के सुन्दरलाल का नया विवाह करने का आयोजन करने लगा। जब सुन्दरलाल को पता चला कि उसके विवाह की चर्चा होने लगी है, तो उसके मन में नए विवाह की भावना जाग पड़ी। शकुन्तला तो ललिता से भी कुछ अधिक गहरे रंग की लड़की थी और विवाह के दिन से ही वह उसकी रूपरेखा को पसन्द नहीं करता था। परन्तु युवावस्था के उफान में वह पत्नी का त्याग नहीं कर सका और पाँच वर्ष में दो सन्तान हो गईं। यों तो जैसे-तैसे निर्वाह हो रहा था, परन्तु जब उसके माता-पिता ही उसका नवीन विवाह करने की बात करने लगे तो उसके मन में शकुन्तला से अधिक सुन्दर पत्नी पाने की लालसा जाग उठी। उसने अपने पिता को विवाह करने की स्वीकृति दे तो दी, परन्तु यह कह दिया कि विवाह लड़की देखकर करेगा। इसका अर्थ स्पष्ट था कि वह सुन्दर पत्नी की लालसा रखता है।

सेठ कुन्दनलाल ने यत्न से एक सम्बन्ध निश्चय किया और उसने वहाँ से भी पाँच लाख दहेज का वचन ले लिया; परन्तु जब सुन्दरलाल ने लड़की देखी तो उसने पसन्द नहीं की। इससे घर में झगड़ा हो गया और इस झगड़े का ज्ञान शकुन्तला को भी हो गया। इस प्रकार तीन ओर से झगड़ा होने लगा। सुन्दरलाल का पिता कहता था, ''मैंने तो दूसरे विवाह का प्रस्ताव करोड़ीमल को मजा चखाने के लिए किया था। तुम्हारे लिये सुन्दर पत्नी लाने के लिए नहीं।''

इसपर सुन्दरलाल का कहना था, ''मुझको शकुन्तला के बाप से कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिला नहीं। मैंने तो नया विवाह इस कारण स्वीकार किया है कि मुझको सुन्दर पत्नी मिल सके।''

शकुन्तला अपने कुरूप कहे जाने पर रुष्ट हो गई। उसने कह दिया, ''तो जाओ, जहाँ सुन्दर पत्नी मिलती है, वहाँ से ले आओ।''

इस प्रकार झगड़ा चलने लगा तो सुन्दरलाल को एक उपाय सूझा। उसने चुपचाप यूरोप भ्रमण करने के लिए पासपोर्ट बनवा लिया और जाने की तैयारी कर बैठा। जाते समय वह अपनी तिजोरी की चाबी शकुन्तला को दे गया। उसमें शकुन्तला के आभूषण रखे थे और सुन्दरलाल का अपना, पिता से चोरी रखा हुआ रुपया था। चाबी शकुन्तला को देकर सुन्दरलाल ने कह दिया कि वह अपने माता-पिता का क्रोध शान्त होने के पीछे ही लौटेगा। तब तक वह अपने माता-पिता के घर में रहे।

यद्यपि शकुन्तला को अपने पति के जाते समय उससे सांत्वना मिली थी, इसपर भी उसका यह संशय बना ही हुआ था कि एक बार उसके पति के मन में दूसरी पत्नी का विचार आया है तो यह पूर्ण भी हो सकता है। धनी आदमी को कोई सुन्दर लड़की मिल जानी असम्भव नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

सगाई के उपरान्त ललिता के मन का विकास द्रुत गति से होने लगा। इस विकास में उसके माता-पिता की, उसके विषय में बातचीत ने महत्वपूर्ण भाग लिया। ललिता, जब भी उसके माता-पिता, उसके विषय में बात करने लगते, उनके पास से उठकर चली जाती परन्तु छुपकर उनकी बातें सुनने का यत्न करती रहती।

बम्बई आने पर सेठजी के सम्बन्धियों की, ललिता के फकीरचन्द से विवाह के विषय में आपत्तियों पर विचार होने लगा। सम्बन्धियों की आपत्तियों से सेठजी का मन तो विचलित प्रतीत होता था, परन्तु पन्नादेवी सेठजी के मन को दृढ़ करती रहती थी। इसपर भी ललिता देख रही थी कि उसके पिता भारी असमंजस में पड़ गए हैं। इसके उपरान्त मोतीराम की चिट्ठियाँ आने लगीं, जिनमें फकीरचन्द के काम करने के ढंग की आलोचना होती थी। इसपर सेठ फकीरचन्द के विपरीत होता जाता था। इस विषय में भी पन्नादेवी युक्ति से सेठ को समझाने का यत्न करती रहती थी। उसका कहना था, ''यदि मोतीराम अथवा गाँव के किसी भी आदमी को काम का ठीक ढंग आता, तो वह स्वयं ही जंगल कटवाकर, उसपर खेती-बाड़ी करवा न लेते? वे कुछ भी न कर सके, यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि फकीरचन्द का ढंग ठीक है और मोतीराम को उसके कहे अनुसार काम करना चाहिए।''

तदनन्तर जंगल की कटाई का रुपया आने लगा, तो वह आशा से बहुत कम था। इसपर मोतीराम की ओर से शिकायत भी आ रही थी। वह लिखता था कि सेठजी का माल जान-बूझकर सस्ते दाम पर बेच दिया जाता है। इसपर तो सेठ भड़क उठा और वह माल बेचने का कोई पृथक् प्रबन्ध करने का विचार करने लगा।

इस समय तक शकुन्तला पर सौकन पड़ने के समाचार आने लगे। ये समाचार शकुन्तला से नहीं मिलते थे। जिन बिरादरी वालों के पास सेठ कुन्दनलाल अपने लड़के का दूसरा विवाह करने को कहता था, वे ही आकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़ीमल के पास सूचना दे जाते थे। करोड़ीमल से ही शकुन्तला को अपने श्वसुर के यत्नों का पता चला था। जब यह झगड़ा बहुत बढ़ गया तो शकुन्तला अपने माता-पिता के घर आ गई और सुन्दरलाल विलायत चला गया।

शकुन्तला के माँ के घर आ जाने से ललिता और शकुन्तला में निकटतम सम्बन्ध बन गए और दोनों अपने-अपने अनुभव एक-दूसरे को बताने लगीं। इससे तो ललिता के मन के विकास में भारी सहायता मिली।

यह अवस्था थी घर की और ललिता के मन की, जब बिहारीलाल बम्बई आया। शकुन्तला ने बिहारीलाल को देखा और इससे तथा अपनी माँ और ललिता से फकीरचन्द के विषय में जाना और इन बातों से ललिता के होने वाले पति का अनुमान लगा लिया। शकुन्तला ललिता के सामने अपने पति और फकीरचन्द की तुलना करने लगी। उसने कहा, ''तुम कहती हो कि जब तुम्हारी सास ने देखा कि उसको एक हजार रुपया सगाई के अवसर पर मिला है, तो उसने उस रुपये को उठाकर सिर से लगाया और तुमको प्यार दिया और तुम्हारा मुख चूम लिया?''

''हाँ दीदी!'' ललिता ने बताया, ''एक हजार से ऊपर तो उन्होंने गाँव वालों के खाने-पिलाने में ही व्यय कर दिया था। इसपर भी माँ-बेटे, दोनों के मुख प्रसन्नता से देदीप्यमान हो रहे थे।''

''ललिता! तुम बहुत ही भाग्यशाली हो। मैं तुमको अपनी बात बताती हूँ। जब मेरी सगाई हुई थी, तो मेरे श्वसुर शकुन उठाने को तैयार नहीं होते थे, जब तक उनको पाँच लाख का चैक नहीं मिल गया और उन्होंने बैंक को टेलीफोन कर यह जान नहीं लिया कि पिताजी का इतना रुपया बैंक में है। विवाह के बाद तुम्हारे जीजाजी मुझे देख बोल उठे, 'मुझे मालूम होता कि तुम इस प्रकार के रूप-रंग की लड़की हो, तो मैं कभी इस विवाह के लिए तैयार न होता।'

''मैंने भी क्रोध में कह दिया—'तो आपने पता क्यों नहीं किया?' इसपर वे बोले, 'पाँच लाख ने उनकी आँखों पर पर्दा डाल रखा था।''

''मैं समझती थी कि बच्चे हो जाने पर उनका स्नेह बच्चों के साथ होगा और उसका प्रतिफल मुझको मिलेगा, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उनके मस्तिष्क में मेरे लिये कुछ भी प्रेम नहीं है। वे अब भी किसी सुंन्दर लड़की से दूसरा विवाह करने को तैयार हैं। यदि अभी तक विवाह नहीं हुआ, तो वह इस कारण कि उनके मन-पसन्द की लड़की मिली नहीं।''

ललिता इस वर्णन से चकित रह गई। दोनों बहिनें स्वयं बिहारीलाल को लेकर उसको बम्बई के भिन्न-भिन्न स्थानों की सैर करा रही थीं। यद्यपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचन्द्र इसको पसन्द नहीं करता था, तो भी वह कुछ कर नहीं सकता था। उसने पिताजी से कहा भी, ''पिताजी! बिहारीलाल को शकुन्तला और ललिता घुमाती रहती हैं, यह अच्छा नहीं।''

''तो तुम उसको ले जाया करो।'' सेठजी का उत्तर था। रामचन्द्र तो बिहारीलाल से घृणा करता था, इस कारण मौन रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि बिहारीलाल और ललिता में जो स्नेह देवगढ़ में उत्पन्न हुआ था, वह और अधिक परिपक्व हो गया।

एक दिन तीनों हैंगिंग गार्डन में टहल रहे थे कि शकुन्तला ने बिहारीलाल से पूछ लिया, ''बिहारी भैया! तुम तो कहते थे कि ललिता काले रंग की है और मोटी नाकवाली है। तुम्हारे भैया इसको निकाल तो नहीं देंगे?''

''राम-राम, कहो, दीदी! एक बार कहकर तो क्षमा माँग चुका हूँ। जानती हो किसके कहने से क्षमा माँगनी पड़ी थी? भैया को पता चला कि मैंने ऐसा कुछ कहा है, तो बोले कि भाभी से क्षमा माँग लो, नहीं तो वे मुझको अति कुरूप पत्नी लाकर देंगी। इसपर माँ ने कह दिया कि भाभी माँ के तुल्य होती है, इसलिए माँ मान, उनके चरणस्पर्श कर उनसे आशीर्वाद माँग लेना। जब एक बार माँ मान लिया तो फिर काली-गोरी का प्रश्न ही नहीं रहता। माँ का कहना था कि माँ के विषय में तो कोई काली-गोरी सोचता ही नहीं।''

''इन्हीं दिनों बिहारीलाल की परीक्षा का फल निकल गया। उसको फकीरचन्द का तार मिला—'उत्तीर्ण प्रथम श्रेणी में, अंक सात सौ दस।' इस तार को पढ़कर शकुन्तला ने यह प्रस्ताव रख दिया कि उसे आगे पढ़ना चाहिए और यदि वह बम्बई में ही भर्ती हो जाए तो उसका कुछ विशेष खर्चा भी नहीं होगा। वह सेठजी के घर में ही रह सकेगा।

बिहारीलाल में भी आगे पढ़ने की लालसा जाग पड़ी। उसने अपने भाई को लिखा कि यहाँ सब लोग आगे पढ़ने के लिए कह रहे हैं। सबका विचार है कि पढ़ाई से मन का विकास होता है।

इसपर फकीरचन्द का पत्र आया, 'मैं तुम्हारे और अधिक पढ़ने में आपत्ति नहीं करता, परन्तु पढ़ाई, पढ़ाई के लिए तो समाप्त हो गई। आगे पढ़ाई किसी अन्य उद्देश्य के लिए होनी चाहिए। तुम्हारा और अधिक पढ़ाई में क्या उद्देश्य है, यह जानना चाहता हूँ। साथ ही यह लिखो कि यूनीवर्सिटी की पढ़ाई किस प्रकार उस उद्देश्य की पूर्ति कर सकेगी।''

बिहारीलाल ने इसके उत्तर में केवल यह लिखा, ''मानसिक विकास ही मेरा उद्देश्य है। तदनन्तर मैं आपके साथ खेतों में काम करना चाहूँगा।''

फकीरचन्द ने उत्तर दिया, ''बम्बई में प्रवेश प्राप्त करने का यत्न करो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु तुमको छात्रावास में रहना होगा, सेठजी के घर पर नहीं।''

बिहारीलाल को जग्गूमल गूजरमल कॉलेज में प्रवेश मिल गया। साथ ही उसने उस कॉलेज के होस्टल में रहने के लिए स्थान ले लिया।

: 2 :

बिहारीलाल देवगढ़ गया और फिर कॉलेज में पढ़ने के लिए शीघ्र ही लौट आया। इस समय तक दो घटनाएँ घट चुकी थीं। एक तो सेठजी ने लक्ष्मीधर नाम का एक मुंशी देवगढ़ भेज दिया था, जो लकड़ी बेचने का प्रबन्ध करने लगा था। इसका अभिप्राय यह था कि मोतीराम का यह आरोप कि फकीरचन्द सेठजी की लकड़ी कम मूल्य पर बेच रहा है, मान लिया गया था। दूसरी बात यह हुई कि लकड़ी की बिक्री का हिसाब ढील से मिलने लगा।

दूसरी ओर शकुन्तला की सास और श्वसुर एक दिन शकुन्तला से मिलने आए और कहने लगे कि उसके पति ने एक पत्र भेजा है कि उसकी तिजोरी की चाबी शकुन्तला के पास है, वह उनको दे दे।

''तो उनकी चिट्ठी आई है? मुझको उन्होंने, जबसे वे गए हैं, चिट्ठी नहीं भेजी।'' शकुन्तला ने कहा।

''तुमसे लड़कर जो गया।''

''लड़कर गए होते तो अपनी तिजोरी की चाबी मुझे क्यों दे जाते?'' शकुन्तला को अपनी सास के कहने पर सन्देह होने लगा था। उसने आगे कहा, ''आप उनका पत्र दिखा दें, जिसमें उन्होंने चाबी आपको देने के लिए लिखा है।''

''उसके पत्र में कुछ व्यापार की बातें हैं, वे हम दिखाना नहीं चाहते।''

''मैं पत्र देखे बिना चाबी नहीं दूँगी। उन्होंने मुझको कहा था कि मैं चाबी आपको न दूँ।''

''देखो शकुन्तला! हम तो तिजोरी को तुड़वा भी सकते हैं। अपने घर में हम क्या करते हैं, कौन मना कर सकता है? इसपर भी हम चाहते हैं कि तुम चाबी दे दो, जिससे लोहार को न बुलाना पड़े।''

''जी नहीं, चाबी तो बिना उनकी लिखित स्वीकृति के दूँगी नहीं। रहा आप क्या कर सकते हैं, इसका मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं।''

इसका परिणाम यह हुआ कि शकुन्तला का अपनी सास और श्वसुर से रहा-सहा सम्बन्ध भी टूट गया। जब तक सुन्दरलाल यूरोप के भ्रमण से लौटा नहीं, उसके सास-श्वसुर से उसको कोई समाचार नहीं मिला। यों तो शकुन्तला को सुन्दरलाल का भी कोई पत्र नहीं आया था। इसकी चिन्ता तो उसको थी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु वह इस विषय में कुछ कर नहीं सकती थी। उसको अपने पति का पता विदित नहीं था।

बिहारीलाल को बम्बई में पढ़ने के लिए आए छः मास व्यतीत हो चुके थे। वह कॉलेज होस्टल में रहता था। लगभग प्रति रविवार को वह ललिता, शकुन्तला और सेठजी से मिलने जाया करता था। जब वह आता तो मध्याह्न का भोजन सेठजी के साथ ही किया करता। कई सप्ताह से वह यह अनुभव कर रहा था कि सेठजी का व्यवहार कुछ शुष्क होता जा रहा है। इसपर भी उसको ललिता, शकुन्तला तथा पन्नादेवी के व्यवहार में कुछ भी अन्तर प्रतीत नहीं हुआ।

एक रविवार, जब बिहारीलाल ललिता इत्यादि से मिलने आया हुआ था, एकाएक सुन्दरलाल आ पहुँचा। उसका बिना किसी प्रकार की सूचना के भारत लौट आना और फिर अपनी पत्नी को मिलने चले आना, सबको आश्चर्य में डालने वाला सिद्ध हुआ। पन्नादेवी, शकुन्तलादेवी और ललिता बिहारीलाल के पास बैठी बातचीत कर रही थीं। भोजन की प्रतीक्षा की जा रही थी। सुन्दरलाल आया तो शकुन्तला विस्मय में उठ खड़ी हुई और उसके मुख से निकल गया, "आप?"

सुन्दरलाल ने बिहारीलाल के समीप बैठते हुए कहा, "हाँ, मैं....क्या मेरे आने से आपके इस मधुर मिलन में बाधा पड़ गई है?" इतना कहते हुए सुन्दरलाल ने अर्थ-भरी दृष्टि से बिहारीलाल की ओर देखा।

बिहारीलाल समझ गया कि सुन्दरलाल शकुन्तला से झगड़ा करने के विचार से आया है। इस कारण वह संकोच अनुभव करने लगा। पन्नादेवी ने बात बना ली। उसने ललिता को कहा, "ललिता! बिहारी को खाने के कमरे में ले जाकर भोजन करा दो।"

ललिता समझ गई और बिहारीलाल को खाने के कमरे में ले गई।

: 3 :

जब वे चले गए तो पन्नादेवी ने बिहारीलाल का परिचय दे दिया। उसने बताया, "यह लड़का ललिता का देवर है। यहाँ बम्बई में जगमूल कॉलेज में पढ़ता है। रविवार के दिन यहाँ आया करता है और हम सबसे मेलजोल रखता है।"

सुन्दरलाल ने मुख लम्बा कर कहा, "ओह! अब समझा हूँ। देखो शकुन्तला! मैं समझता। हूँ कि अब तुमसे निर्वाह नहीं हो सकेगा। तुम मेरी तिजोरी की चाबी दे दो। उसमें रखे तुम्हारे आभूषण मैं पहुँचा दूँगा। रही बच्चों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पालन-पोषण की बात, उस विषय में विचार कर लेंगे। जैसा तुम चाहोगी, वैसा ही प्रबन्ध हो जाएगा।''

शकुन्तला अवाक् मुख बैठी रह गई। उसकी समझ में नहीं आया कि इस बात से उसके पति का अभिप्राय क्या है। क्या उसने नए विवाह का निश्चय कर लिया है?

वह अभी कुछ कह नहीं सकी थी कि सेठ करोड़ीमल वहाँ आ गया। वह भी सुन्दरलाल को देख आश्चर्य करने लगा। उसने पूछा, ''बेटा सुन्दरलाल! तुमने तो आने की सूचना भी नहीं भेजी? सुनाओ, वहाँ ठीक तो रहे हो?''

''जी, यहाँ आने की सूचना को छोड़िए, मैंने तो वहाँ पहुँचने की सूचना भी नहीं भेजी थी। न ही वहाँ से किसी प्रकार का पत्र आपको भेजना उचित समझा था। मैं आप लोगों से, जो अपनी लड़की को बिरादरी से बाहर ब्याहने के लिए तैयार है, किसी प्रकार का सम्पर्क रखना नहीं चाहता था।''

''ललिता की सगाई तो एक व्यापार की चाल थी, वह हो गई। हमारे आपस में वैमनस्य का अब तो वह कारण नहीं हो सकता।''

''तो क्या आप ललिता का विवाह वहाँ नहीं कर रहे?''

''अभी बात बिल्कुल तो टूटी नहीं। हाँ, टूटने ही वाली है।''

''परन्तु सेठजी! आपने अपना इरादा देर से बताया है। मैंने एक नए विवाह का प्रबन्ध कर लिया है।''

''पर सुन्दरलाल! यह तुमने ठीक नहीं किया। यदि विवाह नहीं हुआ, तो मैं तुमसे फिर कहूँगा कि इस बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर लो। इस सबके परिणाम दूर तक जा सकते हैं।''

''मैं इस राय के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ। मैं सत्य हृदय से आपकी राय पर विचार करूँगा।''

''मैं समझता हूँ कि तुम मेरी बात मानकर पछताओगे नहीं।''

''अच्छी बात है। अब मैं चलता हूँ। शकुन्तला! तुम चाबी ला दो।''

शकुन्तला चाबी लेने जाने लगी तो सेठ ने कह दिया, ''आओ, तब तक भोजन कर लेते हैं।''

''जी नही! वहाँ आपके नए दामाद का भाई अपनी भाभी से मीठी-मीठी बातें कर रहा है। हमारे वहाँ जाने से उनकी बातों में विघ्न पड़ जाएगा।''

''नहीं पड़ेगा।'' ललिता ने भीतर आते हुए कहा, ''बिहारीलाल चला गया है।''

''क्यों'' सेठ ने पूछा।

''यह तो उससे ही पूछिएगा। वह भोजन नहीं कर गया।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भोजन तो मैं भी नहीं करना चाहता। शकुन्तला! जाओ, चाबी ले आओ।"

विवश शकुन्तला गई और अपने कमरे में रखी चाबी ले आई। चाबी देते हुए उसने कहा, "आप तनिक इधर आइए। मैं आपसे पृथक् में बात करना चाहती हूँ।"

"वह मैं फिर किसी दिन आकर करूँगा।" इतना कह वह अपने स्थान से उठ पड़ा। वह बैठक घर से निकला तो शकुन्तला उसके साथ-साथ ही बाहर आ गई। कमरे से बाहर बरामदे में आकर उसने कहा, "मैं तो केवल इतना कहना चाहती हूँ कि यदि हमें पृथक् ही होना है, तो क्या यह अच्छा होगा कि एक-दूसरे पर झूठे लांछन लगाकर हों?"

"क्या झूठ कहा है मैंने?"

"आपने न केवल मेरे सतीत्व पर सन्देह किया है, प्रत्युत मेरी कुंवारी बहिन पर भी छींटा उड़ाया है।"

"तो तुम्हारा विचार है कि उस लौंडे की संगत मधुर नहीं है?"

"जो कुछ आपका मधुर से अभिप्राय है, वह गलत है।"

"मैं क्षमा चाहता हूँ।"

इतना कहकर सुन्दरलाल मकान से नीचे उतर गया। मकान से निकल उसको बिहारीलाल को फुटपाथ पर खड़े देखकर विस्मय हुआ। सुन्दरलाल की मोटर समीप ही खड़ी थी। उसने बिहारीलाल के पास आकर पूछा, "क्यों भैया! क्या विचार कर रहे हो?"

"विचार नहीं कर रहा, टैक्सी की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"तो आओ, मेरी मोटर में आ जाओ। कहाँ जा रहे हो? मैं छोड़ आता हूँ।"

"जी नहीं! क्षमा करें।"

"रुष्ट हो गए हो? क्या नाम है तुम्हारा? शकुन्तला ने बताया तो था, परन्तु स्मरण नहीं रहा।"

"जी, मेरा नाम बिहारीलाल है। मैं फकीरचन्द का भाई हूँ। ये वही फकीरचन्द हैं, जो आपके साढ़ू बनने वाले थे और अब नहीं बन सकेंगे?"

"च...च...। बहुत हानि होगी तुम्हारे भाई को। देखो, मेरे साथ आओ। मैं तुमको एक गुर की बात बताना चाहता हूँ। आओ न। देखो बिहारी! ये सेठ और सेठ की लड़कियों की बात छोड़ो। तुम अभी बहुत कम आयु के हो और बड़े आदमियों की बातें समझ नहीं सकोगे। आओ, हम आपस में एक-दूसरे को समझ लें। आओ, आओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टैक्सी कोई आ नहीं रही थी। इस कारण बिहारीलाल ने समझा कि इस सेठ की गाड़ी में चढ़कर इसकी बात भी सुन ले। अधिक-से-अधिक यह मजाक ही तो उड़ाएगा। देखा जाएगा।

इस कारण वह सुन्दरलाल की गाड़ी में बैठ गया। सुन्दरलाल ने बैठते हुए पूछा, "कहाँ चलोगे?"

"होस्टल में।"

"तो भोजन नहीं करोगे?"

"होस्टल में कर लूँगा।"

"पर वहाँ तो तुम मना कर आए हो न?"

"होस्टल के सामने एक होटल है।"

"तो चलो मेरे साथ। मैं होटल में खाना खाने ही जा रहा हूँ।"

"आप चिन्ता क्यों करते हैं, एक बिरादरी के बाहर के भाई की?"

"ओह! तो तुम हमारी बातों को सुनते रहे हो?"

"मुझको किसी की बातें सुनने की आदत नहीं, परन्तु यह तो ललिता की बात थी और उसने ही सुनी है।"

"देखो दोस्त! इन औरतों की बातें छोड़ो। आओ हम मित्र बन जाएँ। चलो खाना खाएँ और दोस्ती की सौगन्ध लें। हाँ, एक बात याद रखना। वहाँ एक और दोस्त आ रहे हैं उनसे भी तुम्हारा परिचय करा दूँगा परन्तु उसकी बात किसी से कहना नहीं।"

: 4 :

इतना कह सुन्दरलाल ने मोटर ड्राइवर को कह दिया, "ताज।"

"ताज होटल?" बिहारीलाल ने विस्मय में पूछा। फिर सतर्क हो उसने कहा, "नहीं साहब! मैं वहाँ खाना खाने नहीं जा सकता।"

"देखो, मैं तुमको वहाँ ले जा रहा हूँ। इस कारण मूल्य तुमको देना नहीं पड़ेगा।"

"मूल्य तो आप दे देंगे, परन्तु वह होटल मेरी सामर्थ्य के बाहर है। मैं वहाँ किसी को ले जाकर खिला नहीं सकता, तो मैं वहाँ जाकर खा भी नहीं सकता।"

ड्राइवर ने मोटर चला दी थी। इसपर सुन्दरलाल ने कहा, "यह व्यर्थ की बात है। कौन किसको खिलाता है और कौन खाता है, यह सब तो भगवान् जानता है। छोड़ो इस बात को। मैं यह जानना चाहता हूँ कि इस कंजूस सेठ के पंजे में तुम सीधे-सीधे लोग कैसे फँस गए हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिए मिस्टर सुन्दरलाल! आपको विदित होना चाहिए कि मैंने आपका और सेठजी का वार्तालाप कमरे के बाहर खड़े-खड़े सुन लिया है। इस कारण मेरे मन में न तो आपके प्रति और न ही सेठजी के प्रति किसी प्रकार की श्रद्धा उत्पन्न हुई है। आप दोनों एक ही संसार के जीव हैं। रहा हमारा उनके पंजे में फँस जाना, यह तो भविष्य ही बताएगा। सगाई के समय हमारा कुछ व्यय अवश्य हुआ था, परन्तु ललिता जैसी भाभी को प्राप्त करने के लिए कुछ खर्च करना हमको अखरा नहीं था।"

"सगाई के समय सेठजी ने आपको कुछ दिया था क्या?"

"दिया था, एक हजार रुपया। हमारा खर्च इससे कहीं अधिक हो गया था।"

"पर अब तो ललिता भाभी नहीं बन रही न?"

"भैया के भाग्य में इतनी अच्छी पत्नी कदाचित् नहीं है।"

"बहुत अच्छी है ललिता?"

"यह हमारे परिवार का अनुभव है।"

"चलो छुट्टी हुई। अच्छी अथवा बुरी, जो भी है, अब तो आपके घर में नहीं जाएगी। देखो बिहारी! मैंने सेठजी की बड़ी लड़की को छोड़ दिया है और तुम्हारे भैया को सेठजी ने त्याग दिया है। इस प्रकार, मैं समझता हूँ कि हम दोनों एक ही नौका में हैं। मैं अपनी इच्छा से इसमें सवार हुआ हूँ, और तुम इस नौका में धकेल दिए गए हो।"

"इस पर भी हम दोनों में अन्तर है।"

"वह केवल मन की भावना का है।"

"ऐसी बातों में भावना ही तो मुख्य होती है।"

"अब तुम्हारे भैया क्या करेंगे?"

"यह तो वे ही जानें। मैं कैसे बता सकता हूँ?"

"तुम उनको लिखोगे तो?"

"मैं समझता हूँ कि मैं न लिखूँ। यह बात मुझसे चोरी कही गई है। मैंने छुपकर सुनी है। सम्भव है कि वह केवल आपको ही सुनाने के लिए हो और कार्य में लाने के लिए न हो?"

"तो तुम ऐसी भी आशा करते हो क्या?"

"आपकी बम्बई के इस समाज में क्या असम्भव हो सकता है?"

इस समय तक वे ताज होटल के बाहर पहुँच गए थे। यहाँ पहुँच बिहारीलाल ने फिर कहा कि उसको छुट्टी दी जाए; परन्तु सुन्दरलाल ने उसकी बाँह में बाँह डालते हुए कहा, "तुम्हारी बातें बहुत मजेदार मालूम होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे तो मेरी इच्छा तुमसे मित्रता करने की और भी अधिक हो गई है। आओ।'' वह उसको होटल के भीतर ले गया।

होटल में पहुँचकर सुन्दरलाल ने अपनी घड़ी में समय देखा। इस समय साढ़े बारह बजे थे। सुन्दरलाल ने एक मेज पर बैठते हुए कहा, ''हम तीन यहाँ भोजन कर रहे हैं। तीसरे की प्रतीक्षा है। आओ, तब तक एक पैग...।''

बिहारीलाल ने कुर्सी पर से उठते हुए कहा, ''जी नहीं। मैं पीता नहीं। कदाचित् मेरी संगत आपके लिए अनुकूल नहीं बैठेगी। इजाजत दें तो मैं जाऊँ?''

''नहीं-नहीं, बैठो। तुम मत पीना, मैं भी नहीं पीता। यह तो केवल तुम्हारे लिये ही लेने लगा था। हाँ, हमारा साथी तो अवश्य पीएगा। वह यूरोप का रहने वाला है। उनके यहाँ तो यह पानी की भाँति पी जाती है। इसमें हमको आपत्ति नहीं होनी चाहिए।''

''मुझको किसी दूसरे के पीने में आपत्ति नहीं। मैं तो इसलिए जाना चाहता हूँ कि मेरे कारण आपका मजा फीका हो जाएगा।''

''यह क्यों? बैठो। यह देखो 'मीनू' है। अपने लिये चुन लो।''

''मेरे लिए भी आप ही चुन दें।''

''मैं गो-मांस के अतिरिक्त सब कुछ खा लेता हूँ।''

''मैं सिवाय वैजिटेरियन खाने के और कुछ नहीं खाता।''

''कुछ हरज नहीं। ऐसा ही हो जाएगा।''

इस समय एक लड़की यूरोपियन पोशाक पहने हुए, नीली-नीली आँखों और कटे हुए सुनहरी बालों वाली, वहाँ आई और एक तीसरे आदमी को वहाँ बैठे देख कुछ झिझकी। सुन्दरलाल ने उसको देख कहा, ''सूसन डियर! आओ। यह मेरे एक दोस्त हैं। आपसे परिचित कराने के लिए इनको ले आया हूँ।''

इसके पश्चात् सुन्दरलाल ने बिहारीलाल का परिचय, जैसा वह जानता था, करा दिया। उसने कहा, ''ये देवगढ़ के एक जमींदार के भाई हैं। इनका नाम मिस्टर बिहारीलाल है। इस समय जग्गूमल गूजरमल कॉलेज में पढ़ते हैं।

''और,'' सुन्दरलाल ने लड़की की ओर संकेत कर कहा, ''ये हैं मिस कोमिल्ला सूसन। मुझको फ्रांस के एक गाँव में मिली थीं। ये मेरे साथ यहाँ मेरी पत्नी बनने के लिए चली आई हैं। आप पहले हिन्दुस्तानी हैं, जिनके साथ मैंने इनका परिचय कराया है। हमारा विवाह शीघ्र ही होगा। इस समय तो मैं इनके लिए एक घर की तलाश में हूँ। यहाँ होटल में कुछ अधिक सुख नहीं है।''

बिहारीलाल इस सूचना से सुन्दरलाल और मिस सूसन का मुख देखता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह गया। पश्चात् सतर्क हो अपने स्थान से उठकर उसने सूसन से हाथ मिलाते हुए कहा, "माई गुड विशिज़ आर विद यू मैडम! डू यू अण्डरस्टैन्ड इंग्लिश? (मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। आप अंग्रेजी समझती हैं?)"

"हाँ, भली-भाँति।" सूसन ने अंग्रेजी में उत्तर दिया।

"और आप मेरे मित्र से बहुत प्रेम करती हैं?"

"नहीं करती तो इनके पीछे-पीछे इतनी दूर कैसे चली आती?"

"मैं अपने मित्र की ओर से और अपनी ओर से आपका बहुत ही धन्यवाद करता हूँ। मुझको इस सम्बन्ध से बहुत ही प्रसन्नता होगी।"

इसके पश्चात् बैरा आया तो खाने का उसको आर्डर दे दिया गया। सुन्दरलाल बिहारीलाल के बात करने के ढंग से बहुत ही प्रसन्न था। उसकी समझ में यह आ गया था कि इसके घर वाले बहुत ही सभ्य लोग हो सकते हैं। बिहारीलाल ने यह बात प्रकट होने नहीं दी थी कि वह सुन्दरलाल से आधा घण्टा पूर्व ही परिचय पा सका है।

भोजन आया। बिहारीलाल ने केवल सब्जी-भाजी ही खाई और सूसन तथा सुन्दरलाल ने मांस-मछली इत्यादि ली। सूसन ने खाने से पूर्व एक पैग शैम्पेन भी ली।

सूसन ने भारत के विषय में बहुत-से प्रश्न बिहारीलाल से किए। बिहारीलाल ने बहुत-सी बातों के उत्तर दिए। साथ ही उसने कह दिया, "मैडम! हिन्दुस्तान एक बहुत ही बड़ा देश है। इसके विषय में सब-कुछ अपना देखा हुआ ही हो, सम्भव नहीं। मैंने तो अभी इसका एक बहुत ही छोटा-सा भाग देखा है।"

खाना समाप्त हो गया तो सूसन ने बिहारीलाल से पूछा, "आपसे फिर कब और कहाँ भेंट हो सकती है?"

"मैं कॉलेज में पढ़ता हूँ। आज रविवार होने के कारण खाली था। नित्य तो ऐसा नहीं हो सकता।"

"आपके कॉलेज का पता क्या है?"

इसपर बिहारीलाल ने कॉलेज का पता बता दिया और होस्टल बताते हुए कहा, "मैं प्रातः दस से सायं चार बजे तक कॉलेज में रहता हूँ और तदुपरान्त या तो सैर करने चला जाता हूँ, अन्यथा होस्टल में।"

"क्या मैं कभी आपका कॉलेज देखने आ सकती हूँ?"

"क्या देखेंगी वहाँ? क्लास-रूम में तो कोई जाने देगा नहीं आपको। शेष तो इमारत ही है।"

"नहीं; मैं तो आपको देखने आऊँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह! आइए।"

"आप किसी भी दिन, जब आपको फुर्सत हो, सायं चार बजे यहीं चाय के लिए आ सकते हैं। मुझे प्रसन्नता होगी।"

"परन्तु आपके लिए तो मकान ढूँढ़ा जा रहा है न?"

"मुझको यहाँ आए एक सप्ताह हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि अभी मकान मिलेगा नहीं।"

"मिल जाएगा। बम्बई में मकान कठिनाई से ही मिलता है।"

इसके बाद तीनों उठ पड़े। सूसन होटल के ऊपर की मंजिल में अपने कमरे में चली गई और सुन्दरलाल तथा बिहारीलाल होटल के बाहर आ गए। सुन्दरलाल ने कहा, "बिहारीलाल! मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ कि तुमने आवश्यकता से अधिक कुछ नहीं कहा।"

167919
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

: 5 :

बिहारीलाल सुन्दरलाल के व्यवहार पर चकित था। विशेषकर इस बात के कि वह किसी भी व्यक्ति को सूसन से मिलाने के लिए ले जाना चाहता था, अपने वहाँ ले जाए जाने में वह कोई भी कारण नहीं समझ सका था। एक बात से उसको सन्तोष था कि उसने किसी प्रकार की ऐसी बात नहीं की थी, जिससे उसको लज्जित होना पड़ता।

बिहारीलाल के मस्तिष्क में यह आ भी नहीं सका कि वह सूसन से मिलने के लिए उस होटल में चाय पीने जाए। सूसन भी कहे अनुसार उससे मिलने नहीं आई। वह उसके इस कहने को केवल औपचारिक बात ही समझता था।

बिहारीलाल ने सेठ करोड़ीमल के घर जाने का भी विचार नहीं किया। वैसे तो उसको वहाँ अगले रविवार ही जाना था और अभी आज शनिवार ही था। इस प्रकार इन छः दिनों में उसने अपनी पढ़ाई के अतिरिक्त और किसी ओर ध्यान भी नहीं दिया था। शनिवार कॉलेज दो बजे ही समाप्त हो जाता था और वह उस सायंकाल घूमने निकल जाया करता था। इस शनिवार वह मैरीन ड्राइव पर घूमने के लिए जाने ही वाला था कि सुन्दरलाल उसके कमरे के बाहर आ खड़ा हुआ। बिहारीलाल उसको देख आश्चर्यचकित रह गया। सुन्दरलाल मुस्करा रहा था। बिहारीलाल ने पूछा, "आप और यहाँ?"

"क्यों? हम मित्र नहीं हैं क्या?"

"मैं तो समझता था कि उस दिन की बात तो, अरेंजमेंट ऑफ कनवीनिएंस (सामयिक सुविधा का प्रबन्ध) मात्र ही था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, नहीं, बिहारीलाल! मैंने उस दिन भी कहा था कि मुझको तुम्हारी बातों में आनन्द आता है। अब मैं तुमको एक और समाचार देता हूँ कि सूसन को भी तुम्हारी बातों में आनन्द आया था। वह तो उसी दिन से कह रही थी कि तुमको मिलना चाहिए। मैं यह कहकर टाल देता था कि तुमको रविवार से पहले अवकाश नहीं हो सकता। आज उसने तुम्हारे कॉलेज में टेलीफोन कर पता कर लिया कि कॉलेज दो बजे बन्द हो गया है। अतः मुझको टेलीफोन पर कहकर यहाँ ले आई है। अब भैया, तुम चलो। वह बाहर मोटर में प्रतीक्षा कर रही है।"

बिहारीलाल भारी असमंजस में पड़ गया। वह इन्कार नहीं कर सका। यों तो वह कपड़े पहिन भ्रमण के लिए जाने को तैयार ही था। इस कारण उसने पूछ लिया, "कहाँ चलना होगा?"

"यह बाहर मोटर में चलकर निश्चय कर लेंगे। देखो, मैं तुमको एक और बात बताना चाहता हूँ। मेरे एक और मित्र हैं। वे वकील हैं। मैंने उनसे भी सूसन का परिचय कराया था; परन्तु सूसन का कहना है कि वह तो उससे प्रेम प्रकट करने लगा है। इससे उसको उस वकील के बच्चे से घृणा हो गई है। कल वह उसको चाय के समय मिलने गया था। इसपर सूसन, पेट में दर्द का बहाना बनाकर ऊपर अपने कमरे में चली गई। आज उसने कह दिया कि वह उस आदमी का मुख भी देखना नहीं चाहती। इसपर भी तुम्हारी बात दूसरी है।"

होस्टल के बाहर मोटर खड़ी थी और सूसन उसमें बैठी थी। आज मोटर सुन्दरलाल चला रहा था। सूसन उसके साथ आगे की सीट पर बैठी थी। बिहारीलाल पीछे की सीट पर बैठ गया तो सूसन 'गुड ईवनिंग' कह कुछ, टेढी हो उससे बात करने लगी, "आप तो फिर आए ही नहीं।"

"मैंने तो उस दिन ही क्षमा माँग ली थी। मुझको रविवार के अतिरिक्त किसी दिन समय नहीं मिलता।"

"पर आज तो आप खाली हैं।"

"इसीलिए तो पकड़ा गया हूँ। अब फरमाइए क्या आज्ञा है?" बिहारीलाल ने हँसते हुए कहा।

"मिस्टर भगेरिया तो आपके मित्र हैं ही। मैं चाहती हूँ कि आप मुझसे भी मित्रता का सम्बन्ध बना लें।"

बिहारीलाल ने सूसन को समझाते हुए कहा, "हमारे यहाँ एक लड़की और लड़के में मित्रता का रिश्ता कुछ अच्छा नहीं समझा जाता। हम भाई-बहिन का रिश्ता अधिक पसन्द करते हैं।"

"पर भाई-बहिन का सम्बन्ध तो एक ही माता-पिता से जन्म होने से ही हो सकता है न?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, हमारे यहाँ, हिन्दुस्तान में तो कोई लड़की किसी भी हिन्दू युवक को अपना भाई बना सकती है। हमारे यहाँ की एक रीति है, उसको रक्षा-बन्धन कहते हैं। उसमें लड़की भी पुरुष के दाहिने हाथ में एक धागा बाँध देती है और वह पुरुष उसको बहिन मान, उसको बहिन के अधिकार दे देता है।"

"बहुत विचित्र है!"

"मित्र की अपेक्षा यह नाता मुझको अधिक पसन्द है।"

सूसन मुख देखती रह गई। इसपर सुन्दरलाल ने कह दिया, "डार्लिंग! बाँध दो न तुम भी इसके हाथ पर एक धागा। इसमें कठिनाई क्या है?"

"तो ला दीजिए।"

इसपर बिहारीलाल ने कह दिया, "मैं तो बिना बाँधे भी इनके प्रति बहिन की भावना रख सकता हूँ।"

"पर एक बात है। क्या आप एक भाई-बहिन में अधिक स्नेह का होना सम्भव समझते हैं और मित्रता में वह स्नेह नहीं हो सकता क्या?"

"भाई-बहिन का सम्बन्ध अधिक पवित्र और अधिक सुदृढ़ होता है।"

इस समय वे मैरीन ड्राइव पर पहुँच गए थे। यह सड़क अभी नई ही बनी थी। इसके एक ओर ऊँची-ऊँची इमारतें और दूसरी ओर समुद्र। यहाँ पहुँच सुन्दरलाल ने मोटर धीमी कर दी। पश्चात् एक ओर मोटर खड़ी कर वे नारियल का पानी पीने लगे। नारियल का पानी पी और खाली नारियल के खोल को एक डस्टबिन में फेंक वे आगे चल पड़े। सूसन का कहना था कि किसी रेस्टोराँ में चलकर चाय लेनी चाहिए।

"तो ताज में चलें?" सुन्दरलाल ने पूछा।

"हाँ, चल सकते हैं।" सूसन ने कहा।

आज चाय के समय कई विषयों पर बातचीत होती रही। हिन्दू क्या हैं? एक ईसाई और हिन्दू में क्या अन्तर है? क्या धर्म एक व्यर्थ की बात नहीं? इसका आज के संसार में लाभ ही क्या है? क्या जीवन को भलीभाँति व्यतीत करना ही धर्म नहीं? इस प्रकार की बातें होती रहीं। बिहारीलाल स्वयं भी इस विषय में अधिक नहीं जानता था। उसको जो कुछ भी ज्ञान था, वह अपनी माता के मुख से गीता अथवा उसके उपदेशों को सुनने से ही था। उसने कह दिया, "हम हिन्दू यह मानते हैं कि एक परमात्मा है। वह संसार को नियन्त्रण में रखता है। एक आत्मा है। वह शरीर को ठीक रखने के लिए उत्तरदायी है। शरीर एक भिन्न वस्तु है। शरीर के नाश हो जाने पर भी आत्मा नष्ट नहीं होता। वह अपने कर्मों के अधीन बार-बार जन्म लेता है।"

"ऐसा मानने में प्रयोजन क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रयोजन को तो मैं जानता नहीं। न ही मैं इस अवस्था में हूँ कि अभी इस प्रयोजन की छानबीन कर सकूँ। हमारे एक विद्वान् ने एक उपनिषद में यह लिखा है कि एक पेड़ है। उसपर दो पक्षी बैठे हैं। उनमें से एक पक्षी तो पेड़ के फल खाता है और दूसरा उस पेड़ के फल नहीं खाता। वह सबको देखता रहता है।"

"परन्तु आप इस बात को सत्य मानते हैं?"

"हाँ।"

"कैसे जानते हैं कि एक परमात्मा है, एक आत्मा है और ये दोनों मरते नही?"

"मैं इनको ऐसे ही जानता हूँ, जैसे यह कि सूर्य पृथ्वी से दस लाख गुणा बड़ा है।"

"वाह, यह बात तो दूरबीन से दिखाई जा सकती है।"

"सूसन बहिन। तुमने देखी है?"

"नहीं; पर जिन्होंने देखी है, उनके कहे अनुसार मुझको माननी पड़ रही है।"

"वैसे ही मैंने परमात्मा को देखा नहीं। इस पर भी मैं मानता हूँ कि परमात्मा है क्योंकि जिन्होंने परमात्मा को देखा है, उनकी बात मुझको माननी चाहिए।"

"यह बात तो ठीक नहीं। दूरबीन तो दुनिया में कई स्थानों पर विद्यमान है, जिससे हम सूर्य को देख सकते हैं। परमात्मा को देखने वाली दूरबीन कहाँ लगी हुई है?"

"देखो सूसन! एक तो है सूर्य, दूसरा है मलेरिया कीटाणु, तीसरा है एक अणु। अब बताओ, क्या तीनों को एक ही दूरबीन से देखा जा सकता है? हर एक के लिए पृथक्-पृथक् प्रकार के साधन होने आवश्यक नहीं क्या? इसी प्रकार परमात्मा को देखने के लिए उपकरण एक विशेष प्रकार का होता है। वह मस्तिष्क में ही बन सकता है। इस कारण देखने वाले को, परमात्मा को देखने का उपकरण अपने मस्तिष्क में तैयार करना पड़ता है। हम इसको कहते हैं आध्यात्म-ज्ञान। इसको प्राप्त करने के लिए सबके पास न तो समय है और न ही शक्ति। इस कारण हमको उनकी बात मानने के लिए बाध्य होना पड़ता है, जिनको आध्यात्मिक ज्ञान उपलब्ध है।"

सूसन युक्ति में परास्त हो गई थी। इसपर भी उसकी समझ में यह नहीं आया था कि आत्मा-परमात्मा को मानने की आवश्यकता क्या है।

यद्यपि बिहारीलाल ने कह दिया था कि परमात्मा को मानने में क्या प्रयोजन है, वह बता नहीं सकता, जैसे सूर्य को पृथ्वी से दस लाख गुणा बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानने में प्रयोजन प्रतीत नहीं होता। इसपर भी उसने पूछ लिया, "आप एक व्यर्थ की बात को मानते ही क्यों हैं?"

"परमात्मा का अस्तित्व है अथवा नहीं, इसका उपयोगिता से सम्बन्ध नहीं। इसपर भी इतना तो है कि अनेक हैं, जो अपने जीवन को शुद्ध, पवित्र और नेक बनाने में इस कारण सफल होते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि एक सर्वव्यापक शक्ति है, जो उनको कर्म का फल देने की क्षमता रखती है। केवल मात्र यह विचार कि एक है जो, उनके प्रत्येक काम को सदैव और सर्वत्र देखता रहता है उनको ठीक मार्ग पर रखने में सफल होता है। राज्य की पुलिस और फौज सर्वज्ञ और सर्वव्यापक नहीं होती। इस कारण उनका भय स्थायी और व्यापक नहीं हो सकता और अच्छे-से-अच्छे राज्य में भी पाप होते रहते हैं।"

सूसन इस बात को समझ हँस पड़ी। उसने कह दिया, "मुझे आपकी बात युक्ति-युक्त प्रतीत नहीं होती।"

"मुझको इससे हानि प्रतीत नहीं होती। आप मेरी बहिन बनी रह सकती हैं, चाहे आप परमात्मा को न भी मानें।"

"मैंने तो सुना था कि हिन्दुस्तान में हिन्दू और मुसलमान मन्दिर में बजने वाले घण्टे पर झगड़ पड़ते हैं और इससे बलवे हो जाते हैं तथा खून तक हो जाते हैं?"

"मन्दिर का घण्टा तो एक बहाना होता है। वास्तव में ये झगड़े राजनीतिक प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए होते हैं।"

"यह कैसे?"

"यह ऐसे ही होता है, जैसे फ्रांस और इंग्लैण्ड में कैथोलिक्स और प्रोटेस्टेन्टों में राज्य प्राप्त करने के लिए होते थे। कुछ लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए धर्म को राजनीति का आधार बना लेते हैं। वास्तव में वे राजनीति में राजनीतिक सम्बन्धी दल नहीं बना सकते। अतः वे धार्मिक दलों से, जो पहले ही बने हुए हैं, लाभ उठाते हैं।"

"तो इन धार्मिक दलों को तोड़ क्यों न दिया जाए?"

"ये टूट नहीं सकते। कारण यह है कि मनुष्य स्वभाव से सामाजिक जीव है। इससे वह दलबन्दी तो करेगा। जो भी दल बनेगा और जब भी उसका दूसरों पर प्रभुत्व जमाने के लिए प्रयोग होगा, वह हानि करेगा ही। दल तो बनेंगे। यह मनुष्य की प्रकृति में है। होना यह चाहिए कि एक दल दूसरे दल की आधारभूत स्वतन्त्रता को छीने नहीं अर्थात् एक दल दूसरे दल पर, अनुचित प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न न करे।"

इस प्रकार के वार्तालाप में बहुत देर हो गई। इस कारण इसको समाप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर तीनों उठ होटल से बाहर आ गए और सुन्दरलाल ने बिहारीलाल को कॉलेज होस्टल में छोड़ दिया। छोड़ने से पूर्व सूसन ने अपने मन की बात कह दी, "मिस्टर बिहारीलाल! मैं आज की इस वन्डरफुल बातचीत के लिए आपका धन्यवाद किए बिना नहीं रह सकती। मैं चाहती हूँ कि ऐसे अनेक अवसर मिल सकें।"

"यह तो आपकी कृपा मात्र ही है कि आप समझती हैं कि मैं इस 'लाइवली' बातचीत में कोई कारण था। वास्तव में इसका श्रेय तो आपको ही मिलना चाहिए। रही फिर मिलने की बात। मैं भी इसको चाहता हूँ, परन्तु मैं बम्बई में एक कार्य-विशेष से आया हुआ हूँ। उस कार्य को हानि पहुँचा कर, मैं किसी प्रकार भी आ-जा नहीं सकता।"

"अच्छी बात है। मैं ही अवसर निकालूँगी?"

इसपर भी बिहारीलाल इन औरतों के झमेले से पृथक् नहीं रह सका। अगला दिन रविवार का था। उसने मन में निश्चय कर रखा था कि जब तक सेठ के घर से उसको निमन्त्रण नहीं आएगा, वह उसके घर नहीं जाएगा। इस कारण वह प्रात: उठकर स्विमिंग पूल में तैरने चला गया। यह उसका एक प्रिय व्यायाम था। वहाँ से वह दस बजे के लगभग होस्टल में लौटा और प्रात: का अल्पाहार कर पढ़ने बैठ गया। बारह बजे उसने मध्याह्न का भोजन किया और फिर एक घण्टे के लिए विश्राम करने के लिए खाट पर लेट गया।

उसका विचार था कि दो बजे के लगभग उठकर पुन: पढ़ाई करेगा और सायंकाल घूमने चला जाएगा, परन्तु वह अभी सो ही रहा था कि उसके कमरे का दरवाजा खटखटाया गया। उसने लेटे-लेटे ही आवाज दी, "कौन?"

बाहर से आवाज आई, "दरवाजा खोलिए।" यह किसी स्त्री की आवाज थी। उसको सन्देह हो गया कि शकुन्तला हो सकती है। इससे वह लपककर उठा और दरवाजा खोल, बाहर ललिता और शकुन्तला को देख, विस्मय से उनका मुँह देखता रह गया।

उसने पूछा, "कैसे आई हैं!"

"आपसे मिलने के लिए।"

बिहारीलाल ने अपने कमरे का दरवाजा खोल दिया और उनको कमरे के भीतर बैठाकर पूछने लगा, "कोई विशेष बात है क्या?"

"हाँ; हम जानती थीं कि तुम नहीं आओगे। हमें सन्देह है कि पिताजी ने आपके भाई साहब को एक पत्र लिखा है, जिसमें रिश्ता तोड़ने की बातें लिखी हैं। इस पत्र को लिखे आज पाँच दिन हो चुके हैं। हमारा विचार था कि आपको कोई पत्र इस विषय में आया होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने उनको उस बात के विषय में, जो भाभी के साथ दरवाजे के बाहर खड़े हो सुनी थी, कुछ नहीं लिखा। उन्होंने भी मुझको इस विषय में कुछ नहीं लिखा।"

"कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि जंगल की आय में से कुछ रुपया गुम हो गया है और पिताजी को सन्देह है कि वह रुपया आपके भाई ने चोरी कर लिया है। हमें इस बात पर विश्वास नहीं आता इसपर भी हम आपसे वास्तविकता जानना चाहती हैं।"

"मुझको भैया का कोई पत्र नहीं आया और जब तक कोई पत्र इस विषय पर नहीं आएगा, मैं उनको नहीं लिखूँगा।"

"मैं कुछ कहूँगी, तब भी नहीं लिखोगे?" ललिता ने पूछा।

"भाभी! तुम कुछ लिखने को कहोगी, तो अवश्य लिखूँगा, परन्तु मेरा विचार है कि अभी प्रतीक्षा करो। जल्दी में कुछ लिखना उचित नहीं।"

"अच्छी बात है। मैं आप पर विश्वास करती हूँ कि आप मेरा यह काम कर देंगे।"

बिहारीलाल इसका अर्थ समझने का यत्न ही कर रहा था कि शकुन्तला ने एक और बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "यह तो आपको मालूम ही है कि मेरे साहब मुझको छोड़ गए हैं और नए विवाह की फिराक में हैं। अब एक और बात की है उन्होंने। उस दिन अपनी तिजोरी की चाबी ले गए थे। कल वे आए थे और कह गए हैं कि मैंने उस तिजोरी में से उनका रखा हुआ तीस हजार और अपने आभूषण निकाल लिये हैं। वे कह गए हैं कि या तो रुपया वापस कर दूँ, नहीं तो वे अदालती कार्यवाही करेंगे।"

इसको सुन बिहारीलाल को सूसन की याद आ गई। उसने कहा, "मुझको सुन्दरलाल कल मिले थे। उनकी होने वाली पत्नी के भी दर्शन हुए थे। सुन्दरलाल उस लड़की के सामने मुझे अपना मित्र प्रसिद्ध कर रहा है और वह लड़की मुझको अपना भाई मान रही है।"

इसपर बिहारीलाल ने उस दिन की पूर्ण बात और पिछले दिन की भी बात शकुन्तला को सुना दी। अन्त में उसने कहा, "इस सब व्यवहार में कारण क्या है, यह मैं जान नहीं सका।"

"यह सब विचित्र है!" शकुन्तला ने कहा।

"मेरा तो यही कहना है कि भाग्य और भगवान् हमको किसी निर्दिष्ट दिशा में विवश करके ले जा रहा है। हम सिवाय इसके कि अपने भाग्य की धैर्य से प्रतीक्षा करें और कुछ कर ही नहीं सकते।"

शकुन्तला और ललिता गईं तो बिहारीलाल के मन को इतना दुःख हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वह घूमने कहीं भी नहीं जा सका। वह पुनः अपने कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द कर खाट पर लेट विचार के घोड़े दौड़ाने लगा।

लगभग छः बजे थे। वह अपना मन न तो पढ़ाई में लगा सका था और न ही बाहर घूमने के लिए जा सका था। उसको कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसके पाँव तले से मिट्टी खिसकती जा रही है। इतना तो उसको विश्वास था कि उसके भाई ने चोरी नहीं की होगी। या तो यह सेठजी का भ्रम है अथवा मोतीराम की कोई नीचता है। इसपर भी वह अपना मन इस बात के लिए तैयार नहीं कर सका कि अपने भाई को यहाँ की सुनी बातें लिखे। इस प्रकार के विचारों में वह लीन था, जब उसके कमरे का दरवाजा फिर खटखटाया गया। उसने उठकर दरवाजा खोला तो बाहर सूसन को देख आश्चर्य करने लगा।

"चाय पी चुके हैं?" सूसन ने पूछा।

"जी नहीं। पीने को तबीयत नहीं की।"

"चलिए पिएँगे।"

बिहारीलाल इसका अर्थ नहीं समझ सका। वह मुख देखता हुआ खड़ा रहा। इसपर सूसन ने कहा, "आज मिस्टर भगेरिया के घर पर चोरी हो गई है और वे पुलिस की सहायता से उस चोरी का माल बरामद करने का यत्न कर रहे हैं। वह घर पर चाय लेने नहीं आए। मैंने समझा कि यदि आप मिल जाएँगे तो चाय का आनन्द आ जाएगा।"

चोरी की बात सुन बिहारीलाल के कान खड़े हो गए। उसको सन्देह हो गया कि यह चोरी तिजोरी में से गए माल के विषय में है। इस कारण उसको इसके विषय में और अधिक जानने की लालसा जाग पड़ी और वह सूसन के साथ चाय पीने के लिए चल पड़ा। आज वे ताज में नहीं गए। मैरीन ड्राइव पर एक रैस्टोराँ में जाकर चाय का आर्डर दे दिया। जब दोनों चाय की प्रतीक्षा कर रहे थे, तो सूसन ने बताया, "मिस्टर भगेरिया को सन्देह है कि उनकी चोरी किसी करोड़ीमल की लड़की ने की है और वे पुलिस की सहायता से उनके घर की तलाशी कराने गए हैं।"

बिहारीलाल को इस तलाशी की बात सुनकर भारी दुःख हुआ। वह अन्यमनस्क भाव में-सूसन का मुख देखता रहा। इसपर सूसन ने पूछा, "क्या विचार कर रहे हैं? क्या आप इस करोड़ीमल को जानते हैं? इनका करोड़ीमल की लड़की से क्या सम्बन्ध है?"

"तो उन्होंने आपको बताया नहीं?"

"क्या बताया नहीं?"

"यही कि करोड़ीमल के घर में उनका रुपया कैसे चला गया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, मुझको तो केवल यह बताया है कि उनकी लड़की इनकी तिजोरी में से रुपया और आभूषण चुरा कर ले गई है।"

"तो सुनिए! लाला करोड़ीमल की लड़की भगेरिया साहब की पत्नी है। यूरोप जाते समय वे अपने सेफ की चाबी अपनी पत्नी के पास छोड़ गए थे। वे अपने माता-पिता का विश्वास नहीं करते थे। उनकी पत्नी का कहना है कि चोरी उसने नहीं की। वह नहीं जानती कि किसने की है।"

"तो आप उनकी पत्नी को जानते हैं?"

"जी हाँ। उनकी पत्नी की छोटी बहिन की सगाई मेरे बड़े भाई के साथ हो चुकी है।"

"तब तो आप भली-भाँति जानते होंगे कि उनकी पत्नी कैसी है?"

"कैसी का क्या मतलब?"

"मेरा मतलब है कि क्या वह चोर प्रतीत होती है?"

"मैं तो इतना जानता हूँ कि उसका पिता भगेरिया से अधिक धनी है। लड़कियाँ सीधी और सरल स्वभाव की हैं, शेष मैं कुछ नहीं जानता।"

"परन्तु मिस्टर भगेरिया ने मुझे कभी भी नहीं बताया कि उनका पहले भी कोई विवाह हुआ है। मैंने भी पूछा नहीं। मुझको सन्देह करने का कोई कारण प्रतीत नहीं हुआ। आज पहले दिन मैं यह सुन रही हूँ कि मेरे साथ उनकी दूसरी शादी होगी।"

बिहारीलाल चुप कर रहा। सूसन भी कुछ देर तक गम्भीर विचार में पड़ी रही। इस समय तक बैरा चाय इत्यादि लगा गया था। कुछ देर तक सूसन ने विचार कर गम्भीर साँस ली और चाय बनाने लगी। चाय बनाकर उसने बिहारीलाल को पीने को कहा और स्वयं एक घूँट पीकर पूछने लगी, "क्या आप मुझे उससे मिला सकेंगे।"

"मैं आजकल उनके घर नहीं जाता। कभी मिल गईं तो मैं उनको लेकर आपके पास आ सकता हूँ। पर आपके कमरे का नम्बर क्या है?"

"मैं अब होटल में नहीं रहती। भगेरिया ने मेरे लिये एक मकान ले दिया है। अभी तो किराये पर लिया है, परन्तु वे इसको मोल लेने का यत्न कर रहे हैं। मकान इसी सड़क पर, यहाँ से लगभग दो फर्लांग पर है। वह सुन्दर तथा हवादार है तथा उसमें टेलीफोन भी लगा है। मकान नम्बर तीन सौ एक है और उसकी पहली मंजिल पर मैं रहती हूँ।"

"आपका विवाह कब हो रहा है?"

"पहले तो वे कहते थे कि उनके पिता मान जाएँगे तो विवाह होगा। अब कह रहे हैं कि विवाह हो नहीं सकता। हाँ, वे एक बांड लिखकर देने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार हैं। उन्होंने कहा है कि उस करारनामे का लेख वे मुझको एक-दो दिन में देंगे। उसको अपने वकील को दिखाकर उस पर विचार-विनिमय करेंगे।''

बिहारीलाल ने कुछ विचारकर कहा, ''मैं और उनकी पहली पत्नी उस मकान में बिना भगेरिया साहब का निमन्त्रण पाए नहीं आएँगे। हाँ आप अपने घर का टेलीफोन नम्बर बता दें। यदि वह मान गई तो मैं आपको टेलीफोन कर दूँगा।''

''ठीक है। मैं उस औरत से चोरी-चोरी मिलना चाहती हूँ।''

: 7 :

बिहारीलाल करोड़ीमल के घर की तलाशी का समाचार जानना चाहता था, परन्तु वह उनके घर पर जाने का विचार नहीं रखता था। उसको विश्वास हो रहा था कि शकुन्तला और ललिता उसको समाचार देने आएँगी। उसका अनुमान ठीक निकला। अगले दिन वह कॉलेज से होस्टल की ओर आ रहा था कि शकुन्तला और ललिता उसके आगे-आगे होस्टल की ओर जाती दिखाई दीं। बिहारीलाल समझ गया कि वे उसको मिलने ही जा रही हैं। इस कारण वह लम्बे-लम्बे डग भरकर उनके साथ जा मिला और उसने धीरे से आवाज दी, ''शकुन्तला बहिन!''

दोनों ने आवाज सुनी और पहिचानकर खड़ी हो गईं। बिहारीलाल ने पूछा, ''किधर जा रही हो?''

''आपकी ओर जा रही हैं। होस्टल की ओर जाने के स्थान किसी रेस्टोराँ में चलें तो ठीक रहेगा।''

''बहुत आवश्यक काम है क्या?''

''पानी नाक तक आ गया है। ललिता कुछ करने के लिए मन को तैयार कर रही है। इसके पूर्व वह आपसे बात करना चाहती है।''

''मैं समझा था कि तुम अपने विषय में कुछ सूचना देने आई हो?''

''वह भी है, परन्तु वह इतनी जल्दी की नहीं है। किधर चलें?''

बिहारीलाल ने विचार किया कि इनको मैरीन ड्राइव वाले रेस्टोराँ में ले चले और आवश्यकता पड़े तो सूसन को भी वहीं बुला ले। उसने कहा, ''चलो मैरीन ड्राइव पर एक रेस्टोराँ है। वहीं चलेंगे।''

तीनों फुटपाथ पर ही खड़े हो गए और टैक्सी की प्रतीक्षा करने लगे। टैक्सी आई तो उस पर सवार होकर रेस्टोराँ में जा पहुँचे।

वहाँ बैठते ही शकुन्तला ने पहले अपनी ही कथा सुना दी। उसने कहा, ''कल भगेरिया साहब पिताजी के घर की तलाशी लेने के लिए पुलिस ले आए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। तलाशी हो गई। वहाँ से निकला तो कुछ नहीं, परन्तु पिताजी की भारी बदनामी हो गई है। जब तलाशी हो रही थी, तब सैकड़ों आदमी घर के बाहर आ खड़े हुए थे। आज तो मिलने-जुलने वालों का ताँता ही लग गया है। सब आते हैं और भगेरिया साहब की निन्दा करते हैं, परन्तु वास्तव में वे पिताजी को लज्जित करने आ रहे हैं।

''इसका अर्थ मैं यह समझती हूँ कि अब मुझको उनकी आशा छोड़ देनी चाहिए। पिताजी भी कहते थे कि अब मेरा उनके घर जाने का तो प्रश्न ही नहीं रहा।

''पर इस समय तो हमें ललिता के विषय में विचार करना है। जब्बलपुर से एक पत्र आया है। पिताजी ने वह पत्र माताजी को दिखाया है और माताजी ने मुझको सुनाया है। मैं, वह पत्र अपने साथ, आपको सुनाने के लिए लाई हूँ। पत्र इस प्रकार है—

''प्रिय सेठजी,

आपका पत्र मिला। यह जानकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ कि आप देवकीनन्दन को अपनी लड़की के लिए पसन्द करते हैं। इस विषय पर और अधिक बात करने से पूर्व यह उचित होगा कि देवकी बम्बई आकर आपकी लड़की को देख ले। यह तो आप जानते ही हैं कि अब वह काल नहीं रहा, जब मेरा और आपका विवाह हुआ था। तब तो माता-पिता जैसा निश्चय कर देते थे, वैसा ही हो जाता था। अब प्रत्येक लड़के के मन में यह अभिलाषा है कि उसकी पत्नी कम-से-कम कुरूप तो न हो। अतः मैं यह लिख रहा हूँ। यदि आप पसन्द करें तो वह अगले सप्ताह में किसी दिन बम्बई आ सकता है।

आपका उत्तर आने पर उसके आने की तिथि लिखूँगा।

आपका परम स्नेही नन्दलाल।''

''तो फिर आपके पिताजी ने क्या उत्तर भेजा है ? ''

''उन्होंने उत्तर के लिए ही तो यह पत्र माताजी को दिखाया था और माताजी ने मुझसे राय की है। मैंने ललिता से राय करने के लिए पत्र माताजी से माँग लिया है।''

''तो भाभी क्या कहती हैं ?''

''बात यह है कि आपके भाई का क्या विचार है, यह जानना अत्यावश्यक है।''

बिहारीलाल बात को इस प्रकार कहे जाने से प्रसन्न नहीं हुआ था। इस पर भी उसने गम्भीर हो कहा, ''भैया के विचार तो मुझको पता नहीं। मैं कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बता सकता हूँ? जब तक मुझको यह पता न हो कि सेठजी ने भैया को क्या लिखा है, तब तक मैं उनके विचारों का अनुमान भी नहीं लगा सकता और उन अनुमानों का उद्देश्य भी नहीं जान सकता।''

''तो फिर क्या किया जाए?''

''मैं क्या जानूँ? ललिता...।'' वह कहने लगा था भाभी, परन्तु कहता-कहता रुक गया और कुछ रुककर बोला, ''मेरा अभिप्राय यह है कि इनको अपना मार्ग स्वयं बनाना चाहिए।''

इस समय चाय लग गई थी। शकुन्तला ने चाय बनाई। ललिता ने एक घूँट पीकर कहा, ''बिहारी भैया! मैंने तो अपना मार्ग निश्चय कर लिया है। मैं तो यह जानने आई थी कि क्या तुम और तुम्हारे भैया मेरे अपने मार्ग पर चलने में सहायक होंगे।''

''वह मार्ग क्या है?''

''मार्ग सीधा है। मैं इस जब्बलपुर वाले से विवाह नहीं करूँगी।''

''और भैया से?''

''यह तुम्हारे भैया पर निर्भर है। विवाह एकपक्षीय बात नहीं हो सकती।''

''और यदि जब्बलपुर वालों से तुम्हारा विवाह करने में जबरदस्ती की गई तो क्या होगा?''

''जीवनान्त।''

बिहारीलाल हँस पड़ा। उसको यह बात केवल डींग मारना ही प्रतीत हुई। ललिता इस हँसी का अर्थ अभी समझने का यत्न ही कर रही थी कि बिहारीलाल ने कह दिया, ''तो ठीक है। समय आने दो। भैया की बात तो मैं जानता नहीं। हाँ, अपने विषय में कह सकता हूँ कि मैं तुम्हारे जीवन की रक्षा के लिए जो कुछ भी हो सकेगा, करूँगा।''

''तुम क्यों करोगे?'' शकुन्तला ने व्यंग्य के भाव में पूछा।

''इसलिए कि ललिता को एक बार माँ कह चुका हूँ और इस नाते जो कुछ हो सकेगा, करना अपना कर्त्तव्य मानूँगा।''

ललिता की आँखों में आँसू भर आए थे। वह अपने प्याले की ओर देख रही थी। शकुन्तला ने कह दिया, ''यही तो पूछने हम आए थे।''

''इसके पूछने की आवश्यकता नहीं थी। जब अपनी एक भावना बन गई, तो वह बन गई। ललिता जी का विवाह कहाँ होता है और कहाँ नहीं होता, इसका मेरी इस भावना से कोई सम्बन्ध नहीं। यों भी ये मुझसे बड़ी हैं और बड़ी बहिन भी तो माँ के बराबर ही होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो शकुन्तला बहिन! मैं भैया के साप्ताहिक पत्र की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मैं आशा करता हूँ कि उसमें इस विषय में कुछ तो अवश्य होगा।

"एक बात और है। जब आप यहाँ आई हैं तो वह भी कह देना चाहता हूँ। सुन्दरलाल की भावी पत्नी सूसन मुझको कल फिर मिली थी। उसकी बातों से पता चलता है कि सुन्दरलाल ने उससे, अपने पहले विवाह का जिक्र नहीं किया और जब मैंने बताया कि वह अपने श्वसुर के घर की तलाशी कराने गया है, तो उसको बहुत ही दुःख हुआ था। वह तुमसे मिलना चाहती है। तुम क्या चाहती हो?"

"क्या लाभ होगा इससे?"

"और हानि क्या होगी? कुछ समय अवश्य व्यर्थ जाएगा। मेरी राय मानो तो उससे मिलने की स्वीकृति दे दो। परिचय प्राप्त करने से क्या हानि हो सकती है!"

"कैसे भेंट होगी?"

"मैं अभी टेलीफोन पर उसको बुला लेता हूँ और यदि इस समय उसको अवकाश हुआ, तो वह यहीं आ जाएगी।"

"तो बुला लो।" ललिता ने कह दिया।

शकुन्तला विस्मय में ललिता का मुख देखने लगी। ललिता ने कहा, "दीदी! होने दो जो होता है।"

बिहारीलाल ने होटल के टेलीफोन से, सूसन को फोन कर दिया। जब सूसन बोली तो बिहारीलाल ने पूछा, "क्या इस समय अवकाश है?"

"हाँ, बिकुल खाली हूँ। भगेरिया साहब अभी-अभी चाय लेकर गए हैं। आज उनसे बहुत ही खुलकर बातें हुई हैं। आप कहाँ हैं, मैं आपसे मिलना चाहती हूँ।"

"मैं कल वाले होटल में बैठा हूँ। मेरे साथ एक और हैं, जिनसे आप मिलना चाहती थीं। उनकी छोटी बहन भी है।"

"तब तो मैं अभी आई। आप उनको बिठाइए।"

पाँच मिनट में सूसन वहाँ आ पहुँची, बिहारीलाल ने दोनों का परस्पर परिचय कराया। सूसन दोनों बहनों के बीच में बैठकर शकुन्तला से पूछने लगी, "आपको मुझे देखकर दुःख तो बहुत होता होगा?"

शकुन्तला को सूसन की अंग्रेजी का अनुवाद कर बताने से पहले बिहारीलाल ने कह दिया, "यह अंग्रेजी नहीं जानती। इस कारण एक द्विभाषिये की आवश्यकता होगी और वह मैं बन रहा हूँ।"

जब शकुन्तला ने सूसन की बात सुनी तो उसने कहा, "जब कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलाड़ी खेल में हार जाता है, तो उसको अपने प्रतिद्वन्द्वी को बधाई देनी चाहिए न?''

दोनों में बिहारीलाल के माध्यम से बातें होने लगीं। शकुन्तला की बात सुन सूसन को विस्मय हुआ और प्रसन्नता भी। उन्होंने कहा, ''मैं आपकी भावना की सराहना करती हूँ, परन्तु यह बात तो माननी ही पड़ेगी कि मैंने आपकी कोई वस्तु छीन ली है।''

''देखो सूसन बहिन! हम जीवन को इस प्रकार नहीं समझते। हमारे भाग्य में जो कुछ लिखा है, वही हमको मिलता है। जितना लिखा था, उतना मिल गया और यदि मिलना कुछ शेष है, तो उसको कोई मिलने से रोक नहीं सकता।''

''तो आप अब क्या करने वाली हैं? क्या आप तलाक के लिए प्रार्थना करेंगी?''

शकुन्तला तलाक की बात सुनकर हँस पड़ी। उसने कहा, ''इस बात की हम हिन्दुओं में रीति नहीं है।''

''तो रीति बना क्यों नहीं लेतीं?''

''इसलिए कि हम इसको कुछ अच्छी बात नहीं समझतीं। कुछ औरते हैं, जो यौन-सम्बन्ध के बिना रह नहीं सकतीं अथवा जिनको अपने निर्वाह के लिए किसी कमाने वाले पुरुष की आवश्यकता रहती है। वे अपना दूसरा विवाह कर सकती हैं अथवा बिना विवाह के भी किसी दूसरे पुरुष के पास जाकर रहती हैं। मुझे इन दोनों बातों की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।''

इसपर सूसन को चोरी की बात स्मरण हो आई। उसने कहा, ''यदि आपको रुपये की आवश्यकता नहीं, तो आपने चोरी क्यों की है?''

''मैंने चोरी नहीं की। बात इस प्रकार हुई कि जब वे देश जाने लगे, तो मुझको अपने माता-पिता के घर छोड़ने आए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने मुझको अपनी तिजोरी की चाबी दे दी। उससे पहले मैंने कभी उस चाबी को हाथ नहीं लगाया था और न ही मैंने कभी देखा था कि तिजोरी में क्या रखा है। उनकी अनुपस्थिति में मैं उनके घर पर कभी नहीं गई। आने पर उन्होंने वह चाबी मुझसे ले ली। मुझको पता नहीं कि तिजोरी में क्या रखा था और क्या अब निकला है।

''मेरा अनुमान है कि या तो उनके माता-पिता ने हमारी अनुपस्थिति में दूसरी चाबी लगाकर सब कुछ निकाल लिया है अन्यथा उस तिजोरी में कुछ था ही नहीं और अब आपसे विवाह करने में कारण पैदा करने के लिए मुझ पर यह चोरी का झूठा लांछन लगाया जा रहा है।''

सूसन इसको सुन स्तब्ध रह गई। कुछ देर तक विचार कर उसने पूछा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसपर भी आप उससे सम्बन्ध बना लेंगी?"

"सम्बन्ध तो हमारे यहाँ टूट ही नहीं सकता। जब मैं बूढ़ी होकर मरने लगूँगी, तब भी उनकी ही पत्नी कहाऊँगी। पति-पत्नी का सम्बन्ध तो टूट नहीं सकता। केवल यौन सम्बन्ध अब उनसे नहीं रहा। यह तो तबसे ही नहीं है, जबसे छोटा बच्चा हुआ था।"

"यौन-सम्बन्ध नहीं रहा तो फिर शेष रह ही क्या गया है?"

"विवाह तो धर्म का सम्बन्ध है न? मैंने भगवान को साक्षी रखकर यह वचन दिया हुआ है कि मैं उनकी धर्मपत्नी रहूँगी और उनके साथ रहते हुए सन्तान उत्पन्न कर, उसके पालन-पोषण के लिए यत्न करूँगी।"

"पर यह वचन तो दोनों ओर से होता है। अपने वचन का जब वे पालन नहीं कर रहे, तो आप पालन करने के लिए विवश क्यों हैं?"

"परन्तु बहिन! एक बात नहीं समझतीं। हमारा वचन कोई देश के विधान के अनुसार नहीं है। यह ठीक है कि देश-विधान विवाह के सम्बन्ध को अभेद्य मानता है, परन्तु कल वह बदल भी सकता है। मैंने तो पत्नी बनकर रहने का वचन भगवान् के आगे दिया है। इसमें उनके मानने न मानने का तो प्रश्न ही नहीं रहता। मैं अपनी आत्मा में समझती हूँ कि मैंने उनके बच्चों के पालन-पोषण का वचन दिया है। मैं तो इसका पालन करूँगी। यदि वे इसपर स्थिर नहीं रहे, तो मैं भी वचन से डिग जाऊँ, यह तो युक्ति नहीं।"

सूसन के दिमाग में बवण्डर उठ रहा था। वह इस प्रकार की जीवन-मीमांसा को समझ नहीं सकती थी। उसकी शिक्षा-दीक्षा ऐसे वातावरण में हुई थी, जिसमें विवाह को एक कॉन्ट्रैक्ट (वचन-मात्र) समझा जाता था। इस कारण वह इसमें धर्म को घुसेड़ देना पसन्द नहीं करती थी। उसके मुख से अकस्मात् निकल गया, "हिन्दू इज़ ए रेस ऑफ ल्यूनैटिक्स (हिन्दू पागलों की एक जाति है)।"

बिहारीलाल हँस पड़ा, परन्तु उसने इसका अनुवाद कर शकुन्तला को सुनाया नहीं। इसपर शकुन्तला ने ललिता के मुख पर देखा तो उसने इसका अनुवाद कर दिया, "दीदी! ये हमको पागल समझती हैं। पर मैं तो इनसे यही कहना चाहती हूँ कि क्या हजरत ईसा को उस समय के यहूदी पागल नहीं समझते थे?"

सूसन को अब समझ आ गया कि उसने कुछ अनुचित कह दिया है। परन्तु ललिता के उत्तर के पश्चात् सब हँसने लगे। सूसन ने बात बदल दी। उसने कहा, "क्या नाम है तुम्हारा?"

"ललिता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम इनकी बहिन हो इस नाते मेरी भी बहिन हुईं।"

"मुझे स्वीकार है।"

"तो क्या तुम मेरी बात से नाराज हो?"

ललिता तो अंग्रेजी पढ़ती थी और उसको अंग्रेजी बोलने का अभ्यास भी था। इस कारण उसने बिना बिहारीलाल की सहायता लिये उत्तर दे दिया, "नाराज नहीं। मैं तो फ्लैटर्ड फील (प्रशंसित अनुभव) करती हूँ। विचारों के लिए पागल कहा जाना एक प्रकार की प्रशंसा ही माननी चाहिए।"

सूसन ने ललिता के गले में बाँह डालकर, उसको अपने समीप खींचकर, अपने साथ लगा लिया। इस स्नेह-प्रदर्शन से ललिता का मुख लाल हो गया। इस समय शकुन्तला बिहारीलाल से कह रही थी, "मुझे उनके इस चुनाव पर शोक नहीं। कम-से-कम मुझसे देखने में तो सुन्दर है।"

बिहारीलाल ने कहा, "शकुन्तला बहिन! अपना-अपना विचार है। यदि रंग को पृथक् कर दें, तुम इससे कम सुन्दर नहीं हो।"

शकुन्तला कुछ उत्तर देने ही वाली थी कि सूसन ने उनको अपनी ओर देख, मुस्कराते हुए बातें करते पा कहा, "मेरी निन्दा हो रही है न?"

इसपर दोनों हँस पड़े। बिहारीलाल ने हँसकर कहा, "कह नहीं सकते कि इसको निन्दा कहें अथवा प्रशंसा। वास्तव में दोनों ही बातें हो रही थीं। ये कह रही थीं कि आप इनसे अधिक सुन्दर हैं और मैं कह रहा था कि ये आपसे अधिक सुन्दर हैं। आपका गौर वर्ण ही भ्रम में डालने वाला है।"

यह सुन तो सूसन का मुख लाल हो गया। यूरोप में किसी लड़की के मुख पर कहना कि वह किसी की तुलना में कुरूप है, उसका अपमान समझा जाता है। बिहारीलाल इस मुख लाल होने का अर्थ नहीं समझा। उसने केवल यह जाना कि सूसन को क्रोध चढ़ आया है। इस कारण उसने डिकन की एक उक्ति कह दी, "बट हू हैज मेड ऐन ओल्ड बैली ए जज ऑफ ब्यूटी? (मेरे जैसे खूसट को सौन्दर्य का निर्णायक किसने बनाया है?)"

इसको सुन सूसन हँसते हुए बोली, "पर आप तो बूढ़े खूसट नहीं?"

"बात एक ही है। मैंने सौन्दर्य कला सीखी नहीं।"

इस प्रकार बात टल गई। इसपर सूसन ने उठते हुए कहा, "शकुन्तला बहिन! मुझे आपसे मिलकर और आपके विचार जानकर बहुत प्रमन्नता हुई है। मैं चाहती हूँ कि हमारी परस्पर मित्रता अधिक और अधिक बढ़े। हम फिर कब मिल सकती हैं?"

ललिता, जो सूसन की बात को सुन और समझ रही थी, बोल उठी, "यह तो भैया बिहारीलाल के करने की ही बात है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 8 :

सूसन को विचार करने के लिए बहुत कुछ मसाला मिल गया था। वह घर गई तो अपने पलंग पर लेट, अपने साथ बीती पूर्ण घटना पर विचार करने लगी। सिनेमा के पर्दे पर चित्र की भाँति, उसकी आँखों के सामने सुन्दरलाल से सम्पर्क की कहानी प्रकाशित हो उठी। वह अपने पिता के अंगूरों के बाग में, एक लता-कुंज में बैठी अपने जीवन पर विचार कर रही थी। उसकी इच्छा विवाह करने की हो रही थी। वह आयु में बाईस वर्ष की हो चुकी थी और बालसार तथा बोकेशियो की कहानियाँ पढ़ने में भारी रुचि लिया करती थी। इन कहानियों से उसकी यौन-तृष्णा भड़क उठती थी और वह किसी लड़के की संगत की इच्छा करने लगती थी, परन्तु उसको गाँव में कोई भी लड़का ऐसा दिखाई नहीं देता था, जो उसके मापदण्ड से, उसका पति बनने योग्य होता।

इस समय भूरे रंग का एक व्यक्ति, जिसकी रूपरेखा बहुत ही भली प्रतीत होती थी और जो बहुत ही कीमती कपड़े का सूट पहने हुआ था, उसके सामने आ खड़ा हुआ। यह सुन्दरलाल भगेरिया था और उसके साथ सूसन का पिता था। उसने सूसन को सम्बोधन कर कहा, "कौमिल्ला ये एक हिन्दुस्तानी मेहमान आए हैं हमारे मित्र कैबिली से परिचय-पत्र लाए हैं ये कुछ दिन इस गाँव में रहेंगे। क्योंकि ये अंग्रेजी के अतिरिक्त और कोई भाषा नहीं जानते इस कारण मैं इनको तुम्हारे पास लाया हूँ। आशा करता हूँ कि तुम इनकी, इस स्थान पर रहने के दिनों में सहायता कर दोगी।"

सूसन इस आदमी का मुख आश्चर्य से देखती रह गई और जिस मानसिक अवस्था में वह उन दिनों थी, उसमें उसके लिए सुन्दरलाल से प्रेम करने लग जाना स्वाभाविक ही था।

वह लता-कुंज में से निकल आई और उसने सुन्दरलाल की ओर मुस्कराते हुए देख कहा, "आइए! इस घर को आप अपना ही घर समझिए। मैं आशा करती हूँ कि आप इस गाँव में अपनी छुट्टी आनन्दपूर्वक व्यतीत करेंगे।"

सुन्दरलाल ने हाथ मिलाते हुए कहा, "निश्चित! जब आप मेरा पथ-प्रदर्शन करेंगी। मैं आशा करता हूँ कि आप मुझको उस कष्ट के लिए, जो मैं आपको दूँगा, क्षमा कर देंगी।"

सुन्दरलाल का सामान इत्यादि अभी तक मकान के ड्राइंग-रूम में पड़ा था। दोनों मकान के पिछवाड़े के एक कमरे में आ गए। यह खाली पड़ा था। सूसन ने बताया, "यह कमरा मेरे भाई का है। वह आजकल लंदन में है। माँ उसके साथ गई हुई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस कमरे में सूसन ने सुन्दरलाल का बिस्तर लगवा दिया और कहा, "आप अभी आराम कीजिए। चाय के समय आपको बुला लूँगी और फिर उस समय हम यहाँ देखने योग्य स्थानों को देखने का कार्यक्रम बनाएँगे।"

"मैं अभी से यहाँ के चमत्कार देखने लगा हूँ। मिस कौमिल्ला क्या यहाँ सब लड़कियाँ आप जैसी ही सुन्दर हैं?"

"तो क्या मैं आपको बहुत सुन्दर मालूम हुई हूँ?"

"स्प्लेंडिड, चार्मिंग।"

"धन्यवाद। परन्तु आपको विस्मय होगा कि यहाँ पर अभी तक किसी भी युवक ने मुझको 'प्रपोज' नहीं किया।"

वास्तव में यह बात सत्य नहीं थी। वैसे तो गाँव के प्रत्येक युवक ने उससे विवाह की इच्छा प्रकट की थी, परन्तु वह जानती थी कि गाँव में कोई भी ऐसा युवक नहीं, जो जुआ न खेलता हो और जो नित्य रात में पीकर नशे में धुत् न हो जाता हो। वह उन सबसे घृणा करती थी। इसपर भी उसने ऐसा कह दिया, मानो उस गाँव में एक-से-एक सुन्दर लड़की पड़ी हो—"यहाँ तो मैं किसी की दृष्टि में भी जँची नहीं।"

"मालूम होता है कि यहाँ के युवकों में दृष्टि-दोष है। क्या यहाँ शराब पी जाती है?"

"तो आप नहीं पीते क्या?"

"अपने देश में मैंने तो कभी हाथ लगाकर भी नहीं देखी थी। यूरोप में आकर थोड़ी पीनी आरम्भ कर दी है। मैंने अनुभव किया कि पीने से दृष्टि बिखर जाती है और सुन्दर वस्तुएँ भद्दी दिखाई देने लगती हैं तथा कुरूप वस्तुएँ सुन्दर। कदाचित् यही बात यहाँ के युवकों की हो।"

"कहीं, आपने इस समय तो पी हुई नहीं है?"

"नहीं, मुझे तो पिए आज दो सप्ताह से ऊपर हो गए हैं।"

उस समय दोनों बातें करते हुए कमरे की खिड़की में आ गए थे और मकान के पीछे का उद्यान देख रहे थे। एकाएक सूसन ने पूछ लिया, "आपको यह बाग कैसा मालूम होता है?"

"बहुत सुन्दर है, परन्तु जो फूल इस समय मेरे समीप है, उसकी तुलना तो, उस बाग में कोई भी फूल नहीं कर सकता।"

"वह देखिए, वह लाल गुलाब का फूल अद्वितीय नहीं है?"

"गुलाबों में बढ़िया है, परन्तु सब प्रकार के फूलों में तुलना होने पर, उसको तुम्हारे सामने हार माननी पड़ेगी।"

इतना कहते-कहते सुन्दरलाल ने सूसन का हाथ पकड़ लिया और उसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ जोर से दबा दिया। सूसन समझ गई कि अब उसको पति ढूँढ़ने में कठिनाई नहीं होगी।

इसके पश्चात् उसकी घनिष्ठता सुन्दरलाल से बढ़ती गई और सुन्दरलाल के वहाँ से लौटने से पूर्व, दोनों हिन्दुस्तान में चलकर अपने विवाहित जीवन का चित्र बनाने लगे थे।

सुन्दरलाल के विदा होने के दिन, सूसन अपने पिता के पास गई और बोली, "पापा! तुम मिस्टर भगेरिया के साथ मेरे विवाह के विषय में क्या विचार करते हो?"

"देखो कौमिल्ला! तुम अब वयस्क हो। मैं तुमको राय देने का अधिकारी नहीं। इसपर भी मैं इतना कहता हूँ कि यदि इस गाँव का ही कोई युवक होता तो बहुत ठीक रहता।"

"पापा! यहाँ ऐसा कौन है, जो शराब नहीं पीता और पीकर घुत् नहीं हो जाता? तुम जानते हो कि मुझको शराबियों से अत्यन्त घृणा है।"

"यदि तुम दोनों ने निश्चय कर लिया है, तो ठीक है। कब विवाह होगा तुम्हारा?"

"हिन्दुस्तान में जाकर, हिन्दुस्तानी तरीके से।"

"कब जा रही हो?"

"आज ही उनके साथ।"

"देखो, सावधान रहना चाहिए। कहीं धोखा हुआ तो तुम जानो।"

इस प्रकार वे वहाँ से चले। भारत में आने की सूचना सुन्दरलाल ने किसी को नहीं भेजी थी।

सुन्दरलाल ने कौमिल्ला सूसन को ताज होटल में ठहराकर ही अपने घरवालों को दर्शन दिए थे। इस कारण उसके घरवालों को पता नहीं था कि वह अपने साथ किसी लड़की को विवाह के लिए लाया है।

: 9 :

सुन्दरलाल भगेरिया ने अपने घरवालों को यह कहकर सन्तोष करा दिया था कि वह उनको आश्चर्य में डालना चाहता था, इस कारण उसने सूचना नहीं भेजी थी। इससे उनको सन्तोष नहीं हुआ, हाँ उनको अब अपनी योजना चलाने का समय आया जान पड़ा। सुन्दरलाल के पिता कुन्दनलाल भगेरिया ने उसके पहुँचने के अगले दिन ही कहा, "देखो बेटा! अब तुमको अपना काम-धन्धा समेटना चाहिए। यदि शकुन्तला से डरकर देश से भागते रहोगे, तो यहाँ का व्यापार चौपट हो जाएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर पिताजी! मैं उसको अपने घर पर नहीं रख सकता।"

"ठीक है। हम तुम्हें उसको लाने के लिए नहीं कहते। यदि तुम चाहो तो हम तुम्हारी शादी बहुत ही सुन्दर लड़की से कर देंगे।"

"इस विषय में कुछ दिन के बाद मैं आपसे बात करूँगा। इस समय तो शकुन्तला से पीछा छुड़ाने की बात है।"

"वह तो सहज में ही हो जाएगा। तुम आज ही अपनी ससुराल में चले जाओ और करोड़ीमल से जाकर कहो कि तुम उनकी लड़की को अपने घर में नहीं रख सकते। उसकी बहन का एक बिरादरी से बाहर और निर्धन आदमी से विवाह हो रहा है। तुम ऐसे कंगलों से अपना सम्बन्ध नहीं रख सकते। करोड़ीमल नहीं मानेगा, क्योंकि उसकी पत्नी नहीं मानती और वह है पत्नी का गुलाम।"

सुन्दरलाल अपनी ससुराल गया और श्वसुर से झगड़ आया, परन्तु उसको यह जानकर विस्मय हुआ कि करोड़ीमल फकीरचन्द से सम्बन्ध तोड़ने के लिए तैयार बैठा है। इसलिए सुन्दरलाल अब इस सम्बन्ध को तोड़ने का कोई अन्य उपाय ढूँढ़ने लगा। वह बहाना उसको तिजोरी में चोरी हो जाने से मिल गया। उस दिन वह शकुन्तला से चाबी लेकर आया और तिजोरी को खोलकर देखने लगा तो तिजोरी खाली देख उसे क्रोध चढ़ आया। अगले दिन प्रात:काल ही वह शकुन्तला के पास गया और उससे अपना पचास हजार रुपया माँगने लगा। जब उसने रुपये के विषय में अनभिज्ञता प्रकट की तो सुन्दरलाल ने उसके माता-पिता को गालियाँ देनी आरम्भ कर दीं।

पश्चात् उसने पुलिस में कहकर और पुलिस मैजिस्ट्रेट को भारी रिश्वत देकर करोड़ीमल के घर की तलाशी करा दी। उसको यह बात विदित थी कि चोरी का माल बरामद नहीं होगा, परन्तु इससे करोड़ीमल की भारी बदनामी हो जाएगी और वह समझता था कि इससे उसका श्वसुर और पत्नी उससे सम्बन्ध तोड़ देंगे।

ऐसा ही हुआ। करोड़ीमल और शकुन्तला ने समझ लिया कि सुन्दरलाल उनके लिए अब जीवित नहीं है और अब उनका उससे सम्बन्ध नहीं रह सकता। करोड़ीमल ने तो यहाँ तक निश्चय कर लिया था कि वह शकुन्तला के नाम कई लाख रुपये की सम्पत्ति लिख देगा, जिससे उसका जीवन-निर्वाह सुगमता से हो सके।

जब सुन्दरलाल ने समझा कि अब शकुन्तला से छुट्टी मिल गई है, तो उसने अपने पिता से कौमिल्ला सूसन का उल्लेख कर दिया। उसने कहा, "पिताजी! मैं समझता हूँ कि अब मेरा शकुन्तला से पीछा छूट गया है। अब मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने को स्वतन्त्र समझता हूँ कि नया विवाह कर सकूँ।

"ठीक है बेटा! तो ऐसा करो कि तुम दिल्ली चले जाओ। वहाँ नीलश्याम सोमानी एक बहुत बड़े रईस हैं। उनका सन्देश कई बार आ चुका है। मैं तुमको एक पत्र दे देता हूँ। वहाँ जाकर तुम लड़की भी देख आना और लेन-देन की बात भी कर आना।"

"तो आपने उनको लिखा है?"

"हाँ, मैंने लिखा था कि लड़का विलायत सैर करने गया हुआ है। वह आएगा, तो मैं उसको दिल्ली भेज दूँगा। सो अब तुम चले जाओ।"

"पर पिताजी! वहाँ जाने से पूर्व एक रिश्ता तो यहाँ ही है। उसके विषय में आप विचार कर लें।"

"किसकी लड़की है वह?"

"फ्रांस के शैम्पेन जिले के वैडविले नामक गाँव के एक बड़े जमींदार की लड़की है। नाम है कौमिल्ला सूसन। मैं उसको केवल सूसन के नाम से पुकारता हूँ।"

"तो वह ईसाई है!"

"पिताजी! आप तो जानते हैं कि लड़की की कोई जाति नहीं होती। जिसके घर वह चली जाय, उसकी ही जाति की वह हो जाती है।"

"मैं जाति की बात नहीं कर रहा सुन्दर! मैं तो धर्म की बात कर रहा हूँ। उस ईसाई से विवाह करने पर तुम भी ईसाई हो जाओगे।"

"ऐसा क्यों होगा! मैं उसको आर्यसमाज में ले जाकर हिन्दू बनवा लूँगा। महाराजा बड़ौदा ने भी तो एक फ्रांसीसी लड़की को हिन्दू बनाकर उससे विवाह कर लिया था।"

"वह तो राजा है। वह सब कुछ कर सकता है। पर हम ऐसा नहीं कर सकेंगे।"

"हम किसी से कम धनी हैं?"

"धन की बात नहीं सुन्दर! यह तो पदवी की बात है। नहीं, यह विवाह नहीं होगा।"

"मैं चाहता हूँ कि कुछ दिन तक इस विषय पर विचार कर लें। लड़की को भी देख लें, तभी अपना निर्णय दें।"

"मैंने विचार कर लिया है।"

"फिर भी और विचार करने में कोई हानि है क्या?"

पिता चुप रहा। इसपर सुन्दरलाल ने कहा, "तो आप उस लड़की को कब देखने चलिएगा"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या जरूरत है जाने की?"

"पिताजी! वह बहुत सुन्दर है।"

"तो तुमने पत्नी का प्रदर्शन करना है क्या?"

"सुन्दर वस्तु घर में लाने में हानि क्या है?"

"धन के समान सुन्दर संसार में और क्या है"

"धन तो पिताजी साधन होता है। इससे जीवन में सुविधा और आनन्द उपलब्ध किया जाता है।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ। धन प्राप्त करो और सुन्दर औरतें तुम्हारे आगे-पीछे घूमती फिरेंगी। इसी कारण मैंने ऐसा प्रबन्ध किया है कि सुन्दर पत्नी भी मिलेगी और दो-चार लाख का दहेज भी। तुमने ऐसा आयोजन किया है कि खर्चा-ही-खर्चा होगा और धर्म से पतित भी हो जाओगे।

"देखो सुन्दर! हमारे परिवार में यह रीति-सी चल गई है कि हमको ससुराल से मिला धन फलता है। मेरी दो शादियाँ हुई थीं और दोनों में दहेज मिला था। उस दहेज से ही बरकत पड़ी थी। तुम्हारे पहले विवाह पर भी तो पाँच लाख मिला था और अब दूसरे विवाह पर भी कुछ-न-कुछ तो मिलना ही चाहिए। इससे घर में ऋद्धि-सिद्धि आती है। खर्च करने से, विशेष रूप से औरतों पर, तो गरीबी का वास होता है।"

"मैं तो उसको छः हजार मील से यह वचन देकर लाया हूँ कि मैं उससे शादी करूँगा। अब अपना वचन भंग कैसे कर सकता हूँ?"

"देखो प्रत्येक वस्तु का मूल्य होता है। बताओ, उसको यहाँ से वापस कर देने के लिए कितना कुछ देना पड़ेगा?"

"मैं समझता हूँ कि उससे विवाह कर लेना चाहिए। मैं उसको वचन दे चुका हूँ।"

"मैंने तो वचन नहीं दिया न! यदि तुमने विवाह किया तो मैं तुमको अपने से पृथक् कर दूँगा।"

: 10 :

यह वही दिन था, जिस दिन सूसन शकुन्तला से मैरीन ड्राइव रेस्टोराँ में मिली थी। उसी मध्याह्नोत्तर, चाय के समय सुन्दरलाल और सूसन में वाद-विवाद हो गया था। इससे पहले दिन सूसन को बिहारीलाल से पता चल गया था कि सुन्दरलाल का एक विवाह पहिले हो चुका है। इस विषय में जब सूसन ने पूछा, तो उसने कहा, "डार्लिंग! तुमने कभी इस विषय में पूछा नहीं था और हमारे हिन्दुओं में पुरुष दो-तीन विवाह कर सकता है। यही कारण था कि मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह रहा था कि हम हिन्दू-रीति से विवाह कर लेंगे।''

''तो कब होगा विवाह ?''

''मैं समझता हूँ कि मेरे और तुम्हारे बीच एक कॉन्ट्रैक्ट हो जाना चाहिए। यह तो हिन्दू विवाह से अच्छा ही रहेगा।''

''क्या कॉन्ट्रैक्ट होगा ?''

''इसका अभिलेख मैं तुमको एक-दो दिन में दे सकूँगा।''

''मुझको भी वह किसी अपने वकील को दिखाना पड़ेगा।''

''हाँ, दिखा लेना।''

इसी सायंकाल सूसन की शकुन्तला से भेंट हो गई। उसको विदित हो गया कि शकुन्तला एक नेक लड़की है और हिन्दू होने से वह दूसरा विवाह नहीं करेगी। इससे भी अधिक शकुन्तला की विवाह तथा जीवन के विषय में विवेचना उसके मन में हलचल मचाने वाली सिद्ध हुई।

इस प्रकार वह अपने उस जीवन का अवलोकन करती हुई पलंग पर लेटी हुई थी, जिसमें उसका सुन्दरलाल से सम्पर्क हुआ था। वह अभी अपने विचार में लीन ही थी कि सुन्दरलाल आ गया और उसको इस प्रकार गम्भीर विचार में लीन देख पूछने लगा, ''डार्लिंग! क्या हो रहा है ?''

''अपने जीवन की इस घटना पर विचार कर रही हूँ, जिससे आप और मैं, एक ही नौका के यात्री बन गए हैं। मैं एक से आज मिली हूँ, जो यह कहती थी कि यह भाग्य से हुआ है। उसका कहना था कि मेरे भाग्य में अपने पूर्व कर्मों के कारण आपसे सम्पर्क लिखा था, तभी यह हुआ है। मैं मन में विचार कर रही थी कि यह भाग्य क्या है ? पूर्वजन्म के कर्म किसने देखे हैं ? यह एक घटना-मात्र भी तो हो सकती है। उसका कहना था कि इस घटना से सुख अथवा दुःख होने वाला है। यदि इस घटना को अकारण ही समझ लें, तो इससे होने वाला सुख-दुःख भी अकारण हो जाएगा। इससे, उसका कहना था कि हमको इस संसार के बनाने वाले को अन्यायी कहना पड़ेगा। वह बनाने वाला कोई चेतन-शक्ति है अथवा अचेतन, इस निर्णय के उपरान्त ही उसपर अन्यायी होने का लांछन लगाया जा सकता है। यदि वह अचेतन है, तब तो दुःख पाने में हम दोषी हैं और यदि चेतन है तो सुख-दुःख देने वाला वह है। उसके अन्यायी होने में कोई कारण नहीं, इसीलिए सुख-दुःख अपने पूर्वकर्मों का फल मानना पड़ेगा।''

इतना कहकर सूसन हँस पड़ी। सुन्दरलाल उसकी बात सुनता हुआ अभी तक उसके पलंग के पास ही खड़ा था। सूसन हँसती हुई उठी और उसको लेकर बाहर ड्राइंगरूम में आ गई। सुन्दरलाल जानता था कि सूसन नास्तिक है। इस कारण आज उसको अपने नास्तिक्य पर सन्देह करते देख, आश्चर्य हो रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। उसने पूछ लिया, ''मेरी प्यारी सूसन के मन में यह विष भरने का साहस किसको हुआ है ?''

सूसन ने कुछ विचारकर कहा, ''यदि यह विष है, तो बहुत ही आनन्ददायक है। इससे तो विपत्ति के समय दुःख होने की अपेक्षा सन्तोष ही होता है। देखिए! आपकी पहली पत्नी शकुन्तला देवी है न? आज मैं उससे मिली हूँ।''

''तो यह बदमाशी भी बिहारीलाल ने की है ?''

''यह बदमाशी कैसे हो गई? कल जब उसने बताया कि वह आपकी पत्नी को जानता है, तो मैंने उससे मिलने की इच्छा प्रकट की थी। उसने मेरी इच्छापूर्ति-स्वरूप, मुझको एक रैस्टोराँ में बुलाया, जहाँ वह और उसकी बहिन उपस्थित थीं। शकुन्तला से मेरी बहुत लम्बी बातचीत हुई है। मैं उससे मिलकर बहुत प्रसन्न हुई हूँ। उसने ही कहा है कि मेरा आपसे समागम और उसका आपसे वियोग पूर्वकर्मों के फल के कारण ही है। इससे उसको खेद तो है परन्तु दुःख नही,। साथ ही उसको विश्वास है कि यदि उसके भाग्य में यह लिखा होगा कि आपका उससे पुनः मेल होना है, तो होकर ही रहेगा।''

''छोड़ो इन वहम की बातों को। उसका भाग्य कैसा है और तुम्हारा भाग्य क्या करना चाहता है, इसके जानने की आवश्यकता नहीं। तुमने अब क्या निश्चय किया है ?''

''किस विषय में ?''

''हमारी सुहाग-रात के विषय में।''

''जब आपकां मुझसे विवाह होगा। यदि विवाह नहीं हो सकता तो उसका स्थानापन्न कॉन्ट्रैक्ट हो जाए।''

''कॉन्ट्रैक्ट तो मैं अपने वकील को बनाने के लिए दे आया हूँ।''

''तो उसको बनकर आ जाने दो।''

''तो क्या तब तक मैं इस अपने ही घर में अजनबी की भाँति रहूँगा ?''

''आप तो इस घर में रह नहीं रहे न ?''

''उसकी ही स्वीकृति तो चाह रहा हूँ।''

''परन्तु आप तो कुछ और माँग रहे हैं। वह तो विवाह के अथवा कॉन्ट्रैक्ट के पश्चात् ही हो सकता है।''

''कॉन्ट्रैक्ट में तुम क्या चाहती हो ?''

''मेरे जीवन-काल के लिए प्रबन्ध और यदि कोई सन्तान हो जाए तो उसकी शिक्षा-दीक्षा के लिए प्रबन्ध।''

''इसके लिए कितना नकद तुम चाहोगी ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं क्या जानूँ! इतनी गणना मुझको नहीं आती। आप ही बताइए कि कितने में एक अच्छा जीवन चल जाएगा?"

"देखो डार्लिंग! मैं समझता हूँ। यह मकान मैं तुम्हारे नाम से खरीद रहा हूँ। तुम्हारे निर्वाह के लिए पचास रुपये नित्य, जो ताजमहल होटल में रहने का खर्चा है, काफी होगा। मतलब यह कि डेढ़ हजार रुपया महीना अर्थात् अठारह हजार रुपया प्रतिवर्ष चाहिए। इसमें दो हजार रुपये वार्षिक कपड़े इत्यादि के लिए मिला लो। बीस हजार रुपये वार्षिक की आय तुम्हारी हो तो मैं समझता हूँ कि मैंने अपना कर्त्तव्य पालन कर दिया है। इतनी आय करने के लिए चार प्रतिशत के सूद के हिसाब से पाँच लाख रुपये की सम्पत्ति पर्याप्त होगी। यह मैं तुमको कल ही दे सकता हूँ। तुम उसको जहाँ चाहो, सूद पर लगा दो और तुम्हारी बीस हजार की आय होने लगेगी।"

सूसन इतनी धन-दौलत को सुनकर चकाचौंध रह गई। उसने मन में विचार किया कि कॉन्ट्रैक्ट में भी तो यही लिखा जाएगा कि यदि यह उसको घर पर नहीं रखेगा तो अपनी अमुक सम्पत्ति में से इतने रुपये मासिक देगा। यदि इतना कुछ ये एकदम ही दे दे तो फिर चिन्ता की क्या बात हो सकती है?

सूसन के मुख पर प्रसन्नता के लक्षण देख सुन्दरलाल ने सोफा पर, उसके समीप खिसक और उसकी कमर में हाथ डालकर, उसको अपनी ओर घसीटते हुए कहा, "प्रिये! अब तो दया करो।"

सूसन को ऐसे ही एक पूर्व अवसर का स्मरण हो आया। यह उसके पिता के घर में अंगूरों की लता-कुन्ज में था। सूसन वहाँ बालसार की एक कहानी पढ़ रही थी कि सुन्दरलाल कहीं से घूमता हुआ वहाँ आया और उसने उससे मन भरकर प्यार किया था। एक बात का संदेह उसके में मन था और उस घटना के स्मरण आते ही उसको वह संदेह भी स्मरण हो आया। उस घटना के बाद सुन्दरलाल अपने किसी भी वचन को पूरा किए बिना, उससे अधिकाधिक प्रेमोपहार पाने का आग्रह करने लगा था। इस पर उसको संदेह उत्पन्न हुआ कि यदि उसने अब सुन्दरलाल की बात को मानना आरम्भ कर दिया तो रुपया मिलना दूरतम होता जाएगा। इस संदेह के मन में आते ही, उसने अपनी कमर से उसके हाथ को निकाल और कुछ दूर खिसककर कहा, "अच्छी बात है। आप इतने मूल्य की सम्पत्ति मेरे नाम कर दें तो मैं आपके साथ सदा के लिए सम्बन्ध बना लूँगी।"

"बहुत ही निर्दयी हो तुम सूसन!"

"नहीं जी, इसको निर्दयता नहीं कहते। इसको समझदारी कहा जा सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह! मैं भूल गया था कि मेरी सूसन बहुत ही समझदार है।"

"जी हाँ; आइए, अब खाने का समय हो गया है।"

सुन्दरलाल ने सूसन के लिए दो नौकर रख दिए थे। एक तो औरत थी और दूसरा रसोइया था। रसोइया यूरोपियन और हिन्दुस्तानी, दोनों ढंग का खाना बनाना जानता था। नौकरानी लगभग पचास वर्ष की आयु की थी। वह विधवा थी और उसका लड़का भगेरिया की कपड़ा मिल में नौकरी करता था। रसोइये का नाम था रामू और नौकरानी का नाम था सन्तोषी।

सूसन ने आवाज दी, "सन्तोषी! ओ सन्तोषी!!

नौकरानी आई तो उसने कहा, "डिनर।"

"खाना लगा दिया गया और सुन्दरलाल सूसन के साथ डाईनिंग हॉल में चला गया। भोजन कर वे पुनः ड्राइंग-रूम में आ गए। सुन्दरलाल को सूसन का शकुन्तला से मेल-जोल पसन्द नहीं था, इस कारण उसने उसके विषय में पूछा, "शकुन्तला और क्या कहती थी?"

"कुछ विशेष बात नहीं हुई।"

"मेरी समझ में तो तुमको उससे-मिलने की आवश्यकता नहीं है।"

"क्या हानि है उससे मिलने में?"

"अभी तो कुछ नहीं हुई, परन्तु न जाने तुम्हारे दिमाग में कोई फितूर समा जाए और मैं घाटे में रह जाऊँ।"

"परन्तु अभी तक तो उसने मुझको आपसे विवाह न करने के लिए नहीं कहा।"

"कभी भी कह सकती है।"

"जब कहेगी, तब विचार कर लूँगी। अभी तक तो वह मुझको आपसे विवाह करने के निश्चय पर बधाई दे रही है।"

"वह अच्छी औरत नहीं है। वह चोर है।"

"वह इससे इन्कार करती है।"

"तो रुपया गया कहाँ?"

"उसका कहना है कि कदाचित् रुपया वहाँ था ही नहीं और यदि था तो किसी ने ताली लगाकर निकाल लिया होगा। जिस दिन से आप यूरोप गए थे, वह उस घर में गई ही नहीं।"

"पिताजी का कहना है कि वह एक दिन एक घण्टे के लिए आई थी और चुपचाप चली गई।"

"बहुत विचित्र है! देखने में तो उसका मुख इतना भोला-भाला प्रतीत होता है कि कोई कह नहीं सकता कि वह चोर है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 11 :

सुन्दरलाल के साथ उसके पिता की बातचीत हुई, तो वह समझ गया कि उसका लड़का अब धन खर्च करने की ओर चल पड़ा है। सुन्दरलाल तो अपने वकील के पास एक कॉन्ट्रैक्ट का मसौदा बनवाने चला गया और पिता बैंक की पासबुक में यह देखने लगा कि रुपये में तो गड़बड़ नहीं की गई। यूरोप जाने से पूर्व सुन्दरलाल ही अपने पिता के स्थान में हिसाब-किताब रखता था और बैंकों में लेन-देन करता था। यूरोप जाते समय वह सब बैंकों को लिख गया था कि उसकी अनुपस्थिति में बैंकों के हिसाब उसके पिता चालू रखेंगे। उसकी अनुपस्थिति में सेठ कुन्दनलाल बैंकों के हिसाब चलाता रहा। जब वह वहाँ से लौटा, तो पिता ने सब बैंक वालों को लिख दिया था कि अब सुन्दरलाल यूरोप-भ्रमण से लौट आया है और वह फिर हिसाब चलाएगा।

आज जब उसको पता चला कि वह यूरोप से किसी लड़की को साथ लाया है और उसको कहीं चोरी-चोरी रखे हुए है, तो उसको यह संदेह होना स्वाभाविक ही था कि उसपर रुपया खर्च किया जाता होगा। इस कारण उसने सुन्दरलाल की मेज के दराज से बैंक का हिसाब निकाला, वह यह देखकर चकित रह गया कि उसने अपने नाम पर कई भारी-भारी रकमें निकाली हुई हैं।

उसने कागज लेकर उसपर वे सब रकमें लिख लीं, जो उसने इस काल में, जो यूरोप से लौटने के बाद व्यतीत हुआ था अपने नाम निकाली थीं। यह देखकर उसको विस्मय हुआ कि वे पचास हजार से ऊपर हैं। इस बात में सन्देह करने में कोई स्थान नहीं था कि यह सब रुपया उसने अपनी प्रेमिका पर व्यय किया है।

उसने मुंशी से कहकर बैंकों को चिट्ठियाँ लिखवा दीं कि सुन्दरलाल को बैंकों से रुपया निकालने का अधिकार वह वापस लेता है।

इतना कर उसने चिट्ठियाँ बैकों को भेजने के लिए दे दीं। तत्पश्चात् वह अपने घर चला आया और सुन्दरलाल की माँ को बुलाकर उसके लड़के की करतूत बताने लगा। सब कहानी सुना वह बोला, "मैं उसके पास एक पैसा भी नहीं रहने दूँगा, जिससे वह इस लड़की को खिला-पिला सके।"

"पर मैं पूछती हूँ कि इसमें हानि ही क्या है यदि वह घर में एक गोरी और सुन्दर लड़की को बहू बनाकर रखता है ?"

"नहीं रानी! यह नहीं होगा। जब करोड़ीमल ने अपनी लड़की निर्धन के घर दी थी तो मैंने नापसन्द किया था। मैं तो समझता हूँ कि सुन्दर का कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार नहीं कि वह मेरी कमाई एक ऐसी लड़की पर खर्च करे, जो न हमारे देश की है, न ही हमारे धर्म की। मेरी गाढ़े पसीने की कमाई उन लोगों को खिलाने-पिलाने के लिए नहीं है, जो हमारी बिरादरी के नहीं हैं।''

''आप ठीक कहते हैं, परन्तु इतना विचार तो करना ही चाहिए कि एक ही तो सन्तान है और उसकी तनिक-सी इच्छा को कि एक सुन्दर लड़की से सम्बन्ध बनाना चाहता है, हम मान नहीं सकते?''

''सम्बन्ध बनाने से मना तो कर नहीं रहा। मैं तो उसको अपनी पतोहू बनाना नहीं चाहता। सुन्दरलाल का विवाह उससे नहीं होगा।''

''तो क्या विवाह के बिना वह उसके पास रहना पसन्द नहीं करती?''

''यह मैं क्या जानूँ! उसने तो मुझसे उसके साथ विवाह करने के लिए पूछा था।''

''जब वह उसके साथ इतनी दूर से आई है तो यह बात तो संदेह-रहित ही है कि वह उसकी रखैल है। देखो जी! आप यह बात मुझ पर छोड़िए, मैं सब बात साफ कर दूँगी। मैं समझती हूँ कि सुन्दर इस बात को मान जाएगा कि उसकी गोरी पत्नी बिना विवाह किए, उसके साथ रहे। हमको आपत्ति नहीं होनी चाहिए।''

''परन्तु वह मेरी पूर्ण सम्पत्ति उसको दे सकता है। यह मैं नहीं चाहता।''

''इसका इलाज यह नहीं कि लड़के से लड़ा जाए। उसको समझाने से काम बन जाएगा।''

''तो ऐसा करो कि उसको समझा दो। उसको यूरोप से आए हुए अभी दो सप्ताह भी नहीं हुए और इस काल में वह पचास हजार रुपये से ऊपर अपने नाम पर निकाल चुका है। इस प्रकार रुपया व्यय करने लगा तो एक वर्ष में ही सब कुछ समाप्त कर देगा।''

''वह सब रुपया उसने उस लड़की को ही दिया है, यह कैसे कह सकते हैं? आपने उससे पूछा है क्या?''

''पूछा तो नहीं। इसपर भी इतने रुपये की उसको क्या आवश्यकता पड़ सकती है?''

''यह भी मैं पूछ दूँगी। मैं यह चाहती हूँ कि उसको रुपया निकालने के अधिकार से वंचित न किया जाए।''

''यह तो हो गया है। मैंने सब बैंकों को चिट्ठियाँ लिख दी हैं।''

''ये चिट्ठियाँ अभी रोकी नहीं जा सकतीं क्या?''

''बहुत कठिन है।''

''अच्छी बात है! उसके खर्चे के लिए रुपया तो उसको देना ही पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं नहीं चाहती कि बाप-बेटे में मुकद्दमेबाजी आरम्भ हो जाए।''

''क्या मुकद्दमेबाजी हो सकता है?''

''यह तो अपने वकील से राय कर लो। सुन्दर को आपके कारोबार में सहायता करते हुए दस वर्ष होने वाले हैं। इतने वर्ष के काम का उसको कुछ तो देना ही पड़ेगा।''

यह सुन सेठ कुन्दनलाल गम्भीर विचार में पड़ गया। उसने कहा, ''अच्छा, मैं वकील से मिलकर अभी आता हूँ, फिर बात करेंगे।''

सेठ कुन्दनलाल ने घर से ही अपने वकील तवकले साहब को टेलीफोन कर दिया। सैयद महमूद तवकले सेठजी के लेन-देन के मुकद्दमे किया करता था। इस कारण दोनों में बहुत अच्छी घनिष्ठता और घर का-सा व्यवहार था। तवकले साहब ने सेठजी की बात सुनी तो हँसकर कह दिया, ''आप यहाँ चले आइए, टेलीफोन पर इस प्रकार की बातें नहीं हो सकतीं।''

''क्यों, क्या बात है?''

''मेरी गुजारिश है कि आप यहाँ आ जाइए, तभी बात हो सकेगी।''

सेठ कुन्दनलाल मोटर लेकर वकील साहब के मकान पर जा पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही वकील साहब ने उसको भीतर बैठक में बुला लिया। सेठ साहब को देख वकील हँसने लगा। हँसकर उसने कहा, ''तो सेठजी! लड़ पड़े न पुत्र के साथ?''

''वह नालायक का बच्चा एक रखैल को पत्नी बनाना चाहता है।''

''तो क्या हानि है इसमें?''

''देखो जी!'' सेठ ने सामने एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा, ''लड़के को अपने वश में रखना मेरा काम है। मैं उसको इन तितलियों पर अपनी सम्पत्ति निछावर नहीं करने दूँगा।''

''देखिए सेठजी! मैं आपको एक बात बताता हूँ। आपका लड़का अभी यहाँ आया था। वास्तव में वह मेरे पास ही बैठा था, जब आपका टेलीफोन आया। इसी कारण मैंने उस समय फोन पर बातचीत करनी उचित नहीं समझी।

''वह मुझको एक कॉन्ट्रैक्ट लिखने के लिए दे गया है। वह चाहता है कि उस कॉन्ट्रैक्ट से मिस कौमिल्ला सूसन को पाँच हजार रुपये मासिक खर्चे के लिए दे। रहने को मकान दे और यदि उसके कोई सन्तान हो जाए तो प्रत्येक बच्चे को पाँच सौ रुपये मासिक देने का वचन दे।''

''मैंने उसको बताया है कि वह इस प्रकार का कोई कॉन्ट्रैक्ट लिख नहीं सकता, जबतक कि उस कॉन्ट्रैक्ट को पूरा करने के लिए किसी जायदाद की जमानत भी साथ न हो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसपर उसने दो-तीन फैक्ट्रियों के नाम लिखाने की इच्छा प्रकट की, परन्तु मैंने कहा कि वे फैक्ट्रियाँ तो उसके नाम हैं नहीं। यदि उनको करार-पत्र में लिखाएगा तो झूठ बोलने के अपराध में दण्ड का भागी हो जाएगा।"

"इसपर वह बहुत ही परेशान प्रतीत होता था। मैंने उसको राय दी है कि वह आपको कहकर कम-से-कम दस लाख रुपये की सम्पत्ति अपने नाम लिखा ले, तभी वह इस प्रकार का करारनामा लिख सकता है। वह आपसे झगड़ा करके इस प्रकार का करार-पत्र लिखाने गया है।"

सेठ कुन्दनलाल वकील की बात सुन भौंचक्का हो देखता रह गया। जब उसको कुछ सूझा नहीं तो उसने वकील से पूछा, "मान लो कि मैं उसको दस लाख रुपये की सम्पत्ति लिखकर नहीं देता, तो वह क्या कर सकता है और क्या करेगा?"

"वह आप पर दावा कर देगा कि आप उसका हिस्सा उसको दे दें।"

"उसका क्या हिस्सा है?"

"पिछले दस वर्ष में वह आपके कारोबार में भाग लेता रहा है। पिछले दस वर्ष में आपकी सम्पत्ति पचास लाख से बढ़कर डेढ़ करोड़ की हो गई है, अर्थात् आपको एक करोड़ का लाभ हुआ है। वह इसका आधा आपसे माँग लेगा।"

"मैं तो यह पूछता हूँ कि क्या वह ऐसा कर सकता है? कानून क्या कहता है?"

"आपकी सम्पत्ति में से भाग तो अवश्य उसको मिलेगा। हाँ, कितना मिलेगा, यह कहना कठिन है। यह जज के मानने की बात है।"

"तो आपकी राय है कि उसको नकद दे दूँ?"

"मेरी यही राय है। मुकदमेबाजी में तो खराबी होने की ही सम्भावना है।"

सेठ कुन्दनलाल वहाँ से अपने कार्यालय में चला आया। वहाँ सुन्दरलाल एक कुर्सी पर गम्भीर विचार में बैठा हुआ था। पिता ने उसके समीप आकर बैठते हुए पूछा, "यह रोनी सूरत क्यों बनाई है?"

"इसलिए कि धन के लोभ में पिता पुत्र को दुःख देना चाहता है।"

"तुमने मुझसे कुछ माँगा है क्या?"

"क्या अब मुझको आपके सम्मुख हाथ पसारना पड़ेगा?"

"बेटा बाप से जब माँगता है, तो क्या यह हाथ पसारना है?"

"जब दस वर्ष तक मेरा इतना विश्वास किया कि लाखों रुपये व्यय करने का अधिकार दिया है और अब बैंकों को लिख दिया जाए कि मेरे चैक कैंसिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझे जाएँ, इस अवस्था में माँगना भीख माँगने के बराबर ही होगा।''

''नहीं माँगोगे तो क्या करोगे?''

''अब पिता से बँटवारे के लिए मुकद्दमा लड़ूँगा।''

''इसपर तो बहुत खर्चा हो जाएगा?''

''विवश हो करना ही पड़ेगा।''

''माना कि विवशता है और वह गोरी लड़की तंग कर रही है, पर खर्चा आएगा कहाँ से?''

''देखिए पिताजी! मैंने दस वर्ष तक व्यापार किया है, भाड़ नहीं झौंका। मैंने लगभग एक लाख रुपया मुकद्दमे के लिए निकाल लिया है। मैं समझ गया था कि क्या हो रहा है।''

''एक लाख ही? चोरी भी की तो केवल एक लाख की?''

''मैं समझता हूँ कि मुकद्दमे के लिए इतना पर्याप्त है।''

''और उस छोकरी को खिलाने-पिलाने के लिए?''

''उसका भी प्रबन्ध कर लिया है।''

''क्या किया है?''

''यह कल पता चल जाएगा।''

''अच्छा यह बताओ कि कितना लेकर समझौता कर लोगे और मुकद्दमा नहीं करोगे?''

सुन्दरलाल इस प्रस्ताव को सुनकर विस्मय में अपने पिता का मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचारकर बोला, ''एक करोड़ रुपया।''

''इतना कहाँ से आएगा?''

''यह तो मैं जानता हूँ कि कहाँ से आएगा। चार मिलों में से तीन मेरे नाम कर दें।''

''देखो सुन्दरलाल! यह बहुत अधिक है। किसी को बीच में सालस डाल लो।''

''तो बाप-बेटे का निर्णय एक तीसरा व्यक्ति करेगा?''

''तीसरा व्यक्ति कोई बाहर का नहीं। मैं पूछता हूँ कि तुम्हारी माँ इसमें सालस बन जाए तो कैसा रहे?''

''वह इस झगड़े में नहीं पड़ेगी।''

''मैं उसको मना लूँगा।''

''अच्छी बात है। तो उसको सालसनामा लिखकर देना होगा।''

''हाँ-हाँ!''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 12 :

इतना कुछ का वचन लेकर सुन्दरलाल सूसन से मिलने गया था और वहाँ पर उसने उसको पाँच लाख नकद देने का वचन दे दिया था। इस वचन के प्रतिकार में वह सहवास की आशा करता था, परन्तु सूसन नहीं मानी। वहाँ भोजन कर वह अपने घर गया, तो उसके माता-पिता उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। सुन्दरलाल आया तो पिता ने पूछा, ''बहुत देर कर दी सुन्दर!''

''जी, भोजन बाहर करना था, इस कारण देर हो गई है।''

''ठीक है। पर मैं चाहता हूँ कि आज रात ही फैसला हो जाए, नहीं तो बैंकों को मैं स्वयं जाकर, तुम्हें रुपया देने से मना कर आऊँगा।''

''यह तो आपकी इच्छा है। मैंने आपके पत्रों को एक दिन के लिए इस कारण रोक लिया है, जिससे मुकद्दमा लड़ने के लिए और मुकद्दमे का फैसला होने तक के लिए खर्चे का रुपया निकाल सकूँ। सो मैंने कर लिया है।''

''कितना रुपया निकाल लिया है?''

''बताया तो था। एक लाख मुकद्दमे के लिए और पाँच लाख अपनी नई पत्नी को देने के लिए और डेढ़ लाख एक मकान मोल लेने के लिए।''

''यह तो बहुत बड़ी चोरी कर ली है तुमने?''

''यह चोरी नहीं है पिताजी! यह तो अपने हिस्से में से लिया है।''

इसपर सुन्दरलाल की माता ने कहा, ''मैंने सुना है कि तुम दोनों बाप-बेटा मुझको सालस मानने वाले हो?''

''हाँ माँ! मैं तैयार हूँ।''

''देखो सुन्दर! सालस बनने से पहले एक बात माँ के रूप में कहती हूँ। यदि वह मान जाओ तो माँ का आशीर्वाद तुमको प्राप्त रहेगा।''

''बताओ माँ!''

''तुमने सात-आठ लाख के लगभग परिवार का रुपया, बिना परिवार के मुखिया की स्वीकृति के निकाल लिया है। यह एक अनुचित बात है। इसपर भी तुमको यह रुपया छोड़ दिया जा सकता है यदि तुम मेरी शर्त मान लो।''

''क्या शर्त है, माँ ?''

''तुम उस औरत को कुछ भी लिखकर मत दो। उसको पाँच लाख रुपया नकद दे दो और उसको रखैल के रूप में रहने दो। यदि उसके कोई सन्तान हो तो सन्तान होने के समय उसको उचित धन दे दिया करो। जब उससे तुम्हारा मन ऊब जाए तो फिर उसको छोड़ देना। ठीक है?''

''पर पिताजी मानेंगे यह बात?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तुम मानो तो उनको भी मानने के लिए कहूँ।''

इसपर सेठ बोल उठा, ''मान तो मैं भी जाऊँगा, परन्तु बैंकों को मेरा प॰ कि सुन्दरलाल मेरे कारोबार का हिसाब नहीं चलाएगा, कल चला जाना चाहिए। सुन्दर इसमें किसी प्रकार की बाधा उपस्थित न करे और न ही किसी प्रकार का मुकद्दमा चलाए।''

''तो मैं स्वयं कहाँ से निर्वाह करूँगा?''

''तुम मेरे कारोबार में सहायता करोगे और तुमको माहवारी खर्च के लिए भत्ता मिलेगा।''

''पिताजी! यही तो मैं चाहता हूँ। बैंकों को चिट्ठियाँ आप भेज सकते हैं। मुझको दो हजार रुपया मासिक मिलना चाहिए। जो कुछ मैं ले चुका हूँ, उसकी किसी प्रकार की लिखत-पढ़त नहीं दूँगा।''

''तो फैसला हुआ। तुम अपनी ओर से पक्के रहोगे, तो तुम्हारे पिता भी अपने भाग का वचन पालन करते रहेंगे। अब तुम अपनी प्रेमिका के पास जा सकते हो। इससे अच्छा प्रबन्ध तुम्हारे लिये और नहीं हो सकता।''

''तो अब मैं जाऊँ?''

''और यहाँ क्या करने आए हो?''

''मैं तो सोने आया था। सूसन रुपये लिये बिना मुझको छूने भी नहीं देगी। रुपया तो मैं बैंक में अपने निजी हिसाब में जमा करा आया हूँ। कल ही उसको चैक काटकर दे सकूँगा।''

''अजीब पत्नी है तुम्हारी, जो तुम्हारा एक दिन का भी विश्वास नहीं कर सकती।''

इस व्यंग्य से सुन्दरलाल अति लज्जित हुआ। उसने, एक भी शब्द और कहे बिना, सूसन के घर को प्रस्थान कर दिया।

इस प्रकार सुन्दरलाल सूसन के घर से जाने के एक घंटे के अन्दर ही फिर वहाँ जा पहुँचा। सूसन उसको विस्मय में देखती रह गई। उसने उसको भीतर करते हुए पूछा, ''अब और क्या हो गया है जो इतनी जल्दी वापस लौट आए हैं?''

सुन्दरलाल बताना नहीं चाहता था कि उसकी माँ ने उसको ताना दिया है और वह उस ताने से छटपटाता हुआ वहाँ लौट आया है। इस कारण उसने बात बनाकर कह दी। उसने कहा, ''डार्लिंग! मैं घर की ओर जा रहा था कि मुझको तुम्हारी शकुन्तला से हुई बातें स्मरण आने लगीं। मुझको कुछ ऐसा सन्देह होने लगा है कि वह तुमको मुझसे दूर धकेल रही है। उसका भाग्य, आत्मा-परमात्मा और जन्म-मरण की बातें बता-बताकर, तुमको बर्गलाना, तुम्हें मुझसे छीनना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही प्रतीत होने लगा है। इस कारण मैंने यही उचित समझा कि अब मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगा, जिससे पीछे पछताना न पड़े।''

''ओह! तो अब आप यहीं सोना चाहते हैं?''

''बिल्कुल।''

''तो एक कठिनाई होगी। या तो आपको उस पैंटरी में सोना होगा या मुझको। जब तक एक वचन-पालन नहीं हो जाता मैं आपके साथ एक ही कमरे में सो नहीं सकती। स्मरण है कि पहले आपने विवाह करने के लिए कहा था। पीछे कहने लगे थे कि हिन्दू तरीके से विवाह होगा। फिर एक दिन आपने कह दिया कि आप कॉन्ट्रैक्ट कर देंगे और अब आप एकदम नकद रुपया देने के लिए कह गए हैं। आपका क्या भरोसा कि कल को आप यह कह दें कि रुपया लेकर क्या करना है? आपकी और आपके पिता की इतनी सम्पत्ति खड़ी है। इस प्रकार आपकी बदली जबान का भरोसा नहीं रहा।''

''तुम बताओ, भरोसा कैसे कर सकती हो? मैं कल तुमको सब रुपया दे दूँगा। यदि चाहो तो चैक अभी दे सकता हूँ।''

''पर चैक का रुपया वसूल हो जायगा क्या ''

''होगा, डियर! हम भूखे-नंगे नहीं हैं।''

''तो लिखिए चैक।''

सुन्दरलाल ने अपने पोर्टमैंट्यू में से एक बिलकुल नई चैकबुक निकाली और उसपर दो चैक लिख दिए—एक, एक लाख रुपये का था और दूसरा पाँच लाख का। दोनों पर हस्ताक्षर कर उसने कहा, ''कल चलकर इसका रुपया बैंक से दिलवा दूँगा। इतनी बड़ी रकम के लिए परिचय माँगा जाना स्वाभाविक है। यह एक लाख तो मकान के लिए है। मकान के मूल्य में से पचास हजार पहले दे चुका हूँ। शेष यह है।''

: 13 :

शकुन्तला ने माँ को बता दिया था कि ललिता फकीरचन्द से ही विवाह करना चाहती है और उसकी माँ ने सेठ करोड़ीमल से कह दिया। सेठ का कहना था, ''ललिता की आयु अभी सत्रह वर्ष की है। वह अल्पवयस्क है। उसको मेरा कहना मानना चाहिए।''

''तो मना लो। मैं पूछती हूँ कि थूककर कौन चाटता है?''

''मुझको क्या मालूम था कि फकीरचन्द चोर है। मैं चोर से अपनी लड़की का विवाह कैसे कर सकता हूँ?''

''आप ऐसा कीजिए कि फकीरचन्द को यहाँ बुला लीजिए। मुझको तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सारी मोतीराम की शरारत प्रतीत होती है।''

जहाँ एक ओर सेठ का पत्र-व्यवहार फकीरचन्द से हो रहा था, वहाँ जब्बलपुर वालों से भी बातचीत चल रही थी। एक दिन जब्बलपुर से देवकी-नन्दन वहीं आ गया। सेठ ने उसको अपने घर पर खाना दिया। सब लोग खाना खाने के कमरे में खाना लेने आए तो वहाँ एक अपरिचित युवक को देख, विस्मय में सेठजी का मुख देखने लगे। ललिता का माथा ठनका। उसको तुरन्त सन्देह हो गया कि यह युवक उसको देखने आया है। इससे वह खाने के कमरे से बाहर जाने के लिए लौट पड़ी। सेठजी ने यह देखा तो कह दिया, ''ललिता ठहरो। देखो, ये हैं देवकीनन्दन जी। ये जब्बलपुर से आए हैं। इनके पिता मेरे मित्र हैं।''

ललिता ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया। इसपर देवकीनन्दन ने कहा, ''मैं तो आपके यहाँ भोजन करने आया हूँ और आप जा रही हैं। यह तो शिष्टाचार के विपरीत होगा।''

ललिता शिष्टाचार की चुनौती सुन लौट पड़ी और शकुन्तला के पास आकर बैठ गई। शकुन्तला और उसकी माँ ने उसके मुख की दृढ़ मुद्रा देख समझ लिया कि वह कुछ विशेष बात करने जा रही है। इससे दोनों डर रही थीं। भोजन आया और खाया गया। सेठजी ने कोई बात नहीं की। इससे समय निकल गया और कोई अनिच्छित घटना नहीं घटी।

भोजन के पश्चात् सेठ देवकीनन्दन को लेकर बाहर बैठक में चला गया और शकुन्तला, ललिता तथा उसकी माँ पिछले कमरे में चली गईं। तीनों चुप थीं और डर रही थीं कि झगड़ा होने वाला है।

इनको कुछ अधिक काल तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। पन्द्रह मिनट के भीतर ही सेठ रामचन्द्र के साथ वहाँ आया और पन्नादेवी को बधाई देने लगा। सेठ ने कहा, ''लो राम की माँ! बधाई हो। लड़के ने ललिता को पसन्द कर लिया है। रुपये-पैसे की बात भी हो गई है। उसने कहा है कि जैसा शकुन्तला के विवाह के समय हुआ था, वैसा ही वह मान जाएगा। अब तुम बताओ कि विवाह कब का निश्चित किया जाए?''

पूर्व इसके कि ललिता की माँ कुछ कहे ललिता बोल उठी। उसने कहा, ''मुझे वह पसन्द नहीं, इसलिए मैं उससे विवाह नहीं करूँगी।''

''विवाह तुम्हें करना है?'' रामचन्द्र ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा।

''मेरा नहीं तो तुम्हारा होगा?'' ललिता का सतर्क उत्तर था। इसपर सब हँसने लगे। पन्नादेवी ने बात टालने के लिए कह दिया, ''ललिता को मना लीजिए। मान जाए तो विवाह की तिथि निश्चित हो जायगी।''

''इसको मानना ही पड़ेगा।'' रामचन्द्र ने फिर कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसपर शकुन्तला ने कह दिया, "राम! तुम बीच में क्यों बोलते हो? जब तुम्हारा विवाह हो, तब तुम बात करना।"

अब सेठ ने कहा, "लड़कियाँ अपने विवाह पर इस प्रकार नहीं बोला करतीं। यदि राम की माँ विवाह के विषय में तिथि नहीं बताना चाहती, तो यह मैं ही पण्डित से राय कर पक्की कर लूँगा।"

इतना कह सेठ और रामचन्द्र बाहर चले गए। शकुन्तला और उसकी माँ चुपचाप बैठी रही। अन्त में पन्नादेवी ने उठते हुए कहा, "ललिता! हमको बड़ों का कहना मानना चाहिए। भगवान् जाने वह किसमें हमारी भलाई समझता है।"

ललिता भी अपने स्थान से उठ पड़ी और बोली, "नहीं माँ! यह नहीं होगा। मुझको मालूम है कि भगवान् पिताजी के मन में नहीं है। यदि होता तो शकुन्तला बहिन का यह हाल न होता।" इतना कह वह अपने कमरे में चली गई।

शकुन्तला उठकर ललिता के पीछे-पीछे चल दी। वहाँ जाकर उसने पूछा, "ललिता! क्या होगा?"

"मैंने मन में निश्चय कर लिया है कि यह विवाह नहीं होगा।"

"कैसे रोकोगी इसको?"

"मैं आज से खाना-पीना बन्द कर रही हूँ। भूखे रहने से प्राणांत ही हो जाएगा तो विवाह किसका होगा?"

"कर सकोगी क्या?"

"मुझको तो यह कुछ भी कठिन प्रतीत नहीं होता।"

"अच्छा, एक बात समझ लो कि यह व्रत विवाह के विरोध में होगा, मरने के लिए नहीं। इस कारण मरने में जितनी देर लगे, उतना ही ठीक होगा। इसके लिए तुम समय-समय पर नमक और पानी लेती रहोगी तो पिताजी को विचार करने और तुम्हारा दृष्टिकोण समझने के लिए समय मिल जाएगा।"

यह बात ललिता मान गई! इसपर भी शकुन्तला ने अपने माता-पिता को ललिता के निर्णय के विषय में नहीं बताया। वह समझती थी कि ललिता एक बहुत बड़ा परीक्षण करने जा रही है। इस कारण वह इसमें न तो सहायक होगी और न ही उसको मना करेगी।

शकुन्तला जब अपने सोने के कमरे में गई, तो उसकी माता वहाँ आकर पूछने लगी, "ललिता विवाह कैसे रोक सकेगी? सेठजी ने तो जब्बलपुर लिख भेजा है कि विवाह इसी मास में हो जाना चाहिए।"

"ललिता कुछ बताती नहीं। उसने केवल यह कहा है कि यह विवाह नहीं हो सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो क्या विष खा लेगी?"

"यह मैं कैसे बता सकती हूँ!"

"तो मैं उसके कमरे में से सब खाने-पीने की वस्तुएँ उठा देती हूँ और अभी नौकरानी को कहकर वहाँ की तलाशी ले लेना चाहती हूँ, जिससे कोई ऐसी-वैसी वस्तु वह अपने पास न रख सके।"

"माँ! तुम क्या समझती हो कि विष खाकर ही मरा जा सकता है?"

"फाँसी लटक सकती है। इससे उसको मैं तुम्हारे कमरे में सोने के लिए कह दूँगी।"

"पिताजी से क्यों नहीं कह देतीं कि विवाह में जल्दी न करें?"

"मैंने कहा था, पर वे नहीं माने।"

"यह कैसे हो सकता है? आज तक पिताजी ने तुम्हारी बात नहीं टाली। आज यह नई प्रथा कैसे चल पड़ी है? "

"पता नहीं क्या हो गया है इनको?"

"माँ! हमको ललिता की जान बचाने का यत्न करना चाहिए।"

"माँ चुप रही। ललिता के कमरे को ताला लगा दिया गया और ललिता को शकुन्तला के कमरे में सोने को कहा गया। ललिता इसका अभिप्राय नहीं समझी। इसपर शकुन्तला उसको अपने कमरे में ले गई और उसने बताया, "पिताजी को संदेह हो गया है कि तुम विष खा लोगी और कहीं यह विष तुमने अपने कमरे में छिपा न रखा हो, इस कारण तुम्हारे कमरे की तलाशी होगी। साथ ही तुम कहीं रात के समय फाँसी लगा न लटक जाओ, इस कारण मुझे तुम्हारी रखवाली के लिए नियुक्त किया जा रहा है।"

ललिता इस अनुमान की बात सुन हँस पड़ी। शकुन्तला भी, जो ललिता की योजना को जानती थी, हँसने लगी। सायंकाल बिहारीलाल को इस नई घटना की सूचना देने के लिए शकुन्तला उससे मिलने गई। वह बिहारीलाल के होस्टल में जा रही थी कि सूसन और बिहारीलाल दोनों होस्टल से निकलते दिखाई दिए। दोनों शकुन्तला को अपनी ओर आते देख खड़े हो गए। वह आई तो बिहारीलाल ने पूछ लिया, "शकुन्तला बहिन! किधर?"

"तुम्हारी ओर बिहारी भैया!"

"कुछ खास बात है क्या?"

"हाँ, है तो।"

"तो फिर वापस कमरे में चलें?"

"नहीं; कहाँ जा रहे हैं आप?"

इसपर सूसन ने कह दिया, "मैं इनको चाय पर निमन्त्रण देने आई थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हम चाय पीने जा रहे हैं। यदि आपको मेरे विवाह की चाय पीने में आपत्ति न हो तो मैं आपको भी आमन्त्रित करती हूँ।''

''आपका विवाह? कब हुआ?''

''हमारा विवाह तो ऐसा नहीं है कि एक रिचुअल (वेद-मन्त्र) बोल दी गई और हो गए पति-पत्नी। हमारा विवाह तो एक धीरे-धीरे परिपक्व होने वाली प्रक्रिया थी। इसका आरम्भ हुआ था पिताजी के अंगूरों के उद्यान में और अन्त हुआ है मैरीन ड्राइव वाले मकान में।''

''और इतनी देर तक आप आँख-मिचौनी खेलते रहे हैं?'' शकुन्तला ने मुस्कराते हुए पूछा।

सूसन हँस पड़ी। हँसकर उसने कहा, ''आओ शकुन्तला! तुमसे बहुत बातें करनी हैं।''

''वहाँ आपके पति भी होंगे क्या?''

''नहीं, वे मेरे परिचितों को मुझ पर छोड़ चुके हैं और अपने परिचितों को दावत दे चुके हैं। बम्बई में मेरे परिचितों में बिहारी भैया और आप बहिनें ही तो हैं।''

''पर आप तो स्वयं ही चाय पीने जा रहे थे। मैं यहाँ आ गई, तो हम बहिनों की बात होने लगी है।''

''जी नहीं, बिहारी भैया से पूछिए कि हम कहाँ जा रहे थे?'' बिहारीलाल ने स्पष्टीकरण कर दिया, ''शकुन्तला बहिन! ये मेरे कमरे में आईं तो कहने लगीं कि आपको और ललिता को घर चलकर बुलाया जाए। मैं आपके घर जाना नहीं चाहता था। इसपर यह निश्चय हुआ था कि हम टैक्सी में जाएँगे और आपके पिताजी के घर से कुछ इधर ही उसको खड़ा कर देंगे। ये आपको मिलने जाएँगी और आपको निमन्त्रण देकर साथ ले आएँगी। मुझे विश्वास नहीं आता था कि आप इस दावत पर आएँगी। इसपर भी यह यत्न करना चाहती थीं। हम अभी टैक्सी की प्रतीक्षा में ही खड़े थे कि आप इधर आती दिखाई दीं।''

सूसन ने कहा, ''इसपर भी ललिता को लेने तो चलना ही होगा।''

''वह नहीं आएगी। उसने आज से अनशन आरम्भ कर दिया है।''

''वह क्या होता है?'' सूसन ने पूछा।

''वह अपने पिताजी से रूठकर खाना-पीना छोड़ बैठी है।''

''क्या लाभ होगा इससे?''

जब भूखे रहकर वह मरने लगेगी तो पिताजी उसकी बात मान जाएँगे।''

''बात मनाने का यह कोई अच्छा उपाय तो नहीं है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा उपाय हो अथवा बुरा। अब तो वह इसका प्रयोग कर रही है। देखें, क्या परिणाम निकलता है।"

"कब से खाना-पीना छोड़ा है?' "

"आज मध्याह्न का भोजन तो किया है। अब आगे न खाने का व्रत ले लिया है।"

सूसन ने कहा, "वह आकर मुझको बधाई तो दे ही सकती है।"

"वह आएगी अथवा नहीं, मैं नहीं जानती।"

"चलो चलें। ललिता भी एक 'इंटरेस्टिंग क्रीएचर' है।" सूसन ने कहा।

वहाँ से वे शकुन्तला के पिता के घर को चल पड़े। गाड़ी मकान से कुछ दूर ही खड़ी कर दी गई। बिहारीलाल उसमें बैठा रहा। शकुन्तला और सूसन दोनों ललिता को बुलाने चल पड़ीं। बिहारीलाल मन में विचार कर रहा था—कैसी विडम्बना है यह! शकुन्तला की सौतन शकुन्तला को अपने विवाह का निमन्त्रण दे रही है और शकुन्तला मान गई है। वह विचार करता था कि कहीं सेठजी को पता चल गया कि यह गोरी लड़की कौन है, तो वे शकुन्तला को उसके साथ देखकर जलभुन जाएँगे। वे इस घटना में उत्पन्न मन की भावना को समझ ही नहीं सकेंगे। वह समझता था कि कदाचित् सूसन डाँट खाकर अकेली ही घर से बाहर आएगी। उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब सूसन अपनी दोनों बाँहें शकुन्तला और ललिता की बाँहों में डाले हुए आती दिखाई दी। वह गाड़ी से उतर आया और ललिता का स्वागत करने के लिए आगे बढ़कर हाथ जोड़ नमस्कार करने लगा।

ललिता ने समीप पहुँच कह दिया, "मैं खाऊँगी तो कुछ नहीं। इस पर भी सूसन बहिन को बधाई देने चली आई हूँ। साथ ही आपका बाहर खड़ा होना सुन, मैंने समझा कि स्वयं ही अपने विषय में बातचीत कर लूँ।"

चारों टैक्सी में बैठ गए और ताज होटल पहुँच, वहाँ के रिसैप्शन हॉल के एक कोने में जा बैठे। सूसन ने अपनी पार्टी के लिए सीटें रिजर्व कराई हुई थीं। बिहारीलाल ने दावत की तैयारी देखी, पूछ लिया, "सूसन बहिन! यदि मैं और ये दोनों न आते, तो फिर इस दावत का क्या होता?"

"मेरा मन कहता था कि आप अस्वीकार नहीं करेंगे। यही तो बात है कि मैं आपसे मिलने के पश्चात् और किसी से मित्रता नहीं कर सकी। मिस्टर भगेरिया अपने कई मित्रों से मिला चुके हैं, परन्तु मुझे वे नितान्त फूहड़ प्रतीत होने लगे हैं। जितनी सहृदयता और ईमानदारी मैंने आप लोगों में देखी है, वह उन मित्रों में नहीं मिली।

"विवाह के बाद इस सप्ताह वे अनेक मित्रों को दावतें दे चुके हैं। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज आपको और शकुन्तला बहिन को दावत देने की बात कही, तो वे हँस पड़े। उनका विचार था कि मैं स्वप्न-लोक में विचरती हूँ और आप लोग मुझको बधाई देने नहीं आएँगे। इस कारण जब मैं आपको यहाँ बैठे देखती हूँ, तो मेरा मन गर्व से भर जाता है कि मेरे मित्र उनके मित्रों से बहुत ही ऊँची श्रेणी के व्यक्ति हैं।''

दावत हुई और वहाँ से वे हैंगिंग गार्डन में चले गए। एक बैंच पर बैठकर शकुन्तला ने ललिता की बात चला दी। शकुन्तला ने जब्बलपुर वाले लड़के का आना और फिर उससे विवाह की बात का वृत्तान्त सुना दिया। तत्पश्चात् उसने ललिता का निश्चय भी बताया। बिहारीलाल इस बात को सुन आश्चर्य कर रहा था कि क्या बात है, जिससे यह लड़की उसके भाई के लिए अपने परिवार वालों से झगड़ा करने के लिए उद्यत हो रही है। वह नहीं जानता था कि उसके भाई के मन में इस विषय में क्या प्रतिक्रिया होगी। शकुन्तला ने अपनी बात बताकर बिहारीलाल से पूछा, ''आपको भाई साहब का कोई पत्र आया है?''

''आया है। इस बार पत्र दो सप्ताह के बाद। उन्होंने लिखा है कि एक अत्यावश्यक काम में लगे होने के कारण वे पत्र नहीं लिख सके वैसे यहाँ पर सब ठीक-ठाक है। उन्होंने यह नहीं लिखा कि क्या काम था, जिसमें वे लगे हुए थे।''

''तो आप लिखकर पता क्यों नहीं करते?''

''ललिता भाभी लिखने को कहें तो लिख सकता हूँ। इनकी ही ओर से लिखूँगा।''

''किस प्रकार लिखोगे?''

''लिखूँगा कि ललिता भाभी आज मिली हैं। उनको सेठजी ने बताया है कि सेठजी के फार्म से कुछ रुपया चला गया है और वह रुपया आपने ले लिया है। भाभी को इस बात का विश्वास नहीं आता। इसपर भी अवस्था यह हो गई है कि उनसे आपकी सगाई टूटी मान ली गई है और भाभी की नई सगाई करने का विचार हो रहा है। भाभी इससे बहुत चिन्तित हैं। वह इस नए प्रबन्ध को पसन्द नहीं करतीं इसी कारण रुपये की बात की वास्तविकता जानना चाहती हैं।

''इसके पश्चात् अपनी ओर से लिखूँगा कि मुझको इस बात को सुनकर दुःख हुआ है। क्या हुआ है भैया? मैं समझता हूँ कि आपको पूर्ण बात लिखनी चाहिए थी।''

''ठीक है, लिख दो और जो उत्तर आए, वह हमें बताना।''

''मैं यही विचार कर रहा हूँ कि यदि वास्तविक बात का पता चल जाए, तो सेठजी को समझाया जा सकता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 14 :

ललिता ने खाना-पीना छोड़ दिया। प्यास लगने पर वह थोड़ा नींबू वाला पानी ले लेती थी। इसके अतिरिक्त वह कुछ भी नहीं ले रही थी। पहिले दो दिन तक तो वह एक से दूसरे कमरे में डोलती रही, परन्तु तीसरे दिन शकुन्तला के कमरे में पलंग पर लेट गई।

पहिले दिन तो सेठ और रामचन्द्र ने इसको हँसी-मजाक में उड़ा दिया। उनका कहना था कि भूख लगेगी तो खा लेगी। तीसरे दिन जब वह पलँग पर लेट गई, तो रामचन्द्र ने कह दिया, ''ऐसा कोई नहीं कर सकता। अवश्य माँ उसको चोरी-चोरी खाना खिलाती है।''

''राम! तुम क्या सबको अपने जैसा ही बेईमान समझते हो? ललिता को भूखा रखने में मुझको क्या मिलेगा?'' माँ से पूछा।

''पिताजी ललिता का विवाह फकीरचन्द से कर देंगे।''

''तो मुझे क्या मिलेगा? एक बहिन को अमीरों के घर में देकर मजा ले लिया है न? अब दूसरी को भी दे दो। मुझे क्या कहते हो?''

''तुम्हारा मतलब है कि सब अमीर एक जैसे ही हैं?''

''नहीं बेटा! अमीर तो एक जैसे नहीं, पर सब गरीब एक जैसे ही होते हैं?''

रामचन्द्र माँ के इस कथन का अर्थ समझ नहीं पाया। वह माँ का मुख देखता रह गया। उसे चुप देख माँ ने कहा, ''ललिता भूख-हड़ताल पर है। तुम उसे खिला-पिला दो, कौन मना करता है?''

''मैं खिलाता हूँ।'' इसके पश्चात् उसने पिता की ओर देखकर कहा, ''पिताजी! आइए, देखूँ कैसे नहीं मानती!'' इतना कह वह शकुन्तला के कमरे में चला गया। ललिता दीवार की ओर मुख किए लेटी हुई थी। रामचन्द्र ने कहा, ''ललिता! उठो, खाना खाओ।''

ललिता ने उसकी ओर मुख करके कहा, ''मुझे भूख नहीं है।''

''तो क्या चोरी-चोरी खाओगी?''

''हाँ, जब तुम जान गए हो तो मेरे मरने की चिन्ता रही नहीं। जब लेटे-लेटे थक जाऊँगी, अपने आप उठकर खाने चल पड़ूँगी।''

''पिताजी!'' रामचन्द्र ने पिता को सम्बोधन कर कहा, ''लातों के भूत बातों से नहीं मानते। उठाइए इसको। एक बाँह आप पकड़िए और दूसरी मैं पकड़ता हूँ।''

इतना कह उसने ललिता की बाँह पकड़कर झटका दे उठाया। पिता ने भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्र की बात का समर्थन करने के लिए दूसरी बाँह पकड़कर उसको उठा दिया। दोनों ने उसको घसीटकर नीचे उतार लिया। ललिता भूमि पर लेट गई। पिता-पुत्र उसको घसीटने लगे। इस खींचातानी में ललिता अचेत हो गई। माँ ने जब ललिता की आँखें चढ़ती देखीं, तो कड़ककर बोली, "देखो-देखो, लड़की मर रही है।"

सेठ मरने की बात सुन डर गया और उसने ललिता की बाँह' छोड़ दी। रामचन्द्र भी उसको देखने लगा। ललिता का, अचेत होने से सिर लुढ़क गया था। यह देख रामचन्द्र भी डर गया।

पन्नादेवी ने राम को डाँटकर कहा, "जाओ, टेलीफोन से डॉक्टर को बुलाओ। जल्दी करो।" इसपर सेठ ने कह दिया, "नहीं, पहले इसको उठाकर कमरे में ले चलो।"

शकुन्तला और पन्नादेवी ने ललिता को उठा लिया और पलँग पर लिटा दिया। पन्ना देवी ने नौकरानी को पानी लाने को कहा। शकुन्तला ने अलमारी में से 'स्मेंलिंग साल्ट' निकालकर सुँघाना आरम्भ कर दिया।

बहुत ही कठिनाई से ललिता को चेतना हुई। चेतना लौटने पर उसने कहा, ' 'माँ! तुम जाओ खाना खाओ। मुझे अपने भाग्य पर छोड़ दो।"

उस रात किसी ने भी भोजन नहीं किया, परन्तु किसी को कुछ उपाय भी सूझ नहीं पड़ा। अगले दिन शकुन्तला और पन्नादेवी ललिता को समझा रही थीं कि इस समय नौकरानी ने आकर कहा, "बाहर कोई गोरी औरत खड़ी है और शकुन्तला बहिन से मिलना चाहती है।"

शकुन्तला समझ गई कि कौन है। माँ ने प्रश्न-भरी दृष्टि में शकुन्तला की ओर देखा, तो उसने कह दिया, "ललिता की सहेली है।"

"तो जाओ, बुला लाओ। कदाचित् उसके समझाने से यह समझ जाए।"

शकुन्तला ने नौकरानी को कहा, "उसको भीतर ले आओ।"

"सूसन आई तो ललिता को पीत मुख पलँग पर लेटे देख, सब समझ, कहने लगी, "तो आरम्भ कर दिया है व्रत?"

"यह तो उसी दिन आरम्भ कर किया था, जिस दिन आपके विवाह की दावत हुई थी।"

"ओह! इसको तो अब चौथा दिन हो गया है। तब से कुछ नहीं खाया?"

"नींबू और पानी तो ले लेती हूँ। वह भी इसलिए कि मैं पिताजी को विचार करने के लिए पर्याप्त समय देना चाहती हूँ।"

"तुम क्या चाहती हो कि मैं यत्न करूँ तुम्हारे लिए?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम ?" ललिता और सूसन अंग्रेजी में बातचीत कर रही थीं। यद्यपि सूसन अपनी नौकरानी के साथ बातचीत करने से कुछ हिन्दुस्तानी शब्द सीख गई थी, परन्तु मन के भाव प्रकट करने के लिए वे पर्याप्त नहीं थे। इस कारण माँ और शकुन्तला समझ नहीं रही थीं कि सूसन क्या कह रही है। ललिता ने कहा, "तुम अपना परिचय यहाँ इस घर में दे नहीं सकतीं। दोगी तो भारी हल्ला होगा। हाँ, सहेली बन बातचीत कर सकती हो।"

"तो ऐसा ही करूँगी।"

"मैं केवल यह चाहती हूँ कि मेरे वयस्क होने तक मेरा विवाह न किया जाए। जब मैं वयस्क हो जाऊँगी, तो फिर मैं विचार कर लूँगी।"

"यह तो उचित है।"

"तो यत्न कर देखो।"

इस पर सूसन ने पन्नादेवी से कहा, "आप...इस....विवाह जबर....क्यों?

पन्नादेवी ने कहा, "मैं नहीं, यह तो इसके पिता कर रहे है।"

"ललिता ने माँ के कहने का अर्थ समझाया तो उसने पन्नादेवी को कहा, "हम पिता....से मिलें?"

पन्नादेवी हँस पड़ी और उसने ललिता के द्वारा कहलाया कि वे तो अंग्रेजी समझते नहीं और ये हिन्दुस्तानी बोल नहीं सकतीं।

इसपर ललिता ने कह दिया, "पर माँ! मास्टरानी लज्जावन्ती आई हुई है। उसको बीच बैठाकर बात हो सकती है।"

"पूछती हूँ तुम्हारे पिताजी से।"

पन्नादेवी कमरे के बाहर चली गई। इस समय सूसन ने पूछा, "आपसे बिहारीलाल मिला है अथवा नहीं।"

"वह यहाँ आ नहीं सकता और हममें से कोई बाहर जा नहीं सका।"

"वह मुझे कल मिला था। उसने बताया है कि उसके भाई का पत्र आया है। उसके भाई ने लिखा है कि रुपये के विषय में पूर्ण दोष सेठजी का है। पुलिस जाँच का परिणाम दो-चार दिन में मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित होगा और फिर नकल लेकर उसके पास भेज देगा।"

"हमारी समझ में नहीं आ रहा कि पिताजी ने क्या खराबी की होगी। कुछ भी हो, मेरा आग्रह उनसे विवाह का तो है नहीं। मेरा कहना है कि मेरा विवाह मेरे वयस्क होने तक न किया जाए।"

इस समय सेठ करोड़ीमल और पन्नादेवी तथा साथ में सफेद वायल की साड़ी और जम्पर पहने एक स्त्री आ गई। सूसन ललिता के पलँग पर बैठी थी। शकुन्तला सामने एक कुरसी पर बैठी थी। सेठजी के आने पर सूसन और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शकुन्तला उठ खड़ी हुईं। सेठ ने उनको बैठे रहने को कहा और स्वयं एक कुरसी पर बैठ गया। लज्जावन्ती, ललिता की शिक्षिका, एक अन्य कुरसी पर बैठ गई। पन्नादेवी भी ललिता के पलँग के दूसरी ओर बैठ गई। सेठ ने आते ही शिक्षिका को कहा, "इससे पूछो कि यह कौन है?"

"मेरा नाम सूसन है। मैं यूरोप की रहने वाली हूँ। ललिता मेरी सहेली है। इसके लिए एक निवेदन करना चाहती हूँ।"

सेठजी ने उसके कहने का आशय सुन फिर पूछा, "आप कौन हैं? आपके पति क्या करते हैं? कब और कहाँ ललिता से आपकी मैत्री हुई थी?"

"इन बातों को तो पीछे बता सकूँगी। अभी तो ललिता की जान खतरे में पड़ी है। उसके विषय में ही बात करना चाहती हूँ।"

"मैं आपसे अपने घर की प्राइवेट बात तब तक नहीं कर सकता, जब तक आपके विषय में पूर्ण परिचय न पा लूँ।"

"मैं ललिता की वकील हूँ। इस नाते ही आपसे बात करना चाहती हूँ।"

"आप हमारे मकान से निकल जाइए। आप यहाँ आई क्यों हैं?"

सूसन अभी विचार ही कर रही थी कि इसका क्या उत्तर दे कि शकुन्तला बोल पड़ी। उसने कहा, "पिताजी! सूसन बहन को मैंने बुलाया है। यह मेरी भी सहेली है। यह तो केवल यह कहना चाहती है कि यदि आप इसका विवाह चार वर्ष के लिए रोक दें, जब तक यह वयस्क न हो जाए, तो यह अभी भोजन कर लेगी।"

"देखो शकुन्तला! मैं विवाह रोकूँगा अथवा नहीं, यह इस गोरी लड़की के कहने से नहीं होगा। ललिता मेरी लड़की है और मेरा अधिकार है कि मैं इसका जहाँ चाहूँ, वहाँ विवाह करूँ। मेरे इस अधिकार में यह कौन है हस्तक्षेप करने वाली?"

"अच्छी बात है। मैं इसको कह देती हूँ कि यह हमारे काम में हस्तक्षेप न करे।"

"हाँ, मैं फकीरचन्द को अमानत में खयानत करने के लिए कैद कराना चाहता हूँ और यह उससे शादी करना चाहती है। इसको शर्म आनी चाहिए।"

इतना कह सेठ करोड़ीमल वहाँ से उठकर बाहर चला गया। शिक्षिका चली गई तो पन्नादेवी ने सूसन की ओर देखकर कहा, "देखा है न, कैसे आदमी से हमारा वास्ता पड़ा है। अभी यहाँ आने से पहले मुझसे कह रहे थे कि वह विवाह रोक रहे हैं, परन्तु तुमको यहाँ बैठे देखकर उबल पड़े हैं।"

"तो ऐसे आदमी को सीधा करना बहुत आवश्यक है। यह तो लड़की को मार डालेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"कैसे सीधा कर सकते हैं? हमको तो कोई रास्ता सूझता नहीं?"

"एक रास्ता मैं बताऊँ?"

"जैसे सेठजी को बताया है?"

"पर माताजी! क्या आप भी वैसी हठी हैं?"

शकुन्तला ने मुस्कराते हुए कहा, "तो वह भी बता दीजिए।"

"आप दोनों भी भूख-हड़ताल कर दीजिए।"

"क्या?" पन्नादेवी ने विस्मय में सूसन का मुख देखते हुए कहा।

"मेरा कहने का अर्थ यह है कि शकुन्तला बहन और ललिता की माता भी व्रत रखेंगी तो सेठजी को ललिता की माँग का अर्थ जल्दी समझ आएगा।"

"ठीक तो है माताजी! अभी तो ललिता का जीवन बचाने के लिए समय है। कहीं और अधिक देर हो गई तो सम्भव है कि उसकी जान बच ही न सके।"

"मैं एक बात और करूँगी।" सूसन ने कहा, "मैं जाने से पहले सेठजी को कहती जाऊँगी कि यदि यह भूख-हड़ताल बन्द नहीं हुई, तो मैं पुलिस में रिपोर्ट कर दूँगी। इस प्रकार सेठजी शीघ्र ही मान जाएँगे।"

सूसन तो चली गई, परन्तु पन्नादेवी और शकुन्तला उसके प्रस्ताव पर विचार करने लगीं। पन्नादेवी का कहना था, "मुझसे भूखा रहा जाएगा अथवा नहीं, कह नहीं सकती।"

"मैं तो रह सकती हूँ। जो कुछ ललिता कर सकती है, वह क्या मैं नहीं कर सकती?"

"मेरा मन डरता है।"

"तो माताजी! आप व्रत न रखिए। पर मैं तो आज से ही व्रत रख रही हूँ।"

पन्नादेवी शकुन्तला का मुख देखती रह गई। पिछली रात भी घर में किसी ने खाना नहीं खाया था। इस समय, जब खाने के लिए नौकर ने बुलाया तो शकुन्तला ने खाने के कमरे में जाने से इन्कार कर दिया। पन्नादेवी वहाँ गई। सेठजी चिन्तित-भाव से बैठे हुए थे। रामचन्द्र खाने को तैयार बैठा था।

पन्नादेवी आई तो सेठ ने कहा, "शकुन्तला को भी कह देतीं?"

"कहा है। पर वह भी व्रत रख रही है।"

"क्यों?"

"अपनी बहिन के प्रति सहानुभूति में। वह कहती है कि उसकी बहिन की बात ठीक है और आपको मान जाना चाहिए।"

"तो मुझको उसकी बात मानने पर विवश करने के लिए वह भी भूख-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हड़ताल कर रही है! वह गोरी औरत कह गई है कि कल आएगी और यदि तब तक मैं विवाह स्थगित न कर सका, तो वह पुलिस में इस भूख-हड़ताल की रिपोर्ट लिखा देगी। इससे भारी बदनामी होगी।''

''तो आपने उसको क्या कहा है?''

''मैं इन छोकरियों की बातों से डरता नहीं। जब पुलिस आएगी, तो मैं कुछ ले-देकर मुआमला रफा-दफा करा दूँगा।''

पन्नादेवी सेठजी के इस प्रकार अपनी बात चलाने के स्वभाव को जानती थी। इससे वह समझ गई कि सूसन के करने से कुछ नहीं होगा।

खाना परस दिया गया। सेठजी और रामचन्द्र खाने लगे, परन्तु पन्नादेवी मुँह में डाला ग्रास निगल नहीं सकी। उसको कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि रोटी मुख में फूलती ही जाती है और गले में जाकर अटक रही है। उसने एक घूँट पानी पीकर ग्रास निगल जाने का यत्न किया; परन्तु जब वह उसको निगल नहीं सकी, तो उसने उठकर मुख का ग्रास शैंक में डाल दिया। सेठ ने यह देख पूछा, ''क्या है?''

''खाया नहीं जाता।''

''क्यों?''

''आप नहीं जानते क्यों? लड़कियों ने खाना छोड़ दिया है और मैं खाना खाऊँ?''

''मत खाओ। तुम भी खाना छोड़ दो।''

''ठीक है। मैं अभी तक आपके स्वभाव को जानती हुई भी समझती थी कि मेरे लिये मन में कोमलता विद्यमान है। मेरा ऐसा समझना गलत था।'' इतना कह वह भोजन की मेज से उठकर अपने कमरे में चली गई और चादर ओढ़ लेट रही।

सेठ ने एक-दो ग्रास और खाए, परन्तु इस परिस्थिति में कुछ भी खा सकना असम्भव मान, उठकर हाथ धोने लगा।

इसपर रामचन्द्र ने कह दिया, ''आखिर औरतों की जीत हुई न पिताजी?''

सेठ करोड़ीमल ने इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया।

सेठ अपने कार्यालय में चला गया। वहाँ देवगढ़ से दो पत्र आए रखे थे—एक मोतीराम का था और दूसरा फकीरचन्द का। मोतीराम के पत्र में केवल इतना लिखा था कि लक्ष्मीधर पकड़ा गया है और सब-कुछ बक गया है। उसके वारण्ट निकल चुके हैं।

इस पत्र को पढ़कर सेठ करोड़ीमल के मस्तक पर चिन्ता की रेखाएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाई देने लगीं। फकीरचन्द ने अपने पत्र में लिखा था—"आपका पत्र दिनांक 30 अप्रैल, 1935 को मिला है और उसके उत्तर में निवेदन है कि आपका यह आरोप कि मेरी असावधानी के कारण अथवा मेरी सहायता से मोतीराम रुपया ले भागा है, सत्य नहीं है। मैं आपका नौकर न कभी था और न हूँ।

"मैंने कभी भी मोतीराम की सच्चरित्रता का उत्तरदायित्व नहीं लिया। मैं तो केवल हिसाब-किताब रखने के लिए था। जब मुझे हिसाब-किताब में गड़बड़ का सन्देह हुआ, मैंने जाँच आरम्भ कर दी और आपको भी लिख दिया।

"मैं मोतीराम को पकड़वाने का यत्न कर रहा हूँ। आशा है कि वह शीघ्र ही पुलिस के हाथ आ जाएगा।

"आपके पत्र में यह बात पढ़कर मुझको विस्मय हुआ है कि यदि मुझको ललिता से सगाई स्थिर रखनी है, तो मैं आपको यह पाँच हजार रुपया दे दूँ, चाहे अपने पास से दूँ और चाहे चोर से प्राप्त करके दूँ।

"मैं आपको आपका पाँच हजार रुपया दे दूँगा, परन्तु यह इसलिए नहीं कि मुझको आपकी लड़की से विवाह करना है, प्रस्तुत इसलिए कि कहीं इस पाँच हजार के न मिलने से आपका दिवाला न निकल जाए।

"जहाँ तक सगाई का सम्बन्ध है, वह तो अब रह नहीं सकती। आप जैसे स्वार्थी, धूर्त्त और मूर्ख धनी के साथ अपना सम्बन्ध बनाऊँ और आपका रक्त अपनी होने वाली सन्तान की नसों में प्रवाहित होने दूँ, यह अपनी सन्तान के साथ घोर अन्याय हो जाएगा।

"रुपया शीघ्र ही मिल जाएगा। आशा है कि इस आश्वासन से आपको नींद आने लगेगी।"

वास्तव में यही सेठ चाहता था, परन्तु पहले पत्र की उपस्थिति में, वह अपने में कुछ भी उल्लास अनुभव नहीं कर सका। इसपर भी इस पत्र से उसने यह लाभ उठाने का यत्न किया कि किसी भाँति ललिता को दिखाकर, उसको फकीरचन्द के विपरीत कर सके। इस कारण उसने पन्नादेवी को कहा, "देखो रानी! फकीरचन्द का पत्र आया है और उसने जो प्रेम प्रकट किया है, वह ललिता को पढ़ा दो। कदाचित् उसको अब भी समझ आ जाए।"

पन्नादेवी ने पत्र लिया और उसको लेकर ललिता के कमरे में चली गई। वहाँ शकुन्तला भी अब लेट गई थी। सेठानी ने पत्र ललिता के हाथ में देकर कहा, "सेठजी कहते हैं कि इसको पढ़ लो।"

ललिता उठकर बैठ गई और पत्र को पढ़ने लगी। उसने पत्र को कई बार पढ़ा और फिर माँ को वापस देकर कहा, "अब तो एक ही मार्ग रह गया है।"

"क्या?" सेठजी ने भीतर आते हुए पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं अब जीने में कोई रस अथवा सार नहीं पाती।"

"देखो ललिता! मैंने जब्बलपुर वालों को लिख दिया है कि तुम्हारी सगाई तुम्हारे वयस्क होने के पश्चात् ही हो सकेगी, पहले नहीं। मैं समझता हूँ कि यही तुम चाहती थीं।"

"हाँ, एक घण्टा पहले यही आपसे माँगती थी, परन्तु आप नहीं मानते थे। अब इस पत्र को पढ़ने के पश्चात् तो मैं आपसे एक ही बात माँगती हूँ कि आप अब यहाँ से चले जाइए। मैं शीघ्रातिशीघ्र अपना प्राणान्त कर देना चाहती हूँ।"

"क्यों? अब क्या हुआ है?"

"हुआ यह है कि आपका रक्त इस शरीर की नसों में प्रवाहित हो रहा है और वह दूषित है। उसको शरीर से निकाल देने का एक ही उपाय है कि नया शरीर धारण किया जाए, जिसमें वह कलुषित रक्त न हो।"

"तो तुम भी मेरे रक्त को दूषित समझने लगी हो?"

"इसके अतिरिक्त अब हो ही क्या सकता है! यह दूषित शरीर देवता की भेंट के लिए ठीक नहीं माना जा रहा न?"

"तुम पागल हो गई हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

फकीरचन्द की सगाई के पश्चात् करोड़ीमल तो चला गया, परन्तु उस दिन से फकीरचन्द और मोतीराम में झगड़ा होने लगा। मोतीराम फकीरचन्द की बात तो मान जाता था, परन्तु उसकी शिकायत सेठजी को लिख देता था। जब लकड़ी बिकने लगी तो सेठजी ने एक अपना आदमी इस काम के लिए वहाँ भेज दिया। इसका नाम लक्ष्मीधर था। यह लकड़ी बेचने का काम करने लगा था। लक्ष्मीधर सेठजी का अपना आदमी है, यह समझ फकीरचन्द ने कुछ पूछ-गीछ की आवश्यकता नहीं समझी।

इस प्रकार काम चलते हुए एक वर्ष से ऊपर हो गया। फकीरचन्द का विचार था कि खेती-बाड़ी के लिए पर्याप्त भूमि खाली हो गई है और उसमें काम आरम्भ कर दिया जाए; परन्तु मोतीराम इसमें बाधा खड़ी करता रहा।

एक दिन फकीरचन्द ने लकड़ी के निकास और मजदूरी का अनुमान लगाया तो उसको कुछ ऐसा लगा कि काम ठीक नहीं हो रहा। जितना खर्च हो रहा था, उसके अनुपात से लकड़ी नहीं निकल रही थी। फकीरचन्द ने इसका उल्लेख मोतीराम से किया तो उसने यह कहकर बात टाल दी कि जंगल घटिया है और उसमें पेड़ छोटे-छोटे हैं।

अगले दिन फकीरचन्द ने चौधरी रामहरष को बुलाकर कहा कि वह तनिक देखे कि सेठ के जंगल से लकड़ी कम क्यों निकल रही है।

चौधरी गया और पता लाया कि लकड़ी तो काफी निकल रही है। एक वर्ष में पचास एकड़ से अधिक भूमि खाली हो चुकी है।

इसपर फकीरचन्द ने मन-ही-मन हिसाब लगाकर देखा तो उसको कुछ गड़बड़ प्रतीत हुई। अगले दिन उसने शेषराम को बुलाया और उसको जिरौन स्टेशन पर पता करने भेजा कि पिछले मास में कितने वैगन लकड़ी के गए हैं।

जिस समय शेषराम इस विषय की सूचना एकत्रित कर रहा था, लक्ष्मीधर वहाँ आ पहुँचा। जब उसको शेषराम की पूछ-गीछ के विषय का पता चला तो उसने उसको एक ओर बुलाकर पूछा, ''तुम कौन हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं शेषराम हूँ, मोतीराम का भाई।"

"तो तुमको मोतीराम ने भेजा है ?"

शेषराम चुप रहा। वह नहीं चाहता था कि फकीरचन्द का नाम ले। इसपर लक्ष्मीधर ने कहा, "देखो, फकीरचन्द से कोई बात कहने से पहले मोतीराम को कहना कि मुझसे बातचीत कर ले।"

शेषराम स्टेशन मास्टर से यह पता कर लाया कि एक मास में बीस वैगन लकड़ी के बुक किए गए हैं। फकीरचन्द ने देखा कि उसको केवल ग्यारह वैगन का हिसाब दिखाया गया है। उसने इस विषय में और जाँच करने के लिए स्वयं स्टेशन पर जाकर पिछले छः मास का हिसाब जानने का यत्न किया। उसको पता चला कि जबसे लक्ष्मीधर काम करने लगा है, कभी भी भेजे गए माल का पूरा हिसाब उसको नहीं मिला। घर पर आकर उसने आँकड़े मिलाए, तो उसने देखा कि लगभग पाँच हजार रुपये का गबन हुआ है।

इसपर उसने मोतीराम को बुला भेजा, परन्तु वह गाँव में नहीं मिला। पता चला कि वह झाँसी गया हुआ है। फकीरचन्द ने उसके हिसाब-किताब की जाँच-पड़ताल की तो और भी त्रुटियाँ निकलीं। जंगल में तीन काम करने वालों के नाम झूठ-मूठ लिखे हुए थे। वास्तव में उन नामों के व्यक्ति गाँव में थे ही नहीं।

लक्ष्मीधर से जब इस विषय में पूछा गया तो उसने पूरे माल की रसीदें मोतीराम के हाथ की दिखा दीं।

मोतीराम की तीन-चार दिन तक प्रतीक्षा की गई और जब वह नहीं लौटा, तो इस गबन की पुलिस में रिपोर्ट लिखकर, उसको लापता घोषित कर दिया गया। यह सूचना सेठ को भी दी गई।

इस सूचना पर सेठजी और फकीरचन्द में कई चिट्ठियों का आवागमन हुआ। पहले तो फकीरचन्द पर असावधानी का आरोप लगाया गया। पीछे सेठजी ने फकीरचन्द को चोरी कराने में सहायक मान लिया। पश्चात् सेठ ने अपने अन्तिम पत्र में लिखा कि वह फकीरचन्द से बहुत निराश हुआ है और वह अपनी लड़की का सम्बन्ध उससे तोड़ता है। यदि फकीरचन्द अभी भी चाहता है कि उसकी सगाई ललिता से स्थिर रहे, तो वह पाँच हजार रुपया अपने पास से दे दे। इसके उत्तर में फकीरचन्द ने वह पत्र लिखा था, जो सेठ ने ललिता को पढ़ने के लिए दिया था। सेठजी का, इस पत्र को ललिता को दिखाने का प्रयोजन तो यह था कि वह फकीरचन्द से घृणा करने लगे और अपनी भूख-हड़ताल तोड़ दे; परन्तु उनका प्रभाव विलक्षण ही हुआ। वह अपने मन में यह विचार कर बैठी कि सत्य ही उसका पिता महास्वार्थी है और ऐसे आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का रक्त, उसकी भी नसों में प्रवाहित हो रहा है। इससे छुट्टी पाने का उपाय उसको वही सूझा, जो किसी गन्दे कपड़े से छुटकारा पाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। जैसे कपड़े को उतार फेंक दिया जाता है, वैसे ही उसने इस शरीर को त्याग देने का निर्णय कर लिया। वह अब तक नींबू और पानी ले रही थी। इस दिन से यह भी लेना उसने बन्द कर दिया। परिणामस्वरूप दुर्बलता तीव्रता से बढ़ने लगी।

बिहारीलाल ने ललिता की भूख-हड़ताल की सूचना अपने भाई को भेज दी। इस सूचना के उत्तर में यह पत्र आया, 'बिहारी! ऐसा प्रतीत होता है कि बम्बई में तुम अपना बहुत-सा समय व्यर्थ के कामों में व्यय कर रहे हो। तुम्हारी परीक्षा समीप आ रही है। इस कारण ललिता का विचार छोड़कर अपना ध्यान पढ़ाई में लगाओ। उससे मैं निपट लूँगा। तुमको उससे मेल-जोल बन्द कर देना चाहिए।' बिहारीलाल को अपने भाई की यह बात कि ललिता से वह स्वयं निपट लेगा, सन्तोष देने वाली सिद्ध हुई। इससे उसने ललिता का विचार अपने मन से निकालकर, अपनी पढ़ाई की ओर ध्यान लगा दिया। उसकी वार्षिक परीक्षा में एक मास से भी कम समय रह गया था।

इसपर भी वह ललिता इत्यादि से तटस्थ नहीं रह सका। लगभग एक सप्ताह के पश्चात् सूसन उसको मिली। वह कॉलेज से होस्टल की ओर लौट रहा था। सूसन बहुत घबराई हुई प्रतीत हो रही थी। बिहारीलाल ने उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा तो सूसन ने बता दिया, "बिहारी! ललिता की हालत बहुत खराब हो रही है। तुम्हीं चलकर उसको बचा सकते हो।"

"क्यों? क्या हुआ है?"

"कई दिन से उसने पानी लेना भी बन्द कर दिया था। इससे हालत बहुत खराब हो गई है। मैं कई दिन से उसको समझा रही थी कि यह तो आत्म-हत्या के तुल्य हो जाएगा। परन्तु उसका कहना है कि अब जीने में कुछ सार ही प्रतीत नहीं होता। मुझे मालूम हुआ है कि आपके भाई की कोई चिट्ठी सेठजी के पास आई है और सेठजी ने वह चिट्ठी ललिता को दिखा दी है। उस चिट्ठी में कुछ ऐसा लिखा हुआ था, जिससे वह जीवन से निराश हो गई है।

"मैंने उसको बहुत यत्न से इस बात के लिए मनाया है कि यदि तुम उसे आश्वासन दो कि तुम उसकी अपने भाई से सुलह करा दोगे, तो वह व्रत तोड़ देगी। सेठ इतनी बात के लिए तैयार है कि वह ललिता के वयस्क होने तक उसका कहीं पर भी विवाह नहीं करेगा।"

"देखो सूसन बहिन! सेठजी ने भैया से बहुत बुरा व्यवहार किया प्रतीत होता है। इससे ही क्रोध में आकर उन्होंने कदाचित् सख्त बात लिख दी है। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तक पूर्ण परिस्थिति का ज्ञान न हो, मैं इस विषय में हस्तक्षेप करना नहीं चाहता।''

''बहुत विचित्र आदमी हो तुम! तनिक-सा कष्ट करने से एक नहीं तीन प्राणियों की जान बचती है और तुम वह भी नहीं करना चाहते?''

''तीन कौन?''

''ओह! तो तुमको यह पता नहीं है कि ललिता से सहानुभूति में शकुन्तला और उसकी माँ ने भी अनशन कर दिया है। माँ की हालत तो बहुत ही खराब हो रही है। शकुन्तला कुछ ठीक है।''

यह सुन तो बिहारीलाल के मन में इस सब झमेले के विषय में और अधिक जानने को लालसा जाग पड़ी। वह चलने के लिए तैयार हो गया। फिर कुछ विचारकर बोला, ''परन्तु सेठजी तो मेरा वहाँ जाना पसन्द नहीं करेंगे।''

''मैं सेठजी से पूछकर आई हूँ। जब उनको विश्वास हुआ कि तुम्हारे समझाने से ललिता खाने को तैयार हो सकती है, तो वे मान गए हैं।''

बिहारीलाल सूसन के साथ टैक्सी में सवार होकर सेठ करोड़ीमल के घर जा पहुँचा। मकान के बाहर जब वे टैक्सी से उतर ही रहे थे, रामचन्द्र बहुत घबराया हुआ भीतर से निकला और इनको टैक्सी में से निकलते देख, पूछने लगा, ''क्या मैं आपकी टैक्सी ले जा सकता हूँ?''

''क्या हुआ है? कहाँ जा रहे हो?'' बिहारीलाल ने पूछा।

''डॉक्टर को बुलाने। माँ अचेत हो गई है। सचेत करने का बहुत यत्न किया है, परन्तु सफलता नहीं मिल रही।''

''टेलीफोन क्यों नहीं कर दिया?''

''एकाएक बिगड़ गया है।'' इतना कह वह लपककर टैक्सी में सवार हो गया और टैक्सी ले गया।

सूसन और बिहारीलाल पहले माँ को ही देखने गए। सेठ वहाँ उपस्थित था। उसने बिहारीलाल को देखकर कहा, ''तुम लोगों ने मेरा सर्वनाश कर दिया है। देखा न, क्या हो रहा है?'' यह कह उसने अपनी पत्नी की ओर संकेत कर दिया। वह सर्वथा अचेत थी।

सूसन ने उसको सचेत करने का यत्न किया, परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ। इसपर सूसन ने कहा, ''हम ललिता बहिन से मिलना चाहते हैं।''

''जाओ, उसको भी देखो। वह भी मरणासन्न पड़ी है।''

सूसन और बिहारीलाल ललिता के कमरे में चले गए। वहाँ शकुन्तला भी लेटी हुई थी। उसने ललिता के पास जाकर कहा, ''भाभी! यह क्या कर लिया है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललिता ने कुछ कहना चाहा, परन्तु गला सूखा होने के कारण आवाज नहीं निकल सकी। इसपर बिहारीलाल ने अपना कान, उसके समीप ले जाकर सुनने का यत्न किया। ललिता कह रही थी, "मैं समझती हूँ कि अब जीने में कोई सार नहीं रहा। मैं इतना कुछ होने के पश्चात् आपके भाई को अपना मुख नहीं दिखा सकती।"

"क्यों? क्या हुआ है?"

"पिताजी ने उनको बहुत बुरा-भला कहा प्रतीत होता है।"

"इससे तुम्हें क्या?"

"दक्ष ने सती के सम्मुख अपने जामाता की निन्दा की थी और जानते हो न, सती ने क्या कर लिया था? मैं भी अपने को भस्म कर रही हूँ।"

"भाभी! यह तो तुम अपने और भैया के साथ अन्याय कर रही हो। सती ने तो नया जन्म लेकर शिवाजी से पुनः विवाह कर लिया था; परन्तु भैया तो महादेव नहीं हैं। वह तो तुम्हारे नवीन जन्म ले, सज्ञान होने तक बूढ़े हो जाएँगे।"

शकुन्तला, जो बिहारीलाल की युक्ति सुन रही थी, मुस्कराई और बोली, "भैया! यह तुम्हारे भैया की निन्दा कभी नहीं करेगी। वास्तव में उन्होंने ललिता को बहुत बुरा-भला कहा है।"

"कब?"

"तो तुमने वह पत्र नहीं देखा जो सेठजी के पास है?"

"भाभी!" बिहारीलाल ने कहा, "यदि भैया की बात है, तब तो मैं सब बात ठीक करा दूँगा। उठो, अब जल ले लो। तुम्हारे पिताजी तो मान गए हैं।"

ललिता अनिश्चित मन बिहारीलाल का मुख देखती रह गई। इसपर बिहारीलाल ने फिर कहा, "भाभी! जहाँ तक सेठजी का प्रश्न था, वह तो तुम्हारे व्रत ने ठीक कर दिया है। भैया की बात तो व्रत से नहीं बनेगी। उसके लिए तो तपस्या करनी पड़ेगी।"

"पर वे तो कहते हैं कि पिताजी के रक्त में ही दोष है और उनका रक्त ही मेरी नसों में प्रवाहित हो रहा है। इससे तो यह आवश्यक हो गया है कि इस रक्त का शोधन किया जाए। यह शोधन सिवाय नया शरीर धारण करने के और किसी उपाय से नहीं हो सकता।"

"नहीं भाभी। इसके अतिरिक्त भी उपाय है। देखो, मैं वचन देता हूँ कि मैं अपनी माँ को अपने घर ले जाकर बिठाऊँगा, नहीं तो मैं उस घर का मुख नहीं देखूँगा।"

ललिता अभी भी दुविधा में पड़ी थी। इसपर सूसन, एक गिलास में संतरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निचोड़ और उसमें थोड़ा नमक डालकर ले आई। उसने ललिता को, जो अति दुर्बल हो गई थी, हाथ का आश्रय देकर उठाया और गिलास उसके मुख से लगा दिया। ललिता अभी भी अनिश्चित मन थी। इस पर बिहारीलाल ने ललिता के पाँव को हाथ लगाकर कहा, ''भाभी! अब छोड़ो हठ को। मेरा कहा मानो और विश्वास रखो कि हमको अपने काम में सफलता मिलेगी।''

ललिता ने एक घूँट संतरे का रस लिया। पश्चात् ग्लूकोज घोल, शर्बत बनाकर उसके दो-तीन घूँट पिलाए गए।

जब ललिता यह ले रही थी, सेठजी उस कमरे में आए और बोले, ''बिहारीलाल क्या बात है अब? शकुन्तला की माँ को तो ग्लूकोज सल्यूशन रक्त में चढ़ाई गई है।''

''इन्होंने तो संतरे का रस ऐसे ही लेना स्वीकार किया है। यह आपके वचन पर विश्वास करती हैं कि आप इनकी इच्छा के बिना इनका विवाह नहीं करेंगे।''

सेठ ने इसका उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप फिर बाहर चला गया। उसे जाते देख सूसन ने कहा, ''शकुन्तला के पिता को तो अपनी पत्नी की अधिक चिन्ता है। मैं सत्य कहती हूँ कि यदि इनकी माँ व्रत न रखती, तो ये कभी इस बात के लिए तैयार नहीं होते कि ललिता को अपने विवाह में राय देने का भी अधिकार हो।''

इसके पश्चात् शकुन्तला ने भी संतरे का रस लिया। सूसन ने कहा, ''अब तो डॉक्टर की राय के बिना खाना-पीना नहीं होना चाहिए। मैं डॉक्टर को बुलाकर लाती हूँ।''

सूसन कमरे के बाहर गई तो लज्जावंती, ललिता की अध्यापिका वहाँ आ गई। जबसे शकुन्तला और पन्नादेवी ने व्रत रखा था, तबसे सेठजी के कहने से, वह इनके घर पर ही ठहरी हुई थी। घर पर और कोई औरत नहीं थी, जो इनकी सेवा-सुश्रुषा कर सकती। बाहर से सम्बन्धियों को सेठ साहब भूख-हड़ताल की बात बताना नहीं चाहते थे। इस कारण उसके भाई की पत्नी अथवा अन्य मित्रों की स्त्रियाँ आ नहीं रही थीं।

लज्जावंती पन्नादेवी के कमरे से सेठजी के कहने पर इधर आई थी। उसने शकुन्तला को बताया, ''डॉक्टर साहब का कहना था कि सेठानीजी के कई दिन से जल न लेने के कारण, उनका रक्त गाढ़ा हो गया था। अब उन्होंने एक पौंड से ऊपर ग्लूकोज सल्यूशन उनके रक्त में चढ़ाई है और उनको चेतना हुई है। डॉक्टर का कहना है कि सेठानी जी को संतरे का रस पीना चाहिए, पर सेठानीजी नहीं ले रहीं। उनका कहना है कि जबतक ललिता नहीं खाएगी, वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कुछ भी खाने-पीने को नहीं लेंगी।''

शकुन्तला ने कहा, ''लज्जावंती बहिन! अब तुम जाकर कह दो कि बिहारी भैया के कहने से ललिता ने और मैंने भी भोजन लेना आरम्भ कर दिया है। अब उनको भी ले लेना चाहिए।''

: 2 :

बिहारीलाल सूसन की सेठजी की लड़कियों को बचाने में रुचि देखकर विस्मय कर रहा था। एक सुन्दरलाल की पत्नी और दूसरी परित्यक्ता पत्नी थी। इस अवस्था में दोनों सौकनों का परस्पर कैसे प्रेम हो सकता है, वह समझ नहीं सकता था। यद्यपि वह सूसन के, बिना विवाह के सुन्दरलाल की पत्नी बनने को पसन्द नहीं करता था, परन्तु सूसन के चरित्र के इस नए रूप को देख वह उसके लिए प्रशंसा से भर रहा था।

लगभग दो घण्टों के यत्न से, सबको खिला-पिला और शेष बात डॉक्टर के हाथ में छोड़, वे दोनों वहाँ से चल पड़े। पहली टैक्सी जो रामचन्द्र ले गया था, छोड़ दी गई थी। अत: वे दोनों मकान के बाहर टैक्सी की प्रतीक्षा में खड़े हो गए। इस समय बिहारीलाल ने अपने मन की बात जानने के लिए पूछा, ''सूसन बहिन! इस सबसे मुझको तो कदाचित् ललिता जैसी भाभी मिलेगी परन्तु तुमको क्या मिला है?''

''मुझको एक अच्छा काम करने का संतोष प्राप्त हुआ है।''

''पर मैं पूछता हूँ कि इनकी जान बचाना कुछ अच्छा काम है क्या?''

''इनकी और उनकी का तो प्रश्न ही नहीं। किसी भी मनुष्य की जान बचाना मानवता है। मैं भी तो मनुष्य हूँ। इसलिए मुझको आज के काम से बहुत संतोष अनुभव हो रहा है।''

बिहारीलाल ने दूर से एक टैक्सी आती देखी तो हाथ उठाकर उसको रोका। टैक्सी आकर खड़ी हुई और वे उसमें चढ़ने लगे, तो बिहारीलाल की दृष्टि एक आदमी पर जा पड़ी। यह आदमी सेठजी के मकान में दाखिल हो रहा था। बिहारीलाल ने उसकी पीठ ही देखी थी, इसपर भी उसने पहिचान लिया। यह मोतीराम था।

मोतीराम का सेठ से सम्पर्क वास्तव में विस्मयजनक था। इस पर भी उसने कुछ कहा नहीं। वह सूसन के साथ टैक्सी में सवार हो अपने होस्टल में चला गया।

जब वह टैक्सी से उतरने लगा तो सूसन ने कहा, ''मुझे मिस्टर भगेरिया ने आपसे मेल-जोल रखने से मना किया हुआ है। इसपर भी आज के काम की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्ता को देखकर, मैं आपसे सम्पर्क बनाने के लिए दुःखी नहीं हूँ। इसी कारण मैं बता नहीं सकती कि हम फिर कब मिलेंगे।''

''मेरी परीक्षा बहुत समीप है और अब आपसे मिलने के लिए मेरे पास समय भी कम है।''

''परीक्षा कब आरम्भ होने वाली है?''

''बीस मई को। वह समाप्त होगी तीन जून को और उसी सायं काल मैं देवगढ़ जाने का विचार रखता हूँ।''

सूसन ने केवल इतना कहा, ''मैं समझती हूँ कि तब तक ललिता इत्यादि सर्वथा स्वस्थ हो जाएँगी।''

इसपर बिहारीलाल 'बाई-बाई' कह अपने होस्टल में चला गया।

सूसन टैक्सी से निकल फुटपाथ पर खड़ी हो, बिहारीलाल को विदा कर रही थी। इस समय सुन्दरलाल दूर अपनी मोटर में बैठा इनको देख रहा था। जब सूसन टैक्सी में सवार हुई तो सुन्दरलाल ने अपनी मोटर समीप लाकर खड़ी कर दी और कहा, ''आइए, मैं अपनी मोटर में ले चलूँ।''

सूसन इससे पहले तो घबराई, परन्तु तुरन्त ही अपने को नियंत्रण में कर बोली, ''आप यहाँ क्या कर रहे हैं?''

इतना कह वह टैक्सी वाले को भाड़ा देकर उतर आई और सुन्दरलाल के पास जा बैठी। जब मोटर चल पड़ी, तो सुन्दरलाल ने कहा, ''तुम पूछ रही थीं कि मैं क्या कर रहा था यहाँ? मैं तुमपर निगहबानी कर रहा था।''

''क्यों?''

''इसलिए कि तुम जैसी सुन्दर स्त्री पर कोई भी बलात्कार कर सकता है। यह हिन्दुस्तान है और उसमें भी बम्बई।''

''आपका चिन्ता करना व्यर्थ है। पैरिस जैसे विषय-वासना में लिप्त नगर में, जब मेरा कोई कुछ बिगाड़ नहीं सका, तो यहाँ तो मुझको कुछ चिन्ता ही नहीं।''

''पर मुझको तो है, विशेष रूप से इस बिहारीलाल से। देखो सूसन! मैंने तुमको पहले भी मना किया था कि इस छोकरे से कुछ अधिक सम्पर्क रखना ठीक नहीं, परन्तु तुम तो मेरी बात मानती ही नहीं।''

''मैंने आपकी बात का अक्षरशः पालन किया था। परन्तु आज एक ऐसा काम आ पड़ा था कि बिहारीलाल से मिलना और उसको एक स्थान पर ले जाना अत्यावश्यक हो गया था।''

''क्या मैं उस काम को जान सकता हूँ?''

''क्यों नहीं? शकुन्तला की बहिन ललिता को तो आप जानते ही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके पिता ने उसका विवाह एक अन्य स्थान पर करना चाहा था। उसकी सगाई, यह भी आपको विदित है, बिहारीलाल के भाई से टूट गई थी। इसपर ललिता ने आमरण खाना-पीना छोड़ने का आयोजन कर लिया। उससे सहानुभूति में शकुन्तला और उनकी माँ ने भी भूख हड़ताल कर दी। इस समय एक और घटना घटी। बिहारीलाल के भाई का एक पत्र सेठजी को आया, जिसमें उसने अपनी सगाई ललिता से टूट गई स्वीकार की और यह लिख दिया कि सेठ जैसे निकृष्ट व्यक्ति की लड़की से वह विवाह कर ही नहीं सकता। सेठ ने यह पत्र अपनी लड़की ललिता को दिखा दिया। इससे ललिता ने यह मान कि अब उसका विवाह देवगढ़ में हो नहीं सकेगा, मरने का निश्चय कर लिया और पानी तक भी पीना बन्द कर दिया। उसकी माँ और बहिन भी कुछ ले नहीं रही थीं। इस कारण तीन प्राणियों की जान बचाने का प्रश्न उपस्थित हो गया। मैंने सेठजी को यह सुझाव दिया कि बिहारीलाल यदि यह आश्वासन ललिता को दे कि वह अपने भाई को समझा सकेगा, तो ललिता अवश्य भोजन ले लेगी। इस कारण बिहारीलाल को वहाँ लेकर गई थी और ललिता को समझा-बुझाकर सन्तरे का रस पिला आई हूँ। उसकी बहिन और माँ ने भी रस लेना आरम्भ कर दिया है।''

सुन्दरलाल सूसन की कथा सुनकर हँसने लगा। सूसन ने समझा कि उसको इस कथा पर विश्वास नहीं आया। इससे उसने पूछा, ''तो आप समझते हैं कि मैं झूठ कह रही हूँ?''

''नहीं डार्लिंग। मैं यह विचार कर हँसा था कि सेठ को यह देख कि उसकी लड़की की सौकन अपनी सौकन की जान बचाने में साधन बन रही है, खूब आनन्द आया होगा।''

''जी नहीं। वे यह नहीं जानते कि मेरा आपसे क्या सम्बन्ध है। वे तो मुझको ललिता की सहेली-मात्र ही मानते हैं। उनको मैंने यह बताया है कि ललिता की मुझसे मित्रता हैंगिंग गार्डन में हुई थी।''

''तो तुम झूठ भी बोला करती हो?''

''यह इसलिए कि वे इतने उदार तो हो नहीं सकते, जितनी उनकी लड़कियाँ हैं। इस कारण उनको मेरी वास्तविकता जानकर दुःख होता।''

''परन्तु यदि तुम उनसे बहुत मिलती-जुलती रही, तो एक दिन यह भेद खुलकर ही रहेगा।''

''तो खुल जाए। मुझको इसकी चिन्ता नहीं।''

''पर यह तुम्हारा बिहारीलाल से सम्पर्क मुझको पसन्द नहीं।''

''आपने पहले भी कहा था और मैंने आपका भ्रम निवारण करने का यत्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था। मालूम नहीं कि आप दूसरों पर इतना अविश्वास क्यों करते हो?''

''मैंने एक अंग्रेज कवि की यह उक्ति पढ़ी है, 'विमेन! दाई नेम इज़ फ्रेल्टी' (औरत दुर्बलता का दूसरा नाम है)।''

''मैं भी, इस उक्ति को सत्य समझती थी; परन्तु यहाँ आकर मुझको उस कवि की इस धारणा पर सन्देह होने लगा है।''

''क्यों सन्देह हो गया है?''

''यहाँ लाखों की संख्या में विधवाएँ हैं, जो दीन-हीन होती हुई भी आत्मा से दुर्बल नहीं हैं। वे अपना जीवन बिना दूसरे विवाह का चिन्तन किए व्यतीत कर रही हैं। देखिए, आपने जो नौकरानी रखी है, बाल-विधवा है। इसपर भी वह इन बातों के विषय में कभी ध्यान नहीं करती। मैंने उसको कहा था कि वह विवाह कर ले, इसपर उसने कहा था, 'कुछ आवश्यकता अनुभव नहीं होती।'

''शकुन्तला की बात भी मुझको बहुत ही विचित्र प्रतीत हुई है। वह आपसे प्रेम नहीं करती, इसपर भी उसको नया विवाह करने की कुछ इच्छा प्रतीत नहीं होती।''

''इसको मैं मन की दृढ़ता नहीं कहता, प्रस्तुत विवशता मानता हूँ। कृत्रिम परिस्थिति के कारण ये अविवाहित रहने पर विवश हो रही हैं।''

''मैं समझती हूँ कि विवशता तो यह है नहीं। विवशता से मन में असन्तोष बना रहता है। यह असन्तोष न तो सन्तोषी के मुख पर प्रकट हुआ है और न शकुन्तला के।

''आपका यह कहना तो मैं समझ सकती हूँ कि यह सन्तोष और कार्य कृत्रिम परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हुआ है। पर मैं पूछती हूँ कि क्या आज की पूर्ण सभ्यता कृत्रिम उपायों की आश्रय नहीं है? मनुष्य के लिए स्वाभाविक क्या है? सभ्य समाज में हमारे जीवन का प्रत्येक क्षण स्वभाव का विरोध कर ही व्यतीत होता है।''

''इसपर भी भारत में सब सुधारक विधवा-विवाह की आवश्यकता को मानते हैं।''

''विधवा-विवाह की स्वीकृति एक बात है और उसको सबके लिए आवश्यक मान लेना दूसरी बात है। मैं समझती हूँ कि भारत की नारी तो फ्रेल्टी के लांछन से मुक्त है।''

''तो तुम अपने को भी भारतीय नारी मानने लगी हो?''

''इस विषय में भारतीय बनने का यत्न कर रही हूँ।''

''बहुत-बहुत बधाई हो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मैं विचार करती हूँ कि आपमें और ललिता के पिता में कौन-सी बात साझी है कि आप दोनों के विचार में समानता प्रतीत होती है ?"

"क्या समानता प्रतीत हुई है ?"

"मैंने उनसे कहा था कि ललिता को उसके वयस्क होने तक उसका विवाह न करने का वचन दे दें। वयस्क होने पर वह अपना विवाह करने में स्वतन्त्र हो जाएगी।

"इसपर वे पूछने लगे कि क्या एक-दो वर्ष में किसी लड़की को अपने भले-बुरे का ज्ञान हो जाता है ?

"मैंने उत्तर दिया कि ज्ञान तो उसको अभी भी है। यह तो केवल विधान ने पुरुषों के अनधिकार चेष्टा की सीमा बाँधी है।"

"वे नाक चढ़ाकर बोल उठे, 'औरत कभी भी सज्ञान नहीं होती। उसको सदा पुरुष के नियन्त्रण में रहना चाहिए।' वे बोले, 'औरत एक दुर्बल जीव है। भगवान् ने उसको पुरुष के अधीन रहने के लिए ही बनाया है।'

"अब बताइए आपने अंग्रेजी के एक कवि के शब्द कह दिए और उन्होंने अपने पचास वर्ष के अनुभव की बात कर दी। मुझको, जो अपने आस-पास अनेक औरतों को देखती हूँ, यह बात निराधार प्रतीत होती है। मैंने बिहारीलाल और शकुन्तला से इस विषय में बात की है। उनका कहना है कि किसी के मन के विचार, उसके अपने संस्कारों और कर्मों का प्रतिबिम्ब होते हैं।

"इसका अर्थ हुआ कि हम पुरुष दुर्बलात्मा हैं और हमको औरतें ही दुर्बल दिखाई देती हैं।" इतना कह सुन्दरलाल हँसने लगा।

इस समय मोटर उनके मकान के नीचे जा पहुँची थी। इन्होंने मोटर एक ओर खड़ी की और नीचे उतर मकान पर चढ़ने लगे। सीढ़ियाँ चढ़ते हुए सुन्दरलाल ने कहा, "चाहे कुछ भी हो; तुम चाहे बहुत ही सुदृढ़ मन रखती हो, तो भी मैं चाहता हूँ कि बिहारीलाल से सम्पर्क न रखो।"

"वैसे तो मैंने उस दिन भी आपको वचन दिया था कि उसको ढूँढ़ने नहीं जाऊँगी, परन्तु यदि वह मिल गया तो मैं उससे भाग नहीं सकती।"

: 3 :

ललिता की बात मानी गई। जब्बलपुर वालों को, सेठ को जवाब देना पड़ा। यद्यपि फकीरचन्द राजी नहीं हुआ था, तो भी बिहारीलाल के आश्वासन को पर्याप्त मान अभी तो व्रत तोड़ ही दिया गया था। इसके पश्चात् डॉक्टर की राय से भोजन-व्यवस्था की गई और पन्द्रह दिन में ललिता, शकुन्तला और उनकी माँ स्वस्थ हो अपने नियमित जीवन-यापन में लग गईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहारीलाल परीक्षा में संलग्न होने के कारण न तो सूसन से ही मिलने जा सका और न ही ललिता इत्यादि का पता कर सका। सूसन प्रायः नित्य शकुन्तला से मिलने आती थी। एक दिन रामचन्द्र ने सूसन से पूछ लिया, "आप यहाँ क्यों आती हैं?"

"ललिता से मिलने के लिए। वह मेरी सहेली है।"

"आपका सुन्दरलाल से क्या सम्बन्ध है?"

"कैसे जानते हो कि भैया मेरा उनसे कोई सम्बन्ध है?"

"देखिए जी, मेरी दृष्टि अभी दुर्बल नहीं हुई। मैंने आपको कई बार सुन्दरलाल के साथ चौपाटी पर घूमते देखा है। उसका आपकी बाँह में बाँह डालकर सर्वसाधारण में घूमना एक ही बात का सूचक हो सकता है कि आप उसकी रखैल हैं।"

"नहीं, मैं उनकी पत्नी हूँ।"

रामचन्द्र ने कहा, "यह बात अब विख्यात हो चुकी है कि सुन्दरलाल फ्रांस से किसी लड़की को यहाँ लाया है और उसको मैरीन ड्राइव पर डेढ़ लाख का एक मकान लेकर रखे हुए है। तो आप वही हैं?"

सूसन इस प्रकार बात सुन क्रोध से लाल हो रही थी। वह उसी समय उठकर जाने वाली थी, परन्तु शकुन्तला ने कह दिया, "राम! यह हमारी मेहमान हैं। इनका अपमान कर तुम अपने को असभ्य प्रकट कर रहे हो। चले जाओ यहाँ से।"

"तो तुम जानती हो कि यह कौन है? यह तुम्हारी सौकन है।"

"मैं कहती हूँ कि चले जाओ, नहीं तो मैं इस घर से निकल जाऊँगी।"

"तो निकल जाओ। ऐसी चरित्रहीन औरतों को मैं इस घर में आने नहीं दूँगा।"

"परन्तु तुम हो कौन इस घर में?" ललिता ने कहा। "जाओ पिताजी से कहो, जो कुछ कहना हो।"

रामचन्द्र को डर लग गया कि कहीं फिर भूख-हड़ताल न आरम्भ हो जाए। इस कारण वह यह कहता हुआ, "अच्छी बात है, पिताजी से ही कहता हूँ" कमरे से बाहर निकल गया। वह गया तो सूसन ने भी वहाँ से टल जाने के लिए कहा, "ललिता! वह ठीक कहता है। मुझको इस घर में नहीं आना चाहिए।"

"नहीं-नहीं; राम मूर्ख है। यह एक दिन तो मुझको मार ही डालने लगा था। इसकी बात पर ध्यान देते तो हमको यह घर छोड़े हुए आज कई वर्ष बीत चुके होते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसपर भी सूसन उठ पड़ी और कहने लगी, "मैं समझती हूँ कि आप मुझको मिल सकती हैं उस रैस्टोराँ में, जहाँ हमारी पहली भेंट हुई थी। वहाँ पहुँचकर आप टेलीफोन कर दिया करेंगी तो पाँच मिनट में ही मैं वहाँ पहुँच जाऊँगी।"

इस समय सेठ करोड़ीमल वहाँ आ पहुँचा। उसने सूसन को जाने के लिए तैयार देख कह दिया, "ठहरो! इस मूर्ख लड़के की बात पर नाराज होने की आवश्यकता नहीं। बैठो।"

सूसन बैठी नहीं। सेठ ने कहा, "मैं यह तो समझ गया था कि तुम्हारा इन लड़कियों से विशेष सम्बन्ध है। मेरा विचार था कि तुम बिहारीलाल की मिस्ट्रेस हो। इस बात का सन्देह करते हुए भी मैंने तुमको यहाँ आने से रोका नहीं था। अब वह आदमी बिहारीलाल नहीं सुन्दरलाल है, इससे क्या अन्तर पड़ता है?

"रही यह बात कि सुन्दरलाल कभी शकुन्तला का विवाहित पति था, इस विषय में विचार करना मेरा काम नहीं, शकुन्तला का है। जब उसने तुमको अपनी सखी स्वीकार किया है, तो मैं कौन हूँ इसमें मना करने वाला? मैं इस कारण आया हूँ कि उस मूर्ख लड़के की बात का विचार छोड़कर, तुम चाहो तो यहाँ आ-जा सकती हो।"

"धन्यवाद, सेठजी।" इतना कह सूसन कमरे से बाहर निकल गई। जब वह चली गई तो करोड़ीमल ने रामचन्द्र को, जो भीगी बिल्ली की भाँति पिता के पीछे खड़ा था कहा, "देखो बेटा! मैंने तुमको कई बार कहा है कि तुम अपने स्वभाव को सुधारो, नहीं तो व्यापार में सफल नहीं हो सकते। भला कोई किसी की रखैल है अथवा किसी की बहन, हमें इससे क्या? वह इस घर में आती है, तुमसे मिलने तो आती नहीं। जिससे मिलने आती है, पहले उससे तो पूछ लो कि वह उसके आने को पसन्द करती है अथवा नहीं।"

"पिताजी!" शकुन्तला ने कहा, "यह अब यहाँ नहीं आएगी और यदि राम का ऐसा ही व्यवहार रहा, तो मुझको अपने रहने के लिए पृथक् प्रबन्ध करना पड़ेगा।"

"अभी तो कोई आवश्यकता नहीं। हाँ, कभी आवश्यकता हुई तो मैं तुम्हारे रहने का प्रबन्ध कर दूँगा।"

जब सूसन गई थी, तो दिन के दस बजे थे। उसका स्वभाव था कि 'ब्रेकफास्ट' लेकर वह दोनों बहिनों के स्वास्थ्य का समाचार लेने आया करती थी।

जब वह चली गई और सेठ भी उसको अपने मन की बात बताकर चला गया, तो शकुन्तला ने मन में निश्चय कर लिया कि वह आज ही उससे मिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएगी। शकुन्तला और ललिता को व्रत तोड़े आज पन्द्रह दिन हो चुके थे और वे अपने में काफी शक्ति अनुभव करने लगी थीं। इस कारण ललिता ने कह दिया, "मैं भी साथ चलूँगी।"

"तो ऐसा करेंगे कि बारह बजे के लगभग मैं उसको टेलीफोन करूँगी और समय निश्चित कर लूँगी।"

बारह बजे शकुन्तला ने अपने पिता के कार्यालय से ही टेलीफोन किया। इस समय तक सूसन अपने घर पहुँच चुकी थी। उसने कहा, "शकुन्तला बहिन! मुझको राम के डाँटने से क्रोध नहीं आया, प्रत्युत खेद और विस्मय हुआ था। खेद इस बात पर कि इस देश में धनवान होने से कोई सभ्य नहीं होता। मैं अपनी माँ के साथ इंग्लैंड में रही हूँ। वहाँ 'ऐरिस्टोक्रेसी' के अर्थ सभ्य के माने जाते हैं। मन में चाहे मतभेद हो, परन्तु उस मतभेद को प्रकट करने का सभ्य समाज में एक ढंग होता है और उसका मैंने भारत के दो-चार आदमियों में, जिनसे मेरा अभी तक सम्पर्क रहा है, अभाव पाया है। मुझे विस्मय हुआ है, आपमें और राम के व्यवहार में अन्तर देखकर। जितनी आप और ललिता सभ्य और सुशील हैं, उतना ही वह उद्दण्ड प्रतीत हुआ है।

"खैर, छोड़ो इस बात को। मैं तो आज आपको यह बताने के लिए आपके घर आई थी कि कल मेरी भेंट अपने श्वसुर से हुई थी और उनके साथ जो मनोरंजक बात हुई है, वह आपके विषय में भी थी। आप आना चाहें, तो सायंकाल उसी रैस्टोराँ में, जो मैरीन-ड्राइव पर है, साढ़े चार बजे आ जाइएगा।"

: 4 :

सूसन सुन्दरलाल भगेरिया के साथ मैट्रोपोलिन सिनेमा हॉल में एक पिक्चर देखने जा रही थी कि सुन्दरलाल को वैस्टर्न चैम्बर ऑफ कॉमर्स से टेलीफोन आया। सट्टा मार्केट में कुछ गड़बड़ हो रही थी। जबसे उसके पिता ने उसको अपने बैंक अकाउण्ट ऑपरेट करने से मना किया था, सुन्दरलाल अपने नाम से पृथक् व्यापार करने लगा था। उसने जमानत का अपना पृथक् रुपया जमा करा रखा था। उसके पिता ने चैम्बर के सैक्रेटरी से कह दिया था कि सुन्दरलाल की जमानत का रुपया उसकी जमानत में समझा जा सकता है। सुन्दरलाल का पिता अपनी जमानत की सीमा से अधिक सोना खरीद रहा था। उससे जब और जमानत माँगी गई तो उसने चिट्ठी लिखकर दे दी कि सुन्दरलाल का बीस हजार रुपया उसकी जमानत में सम्मिलित कर लिया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसपर चैम्बर के सैक्रेटरी ने सुन्दरलाल से इस बात का समर्थन माँगा। सुन्दरलाल ने स्वयं चैम्बर में उपस्थित होकर बात करने को कह दिया। इस कारण उसका, सिनेमा जाने के स्थान चैम्बर जाना अधिक आवश्यक हो गया इसपर भी सूसन को निराश न करने के लिए उसने कह दिया, "सूसन डार्लिंग! सीटें रिजर्व हैं। सो तुम चलो और चलकर जगह पर बैठो, मैं आ रहा हूँ।"

सुन्दरलाल ने एक टिकट सूसन को दे दिया और दूसरा अपनी जेब में रखा, टैक्सी में चैम्बर की ओर चला गया। सूसन सिनेमा हॉल में जा पहुँची। जब वह अपनी सीट पर जाने लगी तो उसने देखा कि उसके साथ की सीट पर एक प्रौढ़ावस्था की स्त्री तथा उससे पहले की सीट पर, उसी अवस्था का एक पुरुष बैठा है। सूसन अपनी सीट तक पहुँचने के लिए उनके आगे से गुजरने लगी तो उस औरत ने अपने पाँव को एकाएक आगे कर दिया, जिससे सूसन का पाँव उसके पाँव पर पड़ गया और उस औरत के मुख से आ-आ की आवाज निकल गई। सूसन को अपनी गलती अनुभव हो गई। वह क्षमा माँगने ही वाली थी कि साथ में बैठे पुरुष ने डाँटकर कहा, "बहुत बदतमीज हो।"

सूसन हिन्दुस्तानी समझने तो लगी थी, परन्तु वह अभी इस प्रकार के फारसी के कठोर शब्दों का अर्थ नहीं समझती थी। वह यह तो समझ गई थी कि उसकी निन्दा की गई है। इस कारण उसने क्षमा माँग ही ली। इसपर उस औरत ने कहा, "क्षमा की बच्ची! पाँव का भुर्था कर दिया है।"

"अँधेरे में दिखाई नहीं दिया, माँजी! लाइए पाँव दबा दूँ।"

"तुम अंग्रेज मालूम होती हो?"

"जी।"

"पर हिन्दुस्तानी बोलती हो।" वह औरत अपना पाँव कुर्सी पर रखकर एक हाथ से दबा रही थी। सूसन ने उसका पाँव दबाने के लिए हाथ बढ़ाया, तो उस औरत ने कहा, "रहने दो बेटी!"

"पर माँजी! जब कोई आगे से गुजर रहा हो, तब पाँव ऊपर को समेटकर बैठना चाहिए।"

"तुम ठीक कहती हो, परन्तु पैर दब जाने से जब दर्द होता है तो ठीक और गलत में भेद-भाव प्रतीत नहीं होता।"

सूसन मुस्कराई और उस औरत की इस मनोवैज्ञानिक बात को सुन कहने लगी, "पर कई लोग तो दर्द हट जाने पर भी अपनी भूल मानने को तैयार नहीं होते। आपने तो बहुत जल्दी ही भूल स्वीकार कर ली है।"

उस प्रौढ़ा ने मुस्कराकर और बात बदलकर पूछा, "तुम्हारा घरवाला कहाँ नौकर है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रश्न से सूसन विचार में पड़ गई कि वह अपना परिचय दे अथवा नहीं। विचारोपरान्त उसने यही निश्चय किया कि अनिश्चित उत्तर ही देना चाहिए। उसने कहा, "एक फर्म में नौकर हैं।"

पूर्व इसके कि वह औरत और प्रश्न पूछे, सूसन ने पूछना आरम्भ कर दिया। उसने पूछा, "ये आपके पति हैं?"

"हाँ; ये कभी सिनेमा देखने नहीं आते थे, परन्तु अब कुछ महीनों से इनको ये बहुत पसन्द आने लगे हैं।"

"तो आपको पसन्द नहीं है?"

"जो कुछ यहाँ नकल में होता है, वह दुनिया में असल में भी तो होता है। नकल देखने से असल देखना ही अच्छा है।"

"पर असल सबको देखना नसीब नहीं है न!"

"आँखें खोलकर चलें तो अपने-आप दिखाई देने लगता है। देखो, हमारा एक लड़का फ्रांस सैर करने गया था और वहाँ से एक लड़की को भगा लाया है। अब हजारों रुपये उसपर खर्च कर रहा है।"

"बहुत खराब आदमी है!" सूसन ने हँसकर कहा। एकाएक उसकी हँसी बन्द हो गई। उसको सन्देह हो गया कि कहीं ये उसके सास-श्वसुर न हों। इससे उसको अपने कहे पर खेद होने लगा। उसने गम्भीर होकर कहा, "मैं समझती हूँ कि आपका लड़का उससे बहुत प्रेम करता होगा। तभी तो उस पर बहुत रुपया खर्च कर रहा है।"

"इसको प्रेम नहीं कहते। हम इसको जादू कहते हैं। उस औरत ने लड़के पर जादू कर दिया मालूम होता है। उसके लिए लड़का बाप से भी लड़ने को तैयार हो गया था। मैंने बहुत यत्न से बाप-बेटे को समझाया, तो अब काम चलने लगा है।"

सूसन को अपने अनुमान का एक और प्रमाण मिल गया। अब उसको लगभग विश्वास हो गया था कि ये उसके सास-श्वसुर ही हो सकते हैं। इसपर भी वह निश्चय करना चाहती थी। इस कारण उसने उस औरत से सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा, "इससे तो यह सिद्ध हुआ है कि माँ का जादू अधिक प्रबल रहा है। क्या अब उसने उस औरत को छोड़ दिया है?"

"मैंने उस औरत को छोड़ने को नहीं कहा। मैंने तो यह कहा था कि जब तक बाप जीवित है, तब तक लड़का अपना पृथक् काम कर ले। अपनी कमाई में से जिसको जितना चाहे दे; परन्तु पिता की कमाई में से कुछ व्यय न करे।"

"यह तो कुछ भी न हुआ। क्या आप बहुत धनी हैं?"

"बहुत न सही, पर कुछ तो हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या मैं आपके लड़के का नाम जान सकती हूँ? मुझको आपकी कहानी में रुचि उत्पन्न हो रही है।"

"यही तो मैं कह रही थी कि कभी नकल से असल अधिक रुचिकर हो सकता है।"

"जी हाँ, इसमें रुचिकर बात यह है कि उस आदमी ने अपनी प्रेमिका के लिए, पिता की सम्पत्ति से पृथक् होना स्वीकार कर लिया है। क्या नाम है उनका?"

"उनका नाम है सुन्दरलाल भगेरिया। क्या आपका बहुत से हिन्दुस्तानियों से परिचय है?"

"मैं समझती हूँ कि मैं आपके लड़के को जानती हूँ।"

बात यहीं रुक गई। हॉल में अँधेरा हो गया और 'मिकी माऊस' का कार्टून दिखाया जाने लगा। उसने देखा कि उसकी सास उस कार्टून में बहुत दिलचस्पी ले रही है।

मुख्य चित्र आरम्भ होने से पहले ही सुन्दरलाल आ गया। वह अपने माता-पिता के आगे से होकर सूसन के दूसरी ओर बैठ गया। अंधेरे में सेठ और सेठानी ने उसको नहीं पहचाना। इस समय सूसन ने सुन्दरलाल के कान में कह दिया, "यह देखिए, मेरी बगल में कौन बैठा है?"

इस समय मुख्य चित्र आरम्भ हो गया। पर्दे से लौटे हुए प्रकाश में सुन्दरलाल ने सूसन की बगल में बैठी औरत को ध्यान से देखा। वह पहचान गया और उसने सूसन के कान में ही पूछा, "तुम कैसे जान गई हो इनको?"

"यह एक लम्बी बात है। अब क्या करोगे?"

"तुम्हारा परिचय करा दूँगा। क्या समझती हो?"

"ठीक है, करा दीजिए।"

ऐसा ही हुआ। मध्याह्नोत्तर के समय, जब प्रकाश हुआ तो सुन्दरलाल ने अपने स्थान से उठकर, पिता के सामने आकर कहा, "पिताजी! यह देखिए। यह है मेरी नवीन पत्नी कोमिल्ला सूसन।

"सूसन! ये हैं मेरे माता-पिता। इनसे शेक-हैण्ड करो।"

सूसन ने शेक-हैण्ड करने के स्थान झुककर चरण-स्पर्श करने का यत्न किया। उसने हिन्दुस्तान में, पुराने विचार के लोगों का आदर करने का यह ढंग शकुन्तला से जान रखा था।

"बस! बस!!" सेठ कुन्दनलाल ने कहा, "हो गया। इतना ही काफी है।" सुन्दरलाल की माँ हँस पड़ी। उसने कहा, "देखो, मैंने कहा था न कि असल नकल से अधिक मजेदार होता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूसन अपनी जगह पर बैठी तो सुन्दरलाल ने मुस्कराते हुए कहा, "पिताजी! अब तो आपको एक दावत अपनी नई बहू को देनी चाहिए।"

"अपनी जगह पर बैठो। देखो, सब लोग हमारी ओर ही देख रहे हैं। आए तो तमाशा देखने और स्वयं तमाशा बन रहे हो।"

सुन्दरलाल की माँ ने पूछा, "तुमने मुझको पहिले क्यों नहीं बताया?"

"बताया तो था कि मैं आपके लड़के को जानती हूँ।"

"मैं भी विचार कर रही थी कि तुम्हारे साथ मेरे लड़के का क्या सम्बन्ध हो सकता है!"

इसपर सेठ ने कहा, "देखो सुन्दर! आज पिक्चर देखने के पश्चात् किसी अच्छे से होटल में ले चलना। खाना वहीं खाएँगे।"

"तो निमन्त्रण आपकी ओर से है?"

"हाँ, पर प्रबन्ध तुम्हारा होगा।"

: 5 :

'सेसिल' में भोजन करते हुए सेठ कुन्दनलाल ने कहा, "तुमने इस औरत को पत्नी माना है, इस कारण मैं इसको दावत देने के लिए तैयार हो गया हूँ। इसपर भी मैं ऐसी औरत को अपने घर में घुसने नहीं दूँगा।"

"क्यों?" सुन्दरलाल ने पूछा।

"इसलिए कि यह तुम्हारी पत्नी नहीं रखैल है। तुम्हारे धन के लिए तुम्हारे पीछे लगी हुई है। अन्यथा जब तुमने इसके साथ विवाह करने से न की थी, तो इसको तुम्हारे साथ सम्बन्ध नहीं बनाना चाहिए था।"

सुन्दरलाल ने पूछा, "पिताजी! विवाह क्या होता है?"

"जिसमें किसी को साक्षी बना लिया जाए। इसीलिए मजिस्ट्रेट के सामने वचन को भी विवाह ही कहा जाएगा।"

"साक्षी की क्या आवश्यकता है?" सुन्दरलाल का अगला प्रश्न था।

"साक्षी की आवश्यकता इस कारण होती है कि किसी समय पुरुष अथवा स्त्री बेईमान हो जाएँ, तो उनको विवश किया जा सके कि वे अपने उत्तरदायित्व का पालन करें।"

"इसके लिए मैंने एक बहुत बड़ा साक्षी बना लिया है। वह केवल साक्षी ही नहीं, प्रत्युत जामिन (बन्धक) भी है। वह है रुपया। मैंने इसको इतना रुपया दे दिया है कि यदि किसी समय मैं बेईमान भी हो जाऊँ, तब भी इसको, जो कुछ मुझसे झगड़ा कर प्राप्त हो सकता है, वह पहले ही प्राप्त हो जाए। न झगड़े की आवश्यकता रही है और न ही किसी साक्षी की।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''कितना रुपया दे दिया है ?''

''जितना इसने मेरी ईमानदारी का मूल्य समझा। इसने जो माँगा, वह मैंने दे दिया है।''

''यह ठीक है। तुमने बहुत अच्छा किया है, परन्तु इसने तुम्हारी ईमानदारी का मूल्य लगाकर, अपनी कीमत कम कर दी है। इसने तुम्हारी कीमत उतनी ही लगाई है, जितनी एक वेश्या किसी भी पुरुष की लगा सकती है। अपने पति का मूल्यांकन धन से करनेवाली स्त्री बहुत ही संकुचित मनोवृत्ति की कहलाएगी।''

इसपर सूसन ने पूछ लिया, ''यदि मैं किसी धर्म की विधि से विवाह कर लेती और रुपया-पैसा न लेती, तो अधिक अच्छा था न।''

''हाँ, उस समय तुम एक मानव का मूल्य मानव के सिक्कों में लगातीं। अब तुमने मानव को रुपयों से तौलने का यत्न किया है।''

''तो आपका विचार है कि शकुन्तला बहिन ने बहुत अच्छा किया था और वह मुझसे बहुत अच्छी औरत है ?''

इस प्रकार शकुन्तला का नाम सुनकर सेठ कुन्दनलाल चुप कर गया। वह नहीं जानता था कि यह उस विषय में कितनी बात जानती है। उसको चुप देख सूसन ने आगे पूछा, ''आपका मूल्य उसने उचित से कुछ अधिक नहीं लगाया क्या ?''

''क्या मतलब !'' सुन्दरलाल के पिता ने पूछा।

''मतलब तो साफ है। मानव का मूल्य मानव की भाँति लगाने वाली को जो मिला है, भली-भाँति जानती हूँ। मैंने इनका मूल्य एक वेश्या की भाँति लगाया है और आप देख रहे हैं कि मुझको क्या मिल रहा है। मैं समझती हूँ कि मेरा व्यवहार उचित ही है।''

इसपर सुन्दरलाल की माँ ने कह दिया, ''शकुन्तला का विवाह उसके माता-पिता ने किया था। इस कारण जो कुछ उसने हमारे साथ व्यवहार किया है अथवा हमने उसके साथ किया है, वह उस मापदण्ड से देखा नहीं जा सकता, जिससे तुम्हारा और सुन्दरलाल का परस्पर का व्यवहार देखा जाना चाहिए।''

''बात तो वही है माताजी, जो मैंने कही है। आपके स्थान पर अब ये आ गए हैं, इतना ही तो अन्तर पड़ा है। आपने जो कुछ शब्द मेरे लिये प्रयोग किए हैं, वे कितने उचित हैं, आपके विचार की बात है। मैं तो आपसे इतना ही कह रही हूँ कि जिसने बिना किसी प्रकार की जमानत के आत्म-समर्पण किया है, उसके साथ आपने कैसा व्यवहार किया है, वह भी विचारणीय है।''

सेठ कुन्दनलाल ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर पूछा, ''तुम यह समझती हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि शकुन्तला के साथ अन्याय हुआ है?''

सुन्दरलाल वार्त्तालाप के बहाव को देखकर चिन्ता अनुभव कर रहा था। एक बात उसकी समझ में आई थी कि बातचीत में कटुता उसके पिता ने पैदा की है।

सूसन का उत्तर था, ''आप जैसे समझदार और अनुभवी आदमी को मैं क्या सुझाव दे सकती हूँ! आप तो किसी लड़की को वेश्या कहने से पहले, अपने व्यवहार पर विचार कर लेते तो बहुत अच्छा था।''

सुन्दरलाल ने अब बात बदलने के लिए कह दिया, ''पिताजी! सूसन के, अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने से मैं रुष्ट कैसे हो सकता हूँ? जब पिता-पुत्र में विश्वास नहीं रहा तो पति-पत्नी में अविश्वास पर आश्चर्य करने की आवश्यकता नहीं। मैं आपसे एक बात और कहना चाहता हूँ। आपने चैम्बर में मेरे बीस हजार की जमानत को अपने नाम बदलने का यत्न कर ठीक नहीं किया।''

''क्यों, क्या हानि हुई है उससे?''

''मैंने चैम्बर वालों को ऐसा करने से रोक दिया है।''

''क्यों?''

''इस कारण कि मेरे पास तो केवल यह बीस हजार ही है और आपकी तो करोड़ रुपये से भी अधिक की सम्पत्ति है। उस सबको रखते हुए, आपने मेरे बीस हजार पर नजर डाली, तो उससे आपकी बदनामी हो गई है। चैम्बर वाले यह समझने लगे हैं कि कदाचित् आपका दिवाला निकलने लगा है।''

''तुमने चैम्बर वालों को मना कर अच्छा नहीं किया।''

''आपने मुझसे पहले पूछा क्यों नहीं? मैंने उस रुपये की जमानत पर स्वयं सौदा करने का विचार किया हुआ था। यदि वह रकम आपके नाम पर बदल दी जाती, तो मैं क्या करता?''

''पर यह रुपया तो मेरा ही था।''

''आपसे पहले मेरे बाबा का था। भला यह भी कोई युक्ति है? देखिए पिताजी! घर जाते ही तुरन्त बीस हजार की जमानत चैम्बर में भेज दीजिएगा, अन्यथा कल तक नालिखें हो जाएँगी। यह ठीक नहीं होगा।''

सेठ कुन्दनलाल ने घड़ी में समय देखकर कहा, ''बहुत देर हो गई है। मुझको जल्दी घर जाना है। अच्छा, अब चलता हूँ। होटल का बिल तुम दे देना और बिल मेरे पास भेज देना। मैं अदा कर दूँगा।''

इतना कह सुन्दरलाल का पिता अपनी पत्नी सहित वहाँ से उठ बाहर निकल गया। उसके चले जाने के पश्चात् सूसन ने कहा, ''मैं कई दिनों से एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या पर विचार कर रही हूँ। वह है आप धनी आदमियों में युक्ति-हीनता।"

"आपसे तुम्हारा मतलब है कि मैं भी युक्ति-हीन हूँ?"

"यदि आपको युक्ति-हीन शब्द पसन्द नहीं, तो मैं इसी बात को इस प्रकार प्रकट कर सकती हूँ। प्रायः धनी आदमी युक्ति करना नहीं जानते। देखिए न, आपके पिता विवाह की प्रथा को अच्छा समझते हैं परन्तु जो विवाहिता थी, उसको घर से निकाल दिया है। शकुन्तला चाहे कुछ ही कहे, परन्तु ये विवाह की अच्छाई का बखान कैसे कर सकते हैं?"

"पर सूसन? मैंने तो तुम्हारी प्रथा की निन्दा नहीं की। फिर मुझको भी पिताजी के साथ क्यों रगड़ डाला है?"

"आपका अयुक्ति-संगत व्यवहार बिहारीलाल के विषय में है। पहले तो आपने उसको अपना मित्र बताया और अब उसकी निन्दा आरम्भ कर दी है। मैं आज तक समझ नहीं सकी कि क्यों?"

"यह इसलिए कि वह मुझसे अधिक सुन्दर और बलिष्ठ है और मुझको डर लगा रहता है कि कहीं तुम उसके साथ न भाग जाओ।"

"तो आपको उस पर रोष नहीं, प्रत्युत मुझ पर अविश्वास है। यह तो और भी अधिक अयुक्ति-संगत मनोवृत्ति है। बताइए, मुझ पर सन्देह करने में कारण क्या है?"

सुन्दरलाल इस बातचीत से बाहर निकलने के लिए उठ खड़ा हुआ और बोला, "अब चलना चाहिए।"

: 6 :

जब शकुन्तला और ललिता सूसन से मिलने के लिए मैरीन ड्राइव वाले रेस्टोराँ में आईं, तो सूसन वहाँ उनकी प्रतीक्षा पहले से ही कर रही थी। वह गम्भीर विचार में मग्न एक कोने में रखी मेज पर बाँहें टेके बैठी थी। शकुन्तला उसके सामने आकर खड़ी हो गई, तब भी उसका ध्यान भंग नहीं हुआ। ललिता उसके पास कुर्सी पर बैठ उसके गले में बाँह डालकर बोली, "सूसन बहिन! रुष्ट हो गई हो?" ललिता का विचार था कि रामचन्द्र के कठोर वचनों ने उसको दुःखी किया है।

सूसन को चेतना हुई तो उसने मुस्कराते हुए शकुन्तला से कहा, "आओ, बैठो न।"

शकुन्तला बैठी तो सूसन ने चाय का आर्डर दे दिया। पश्चात् उसने कहा, "मैं आज प्रातःकाल तुमको इस कारण मिलने गई थी कि मिस्टर भगेरिया के पिताजी से कल भेंट हुई थी और तुम्हारे विषय में भी बातचीत हुई है।" इतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह सूसन ने वह सब बातचीत, जो सेसिल होटल में सेठ कुन्दनलाल से हुई थी, सुना दी।

पूर्ण बात सुनकर उसने कहा, "कल रात मैं इस वार्त्तालाप से उत्पन्न विचारों के कारण सो नहीं सकी। मुझको अपने इस विवाहित जीवन पर अविश्वास-सा उत्पन्न हो रहा है। मैं इसके परिणामों पर विचार करती हूँ तो अपने किए पर पश्चात्ताप करने लगती हूँ।"

"देखो बहिन सूसन!" शकुन्तला ने कहा, "जो कुछ होना था, सो तो हो गया है। अब तो इससे और अधिक सुख प्राप्ति का यत्न करना चाहिए। चिन्ता की कोई विशेष बात नहीं है। आपके पास जीवन-निर्वाह के लिए पर्याप्त धन है। भगेरिया साहब में आपके लिए अरुचि उत्पन्न होने पर, आप उस प्रकार निःसहाय नहीं रह सकतीं, जितना मैं अनुभव करती हूँ। इसपर भी, मैं यह समझती हूँ कि यदि मेरे भाग्य में भूखों मरना है, तो कुबेर का धनकोश भी मेरा पेट नहीं भर सकेगा। परन्तु तुमने तो अपनी बुद्धि से, अपने उलटे दिनों के लिए प्रबन्ध कर लिया है। तुमको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।"

"देखो बहिन! मुझको अपनी तो चिन्ता नहीं। मैं तो किसी होने वाले के लिए चिन्तित थी। वह लड़का होगा अथवा लड़की, कहना कठिन है। जो कुछ भी हो, उसका पालन-पोषण करके उसको संसार में मानयुक्त जीवन के योग्य बनाना भी तो काम है।

"चिन्ता की बात यह है कि पिता-पुत्र भगेरिया क्या और आपके पिता और भाई क्या, ये सब धनी आदमी विचित्र प्रकार से विचार करते हैं। यह कहना कठिन है कि किसी समय भी ये क्या सोचें और क्या कुछ न कर दें।"

"मैं स्वयं भी परेशान हूँ। यद्यपि राम का मैंने कुछ नहीं बिगाड़ा तो भी उसकी आँखें बदलती देख, मुझको भी अपने जीवन पर पुनः अवलोकन करने की आवश्यकता पड़ गई है। मैं अपने पिता के घर अपना शेष जीवन बिताने आई हूँ और अब यह अनुभव कर रही हूँ कि यह हो नहीं सकेगा।

"परन्तु सूसन बहिन! क्या कोई नया जीव आने वाला है, जो इस प्रकार की चिन्ता करने लगी हो?"

सूसन ने आँखें नीची कर कहा, "दो-तीन सप्ताह से मैं कुछ ऐसा ही अनुभव कर रही हूँ। आज तो, आपके यहाँ से आने के पश्चात् उल्टी हो गई। हमारी नौकरानी सन्तोषी कहने लगी कि मेरे पेट में बच्चा है। उसके कहने के पश्चात् तो मुझको सत्य ही पेट में कुछ घूमता हुआ प्रतीत होने लगा।"

"तो यह बात है?" ललिता ने मुस्कराते हुए कहा, "चिन्ता क्यों है? जब कोई नई बात होगी, तो उस समय विचार कर ली जाएगी। विचारणीय बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो इस समय की है। जीजाजी ने अभी तक तो कोई ऐसी बात नहीं की, जो चिन्ता का कारण हो सके ?''

''यों तो सब ठीक है, परन्तु इन लोगों का प्रत्येक समस्या को सुलझाने का ढंग विलक्षण है। इससे सदा मन में भय बना रहता है।''

इस समय बैरा चाय का सामान ले आया और तीनों चाय पीने लगीं। एकाएक शकुन्तला को कुछ याद आया तो उसने चाय का प्याला सॉसर में रखकर कहा, ''एक और गड़बड़ प्रतीत होती है। दो दिन से पुलिस सेठजी का बयान लेने आ रही है। कल हमको पता चला था कि मोतीराम पकड़ा गया है और आज सेठजी उसको जमानत पर छुड़ा लाए हैं। इन सब अस्वाभाविक बातों का कारण हम नहीं जान सकीं।''

''यह सब बात बिहारीलाल को बतानी चाहिए। मैं तो यही कहूँगी कि वह अपने भाई को यह सारा विवरण लिख दे।''

''बात ऐसी प्रतीत होती है कि फकीरचन्द ने पुलिस में चोरी की रिपोर्ट लिखाई होगी। स्वाभाविक रूप में मोतीराम की तलाश हुई होगी। पुलिस उसको बम्बई में पकड़ पाई है। सेठजी ने उसको छुड़ाया तो इससे पुलिस वालों को सेठजी पर सन्देह हो गया होगा और सेठजी के भी बयान हुए होंगे।

''हम नहीं चाहती थीं कि परीक्षा के दिनों में उसके मस्तिष्क में किसी प्रकार की हलचल मचाएँ।''

''इस पर भी उसको यहाँ की स्थिति बताकर, कह देना चाहिए कि वह अपने भाई को लिख दे।''

''तो सूसन बहिन! तुम उससे मिलकर यह सूचना दे दो।''

''मैं तो यह नहीं कह सकती। मुझको भगेरिया साहब ने उससे मिलने से मना किया हुआ है।''

''क्यों ?''

''उनको संदेह है कि मैं उसपर मोहित हो जाऊँगी। इसीलिए तो कह रही थी कि यहाँ के धनी आदमियों का युक्ति करने का ढंग ही विलक्षण है।''

''तो हमको ही मिलना चाहिए।'' ललिता ने कह दिया।

चाय के पश्चात् ललिता और शकुन्तला बिहारीलाल के होस्टल में जा पहुँचीं। वह अपनी पढ़ाई में संलग्न था, इस कारण उसने उनके आने का प्रयोजन जानकर कहा, ''शकुन्तला बहिन! मुझको आज ही देवगढ़ से एक पत्र मिला है और मैं समझता हूँ कि उससे यहाँ होने वाली घटना का अर्थ समझा जा सकता है। मैं वह पत्र तुमको दे देता हूँ। तुम पढ़कर मुझको वापस कर देना। साथ ही यह पत्र सेठजी को दिखाना नहीं। मैं नहीं चाहता कि पहले से बिगड़े -

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध और अधिक बिगड़ें। मैं अब अपना ध्यान इधर-उधर की और बातों में लगा नहीं सकता। मेरी परीक्षा आगामी सोमवार से आरम्भ होने वाली है।''

इसपर शकुन्तला और ललिता वह पत्र लेकर घर आ गईं। दोनों ने कमरे का दरवाजा बन्द कर पत्र पढ़ा। उसमें लिखा था, ''प्रिय बिहारी! यह जानकर संतोष हुआ है कि ललिता, उसकी बहिन और उसकी माँ ने खाना-पीना आरम्भ कर दिया है, यह बात भी ठीक ही है कि सेठजी ने ललिता का विवाह, उसके वयस्क होने तक न करने का वचन दे दिया है। इसपर भी मैं समझता हूँ कि हमारा इस परिवार से सम्बन्ध किसी भाँति भी ठीक नहीं हो सकता। मैं तुमको वह पूर्ण पृष्ठभूमि बता देना चाहता हूँ, जो इस सगाई तोड़ने का कारण बनी है। उसको जानकर तुम भी यही समझोगे कि इस सगाई के टूटने से ठीक ही हुआ है।

''लक्ष्मीधर ने पुलिस में बयान दिया है कि सेठजी ने उसको देवगढ़ भेजा था, तो कह दिया था कि केवल खर्चा चलाने के लिए ही रुपया फकीरचन्द को देना चाहिए। शेष रुपया सेठजी को सीधा भेज दिया जाए। इस कारण वह कुछ रुपया मुझे देता रहा था और शेष धन सीधा सेठ जी को भेज देता था। उसकी रसीदें उसके पास हैं। वह इस रुपये भेजने की सूचना मुझको दे देना चाहता था, परन्तु सेठजी ने उसको मना कर दिया था। जिस पत्र द्वारा सेठजी ने उसको मुझसे रुपये की बात चोरी रखने के लिए कहा था, वह पत्र उसने पुलिस को दिखाया है। उस पत्र में स्पष्ट लिखा है कि एक कारण-विशेष से वे नहीं चाहते कि मुझको यह पता चले कि कितनी आय उनको हो रही है। इस कारण मुझको केवल उन वैगनों का ही हिसाब लिखाया जाए, जिनका दाम मुझको देना हो। अन्य माल का हिसाब लिखाने की आवश्यकता नहीं।

''इसपर भी जब मुझको सन्देह हुआ कि मोतीराम अथवा लक्ष्मीधर रुपया गबन कर गए हैं और मैंने इस विषय में सेठजी को लिखा, तो उन्होंने मुझको यह नहीं बताया कि वे कोई रुपया मेरे ज्ञान के बिना प्राप्त करते रहे हैं। केवल यही नहीं, प्रत्युक्त उन्होंने मेरे ऊपर यह आरोप लगांना आरम्भ कर दिया कि मैंने काम पर ध्यान नहीं दिया। पश्चात् उन्होंने यह लिखा कि मैंने जान-बूझकर चोरी होने दी है और अपने अन्तिम पत्र में तो उन्होंने यह बात स्पष्ट रूप से लिख दी थी कि रुपया मैंने गबन किया है और वे अपनी लड़की की सगाई मुझसे तोड़ते हैं।

''यह सब मैंने पुलिस को बता दिया। मोतीराम पर मुकद्दमा बनाया गया। लक्ष्मीधर के बयानों से बम्बई में तहकीकात होने लगी और वहाँ मोतीराम पकड़ लिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे यह मालूम हो गया है कि मोतीराम की जमानत सेठजी ने दी है और उन्होंने अपने बयान में कहा है कि रुपया उनको मिलता रहा है। इससे मुझपर झूठी रिपोर्ट लिखाने का मुकद्दमा बन गया है। बहुत कठिनाई से मैं इस मुकद्दमे से बच सका हूँ।

"मुझे यह कहा गया है कि मैं सेठजी पर हर्जाने का दावा कर सकता हूँ। परन्तु मैं यह कुछ भी नहीं कर रहा। कारण यह है कि पहले ही इस झगड़े में मेरा बहुत-सा समय नष्ट हो चुका है। कुछ रुपया भी व्यय हुआ है। मैं अपना समय, इस प्रकार के बेहूदा आदमी से झगड़ा कर, नष्ट करना नहीं चाहता।"

"तुम्हारी परीक्षा कब हो रही है और देवगढ़ कब आ रहे हो?"

फकीरचन्द को मुकद्दमे से निपटने में तीन महीने लग गए। इस अवधि में वह अपने काम की ओर ध्यान नहीं दे सका। इसपर भी आय खूब हुई। जंगल की लकड़ी की आय कुछ कम हो गई थी, परन्तु खेती-बाड़ी की आय बढ़ गई। गन्ने की बिक्री तो नहीं हुई, परन्तु गुड़ बनाकर बेचने से तो आय और भी अधिक हुई। इस वर्ष उसने गेहूँ के अतिरिक्त मूँग और अरहर की खेती भी की।

सब मिल-मिलाकर तैंतालीस हजार की आय हुई और तेरह हजार रुपया दान-दक्षिणा में व्यय हो गया।

खेती-बाड़ी के काम के अतिरिक्त इस वर्ष कपड़ा बुनने और रंगाई का काम भी किया जाने लगा। फकीरचन्द ने एक पौल्ट्री फार्म भी खोल लिया था। मुर्गी पालने के विषय में एक जानकार आदमी नौकर रख लिया गया और उसकी देख-रेख में मुर्गियों और अण्डों का व्यापार किया जाने लगा। इसी प्रकार कपड़ा बुनने का एक जानकार बाहर से बुलाया गया और गाँव के, विशेष रूप से वे लोग, जो खेतों में काम कर बहुत-सा समय खाली रहते थे, इस काम में लगा दिए गए। मशीनी सूत की बुनाई सिखाई जाती थी और कपड़ा बुना जाने पर पारिश्रमिक दिया जाता था।

कपड़ा बुनने के काम से इतनी आय नहीं हुई, जितनी पौल्ट्री फार्म से हुई थी। इस वर्ष तो कपड़े के काम में कम लोगों ने रुचि ली, कारण यह कि लोग काम करना जानते नहीं थे। परन्तु फकीरचन्द को आशा थी कि इस काम को सीखने पर, लोग अधिक रुचि लेने लगेंगे।

जबसे करोड़ीमल और फकीरचन्द में झगड़ा हुआ था, तबसे ही मोतीराम ने सेठ का काम करना छोड़ दिया था। मोतीराम भागा हुआ था और लक्ष्मीधर भी काम छोड़ गया था। इसपर सेठ के किते में काम बन्द पड़ा था।

बिहारीलाल इण्टरमीडिएट की परीक्षा देकर देवगढ़ आया, तो उसको वहाँ की रूपरेखा ही बदली हुई प्रतीत हुई। अब तो चौधरी, जो फकीरचन्द के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँव में आने के समय कर्ज के नीचे दबा हुआ था, जिसके मकान और खेत कुर्क होने वाले थे, इन चार वर्षों में अपना नया मकान बनाकर रहने लगा था। माधो ने थोक की दुकान ललितपुर में और एक बीना में खोल ली थी। शेषराम इत्यादि काम करने वालों की अवस्था भी बहुत सुधर चुकी थी। शेषराम का विवाह हो चुका था। गिरधारीलाल के घर एक और बच्चा हो चुका था और उसकी पत्नी मीना अब कपड़ा बुनने के कारखाने में काम सीख रही थी। उसको काम सीखते हुए भी वहाँ से पाँच-छः आने नित्य मिल जाते थे।

फकीरचन्द ने डिस्ट्रिक बोर्ड को लिखकर देवगढ़ से जिरौन स्टेशन तक पक्की सड़क बनवा ली थी। गाँव के बीसियों आदमियों ने बैलगाड़ियाँ बनवा ली थीं और कइयों ने ताँगे-घोड़े भी रख लिये थे।

गाँव में चहल-पहल थी। जब बाहर से रुपया आने लगा तो नए-नए दुकानदार भी पैदा हो गए। अब प्रत्येक प्रकार का सामान गाँव के बाजार में बिकने लगा था।

इस समय मोतीराम और उसके साथ एक सूर्यकान्त नाम का व्यक्ति गाँव में आ गए। इन्होंने गाँव में एक मकान भाड़े पर ले लिया और उसमें रहने लगे। फकीरचंद को तो पहले दिन ही चौधरी ने आकर बताया कि मोतीराम आया है। इसपर भी फकीरचन्द ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। चौधरी इतनी सुगमता से चुप रहने वाला नहीं था। उसने गाँव के एक-दो आदमियों को मोतीराम के साथ लगा दिया। वह अब तक समझ गया था कि मोतीराम जैसा आदमी केवल रहने के लिए ही गाँव में आया होगा, असम्भव है। इसमें उसे किसी विशेष कारण की सम्भावना थी।

मोतीराम और सूर्यकान्त के गाँव में आने का कारण बहुत देर तक छुपा नहीं रह सका। उन्होंने फकीरचन्द के आदमियों से मेल-जोल आरम्भ कर दिया था और उनसे मिलकर वे उनको यह बताने का यत्न करते रहते थे कि उनकी गाढ़े पसीने की कमाई पर फकीरचन्द राजा बना घूमता है।

वह गिरधारी से मिला और पूछने लगा, ''क्या वेतन लेते हो भैया?''

''पचास रुपये।''

''क्या काम करते हो?''

''बुआई के दिनों में हल चलाता हूँ। कटाई-रहाई के दिनों में राहता हूँ; आगे-पीछे चक्की चलाता हूँ।''

''जानते हो, इन सब कामों में कितनी आय होती है?''

''नहीं, मुझको पता नहीं।''

''तो सुनो।'' सूर्यकान्त ने कहा, ''एक घण्टा चक्की चले तो दस मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आटा पीस देती है। दस मन की पिसाई पाँच रुपया होती है। इंजिन का खर्चा एक रुपये से अधिक नहीं हो सकता। इस प्रकार उसको चार रुपये की बचत होती है और तुमको क्या मिलता है—चार आने।

"गिरधारी भैया! तुम जो मेहनत करते हो, तुमको तो मिलते हैं चार आने और फकीरचन्द, जो ऊपर से देखने वाला ही है, उसको मिलते हैं चार रुपये। कितना अन्याय है!"

गिरधारी इतना लम्बा-चौड़ा हिसाब नहीं जानता था। उसने कहा, "सूरज भैया! मुझको तो यह पता है कि जब मैं बम्बई में काम करता था, तो मुश्किल से रोटी ही खा पाता था और यहाँ आने पर तो मैं खा-पीकर कुछ बचा भी सका हूँ। पिछले महीने वह बबूल के पेड़ के पास वाली भूमि खाली हुई थी, तो मैंने राजा साहब से ले ली। वह भूमि मैंने अधिया पर दे दी है और उसमें से मुझको इस वर्ष खाने-पीने के लिए अन्न मिल जाएगा। परिणाम यह होगा कि मेरे पास एक सौ रुपया और अधिक बच जाएगा।"

"तुम मूर्ख हो गिरधारी! यह तो ठीक है कि तुम्हारी हालत पहले से अच्छी है, परन्तु इससे भी अच्छी होनी चाहिए। तुम्हारी मेहनत में से यह बाबू चोरी कर रहा है।"

गिरधारी को कुछ-कुछ समझ आने लग गया था। यद्यपि वह यह नहीं समझ सका था कि फकीरचन्द न होता, तो उसका और उसके परिवार का क्या होता, तो भी उसको यह बात समझ में आई थी कि फकीरचन्द कुछ काम-धन्धा तो करता नहीं, फिर उसको इतनी आय क्यों मिलती है?

गिरधारी के मन में असन्तोष जड़ पकड़ गया। इस प्रकार एक-एक कर फकीरचन्द के कर्मचारियों में असन्तोष भरा जाने लगा। इस असन्तोष का प्रत्यक्षरूप बनने लगा। मोतीराम और सूर्यकान्त मजदूरों की सभाएँ बुलाने लगे।

दोनों ने बाजार में एक मकान लिया हुआ था। रात के समय वे दोनों मजदूरों को वहाँ बुला लेते थे और उनसे बातें करते थे। गिरधारी तो नित्य वहाँ जाने लगा था। एक दिन सूर्यकान्त ने कहा, "मैं समझता हूँ कि हमें कुछ यत्न करना चाहिए। केवल बातों से काम नहीं चलेगा।"

गिरधारी, जो अपनी दुर्दशा को सबसे अधिक अनुभव करता था, पूछने लगा, "सूरज भैया! क्या करना चाहिए?"

"सबसे पहले तो हमको मजदूरों का एक संगठन बनाना चाहिए। उसमें सब मजदूर एकत्रित होने चाहिएँ। मजदूर हम उसको कहते हैं, जो किसी के लिए मेहनत-मजदूरी करता है और उससे अपनी मजदूरी की उजरत लेता है।"

"संगठन कैसे होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मजदूरों की एक यूनियन बनानी चाहिए। उसमें मेम्बर भरती करने चाहिएँ। सब मेम्बरों को कुछ मासिक चन्दा देना चाहिए और हमको सोच-विचारकर ऐसे उपाय प्रयोग में लाने चाहिएँ, जिनसे फकीरचन्द मजबूर हो जाय और आपका वेतन बढ़ा दे।"

गिरधारी को यह योजना पसन्द आई। उस समय छः-सात मजदूर वहाँ बैठे थे। उन सबने इस यूनियन में सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया, परन्तु जब सूर्यकान्त ने कहा कि चन्दा एकत्रित करना चाहिए, तो सबने यही कहा कि अगले मास का वेतन मिलते ही जमा करा देंगे। यह निश्चय हुआ कि एक आना रुपया चन्दा दिया जाए अर्थात् गिरधारी को अपने पचास रुपये पर तीन रुपये दो आने देने थे।

इस रकम को सुनकर उसको कुछ चिन्ता हुई। वह विचार कर रहा था कि उसकी पत्नी मीना भी तो पन्द्रह रुपये मासिक का काम करती है। उसको भी पन्द्रह आने देने पड़ेंगे। इससे उसने अपनी पत्नी से बात करने का विचार किया। वह सूर्यकान्त की बैठक से लौटकर घर आया तो मीना अपने छोटे बच्चे को दूध पिलाकर सुला रही थी। गिरधारी उसके पास बैठकर सूर्यकान्त की बात उसको समझाने लगा। मीना को उसका सिर-पैर समझ नहीं आया। इसने उससे पूछा, "तो तुम सात आदमी उसमें शामिल हो गए हो?"

"हाँ, मैं उन सबसे अधिक पढ़ा-लिखा हूँ। स्वाभाविक रूप से मैं उनका प्रधान बन जाऊँगा और फिर हम बाबू को विवश कर अपना वेतन और भी अधिक करवा लेंगे।"

"तो यह वेतन कम है क्या?"

"सूर्य बाबू कहता है कि कम है।"

"उसके पास कौन-सा पैमाना है, जिससे उसने नापकर कहा है कि कम है?"

"देखो मीना! वह एक पढ़ा-लिखा आदमी है। इससे उसने ठीक ही तो कहा होगा। आखिर फकीरचन्द भी तो हमारे जैसा आदमी है। उसको हजारों रुपये की आय होती है और मुझको केवल पचास रुपये की।"

"पर देखो न, बृज भी बाबू के खेतों में काम करता है। उसको केवल बीस रुपये महीना ही तो वेतन मिलता है। क्यों? उसको भी आपकी भाँति पचास रुपये क्यों नहीं मिलते?"

"इसलिए कि मैं बृज से अधिक काम जानता हूँ।"

"तो क्या तुम यह नहीं समझ सकते कि बाबू फकीरचन्द तुम्हारे से अधिक काम जानता है और इस कारण ही उसको रुपया अधिक मिलता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसपर भी मेरे और बृज के वेतन में अन्तर इतना अधिक नहीं जितना मेरी और फकीरचन्द की आय में है।"

"वह भी तो स्पष्ट ही है। तुम्हारे में और बाबू फकीरचन्द में अन्तर भी बहुत अधिक है।"

"मुझको तो प्रतीत नहीं होता।"

"बम्बई में और उससे पहले गाँव में तुम्हारी क्या हालत थी और फकीरचन्द, जब यहाँ आया था तो तुम जैसा ही था, परन्तु उसने यहाँ स्वर्ग-निर्माण कर लिया है जो तुम नहीं कर सके।"

"सूर्यकान्त कहता था कि वह चोर है, इसलिए उसने इतनी उन्नति कर ली है।"

"वह मोतीराम का मित्र है। मोतीराम पक्का चोर है और यह बात स्वयं सिद्ध है कि चोरों को सब चोर ही दिखाई देते हैं।"

"तो तुम इस यूनियन की मैम्बर नहीं बनोगी?"

"तुम बनो। पर यह याद रखना कि यदि किसी कारण तुम्हारा काम बिगड़ा, तो मेरे पन्द्रह रुपये में घर का निर्वाह नहीं हो सकेगा। तुमको फिर बम्बई जाना पड़ेगा।"

बम्बई जाने की धमकी सुन गिरधारी गम्भीर विचार में पड़ गया। अगले दिन वह शेषराम से मिला और उससे यूनियन का मेम्बर बनने को कहने लगा। शेषराम ने कहा, "गिरधारी भैया! सूर्यकान्त मेरे पास भी आया था और मुझको बहुत बातें कह गया है। मैं तो उसकी बातें समझ नहीं सका। वह मोतीराम का मित्र है। दोनों इकट्ठे रहते हैं। इससे तो मुझको सन्देह है कि वह और सूर्यकान्त, दोनों सेठ करोड़ीमल की ओर से भेजे गए हैं और उनका उद्देश्य केवल मात्र फकीरचन्द को हानि पहुँचाना है।

"हमारी बातचीत में मोतीराम ने कभी भी हस्तक्षेप नहीं किया। इससे उनका परस्पर क्या सम्बन्ध हो सकता है, इसमें कुछ कहने का, मुझे अधिकार नहीं।"

"शेषराम!" गिरधारी ने कहा, "एक बार मेरे सामने सूर्यकान्त से मिल लो। मैं समझता हूँ कि बात समझ में आ जाएँगी।"

"भैया! मैं मिल चुका हूँ। मुझको तो दाल में कुछ काला प्रतीत होता है।"

गिरधारी शेषराम से निराश हो, दूसरे कर्मचारियों से बातचीत करने लगा।

सूर्यकान्त की गतिविधि का ज्ञान फकीरचन्द को हो रहा था। इससे वह परेशानी अनुभव करने लगा था। इस विषय में बिहारीलाल और फकीरचन्द में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातचीत हुई तो बिहारी इस चाल को समझ इसका प्रबन्ध करने का विचार कर रहा था।

जबसे वह देवगढ़ में आया था, फकीरचन्द के काम में वह सहयोग दे रहा था। सूर्यकान्त की समस्या उग्र होती देख, उसने भी अपनी एक योजना बना ली। उसने घूम-घूमकर अपने मजदूरों में से कुछ समझदार मजदूरों को एक संगठन में बाँध लिया। लगभग बीस ऐसे मजदूर मिल गए। उसी दिन उसने फकीरचन्द से राय कर, अपने गुट के मजदूरों में से एक को बुलाकर, उसको बीस आने देकर कहा कि वह उस रात सूर्यकान्त की बैठक पर जाए और उनकी यूनियन का सदस्य बन जाए।

इस प्रकार एक-एक, दो-दो कर, उसने अपने गुट के सारे के सारे सदस्यों को सूर्यकान्त की यूनियन का सदस्य बना दिया। इस गुट में शेषराम भी था। शेषराम को देखकर गिरधारी को बहुत प्रसन्नता हुई, परन्तु सूर्यकान्त को सन्देह हो गया। सूर्यकान्त ने शेषराम का चन्दा लेते हुए कहा, ''शेषराम भैया! तुमने तो गिरधारी को कहा था कि तुमको फकीरचन्द के विरुद्ध कोई शिकायत नहीं है ? अब तुम कैसे आ गए हो ?''

''बाबू! मुझको तो बृज ने बताया है कि आपकी यह कमेटी मजदूरों की भलाई के लिए बनाई जा रही है। यह किसी खास मालिक के विरुद्ध नहीं है। इस बात को समझकर ही मैं यहाँ आ गया हूँ।''

इस बात को सुन सूर्यकांत शेषराम को लेने पर विवश हो गया।

: 7 :

यूनियन में पचास के लगभग सदस्य हो चुके थे। इनमें से अधिकांश फकीरचन्द के साथ किसी-न-किसी भाँति सम्बन्ध रखते थे।

एक दिन एक सदस्य यूसफ कहने लगा, ''इस सभा का कोई प्रधान और कोई मन्त्री बनाया जाए।''

''क्या आवश्यकता है इसकी ?'' सूर्यकान्त ने कह दिया।

''आवश्यकता की बात तो मैं जानता नहीं। इतनी बात जानता हूँ कि प्रत्येक सभा का एक प्रधान होता है और एक मन्त्री।''

''इस समय तो मैं इन दोनों कामों को कर रहा हूँ।''

''पर आप तो श्रमिक हैं नहीं। श्रमिकों की सभा के प्रधान कैसे हो सकते हैं ?''

''मैंने ही इस संगठन को बनाया है, इस कारण जो काम मैं इससे लेना चाहता हूँ, वह मैं ही जानता हूँ। आपमें से कोई न तो इस प्रकार की कमेटियों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम के विषय में जानता है और न ही उस काम के कराने के ढंग को समझता है।''

इसपर यूसफ जो फकीरचन्द का इंजिन चलाता था, कहने लगा, ''सूर्य भैया! तुमको हम निकाल थोड़े ही रहे हैं? आखिर हमको भी तो सब काम सीखना है। तुम हमको बताते रहना।''

इसपर एक और सदस्य ने कह दिया, ''मैं समझता हूँ कि प्रधान का निर्वाचन तो होना ही चाहिए। यह बात दूसरी है कि हम सूर्य भैया को ही प्रधान बना लें।''

''हम निर्वाचन आदि नहीं चाहते।'' एक और ने कहा।

''तो कोई तो हमारा चौधरी होना चाहिए।'' शेषराम का कहना था।

''हमारा चौधरी, जिसको हम नेता कहते हैं, सूर्य भैया है।''

''सूर्य भैया! मैं चाहता हूँ कि एक दिन निश्चित कर लो और उस दिन निर्वाचन हो जाए और विधिवत् हम तुमको प्रधान बना लें।''

सूर्यकान्त को सन्देह था कि निर्वाचन हुआ, तो वह प्रधान नहीं बन सकेगा। इससे उसका बना-बनाया काम बिगड़ जाएगा। इस कारण उसने कहा, ''देखो जी! यह सभा मैंने बनाई है। इस कारण इसका पहले वर्ष के लिए, मैं ही प्रधान रहूँगा। जिसको इसमें रहना है रहे और जिसको नहीं रहना है वह चला जाए।''

इस प्रकार की बात सुनकर सब एक-दूसरे का मुख देखते रह गए। यूसफ इसका अर्थ समझ गया। उसने समझ लिया कि सूर्यकान्त समझता है कि बहुमत उसके पक्ष में नहीं है। इस बात को समझ उसने खड़े होकर कह दिया, ''देखो जी! यहाँ पर हम दस से ऊपर यूनियन के सदस्य उपस्थित हैं। हम यह चाहते हैं कि हमारे प्रधान का निर्वाचन किया जाए। इस निर्वाचन के लिए मैं कल सायंकाल आठ बजे का समय निश्चित करता हूँ। सबको इसकी सूचना देने का उत्तरदायित्व मैं लेता हूँ। कल देवगढ़ मजदूर यूनियन के प्रधान तथा मन्त्री का निर्वाचन अवश्य होगा।''

इसपर सूर्यकान्त ने कहा, ''कल का दिन मुझको अनुकूल नहीं। मैं चाहता हूँ कि यह मीटिंग अभी न की जाए। अभी और सदस्य बनाए जाएँ। तबतक निर्वाचन स्थगित कर दिया जाए।''

''कितने दिन के लिए?''

''एक सप्ताह के लिए।''

''अच्छी बात है। आज रविवार है। अगले रविवार को सायंकाल आठ बजे निर्वाचन होगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं इस विषय में सूचना भेज दूँगा।" सूर्यकान्त ने कहा।

"सूर्यकान्त को इस बात की तकलीफ नहीं करनी चाहिए।" शेषराम ने कह दिया।

"नहीं शेषराम! मुझको किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। मैं तो इस काम के लिए ही आया हुआ हूँ।"

इसपर यूसफ ने पूछ लिया, "सूर्य भैया! किस काम के लिए आए हुए हो?"

"आप लोगों की सेवा करने के लिए।"

"देखो जी। आप हमारे अतिथि हैं।" बृज ने कह दिया, "इसीलिए यह हमको शोभा नहीं देता कि हम अपने काम के लिए आपको कष्ट दें।"

इस समय मोतीराम, जो पिछले कमरे में बैठा हुआ था, बाहर आ गया और बोला, "सूर्य! मेरे सिर में दर्द हो रहा है। इस चांडाल-चौकड़ी को उठाओ अब। मुझे सोने दो।"

इसपर सूर्यकान्त ने सभा विसर्जित कर दी और सब लोग नीचे उतर आए। सब उपस्थित लोग दो गुटों में विभक्त हो गए और पृथक्-पृथक् बातचीत करने लगे। शेषराम के गुट के लोग एक-एक कर खिसक गए और चौधरी रामहरष के यहाँ एकत्रित हो गए। दूसरे गुट में गिरधारी नेता बना हुआ था। वे एक-एक कर पुनः बैठक पर चढ़ गए। वहाँ मोतीराम बैठा सूर्यकान्त से बातचीत कर रहा था।

मोतीराम का कहना था, "सूर्य भैया! यह देहात है। यहाँ नगरों की-सी बातें नहीं चल सकतीं।"

"ठीक है! परन्तु अब क्या किया जाए?"

"इस यूनियन को तोड़ दिया जाए और नई यूनियन बना ली जाए।" एक सदस्य ने सुझाव उपस्थित कर दिया।

"इससे क्या होगा?" सूर्यकान्त का प्रश्न था।

"हम अपने विचारों का प्रचार करते रहेंगे। जब हमारा बहुमत हो जाएगा, तब हम फकीरचन्द के खेतों पर अधिकार कर लेंगे।"

मोतीराम ने सिर हिलाकर कहा, "यह बात तो कई बार विचार कर चुका हूँ, परन्तु एक बात तुम नहीं सोचते कि जब तक जमींदार मौजूद है, तब तक फकीरचन्द को हटाने से काम नहीं बनेगा।"

"तो फिर क्या किया जाए?"

"मेरी राय तो यह है कि यूनियन बनी रहने दी जाए। अगले रविवार को निर्वाचन हो। तुम लोग सूर्य भैया को प्रधान बनाने का यत्न करो। यदि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान बन गया, तब तो हम वह करेंगे, जो करना चाहते हैं और यदि कोई और प्रधान बन गया तो उसको जेल की हवा खिलाना मेरा काम रहा।''

सूर्यकान्त इस प्रकार की बात से डरता था। उसने कहा, ''मैं चाहता हूँ कि उस बात का विचार छोड़कर आप निर्वाचन में मुझको प्रधान बनाने का यत्न करें। मैं तो अभी भी समझता हूँ कि ठीक ढंग से काम किया गया, तो मजदूर समझ जाएँगे और वे मेरी सेवाओं का प्रतिकार देंगे।''

अगले दिन से फकीरचन्द के कर्मचारियों में सूर्यकान्त का प्रचार आरम्भ हुआ। वे लोग, जो बिहारीलाल ने संगठित किए थे, स्पष्ट रूप से कह रहे थे कि सूर्यकान्त एक बाहरी आदमी है। वह मोतीराम का मित्र है और मोतीराम सेठ करोड़ीमल का नौकर है। सेठ करोड़ीमल ने फकीरचन्द के साथ भारी धोखा किया था और अब भी मोतीराम और सूर्यकान्त फकीरचन्द को हानि पहुँचाने के लिए यह यूनियन बनवा रहे हैं।

यूनियन रहेगी तो केवल मजदूरों के हित के लिए रहेगी। वह किसी सेठ-साहूकार के संकेतों पर काम नहीं करेगी। हमको बाबू फकीरचन्द से किसी प्रकार का गिला नहीं। वह हमको अधिक वेतन देता है, इस कारण इस यूनियन का यह उद्देश्य नहीं कि फकीरचन्द को हानि पहुँचाई जाए।

दूसरी ओर के लोग कहते थे कि फकीरचन्द के भाई बिहारीलाल ने मजदूरों को बर्गला रखा है और वास्तव में वही है, जो फकीरचन्द की प्रशंसा करवाता रहता है। हम लोग आठ घण्टे काम करते हैं, तब कहीं हमको बीस रुपये मासिक दिया जाता है। फकीरचन्द हम पर किसी प्रकार का उपकार नहीं करता।

इस प्रकार दोनों ओर से गरमागरम वाद-विवाद हो रहा था। गिरधारी सूर्यकान्त का प्रबल समर्थक था।

एक दिन मध्याह्न के भोजन के समय गिरधारी ने मजदूरों की एक मीटिंग बुला ली। इसमें जहाँ सूर्यकान्त के गुट के सदस्य थे, वहाँ शेषराम के गुट के भी थे। कुछ मजदूर ऐसे भी थे, जो अभी यूनियन के सदस्य नहीं बने थे। गिरधारी ने यह मीटिंग उनको सदस्य बनाने के लिए ही बुलाई थी। जो लोग अभी तक सदस्य नहीं बने थे, वे पूछ रहे थे कि यूनियन की आवश्यकता क्या है?

गिरधारी का कहना था, ''मजदूरों की भलाई की बातों पर विचार करने के लिए यह यूनियन काम करेगी।''

एक कृष्ण था। उसने कहा, ''गिरधारी भैया! तुम क्या भलाई कर सकते हो?''

''हम एक संगठन में हो जाएँगे, तो फिर बाबू से जो चाहेंगे मनवाएँगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर वे तो पहले ही हमारी प्रत्येक बात को मान रहे हैं। तुमको पचास रुपये वेतन मिलता है। बताओ तुम और क्या चाहते हो?"

"मेरा वेतन सौ रुपये होना चाहिए।"

"क्यों?"

"मैं सौ रुपये का काम करता हूँ।"

"कैसे पता चले कि तुम सौ रुपये के योग्य हो?"

इसका उत्तर गिरधारी के पास नहीं था। इसपर शेषराम ने कह दिया, "इसको भैया सूर्यकान्त ने बताया है कि इसकी योग्यता सौ रुपये मासिक की है। मुझको भी उसने बताया था कि सौ रुपया महीना मिलना चाहिए।"

"तो भैया गिरधारी! तुम सूर्यकान्त को कहो कि वह तुझको सौ रुपये महीने पर नौकर रख ले।"

गिरधारी ने कह दिया, "जो हमको अक्ल की बात कहे, उसको ही हम डाँटने लगें, तो फिर कौन यहाँ आकर, हमको नई-नई बातें बताएगा?"

"तो फ़िर कैसे पता चले कि गिरधारी भैया सौ रुपये महीना पाने की योग्यता रखते हैं?"

एक बीच में से ही बोल उठा, "गिरधारी भैया! मैं कितने के योग्य हूँ?"

"तुमको पचास रुपये मासिक मिलने चाहिएँ।"

"जानते हो, बाबू फकीरचन्द के आने से पहले मुझको क्या मिलता था दस रुपये महीना। अब मुझको पच्चीस मिलते हैं। आज बाबू मुझको निकाल दें, तो अब दस रुपये भी नहीं मिल सकेंगे।"

"पर, बाबू हमसे काम भी तो खूब लेता है।"

"तो तुम्हारा मतलब है कि बिना काम के वेतन दे दिया करे?"

इस प्रकार की बातों में सभा विसर्जित हुई। कर्मचारी काम पर चले गए। गिरधारी चक्की पर जा पहुँचा। आज उसकी वहाँ पर ही ड्यूटी थी। वह वहाँ गया तो फकीरचन्द वहाँ पर उपस्थित था। गिरधारी चुपचाप चक्की चलाने के लिए भीतर चला गया। फकीरचन्द ने उसको बुला लिया और पूछा, "कहाँ गए थे?"

"हमारी मीटिंग थी।"

"कैसी मीटिंग थी?"

"मजदूरों की भलाई के लिए एक संगठन बन रहा है। उसमें मजदूर भर्ती करने के लिए सब एकत्रित हुए थे।"

"तो फिर भर्ती हो गए?"

"जी नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों नहीं हुए?"

"शेषराम ने भाँजी मार दी। उसने कुछ कह दिया और कोई भी आदमी आज सदस्य नहीं बना।"

"क्यों भाई शेषराम! तुमको गिरधारी की सभा में क्या दोष प्रतीत हुआ है?"

"मैंने इसको कहा था कि दूसरे किसानों के खेतों में तो मजदूरों की हालत और भी बुरी है। इसको पहले वहाँ जाकर अपनी सभा के सदस्य बनाने चाहिएँ।"

"क्यों गिरधारी! वहाँ क्यों नहीं बनाते?"

"हमने समझा है कि यहाँ तो सब मजदूर एकत्रित हैं। पहले यहीं से ही काम आरम्भ करना चाहिए।"

"और यह कहता है कि इसको एक सौ रुपया वेतन मिलना चाहिए।" शेषराम ने कहा।

"ओह! तो इतना इसको कहीं मिलता है?"

"बताओ गिरधारी!" शेषराम ने कह दिया।

"मुझको मोतीराम ने आश्वासन दिया है कि सेठ करोड़ीमल मुझको एक सौ रुपया देगा।"

"सच? मुझको यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि तुम अब इतने योग्य हो गए हो कि तुम्हारा मूल्य बाजार में एक सौ रुपया हो गया है। गिरधारी! तुम आज से काम से पृथक् कर दिए गए। मैं तो सौ रुपया दे नहीं सकता। मुझे इस काम के लिए चालीस रुपये में आदमी मिल जाता है। मैं तुम्हारी हानि नहीं करना चाहता।"

"जाओ, बिहारीलाल से जाकर अपना हिसाब कर लो और कल से तुम सौ रुपये महीने पर सेठ करोड़ीमल की नौकरी कर लेना।"

इतना कह फकीरचन्द ने बृज को, जो पहले भी कभी-कभी चक्की का काम किया करता था, बुलाकर चक्की पर लगा दिया।

गिरधारी को शेषराम पर क्रोध चढ़ आया और वह शेषराम को यह कहता हुआ कि वह भी इस काम पर नहीं रह सकेगा, चला गया।

: 9 :

निर्वाचन के दिन गिरधारी ने यूनियन के सदस्यों को बहुत समझाया कि सूर्यकान्त ने इस यूनियन को बनाया है, इस कारण पहले वर्ष के लिए उसको ही इसका प्रधान बनाना चाहिए; वह बम्बई इत्यादि में यूनियन के काम को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सीखकर आया है, इस कारण उससे यूनियन को बहुत लाभ पहुँचेगा। गिरधारी के विरुद्ध यूसफ का कहना था, ''मोतीराम और सूर्यकान्त पहले ही सेठ करोड़ीमल के नौकर थे; अब गिरधारी भी सेठ द्वारा एक सौ रुपया महीने पर रख लिया गया है। सेठजी का प्रयोजन है बाबू फकीरचन्द को नुकसान पहुँचाना। हम फकीरचन्द के नौकर हैं। वह हमको अच्छा वेतन देता है। हमारे बाल-बच्चों के लिए स्कूल की फीस देता है, उनको किताबें देता है और उनके लिए दूध का प्रबन्ध किए हुए है। ये लोग हमको फकीरचन्द के विरुद्ध करने के लिए यहाँ प्रचार कर रहे हैं। दो मास से ये फकीरचन्द की निन्दा करते रहे हैं। दूसरे जमींदार तो अपने खेतों पर काम करने वालों को कुछ भी नहीं देते। उनके विरुद्ध सूर्यकान्त ने कभी कुछ नहीं कहा। इसका अर्थ यह हुआ कि हम, जो बाबू फकीरचन्द का दिया खाते हैं, फकीरचन्द की निन्दा और उसको हानि पहुँचाने के लिए सूर्यकान्त को अपना प्रधान बना लें, यह उचित नहीं।

''मेरा तो यह कहना है कि सूर्यकान्त पहले कहीं नौकरी करके देखे। तभी इसको मालूम होगा कि दूसरों के विरुद्ध किस प्रकार बोला जा सकता है।''

सूर्यकान्त के विरुद्ध शेषराम का नाम प्रधान पद के लिए रखा गया और वह छः वोटों के विरुद्ध पैंतालीस वोटों से प्रधान चुन लिया गया।

चुनाव के समाप्त होते ही मोतीराम ने कहा, शेषराम! अब तुम अपने चेले-चाटों को यहाँ से ले जाओ और उनको लेकर यहाँ नहीं आना।''

सूर्यकान्त यह नहीं चाहता था, परन्तु वह विवश था। जब शेषराम और यूनियन के अन्य सदस्य उठकर जाने लगे तो मोतीराम ने कह दिया, ''गिरधारी को पुनः नौकरी पर लगा देना, नहीं तो बहुत बुरा होगा।''

''पर भैया! इसको सेठ की नौकरी नहीं दिलाई क्या? यह तो कहता था कि तुमने इसको सौ रुपये की नौकरी दिलाने को कहा था।''

''यह तो तभी था जब सूर्यकान्त प्रधान बन जाता।''

इसपर एक और बोल पड़ा, ''तो हमारे साथ भी जो वचन दिया था, वह ऐसा ही था?''

''भाई! यहाँ क्या नौकरियों की खेती होती है? यदि तुम संगठन करते, जैसा हम चाहते थे, तो हम तुम सबका वेतन बढ़वा देते। अब हम क्या कर सकते हैं?''

इससे तो जिन्होंने सूर्यकान्त को वोट दिया था, वे लोग घबरा उठे। मीटिंग के पश्चात् वे शेषराम के पास जाकर अपनी-अपनी सफाई देने लगे। शेषराम का कहना था, ''तुम काम करते जाओ। बाबू इतना निर्दयी नहीं है कि वह तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मामूली-सी बात के लिए दण्ड दे।''

''गिरधारी को क्यों निकाल दिया है?'' एक ने पूछ लिया।

''उसकी बात दूसरी है। उसने मेरे सामने कहा था कि उसको सेठ करोड़ीमल एक सौ रुपया महीना वेतन देने को तैयार है।''

उसी रात को जब यूनियन के सदस्य चौधरी रामहरष के मकान पर एकत्रित हुए, तो उसने उनको समझाया कि मोतीराम तो भला आदमी नहीं है। उससे बचकर रहना चाहिए। साथ ही यदि किसी प्रकार का कष्ट है तो फकीरचन्द को कहकर उसको दूर करने का पूरा-पूरा यत्न किया जाएगा।

इस निर्वाचन के पश्चात् देवगढ़ का वातावरण शान्त दिखाई देने लगा था, परन्तु रामहरष के भेदिये यह समाचार ला रहे थे कि मोतीराम कुछ गड़बड़ करने की योजना बना रहा है। इससे उसने फकीरचन्द को कहकर कुछ चौकीदार भिन्न-भिन्न स्थानों पर बिठा दिए। रामहरष, जो गाँव की जनता की मानसिक अवस्था को भली-भाँति समझता था, कह रहा था कि मोतीराम फकीरचन्द की सम्पत्ति को हानि पहुँचाने का यत्न करेगा।

फकीरचन्द ने एक दिन मोतीराम को बुलाकर कहा भी, ''देखो मोतीराम! मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा, परन्तु तुम आरम्भ से ही मेरा विरोध करते चले आए हो। बताओ तुम क्या चाहते हो? मैं यथाशक्ति तुम्हारी सहायता करूँगा।''

मोतीराम ने कहा, ''बाबू! यह तुमको किसी ने गलत बात कही है कि मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। मेरा तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं। इसपर भी मैं मजदूरों की कमाई तुम्हारी जेब में जाती देख नहीं सकता।''

''तो तुम ऐसा क्यों नहीं करते कि एक किता भूमि राजासाहब से लेकर, स्वयं मजदूरों की कमाई मजदूरों में ही बाँटकर, एक उदाहरण बना दो। मेरे लिये भी विवशता हो जाएगी कि मैं वही कुछ अपने कर्मचारियों को दूँ, जो तुम दोगे।''

''मुझको क्या जरूरत पड़ी है जो मैं इतना झंझट मोल लूँ? जब मैं तुम्हें ही न्याय के लिए विवश कर सकता हूँ, तो मुझको एक नया न्यायालय खोलने की क्या आवश्यकता है?''

''मुझको कैसे विवश करोगे? तुम्हारी यूनियन तो तुम्हारा कहना मानती नहीं।''

''मानेगी, कुछ देर और ठहरो। बाबू! सौ दिन चोर के होते हैं तो एक दिन शाह का भी होता है।''

फकीरचन्द समझ नहीं सका कि यह चोर, जो स्वयं दो बार चोरी करने पर जेल भोग चुका है, आज कैसे उसको चोर कह रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोतीराम तो यह कहकर चला गया; परन्तु वह फकीरचन्द के लिए चिन्ता का विषय छोड़ गया। फकीरचन्द आशंका करने लगा था कि वह कुछ शरारत करेगा। इस कारण उसने चौधरी को कहकर अपने खेतों और चक्की इत्यादि सामान की देख-रेख दुगनी कर दी।

इसका परिणाम यह हुआ कि जब मोतीराम ने वार किया तो पकड़ा गया। कपड़े के कारखाने को आग लगाता हुआ मोतीराम पकड़ा गया। रात के बारह बजे कारखाने के चौकीदारों को कारखाने के समीप किसी के खिसकने का सन्देह हुआ। वे सतर्क हो गए। परन्तु जबतक वे मोतीराम को पकड़ सके, मोतीराम ने सूत के गोदाम में मिट्टी के तेल का जलता हुआ पलीता फेंक दिया था। मोतीराम पकड़ा गया, परन्तु पूर्ण कारखाना जलकर राख हो गया।

पुलिस ने मोतीराम को पकड़ा तो सूर्यकान्त को भी पकड़ लिया। मजदूरों ने बयान दिए। उन्होंने यूनियन का झगड़ा भी बता दिया। उनके बयानों से पुलिस को सन्देह हो गया कि सूर्यकान्त भी आग लगाने के षड्यन्त्र में सम्मिलित है। उसको भी पकड़कर हवालात में डाल दिया गया। मोतीराम को बहुत पीटा गया, परन्तु उसने सिवाय अपने और किसी का नाम नहीं लिया। इस कारण पुलिस सूर्यकान्त को जमानत पर छोड़ने के लिए विवश हो गई।

सूर्यकान्त ने गिरधारीलाल को सन्देश भेजा कि वह उसकी जमानत का प्रबन्ध कर दे। गिरधारीलाल चौधरी के पास पहुँचा और यत्न करने लगा कि वह उसका जामिन बन जाए। चौधरी ने गिरधारीलाल से पूछा, ''पण्डित! कितने की जमानत देनी होगी?''

''पाँच हजार की।''

''और यदि वह भाग गया तो पाँच हजार कौन देगा?''

''नहीं, वह भागेगा नहीं।''

''तुम कैसे जानते हो कि वह भागेगा नहीं?''

''वह बहुत भला आदमी है।''

''इसीलिए वह एक चोर और डाकू के साथ रहता था और उसके कहने के अनुसार फकीरचन्द के काम में विघ्न डालना चाहता था। नहीं गिरधारी! मैं उसका जामिन नहीं बनूँगा।''

गिरधारी तीन दिन तक गाँव के प्रत्येक पैसे वाले आदमी से मिलता रहा और यत्न करता रहा कि सूर्यकान्त की जमानत हो जाए, परन्तु कोई भी तैयार नहीं हुआ। वह प्रतिदिन सूर्यकान्त को हवालात में मिलता रहता था और उसको अपने प्रयत्न का विवरण देता रहता था। सूर्यकान्त का कहना था, ''मैं सौगन्धपूर्वक कहता हूँ कि मोतीराम ने यह आग लगाने का काम मुझसे पूछे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बिना किया है। यदि वह मुझसे पूछता तो मैं कभी भी उसको यह राय न देता।''

गिरधारी दिन-भर घूमते रहने से रात को बहुत थक जाता था और जाकर सो जाया करता था। उसको अपनी पत्नी से बातचीत करने का अवसर ही नहीं मिलता था। आज वह सूर्यकान्त को यह कहकर कि जमानत दिलवाने का काम उसके वश का नहीं, घर जल्दी ही आ गया। जब वह आया तो उसकी पत्नी मीना ने कहा, ''लूट लिया है न आनन्द! मैं कहती न थी कि मोतीराम की संगत में बैठने से दुःख पाओगे। आपकी नौकरी गई, क्योंकि आपको तो सौ रुपये महीने की नौकरी देने का वचन दिया हुआ था। पूरा कर दिया वह वचन मोतीराम ने? मुझको पन्द्रह-बीस रुपये की आय इस कपड़ा बुनने के कारखाने से हो जाती थी, वह कारखाना ही जला दिया मोतीराम ने और अब बच्चे भूखे, बिलख-बिलखकर रो रहे हैं। अब जाओ बम्बई और नौकरी ढूँढो, नहीं तो सबकुछ स्वाहा हो जाएगा।''

''गिरधारी को अपनी भूल समझ में आने लगी थी। उसने पूछा, ''तो आज दूध नहीं मिला?''

''दूध के लिए पैसे नहीं थे। ग्वाला कहता था कि पण्डित को तो सौ रुपये महीने की नौकरी मिल गई है, फिर उधार की क्या आवश्यकता पड़ गई? वास्तव में सब गाँव वालों ने हमारा बहिष्कार कर रखा है। सब लोग आप और मोतीराम से घृणा करने लगे हैं। मोतीराम को तो इस कारखाने को जलाने के कारण और आपको सूर्यकान्त, जो मोतीराम का साथी था, के लिए जमानत ढूँढ़ने के कारण गालियाँ मिलती हैं। मैं और बच्चे तो बीच में, व्यर्थ ही मारे जा रहे हैं।''

''जो कुछ हुआ, वह तो अब लौट नहीं सकता।'' गिरधारी ने आँखें भूमि की ओर किए हुए कहा—''अब समझ में नहीं आता कि क्या करूँ?''

''मैं तो विचार कर रही थी कि फकीरचन्द की माँ के पास जाऊँ। सुना है कि वह बहुत दयालु औरत है। पर डरती हूँ कि एक बार मुझको उनके घर नौकरी करने के लिए शेषराम ने कहा था और मोतीराम ने, जो अब आपका गुरु बना हुआ है, मुझको कहा था कि वहाँ जाकर मैं अपना मुख काला करूँगी और उनको बदनाम करूँगी। इससे विचार करती हूँ कि मैं क्यों वहाँ जाऊँ। आप जाइए और बाबू फकीरचन्द के पाँव पकड़कर क्षमा माँगिए। क्या जाने भगवान् उसके मन में दया पैदा कर दे।''

गिरधारी को मार्ग सूझ पड़ा। वह उसी समय फकीरचन्द के मकान की ओर चल पड़ा। फकीरचन्द अभी-अभी खेतों से लौटा था कि गिरधारी उसके सामने जा खड़ा हुआ। फकीरचन्द ने पूछा, ''गिरधारी! कैसे आए हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरधारी की आँखों से आँसू बह रहे थे। उसने भूमि पर बैठकर फकीरचन्द के पाँव पकड़ लिये और क्षमा माँगने लगा, "मालिक! क्षमा कर दो, बहुत भारी भूल हुई है। अब क्षमा कर दो।"

फकीरचन्द ने गिरधारी को हाथ से पकड़कर उठाया और उसको ढाढस बँधाते हुए कहा, "क्यों, क्या बात है? अरे! रो रहे हो?"

"गिरधारी की हिचकियाँ बँध गई थीं। फकीरचन्द ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "अरे, आदमी बनो। बताओ न, क्या बात है?"

गिरधारी के रोने का शब्द और फकीरचन्द के सान्त्वना के शब्द सुनकर बिहारीलाल भी वहाँ आ पहुँचा। फकीरचन्द की माँ भी कमरे के बाहर आ खड़ी हुई थी। फकीरचन्द ने बिहारीलाल को कहा, "पीने का पानी मँगवाना, बिहारी!"

पानी आया, गिरधारी को पिलाया गया। जब उसका चित्त शान्त हुआ तो उसने आग लगने के समय से लेकर तीन दिन की पूर्ण कथा और फिर अपनी पत्नी का कथन सुना दिया। फकीरचन्द उसकी इस भाग-दौड़ और उसके घर की बुरी अवस्था की बात सुनकर भौंचक्का हो उसको देखता रह गया। उसने पूछा, "गिरधारी! एक बात पूछूँ? तुम सूर्यकान्त को छुड़ाने के लिए इतने उत्सुक क्यों हो?"

"बाबू! वह ब्राह्मण है। उसने मेरे सामने भगवान् की सौगन्ध खाकर कहा था कि आग लगाने की योजना उसकी राय से नहीं हुई। मुझको विश्वास है कि अब वह अपने किए पर पश्चात्ताप कर रहा था। यदि यह आग की घटना न भी होती तो भी वह स्वयं आपके पास आता और आपसे क्षमा माँगता।

"आग लगने के दिन वह चौधरी से मिला था और अपनी, आपके साथ व्यवहार में भूल को स्वीकार करता था। मैं समझता था कि गाँव के लोग, जो आपके प्रतिद्वन्द्वी हैं, वे उसकी जमानत देने के लिए तैयार हो जाएँगे, परन्तु, इस आग लगाने की घटना ने पूर्ण गाँव की सहानुभूति आपके साथ कर दी है। जो लोग आपको, मजदूरों का वेतन बढ़वाने के लिए गाली दिया करते हैं, वे भी आग लगाने वाले की सराहना नहीं कर सके। वे मोतीराम तथा सूर्यकान्त से घृणा करते हैं। सूर्यकान्त मोतीराम का मित्र था और अब सब मुझसे भी घृणा करने लगे हैं क्योंकि मैं सूर्यकान्त के लिए जमानत ढूँढ़ रहा था। परिणाम यह हुआ है कि अब बच्चों के पीने के लिए दूध भी नहीं रहा।"

"क्या तुमको विश्वास है कि सूर्यकान्त सच्चे हृदय से पश्चात्ताप करता था?"

"बाबू! मेरी तो यही समझ में आया है। इसी कारण मैं चाहता था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको जमानत पर छुड़ाकर बाहर लाता तो वह आपसे क्षमा माँगता।''

फकीरचन्द ने अपने कर्मचारियों को यूनियन का चन्दा अपनी जेब से देकर, यूनियन तुड़वाई थी। इसमें बिहारीलाल ने उनको समझाने में भारी भाग लिया था। अब भी वह कोई ऐसी ही बात करना चाहता था। उसने बिहारीलाल की ओर देखकर कहा, ''क्यों बिहारी! क्या समझे ?''

बिहारीलाल ने भाई के मन में उठ रहे उदगारों का अनुमान लगाकर कहा, ''भैया! इसके बच्चों को दूध तो मिलना ही चाहिए।''

''सन्तू! ओ सन्तु!!'' फकीरचन्द ने आवाज दी। उनकी माँ कमरे के बाहर खड़ी गिरधारी की कथा सुन रही थी। उसने घर के भीतर जाकर एक लोटे में दूध भेज दिया। सन्तू दूध लेकर आया और बोला, ''माँजी ने भेजा है।''

''गिरधारी! यह तुम ले लो और यह भी लो।'' फकीरचन्द ने जेब से पाँच रुपये का नोट निकालकर देते हुए कहा, ''घर जाओ और भोजन-सामग्री खरीदकर काम चलाओ। कल से काम पर आ जाना।''

गिरधारी चला गया तो फकीरचन्द ने बिहारी को कहा, ''मैं समझता हूँ कि सूर्यकान्त की जमानत देकर, उसको मानव बनने का अवसर दे दूँ। तुम्हारा क्या विचार है ?''

''भैया! ठीक ही है।''

''तो चलो चलें।'' दोनों थाने में जा पहुँचे।

: 10 :

फकीरचन्द भोजन कर बाहर चाँदनी में खाट डाले हुए बैठा था। बिहारीलाल सामने टहल रहा था। माँ भीतर सो गई थी। फकीरचन्द विचार कर रहा था कि मोतीराम तो सहायता से दूर हो गया है। वह तो उसकी सहायता कर देता यदि कानून का उल्लंघन किये बिना वह कर सकता। उसने एक बात का निश्चय किया हुआ था कि अपनी जानकारी में वह कानून नहीं तोड़ेगा। वह देश के कानून को भी धर्म का अंग समझता था।

बिहारीलाल मन में विचार कर रहा था कि भैया कितने उदार हैं! वह अपनी हानि सहन कर भी दूसरे का भला करने में संकोच नहीं करते। क्या यह नीति ठीक है ? इस प्रकार की उधेड़-बुन में वह मकान के बाहर लॉन में छिटक रही चाँदनी में टहल रहा था। इस समय सूर्यकान्त फकीरचन्द के सामने आकर खड़ा हो गया। फकीरचन्द ने उसको देखा तो कहा, ''आ गए हो सूर्य ?''

''जी हाँ, आपका बहुत ही आभारी हूँ। मुझको यहाँ की हवालात में भारी कष्ट था और यह कष्ट मुझको व्यर्थ में ही मिल रहा था।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सत्य? यहाँ गाँव में तो यह प्रसिद्ध हो रहा है कि यह तुम्हारी ही योजना थी कि मुझको हानि पहुँचाकर, यहाँ से भगा दिया जाए।"

"परन्तु किसी भी गाँव वाले ने मेरे विरुद्ध साक्षी नहीं की।"

"मैं जानता हूँ। इसपर भी यह मानता हूँ कि मोतीराम के कार्य का नैतिक उत्तरदायित्व तुम्हारा ही है। तुम पढ़े-लिखे आदमी हो और वह मूर्ख गँवार है। दोनों एक ही काम में लगे हुए थे। मोतीराम का काम भी उसी उद्देश्य की पूर्ति में हुआ है, जिसमें तुम दोनों संलग्न थे। इस सब बात को जानकर कौन कह सकता है कि तुम उसके काम के लिए उत्तरदायी नहीं?"

"इसपर भी आपने मेरी जमानत की है?"

"देखो सूर्यकान्त! मेरे मन की भावना को समझने के लिए अपने मस्तिष्क को पक्षपात से दूर करोगे तो समझ सकोगे। शुद्ध हृदय से समझने का यत्न करोगे तो मेरा व्यवहार ठीक ही प्रतीत होगा।

"कारखाने को आग लग गई और पाँच हजार से ऊपर की हानि हो गई। मैंने यह पाँच हजार रुपया लोक-सेवा-कार्य के लिए पृथक् कर रखा था। इसमें आय होने लगी थी और उस आय में से जो मेहनत-मजदूरी करने लगे थे, अपना भाग पाने लगे थे। गिरधारी की पत्नी को भी पिछले मास बीस रुपये से ऊपर मिला था। अब मोतीराम ने उसको आग लगा दी है। इससे उन सबको हानि पहुँची है, जिनको उसमें से उजरत मिलने लगी थी। आप लोगों ने मजदूरों का कल्याण करते-करते अकल्याण ही कर दिया है।

"रही मेरी बात। मैं मानव हूँ। इस नाते मेरा कर्त्तव्य है कि किसी भी दूसरे इन्सान को उठने का अवसर दूँ। मुझको किसी ने बताया था कि यह जो कुछ हुआ है, उस पर तुम्हें पश्चात्ताप लग रहा है। मैंने समझा कि यह समय है कि तुमको बाहर आकर खुली हवा में बैठ विचार करने का अवसर मिले। मैंने तो केवल यह अवसर तुम्हारे लिये उपलब्ध कर दिया है। यह अब तुम्हारे हाथ में ही है कि इस अवसर से लाभ उठाते हो अथवा नहीं।"

"मैं देवगढ़ छोड़कर चला जाऊँ तो क्या होगा?"

"मेरा पाँच हजार रुपया चला जाएगा और मानव-प्रकृति की श्रेष्ठता पर मेरे विश्वास को एक भारी ठेस पहुँचेगी।"

सूर्यकान्त इस प्रकार की बात सुनकर चकित रह गया। उसने बहुत देर तक विचार करने के बाद पूछा, "आप मुझको क्या करने को कहेंगे?"

"कुछ दिन तक आराम करो। अपने मन में विचार करो। नेकी और बुराई में भेद समझने का यत्न करो और अपने मन के आदेशानुसार काम करो।"

"बस?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''इससे अधिक मैं क्या कह सकता हूँ?''

''आज इस गाँव में मेरे रहने के लिए स्थान नहीं। जब तक मोतीराम के मुकद्दमे का फैसला नहीं हो जाता, मैं यहीं रहना चाहता हूँ। आप इसमें मेरी क्या सहायता कर सकते हैं?''

''अभी तो तुमको यहाँ खाट डलवा देता हूँ। आगे के लिए सुबह विचार कर लेंगे। भोजन किया है अथवा नहीं?''

''भोजन कर लिया है।''

फकीरचन्द ने सन्तू को कहकर वहाँ एक ओर खाट डलवा दी। उसपर बिस्तर बिछवा दिया और सूर्यकान्त को सोने के लिए धोती-कुरता मँगवाकर दे दिया।

अगले दिन सूर्यकान्त अभी सो ही रहा था कि फकीरचन्द प्रातः की नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर खेतों में काम पर चला गया। सूर्यकान्त को दस दिन के पश्चात् इस प्रकार खुले में सोने का अवसर मिला था। इस कारण वह सोया तो उसकी नींद दिन के आठ बजे ही खुल सकी।

बिहारीलाल, फकीरचन्द के आदेशानुसार चौधरी रामहरष को बुलाकर, सूर्यकान्त के गाँव में ठहरने का प्रबन्ध कर रहा था। सूर्यकान्त उठा तो बिहारीलाल और रामहरष उसके पास आकर, अपने प्रबन्ध के विषय में बताने लगे।

चौधरी ने कहा, ''सूर्य भैया! बाबू ने कहा है कि तुम्हारी इच्छा अभी गाँव में रहने की है और मोतीराम के मकान को पुलिस ने सील किया हुआ है। इस कारण तुम्हारे लिये एक मकान का चुनाव हमने कर लिया है। वह मेरे मकान के सामने है। सो यदि तुम चाहो तो चल सकते हो।''

सूर्यकान्त फकीरचन्द की ओर से, इस सतर्कता से प्रबन्ध होता देख चकित था। उसने कहा, ''चौधरी! फकीरचन्द बाबू कहाँ हैं?''

''वह इस समय खेतों में हैं।''

बिहारीलाल ने स्नानादि तथा अल्पाहार का प्रबन्ध कर दिया। इसके पश्चात् सूर्यकान्त फकीरचन्द को खेतों में जा मिला। फकीरचन्द गन्ने के खेतों का निरीक्षण कर, पम्प की ओर आ रहा था, जब सूर्यकान्त उसके पास आया। फकीरचन्द ने बताया, ''मैंने तुम्हारे लिये मकान का प्रबन्ध कर दिया है।''

''मुझको चौधरी ने बताया है, परन्तु मकान मात्र से तो काम चल नहीं सकता। मैं यह अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि मोतीराम का झगड़ा समाप्त होने तक देवगढ़ में रहूँ। परन्तु यहाँ रहने के लिए मेरे पास तो साधन भी नहीं। मैं यह कहने आया था कि यदि आप मुझको कोई काम दें, तो मैं अपने निर्वाह के लिए पैदा कर सकूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो सूर्यकान्त! तुम जहाँ चाहो जा सकते हो। मेरे पास तो तुम्हारा पता होना चाहिए, जिससे जब भी पुलिस को तुम्हारी आवश्यकता पड़े, मैं तुमको हाजिर कर सकूँ। इसलिए, केवल मेरी जमानत के कारण तुमको यहाँ पड़े रहने की आवश्यकता नहीं। हाँ, इसके अतिरिक्त यदि तुम यहाँ कोई काम कर, अपनी जीविका-उपार्जन करना चाहते हो, तो उस विषय पर विचार किया जा सकता है।"

"यह तो मैं रात ही समझ गया था। आप जब मेरी जमानत देकर, मुझको हवालात से निकलते देखने भी नहीं आए, तो मैं समझ गया था कि आपने एक काम ठीक समझ कर दिया है और शेष मेरे ऊपर छोड़ दिया है। इस अवस्था में यह मेरा कर्तव्य हो गया है कि मैं यहीं रहूँ। इसमें कठिनाई का मैंने वर्णन कर दिया है। इसके यह अर्थ नहीं कि मेरे पालन-पोषण का भार आपको वहन करना चाहिए। आप किसी प्रकार भी यह प्रबन्ध करने के लिए बाध्य नहीं हैं। मैं अपनी इच्छा से यहाँ रहना चाहता हूँ और निर्वाह के लिए कुछ उपयोगी कार्य करना चाहता हूँ। इसमें ही आपसे सहायता माँग रहा हूँ।"

"इसके विषय में कुछ विचार करना पड़ेगा। साथ ही तुम भी सोचो कि तुम क्या काम कर सकते हो। तुम्हारा जो पहला कार्य था, उसके विषय में अब क्या विचार है?"

"मैं जब अभी बालक ही था, तब से ही मेरे मन में यह भावना थी कि मैं मजदूरों की सेवा करूँगा। मैं स्वयं भी एक मजदूर का बेटा हूँ। मुझको स्मरण है कि मेरे पिता धनाभाव के कारण हस्पताल की दवाई खाते-खाते मरे थे। मेरी माँ का देहान्त मेरे होश सँभालने से पहले ही हो चुका था। मेरा पालन-पोषण भी एक मजदूर के घर में हुआ। मुझको मैट्रिक तक पढ़ने के लिए भीख माँगनी पड़ी है और फिर पास करने के बाद, जब महीनों तक दर-दर की ठोकरें खाने के बाद भी काम नहीं मिला, तो में मजदूरों के संगठन में लग गया। इसी काम में मैं दो बार जेल काट चुका हूँ। अब तीसरी बार जेल जाता-जाता बचा हूँ। अभी कह नहीं सकता कि मोतीराम क्या गुल खिलाएगा। जब उसका मुकद्दमा समाप्त हो जाएगा और उसको दण्ड मिल चुकेगा, तभी मैं निश्चिन्त हो सकूँगा कि मैं बच गया हूँ।"

"क्या तुम समझते हो कि तुमने कोई ऐसी खराबी की है, जिससे तुमको दण्ड हो सकता है?"

"इस स्थान पर तो एक ही बात की है। सेठ करोड़ीमल का धन खाया है और उसके षड्यन्त्र में, कि तुम्हारा सर्वनाश करना चाहिए, सम्मिलित हुआ हूँ। मैं समझता था कि मैं एक धनी आदमी की सहायता से दूसरे धनी का सर्वनाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहा हूँ। इस प्रकार गरीबों का खून चूसनेवालों में से एक की संख्या कम कर रहा हूँ।

"हवालात में बैठे हुए विचार करने पर मेरी समझ में आया है कि मैंने सेठ का विदोहन नहीं किया, प्रत्युत उसने मेरा विदोहन किया है। उसने मुझको अपने घृणित कार्य में सहायक बना लिया था।

"यहाँ तो मैं देखता हूँ कि मैं किसी प्रकार से भी, किसी उत्पादन-कार्य में सहायक नहीं हो सकता। इस कारण मैं क्या करूँ और कैसे जिऊँ, यह एक समस्या हो गई है।"

फकीरचन्द सूर्यकान्त की समस्या को विचार कर ही उससे काम ले सकता था। साथ ही वह समझता था कि जब वह मुकद्दमे तक वहाँ स्वयं ही रहना चाहता है, तो उसको इसमें सहायता देनी चाहिए। इस प्रकार विचारकर उसने कहा, "मनुष्य काम करने से डरता अथवा संकोच न करता हो, तो हर एक के लिए काम ढूँढा जा सकता है। इस कारण मेरा विचार है कि अभी तो तुम बिहारीलाल के साथ रहा करो। वह यहाँ पर ऐसे कामों की जाँच-पड़ताल में लगा हुआ है, जो एक किसान को खाली समय में लाभ दे सकते हैं। तुम उसकी सहायता करो और यदि काम तुमको रुचिकर सिद्ध हुआ, तो बिहारीलाल के पढ़ाई के लिए चले जाने पर, तुम उसके काम को जारी रख सकोगे।"

: 11 :

बिहारीलाल को, सूर्यकान्त से काम लेने के लिए उसको अपनी अर्थनीति समझानी आवश्यक हो गई। पहले ही दिन जब सूर्यकान्त बिहारीलाल के पास बात समझने के लिए पहुँचा तो इस विषय पर बात होने लगी कि कितना भाग मजदूर का होना चाहिए और कितना पैसा लगाने वाले का। काम, जिसके विषय में बिहारीलाल जाँच-पड़ताल कर रहा था, छपाई का था। स्त्रियों की साड़ियों, कुर्तियों और लहँगों के लिए कपड़े पर सुन्दर बेल-बूटे छापने का काम था। बिहारीलाल का अनुमान था कि किसान के परिवार के लोग रिक्त समय में यह काम कर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। इसी के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए और इस प्रकार रुपये की लागत का अनुमान लगाने के लिए तथा इससे प्रति घण्टा काम कर कितना पैदा किया जा सकता है, इसका हिसाब लगाने के लिए, बिहारीलाल काम कर रहा था। उसने कपड़ा, रंग, छापे और मजदूरी का अनुमान लगा लिया था। वह इस प्रकार के माल के लिए मण्डी, लागत और बिक्री की दर भी पता कर चुका था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यकान्त आया तो बिहारीलाल ने उसको समझाया, "देखो भैया सूर्यकान्त! हमने यह छपाई का काम यहाँ पर चलाकर, उन किसानों के लिए आय का साधन बनाना है, जो मेहनत के लिए तैयार हैं।

"इस काम पर पाँच हजार व्यय होने का अनुमान है। इतना रुपया व्यय कर हम चालीस आदमियों के, दस घण्टा नित्य काम करने का प्रबन्ध कर सकेंगे। ये लोग लगभग पाँच हजार रुपये का, महीने में छपाई का काम कर सकेंगे। मेरा अभिप्राय यह है कि यदि चालीस-के-चालीस अड्डे दस घण्टे काम करते रहें, तो इतने मूल्य का काम हो सकेगा। इसपर व्यय बैठेगा तीन हजार आठ सौ रुपया और बचत होगी एक हजार दो सौ रुपया।

"अब इसमें होगा यह कि अब अड्डे दस घण्टे चालू नहीं रहेंगे। मेरा अनुमान है कि जब काम जोर में होगा, तब भी तीस अड्डो से अधिक कभी भी चालू नहीं रहेंगे, अर्थात् आय रह जाएगी आठ सौ रुपया।

"यदि यह काम पूरा वर्ष-भर चालू रहे, तो लगभग नौ हजार रुपये की आय होगी।"

सूर्यकान्त ने कहा, "यह आय तो बहुत अधिक है। मैं समझता हूँ कि काम करने वालों को अधिक मजदूरी देनी चाहिए।"

"यह भी दी जा सकती है, परन्तु इसलिए नहीं कि इस प्रकार के काम में नौ हजार रुपये की आय बहुत अधिक है। नौ हजार का मतलब है, एक अड्डे का प्रबन्ध करने पर लगभग एक आना नित्य का, इस सब काम के संगठनकर्त्ता को मिलेगा। उस संगठनकर्त्ता को इसमें से सरकार के टैक्स और लोक-कल्याण के काम भी करने होंगे।"

"प्रति अड्डा एक आना नित्य उजरत अधिक कही जा सकती है। परन्तु इस एक आना प्रति अड्डा बचा लेने से कितने ही नए काम खुल सकते हैं और फिर कितने ही और अधिक आदमियों के लिए रोजगार का प्रबन्ध किया जा सकता है। देखो भैया सूर्यकान्त! जब हम यहाँ आए थे, तो हमने केवल तीन लकड़हारे नौकर रखे थे। अब हमारे कामों पर पचास से ऊपर आदमी काम कर रहे हैं। इस कपड़े के कारखाने में चार तो वेतनधारी काम करते थे और पचास के लगभग लोग यहाँ काम कर, अपनी आय में उन्नति कर रहे थे। इसी प्रकार जब यह काम खुलेगा तो चार आदमी वेतनधारी होंगे और चालीस से ऊपर आदमी इसके आश्रय जीविका पैदा करेंगे। यह सब-कुछ उस एक आने की बदौलत ही तो है, जो इन कामों का संगठनकर्त्ता प्रति आदमी प्रति दिन निकाल लेता है। उससे जानते हो और क्या लाभ हो रहा है गाँव वालों को? हमारे मजदूरों के बच्चों को स्कूल की फीस नहीं देनी पड़ती। सबको स्कूल में दूध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीने को मिलता है। वर्ष में दो बार नए कपड़े भी मिल जाते हैं। इसके अतिरिक्त योग्यता के बीस वजीफे स्कूल के विद्यार्थियों को मिलते हैं।''

इस लम्बे-चौड़े वक्तव्य को सुनकर सूर्यकान्त ने वही बात, जो उसने अपने साथियों से सीखी हुई थी, कह दी, ''यह सब काम तो सरकार के हैं- बच्चों को दूध देना, कपड़े पहिनाना, फीस माफ कर देना और वजीफे देना। आपको तो उजरत पूरी देनी चाहिए और ये काम सरकार के लिए छोड़ देने चाहिएँ।''

''तो तुम समझते हो कि सरकार के घर रुपयों की खेती होती है, जो वह ये सब काम बिना मजदूरों से कुछ भी लिये कर देगी? नहीं भैया सूर्य! सरकार यह काम कर सकेगी अथवा नहीं, मैं नहीं जानता। मैं तो यह जानता हूँ कि यदि सरकार इन सब कल्याण के कामों को करने लगेगी तो उसको भी रुपये की आवश्यकता पड़ेगी। इसके लिए जनता पर कर लगाएगी। उस कर को इकट्ठा करने के लिए बड़े-बड़े अधिकारी नियुक्त करेगी। वे हजारों रुपये वेतन लेंगे और फिर घूस भी खा सकते हैं। हम कर तो देंगे परन्तु हमारे ही काम वह रुपया आएगा, यह कहना कठिन है।

''भैया फकीरचन्द इस सब काम के संगठनकर्त्ता हैं। अतः वे सब संगठन-कार्य का मूल्य लेते हैं, मान लो, सरकार इस पूर्ण संगठन को अपने हाथों में लेती है, तो वह भैया के स्थान पर एक भारी वेतनधारी प्रबन्धक रखेगी और वह प्रबन्धक यदि गन्ना बोएगा, तो मुर्गियों का काम नहीं करेगा। जो पोल्ट्री का काम करेगा, वह चक्की का नहीं करेगा। इसी प्रकार चक्की का काम करने वाला आरे का काम नहीं करेगा। परिणाम जानते हो, क्या होगा? इस काम के लिए, जिसको भैया अकेले कर रहे हैं, अधिकारियों के एक दल की आवश्यकता पड़ जाएँगी। मजदूरों को तो जो मिलेगा, वह कहना कठिन है; हाँ ये अधिकारी लोग गुल-छर्रे जरूर उड़ाएँगे।''

''यह ठीक है।'' सूर्यकान्त ने बिहारीलाल की युक्ति को मानते हुए कहा, ''परन्तु सरकार इन बड़े-बड़े अफसरों का वेतन देने के लिए कर लेगी तो धनियों से ही लेगी। इस प्रकार निर्धनों का संगठन करने के लिए यदि धनियों पर कर लगता है, तो हानि ही क्या है?''

''नहीं-नहीं भैया सूर्य! तुम नहीं जानते। यदि वे सब काम, जो कारखाने वाले कर रहे हैं, सरकार करने लगी और जितने स्कूल, कॉलिज, जो प्राईवेट आदमी और संस्थाएँ चला रही हैं, सरकार को करने पड़े, तो सरकार को इतने धन की आवश्यकता पड़ जाएँगी कि निर्धन आदमी पर भी कर लग जाएगा। ऐसी नौबत आ सकती है कि दो गिरह कपड़ा खरीदने जाओगे, तो भी सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर माँगेगी।''

''हमारी योजना तो यह है कि सब काम सरकार अपने हाथ में ले ले। सबकी आय सरकार स्वयं ले लिया करे और सबको खाने-पीने को सरकार दे।''

''इससे क्या होगा, जानते हो? सब सरकार के नौकर के रूप में काम करेंगे और नौकर की भाँति कोई भी उत्तरदायित्व अनुभव नहीं करेगा। यह तो ठीक है कि सरकार डण्डे के बल से काम करा लेगी, परन्तु उस डण्डे के बल से काम कराने पर मजदूरों की आत्मा मर जाएँगी और दासों की एक जाति का निर्माण होगा।''

सूर्यकान्त बिहारीलाल की बात को समझने का यत्न कर रहा था। एक बात वह समझता था कि सम्पत्ति, चाहे तो सरकार की हो और चाहे किसी निजी व्यक्ति की, लाभ में अपना भाग माँगती है। व्यक्ति पूँजीपति होगा, तो उसको डरा-धमकाकर अथवा सरकार की सहायता से विवश कर, मजदूर का भाग दिलाया जा सकेगा। यदि सरकार पूँजीपति हुई तो मजदूर का भगवान् ही सहायक है। कोई अफसर किसी भी कारण से जिस किसी के भी विरुद्ध हो गया, तो उसके साथ न्याय होना कठिन हो जाएगा।

इसपर भी वह समझता था कि जब कोई खराब अफसर होगा, तो उसको निकलवाया जा सकेगा। इसके साथ ही वह यह भी जानता था कि राजनीतिक दलों में सब अपने-अपने दल वालों की सहायता करते हैं। ऐसी अवस्था में किसी खराब अफसर को, जब वह शासकों के दल का होगा, कैसे निकलवाया जा सकेगा?

आज बिहारीलाल ने उसको एक बहुत ही सरल पाठ पढ़ाया था। उसने कहा था कि सरकार यदि किसी की सहायता करेगी, तो वह उस सहायता को तभी कर सकेगी, जब वह उसके लिए धन मजदूरों के वेतन में से काटेगी। यही तो एक मालिक करता है। जैसे एक मालिक अपने पास बचे धन को अपनी इच्छानुसार व्यय करता है, वैसे ही सरकार धन को उनमें बाँटेगी, जो सरकार को स्थिर रखने के लिए नेताओं की सहायता करेंगे। वह मन में विचार करता था कि एक मजदूर की मजदूरी तो उसी तरह से हजम हो जाएगी, जैसे एक मालिक के होने पर होती है। तो एक सरल-चित्त व्यक्ति के भाग्य में परिवर्तन कैसे सम्भव है?

बिहारीलाल ने सूर्यकान्त के मन में उठ रहे संशयों को जान कर कहा, ''भैया सूर्य! इस सब समस्या का सुझाव यह है कि मालिक बनने का यत्न करो। राज्य के हाथ में सबकुछ दे देने से तो स्वयं मालिक बनोगे नहीं, साथ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण जाति को नौकरोंकी पदवी दिलवा दोगे।''

''पर सब तो मालिक बन नहीं सकते?''

''हाँ, यह इसी प्रकार है, जैसे सब नेता नहीं बन सकते। प्रश्न तो यह है कि नेता मालिक हो अथवा वह मालिक और मजदूर दोनों के ऊपर नियन्त्रण रखने वाला हो। जब नेता ही मालिक हो गए, तो स्मरण रखो फिर अन्याय को रोकने की क्षमता किसी में नहीं होगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम परिच्छेद

सूसन के लड़का हुआ। शकुन्तला इत्यादि उसको मिलने के लिए आती रहीं। सूसन से मिलने के लिए शकुन्तला उसको टेलीफोन कर लेती और जब उसको पता चल जाता कि सुन्दरलाल घर पर नहीं है, तो वह उससे मिलने चली जाती। सूसन का लड़का गौर-वर्णीय था। गोलमटोल, बहुत ही भोला प्रतीत होता था। शकुन्तला के अपने बच्चे भी अच्छे हृष्ट-पुष्ट थे, परन्तु दोनों काले रंग के थे। बड़ा लड़का था, जो अब स्कूल में पढ़ने जाता था और छोटी लड़की थी।

सूसन के लड़के को देख शकुन्तला के मन में ईर्ष्या होती थी, परन्तु वह अपने मन को नियन्त्रण में रख सन्तोष कर लिया करती थी। एक बात की उसको प्रसन्नता थी कि सूसन अभी तक बिना अभिमान प्रकट किए उससे मिलती थी। वह उससे बहुत ही स्नेहमय व्यवहार रखती थी।

सूसन को मिलने और बधाई देने सुन्दरलाल के परिचित तथा मित्र आते रहते थे। इनमें एक वकील सोमनाथ भी था। वह सूसन से बहुत हिल-मिल रहा था। सुन्दरलाल जैसे बिहारीलाल से ईर्ष्या करने लगा था, वैसे ही वह सोमनाथ का सूसन से अधिक मेलजोल पसन्द नहीं करता था। इस प्रकार के सन्देह से सूसन खिन्न रहती थी। जहाँ तक शकुन्तला का सम्बन्ध था, सुन्दरलाल को उसका वहाँ आना-जाना विदित नहीं था।

सोमनाथ वकील होने के नाते, भगेरिया परिवार की बहुत-सी बातें जानता था और वह सूसन को बताया करता था। एक दिन वह आया तो सुन्दरलाल के पिता के व्यवहार की बात करने लगा, उसने कहा, ''आज मिस्टर के० भगेरिया को व्यापार में बीस लाख की हानि हुई है।''

''बीस लाख की!'' सूसन ने विस्मय में पूछा, ''यह कैसे हो सकता है?''

''मिस्टर के० इसी प्रकार बने थे और ऐसा प्रतीत होता है कि इसी प्रकार दिवालिया हो जाएँगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या मतलब?" सूसन ने चिन्ता में मुख लम्बा कर पूछा।

"मतलब यह है कि सन् 1919 में सोने का भाव गिरने लगा तो मिस्टर के० सोना बेचने लगे। भगवान् की कृपा हुई कि एक सप्ताह में वे दो करोड़ रुपये के मालिक हो गए। उस समय इन्होंने कपड़े के दो कारखाने खरीद लिये। सन् 1921 और 22 में महात्मा गांधीजी का आन्दोलन चल पड़ा। देसी कपड़े वालों के पौबारह होने लगे। बस फिर क्या था, दो के चार कारखाने हो गए।

"ऐसा प्रतीत होता है कि अब गाड़ी अपने आरम्भ के स्टेशन पर लौट रही है। इस वर्ष बड़े भगेरिया को एक करोड़ रुपये की हानि हो चुकी है।"

"मिस्टर सोम! आप यह सब कैसे जानते हैं?"

"मैं वकील हूँ और सट्टा बाजार में जो कुछ होता है, मुझको मालूम रहता है। प्राय: दिवाला निकालने वाले सेठ मेरे पास ही आते हैं और मैं उनको सम्पत्ति छिपाकर बचाने की तरकीब बताया करता हूँ।"

सूसन को यह सब, व्यापार के हेर-फेर का पता नहीं था। इस कारण उस रात जब सुन्दरलाल आया तो उसने उसके पिता के व्यापार की बात चला दी। उसने पूछा, "आप और आपके पिता क्या व्यापार करते हैं?"

"क्यों?" सुन्दरलाल ने सतर्क होकर पूछा।

"सुना है आपके पिता को भारी हानि हो रही है!"

"किससे सुना है?"

"आपके मित्र मि० सोम से। वह आज आए थे और बातों-ही-बातों में बता गए कि पिताजी को एक करोड़ रुपये की हानि हो चुकी है।"

"यह सोम का बच्चा यहाँ क्या करने आया था?"

"वह कभी-कभी यहाँ चाय पीने आ जाया करता है। बहुत ही भला और सभ्य स्वभाव का व्यक्ति है। उसको बातें करने का ढंग आता है। जब आता है तो दिल बहला रहता है।"

"देखो सूसन! इस आदमी को बहुत मुँह नहीं लगाना चाहिए। वह पक्का चार सौ बीस है। लोगों को झूठे हिसाब बनाने में राय दे-देकर, अपनी जीविका चलाता है।"

"बहुत खराब आदमी है! मुझको तो विस्मय इस बात का है कि ऐसे आदमी का, आपने मेरे साथ परिचय क्यों कराया?"

"मुन्ने के नामकरण के दिन तो बहुत से लोग आए थे। उनमें अच्छे भी थे और बुरे भी। इस प्रकार सोमनाथ भी आ गया। यह बहुत ही दुष्ट है। तुमसे तो मित्रता ही कर बैठा है।"

"पर आप तो बिहारीलाल के विषय में भी यही कहते थे। वह न तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकील था और न ही किसी प्रकार से दुष्ट।''

''तो वह भी तुमसे मिलता रहता है क्या?''

''एक बार मैंने उसको निमन्त्रण भी दिया था, परन्तु उसने कह दिया था कि जब तक मि० सुन्दरलाल स्वयं उसको अपने घर नहीं बुलाएँगे, वह यहाँ नहीं आएगा। हाँ, कभी-कभी किसी होटल में चाय इत्यादि पीते हुए मिल जाता है।''

''शकुन्तला भी कभी मिली है आजकल?''

''हाँ, जिस दिन लड़के का नामकरण-संस्कार था, उस दिन लड़के को सोने की एक चेन दे गई थी।''

''तुमने पहले तो कभी भी नहीं बताया?''

''आपने भी पहले कभी पूछा नहीं। उसने बच्चे के गले में वह चेन डालते हुए कहा था, 'यह सूसन के बच्चे के लिए है, उसकी मौसी की ओर से।' ''

''बिना बच्चे के पिता के सूसन के बच्चा भी हो गया!''

''मैंने उसको यही कहा था। इसपर वह कहने लगी, 'उनके तो और भी बच्चे हैं। इसलिए उनका नाम नहीं लिया कि कहीं भ्रम न हो जाए।' ''

सुन्दरलाल कुछ लज्जा अनुभव करने लगा था। शकुन्तला का इस प्रकार कहने का अर्थ था कि उसने अपने दूसरे बच्चों को भुलाया हुआ है।

सूसन ने बात को पुनः व्यापार की ओर ले जाकर पूछा, ''क्या आप भी वही व्यापार करते हैं, जो आपके पिता करते हैं?''

''हाँ करता तो वही हूँ। अब तुमने इस विषय पर बात आरम्भ कर दी है तो यह भी सुन लो कि मैं पिताजी से पृथक् हो चुका हूँ। इस कारण यदि उनको हानि हुई और कभी उनका दिवाला निकला, तब भी मेरी परिस्थिति में अन्तर नहीं पड़ेगा।''

''मैं अन्तर की बात नहीं पूछ रही। मैं तो यह जानना चाहती हूँ कि आप भी सट्टे का व्यापार करते हैं क्या?''

''करता तो हूँ। पहले पिताजी ने मुझको अपने कारखानों में जनरल मैनेजर के रूप में दो हजार रुपये पर नौकर रखा हुआ था, परन्तु सट्टे में घाटे-पर-घाटा आने से कारखाने गिरवी पड़ गए और मेरी नौकरी नहीं रही। अब तो मेरा गुजारा सट्टे पर ही हो रहा है।''

''आपके पिताजी को तो हानि हो रही है और आपको लाभ हो रहा है क्या?''

''हाँ, पिछले एक वर्ष में मैंने दस लाख रुपये के लगभग कमाए हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह कैसे हो गया? यदि आपको लाभ करने का ढंग आता है, तो आप अपने पिता को क्यों नहीं बता देते?"

सुन्दरलाल हँस पड़ा। उसने पूछा, "कभी किसी को जुआ खेलते देखा है तुमने?"

"हाँ, हमारे गाँव में एक क्लब है। एक दिन आपको भी मैं वहाँ ले गई थी। वहाँ प्रायः जुआ होता है।"

"कभी किसी को हारते देखा है?"

"कई बार। एक को तो बहुत बड़ी-बड़ी रकमें हारते देखा था।"

"तो देखा होगा कि जितना अधिक कोई हारता है, उतनी ही उसकी खेलने में रुचि बढ़ती जाती है।"

"हाँ, हमारे गाँव में एक व्रयुटर कैट्ट था। वह एक दिन हारने लगा तो दस हजार लूइस एकदम हार गया। तत्पश्चात् अपना कर्जा न दे सकने के कारण उसने अपने को गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी।"

"यही बात सटोरियों की है। सट्टा भी एक प्रकार का जुआ है। ज्यों-ज्यों एक आदमी उसमें हानि उठाता है, त्यों-त्यों वह और बड़े दाँव लगाता जाता है। पिताजी की भी यही हालत हो रही है।"

सूसन इस मीमांसा से चकित रह गई। उसने कहा, "मैं समझती हूँ कि आप जैसे समझदार व्यक्ति को तो इस प्रकार का व्यापार नहीं करना चाहिए।"

"मैं समझता हूँ कि मेरे जैसे समझदार व्यक्ति को ही तो इस प्रकार का व्यापार करना चाहिए। मैं अपने मन पर पूरा काबू रखता हूँ। जब हारने का समय आता है तो मैं क्रय-विक्रय बन्द कर देता हूँ।"

"मैं समझती हूँ कि यह व्यापार नहीं है। यह तो जुआ है। ऐसा करना उचित नहीं।"

"तो फिर क्या करूँ? बेकार तो मैं बैठ नहीं सकता।"

मैं क्या करूँ के प्रश्न ने सूसन के मन में हलचल मचा दी। अगले दिन सोमनाथ आया तो सूसन ने कह दिया, "मैं समझती हूँ कि आपको बिना किसी काम के यहाँ नहीं आना चाहिए।"

"मैडम! आप क्या समझती हैं कि मैं बिना काम के यहाँ आता हूँ? नहीं, यह बात नहीं। मेरा कुछ काम है। उसके सम्बन्ध में ही मैं यहाँ आया करता हूँ। मैं अपना काम कर रहा हूँ।"

"मैं नहीं समझी। आपको यहाँ क्या काम है?"

"मैं इस बात को जानने का यत्न कर रहा हूँ कि आपका और भगेरियाजी का क्या सम्बन्ध है? यों तो आप यहाँ पर पति-पत्नी के रूप में' रहते हैं, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका विवाह नहीं हुआ। इस कारण आप कानून से भगेरियानी की पत्नी नहीं हैं, तो क्या हैं? मुझे पता चल गया है कि आप मि० सुन्दरलाल की साढ़े छः लाख रुपये में खरीदी हुई रखैल हैं। कानून से आप वेश्या हैं।''

''ठीक है। अब यह जानकर आप क्या करना चाहते हैं?''

''मैंने इस विषय में सब प्रमाण एकत्रित कर लिये हैं। आपसे उनका समर्थन चाहता था। आपने समर्थन मौखिक तो कर दिया है। यदि यह प्रमाण लिखित मिल जाए तो मेरा काम समाप्त हो जाएगा।''

''अच्छी बात है। आप नीचे उतर जाइए नहीं तो मुझको पुलिस बुलानी पड़ेगी।''

''देखो मैडम! घबराने और क्रोध करने की आवश्यकता नहीं। मैं अपने ज्ञान का आपके विरुद्ध प्रयोग नहीं कर रहा। इस ज्ञान को कोई खरीद रहा है और वह इसके लिए मुझको एक भारी राशि दे रहा है।''

''अभी इसी क्षण चले जाइए, अन्यथा ठीक नहीं होगा।''

''आप रुष्ट हो गईं? मैं तो समझता था कि आपको कम-से-कम इतना तो जानने की इच्छा रखनी ही चाहिए कि वह कौन व्यक्ति है, जो आपके इस रहस्य को जानने के लिए उत्सुक है। भला बूझिए कि वह कौन हो सकता है?''

इस समय सूसन को बहुत ही क्रोध चढ़ आया। उसने उठकर टेलीफोन का चोंगा उठाया, तो सोमनाथ भी खड़ा हो गया। उसने सीढ़ियों की ओर जाते हुए कहा, ''कोई आवश्यकता नहीं, टेलीफोन करने की। मैं जा रहा हूँ। अच्छा, नमस्ते, फिर मिलेंगे।''

: 2 :

सूसन को, सोमनाय के इतने भयानक आदमी सिद्ध होने पर, भारी क्रोध चढ़ आया। इसपर भी वह समझ न सकी कि क्या किया जा सकता है। इस स्थिति में उसने एक चौकीदार नौकर रखने का निश्चय कर लिया। उसने यह भी विचार किया कि वह किसी से बिना पूर्व निश्चय के भेंट नहीं किया करेगी।

परन्तु वह यह नहीं जान सकी थी कि उसके निज के विषय में कोई क्यों जानने का यत्न कर रहा है। उसका सन्देह सुन्दरलाल के पिता पर ही जाता था। परन्तु यह सोमनाथ तो कुन्दनलाल को गालियाँ दिया करता था। इससे उसको विश्वास हो गया कि यह कुन्दनलाल के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति ही हो सकता है। पर वह कौन हो सकता है, उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

इससे वह अति खिन्न मन कपड़े पहन घर से निकल गई। वह मन में सोमनाथ के व्यवहार पर विचार करती हुई, बिना किसी लक्ष्य स्थान का विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किए, घर से निकली तो मैरीन ड्राइव पर से होती हुई मालाबार हिल की ओर जाने लगी। एक घंटा भर पैदल चलती हुई वह कुछ थकी-सी अनुभव करने लगी थी। इस कारण घर की तरफ लौट पड़ी। इस सब समय वह विचार करती रही थी कि उसके पति का सट्टा खेलना और उसके श्वसुर का दिवाला पिट जाना, भला उसके जीवन पर क्या प्रभाव डाल सकते हैं? उसको प्रत्यक्ष रूप में इसके साथ अपना किसी प्रकार का भी सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता था। इतना वह जानती थी कि उसके पास अपनी एक सम्पत्ति है। यदि उसका पति कभी बहुत हानि भी उठाएगा, तो उसको निराश होने का कोई कारण नहीं। उसके पास जीवन-निर्वाह के लिए पर्याप्त होगा।

इसपर भी वह सोचती थी कि यदि सट्टा जुआ ही है तो ऐसा व्यापार करने से लाभ ही क्या है?

इस प्रकार के विचारों में वह चली जा रही थी कि बिहारीलाल चाय लेने के लिए एक होटल में घुसता उसको दिखाई दिया। सूसन लपककर उसके सामने जा खड़ी हुई। इसी समय उसको सुन्दरलाल का कथन भी स्मरण हो आया। उसके मन में आज अपनी सूझ-बूझ पर सन्देह उत्पन्न हो चुका था। वह समझती थी कि सोमनाथ एक अच्छा आदमी है, परन्तु वह निकला बहुत ही खराब आदमी। वह विचार करती थी कि कहीं बिहारीलाल भी वैसा ही न हो। इसपर भी अब तो वह उसके सामने जा खड़ी हुई थी, अतः पीछे लौटना उचित नहीं था। वह विस्मय में बिहारीलाल का मुख देख रही थी। वास्तव में वह विचार कर ही रही थी कि उसको बुलाए अथवा क्षमा माँग चली जाए। वह अभी विचार कर ही रही थी कि बिहारीलाल ने बुला लिया, ''सूसन बहिन! सुनाओ, कैसी हो? बच्चा कैसा है? उसका नाम रखा है अथवा नहीं?''

''रखा तो है—मोहन। कैसा है?''

''बहुत सुन्दर है। कभी-कभी मन में उसको देखने की इच्छा होती है, परन्तु जब तक वह 'नर्सरी' में है, यह सम्भव प्रतीत नहीं होता।''

''सम्भव क्यों नहीं? एक दिन शकुन्तला आई थी और उसके गले में एक सोने की चेन डाल गई थी। बिहारी मामा भी आएगा तो कुछ भेंट देगा ही।''

इस समय दोनों एक मेज पर जा बैठे। बिहारीलाल ने कहा, ''मैं मिस्टर सुन्दरलाल के घर बिना उनके आमन्त्रण के नहीं जाऊँगा और तुम कभी बच्चे को लेकर बाहर आती नहीं।''

''अच्छा, तो मैं एक दिन इस बात का प्रबन्ध करूँगी। और सुनाओ, क्या हो रहा है?''

''मैं तो अपनी पढ़ाई में इतना व्यस्त हूँ कि मुझको बाहर की बातों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत कम ज्ञान है। यह बात तो शकुन्तला से पता चली थी कि तुम्हारे लड़का हुआ है; परन्तु यह उसने नहीं बताया कि वह स्वयं उसको भेंट भी दे चुकी है।''

''वह और ललिता कभी-कभी घर पर तो आती हैं, परन्तु भगेरिया जी की अनुपस्थिति में।''

''ठीक है। उनकी बात दूसरी है और मेरी दूसरी। मैं अपनी बहिन सूसन पर किसी प्रकार का लांछन आने नहीं देना चाहता।''

बात सूसन ने बदल दी। उसने सोमनाथ की बात बताते हुए कहा, ''आज मैंने उसको घर से निकाल दिया है।''

''यह तो ठीक ही किया है। ऐसे आदमी को 'ब्लैक मेलर' कहा जाता है। वह तुम्हारा कोई रहस्य जानकर, उसका दाम तुमसे वसूल करना चाहता होगा। उसको कोई ऐसी बात मिली नहीं, जिससे वह तुमसे कुछ रुपया ऐंठ सकता।''

''बहुत ही बुरा आदमी है, वह! इसपर भी उसकी एक बात मुझे ठीक ही प्रतीत हुई। वह कहता था कि सट्टे का व्यापार करने वालों का वही अन्त होता है जो जुआ खेलने वालों का होता है। अर्थात् आत्म-हत्या।''

''यह तो ठीक ही है। देखो सूसन बहिन! मैं बताता हूँ। संसार में दो प्रकार के काम हैं। एक तो निर्माणात्मक (क्रिएटिव) और दूसरे परिकल्पी (स्पैकुलेटिव)। मैं समझता हूँ कि जो व्यक्ति निर्माणात्मक कार्य में संलग्न नहीं, वह संसार में भाररूप ही है।''

''निर्माणात्मक काम कौन-से होते हैं?''

''जिनसे मानव समाज के प्रयोग की किसी वस्तु का निर्माण हो।''

''इसका मतलब है कि कपड़े की मिल खोलना निर्माणात्मक कार्य है।''

''हाँ; और सट्टे का व्यापार परिकल्पी है। इसी प्रकार जुआ खेलना है।''

''इसका अर्थ तो यह हुआ कि संसार में अधिकांश कार्य निर्माणात्मक ही हैं। परिकल्पी काम तो बहुत ही कम हैं?''

''हाँ, परन्तु मनुष्य प्रायः निर्माणात्मक कामों के साथ-साथ परिकल्पी काम भी मिला देता है जिससे दोनों में भेदभाव करना अति कठिन हो जाता है। उदाहरण के रूप में कपड़े का काम ही ले लो। वह स्वयं तो निर्माणात्मक ही है, परन्तु कपड़े के व्यापारी गर्मी की ऋतु में कपड़े खरीदकर रख लेते हैं और दीवाली के समय अथवा शरद् ऋतु के समय बेचते हैं। दोनों समय माँग में अन्तर होने के कारण भाव में अन्तर हो जाता है और इस प्रकार केवल-मात्र रुपया लगाने से लाभ कर लेते हैं। कार्य का यह अंश तो परिकल्पी ही है। इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रकार अन्य कामों में भी होता है। इससे मानव समाज को हानि भी होती है। सबसे बड़ी हानि यह है कि ऐसा करने वालों के स्वभाव बिगड़ जाते हैं।''

''क्या वह व्यक्ति, जो परिकल्पी काम करता है, स्वभाव से भी बिगड़ जाता है?''

''ऐसे आदमी के स्वभाव का बिगड़ना अनिवार्य है। इस प्रकार के कामों में झूठ, चोरी, लुकाव-छिपाव, धोखा-धड़ी होना निश्चित है। बार-बार ऐसा करने वालों के स्वभाव में अन्तर पड़ना भी निश्चित ही है। इसके अतिरिक्त इस प्रकार के काम से लोक-कल्याण की कोई बात बनती नहीं। जो बिना किसी प्रकार का निर्माण कार्य किए अर्थात् दूसरों की आवश्यकता के पूरा करने में भाग लिये बिना, अन्न आता है, उसका अन्न विष रूप हो जाता है। इसी से तो गीता में जीवन को यज्ञ रूप बनाने के लिए कहा है और अपने भाग के लिए यज्ञ को हविमात्र ही प्रयोग करने को लिखा है।''

सूसन के लिए यह जीवन-मीमांसा सर्वथा नवीन थी। वह इसका अर्थ समझने में विचारमग्न थी कि बिहारीलाल ने अपने कथन को और स्पष्ट करने के लिए कह दिया, ''सट्टे के काम को तथा और इसी प्रकार के कामों को हम साधारण भाषा में हेरा-फेरी कहते हैं। इसमें निर्माणात्मक काम तो कुछ होता नहीं। हाँ, भाव-ताव कर और अन्य लोगों की आवश्यकताओं का लाभ उठाकर, अपना लाभ बना लिया जाता है। इसको तस्कर व्यापार भी कहा जा सकता है।''

''तो आपका मतलब है कि सेठ करोड़ीमल तथा सेठ कुन्दनलाल अथवा आपके जीजा केवल हेरा-फेरी कर रहे हैं, इसी कारण उनके विचार करने का ढंग हममें भिन्न है?''

''हाँ; जैसा अन्न खाया जाता है, वैसा ही शरीर तथा मन बनता है। अन्न अच्छा अथवा बुरा, उसमें उपयोगी तथा अनुपयोगी पदार्थों पर निर्भर तो करता है, साथ ही वह अन्न कैसे प्राप्त किया जाता है, यह भी अन्न को अच्छा अथवा बुरा बनाता है। मैं तो ऐसा ही समझता हूँ।

''देखो, हमारे गाँव में एक समाजवादी आ पहुँचे थे। उनका विचार था कि भाई साहब अपने कर्मचारियों को लूट रहे हैं। उनसे दिन में नौ घण्टे काम लेते हैं और उनको बहुत ही मामूली-सा वेतन देकर स्वयं मालमाल हो रहे हैं। परन्तु जब उनका वास्तविकता से वास्ता पड़ा, तो वे समझ गए कि भाई साहब का काम निर्माणात्मक है और उनके काम को करने वाले संसार में बहुत ही कम संख्या में हैं। यदि भाई साहब उस काम से निकल जाएँ, तो मजदूरों की मेहनत का मूल्य कुछ भी नहीं रह जाता। निर्माणात्मक कामों में निर्माण कार्य को जानने वाला व्यक्ति सदा मुख्य होता है; परन्तु जहाँ काम केवल परिकल्पी हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वहाँ कार्य के जानने और न जानने का प्रश्न ही नहीं रह जाता। प्रत्येक बात और उसका परिणाम एक घटनामात्र ही होता है। इस कारण उस कार्य में कुछ भी निर्माण नहीं हुआ।

''वह समाजवादी जब यह समझ गया कि जैसा काम भैया कर रहे हैं, वैसा कोई भी मजदूर कर नहीं सकता, तो कहने लगा कि यह निर्माण का काम तो सरकार कर देगी। मेरा उनको कहना था कि हमें इसमें आपत्ति नहीं। भारत बहुत लम्बा-चौड़ा देश है। सरकार किसी एक स्थान पर काम आरम्भ कर दे। यदि वहाँ पर सरकार का कार्य और उसका फल अधिक अच्छा हुआ, तो स्वाभाविक रूप में मजदूर हमारे फार्म से काम छोड़कर, सरकार के फार्म पर काम करने चले जाएँगे अथवा हमको भी अपना फार्म उतना ही अच्छा और मजदूरों को वेतन उतना ही अधिक देना पड़ जाएगा।

''यह उस समाजवादी के वश की बात नहीं थी। तब मैंने उसको बताया कि निर्माणात्मक कार्यों को जाननेवाला और उन कामों का संगठन करनेवाला निस्संदेह धनी हो जाएगा। यदि सरकार उसको अपना वेतनधारी बनाकर, उससे काम लेना चाहेगी, तो उसकी कार्य तथा संगठन करने की योग्यता कुंठित हो जाएगी और काम उतनी अच्छाई से नहीं हो सकेगा।

''ये लोग स्वयं किसी कार्य को करने के अयोग्य होने से, योग्य व्यक्तियों को भी अपने स्तर पर नीचे लाने का विचार करने लगे हैं। स्वयं मालिक बनने की योग्यता न रखने से किसी दूसरे को भी मालिक देख नहीं सकते और सबका मालिक सरकार को बनाना चाहते हैं। मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि धन पैदा करने का उपाय निर्माणात्मक कार्य करने की योग्यता उत्पन्न करना है। परिकल्पी कार्य करने से धन उत्पन्न नहीं होता। हाँ, धन-संग्रह होता है। धन-संग्रह मात्र तो ठीक कार्य नहीं है।''

सूसन की समझ में बात आ रही थी। उसने समझा था कि उसका श्वसुर और पति धन पैदा नहीं कर रहे। वे तो केवल धन-संग्रह कर रहे हैं। धन का संग्रह मात्र एक अच्छा काम नहीं होने से, काम करनेवालों को भी बिगाड़ देता है।

: 3 :

सूसन को बिहारीलाल की व्यापार की विवेचना सुन बहुत ही चिन्ता लग गई थी। वह समझ गई थी कि कोई भी काम, जिससे समाज को व्यक्तिगत रूप में अथवा सामूहिक रूप में लाभ न हो, करना हेरी-फेरी करना है। समाज के घटकों के लिए कुछ निर्माण करना ही वास्तविक काम है। शेष तो काम कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही नहीं जा सकता और उससे लाभ उठाना चोरी करना है।

वह इन विचारों पर कई दिन तक मनन करती रही। कभी-कभी सुन्दरलाल उसको बता देता था कि उसको महीने में इतने हजार का लाभ हुआ है। यह सुन वह गम्भीर हो जाती थी। वह अपने मन में पूछती थी कि समाज को क्या लाभ हुआ है इस काम से, जिससे उसके पति को इतने हजार का लाभ हुआ है ? एक दिन उससे रहा नहीं गया। उसने पूछ ही लिया, ''आपको इन दिनों दस हजार का लाभ हुआ है ? यह रुपया कहाँ से आया ?''

सुन्दरलाल इस प्रश्न का अभिप्राय नहीं समझा। उसने पूछा, ''आता कहाँ से ? मैंने पिछले सप्ताह चैम्बर में दस हजार रुपया जमा करा दिया था और दस हजार तोला सोना खरीदा था। मेरा मतलब है कि चैम्बर में कई लोग उस दिन सोना बेच रहे थे। मैंने खरीद लिया। कुछ ही दिन में सोने का भाव चार आने तोला बढ़ गया। मैंने अपना सोना बेच दिया। इस प्रकार मुझको इस एक ही सौदे में ढाई हजार रुपये का लाभ हो गया।''

''तो यह लाभ उन बेचने वालों ने दिया है ? पर मैं पूछती हूँ कि इन ढाई हजार के बदले में आपने समाज का अथवा उन आदमियों का ही, जिन्होंने वह ढाई हजार आपको दिया है, क्या किया है ?''

''करता क्या ? भाव बढ़ गया, इस कारण उनको मुझे चार आने प्रति तोला देना पड़ा।''

''इसपर भी आपने कोई ऐसा काम नहीं किया, जिससे किसी को भी, किसी प्रकार से इतने रुपये का लाभ पहुँचा हो ?''

''सूसन ! तुम नहीं समझतीं। यह व्यापार है।''

''मैं समझती हूँ कि यह ठगी है। यह तो जुए से भी गई-गुजरी बात है। जुए में तो खेलने वाले ही हानि-लाभ उठाते हैं और इसमें तो बाजार के भावों पर भी प्रभाव पड़ता है।''

''तो फिर क्या किया जाए ?''

''आप कोई ऐसा काम क्यों नहीं करते, जिसका लाभ जनता को भी हो ? आप जो लाभ उठाते हैं, उसके प्रतिकार में कुछ समाज को भी मिलना चाहिए।''

इस प्रकार की बात सुनकर सुन्दरलाल विचार करने लगा कि ऐसा कौन-सा काम हो सकता है, जिससे समाज को लाभ पहुँचे। कुछ विचारकर उसने कहा, ''पिताजी के कारखाने थे। मैं उनमें काम करता था, परन्तु अब वे रहे नहीं।''

सूसन ने कहा, ''मैं समझती हूँ कि उनमें भी आप कोई उपयोगी काम नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहे थे। यदि कोई ऐसा काम कर रहे होते, जो कारखाने चलाने के लिए आवश्यक होता, तो नए मालिक आपको निकालते नहीं। आप तो वहाँ थे, केवल इसलिए कि आप मालिक के लड़के थे। मालिक गया तो उसका लड़का भी गया। मैं तो यह चाहती हूँ कि आप कोई ऐसा काम करिए, जो वास्तव में उपयोगी हो और समाज आपके उस काम से हटाए जाने को सहन न कर सके।''

''मुझको कोई ऐसा काम करना आता नहीं।''

''विचार तो करिए।''

''विचार क्या करूँ? मैं बम्बई यूनिवर्सिटी का ग्रेजुएट अवश्य हूँ, परन्तु मैं कोई काम करना नहीं जानता, जो इतना उपयोगी हो कि उसमें समाज को मेरी आवश्यकता पड़े।''

सूसन समझ गई कि उसका पति समाज के उस अंग का सदस्य है, जो दूध पीने वाले मजनुओं का है। ये लोग समाज का कुछ भी भला नहीं कर सकते, परन्तु धन-संग्रह खूब करते हैं।

सूसन ने अपने गाँव में कम्यूनिस्टों को व्याख्यान देते हुए सुना था। वे पूँजीपतियों की निन्दा किया करते थे। वे इन लोगों को समाज की जोंक की उपाधि देते थे। आज उसको उनके कहने में तत्व प्रतीत हो रहा था।

इसपर भी उसने बिहारीलाल से उसके भाई की उन्नति की कथा सुनी थी। उसको भी वह पूँजीपति ही समझती थी, परन्तु वह उसके पति से सर्वथा भिन्न प्रकार का पूँजीपति था। उसके काम को वह उत्पादक कार्य मानती थी। बिहारीलाल के भाई ने भी पूँजी का प्रयोग किया था। इसपर भी उसका प्रयोग वैसा नहीं था, जैसा उसका पति, चैम्बर में रुपया जमा कराकर सोना खरीदने में करता था।

इसके पश्चात् सूसन को जब-जब भी अवसर मिलता, वह सुन्दरलाल को समझाने का यत्न करती कि उसका और उसके पिता का काम किसी भी प्रकार से समाज को लाभ नहीं पहुँचाता। इस कारण यह तो जोंक की भाँति समाज के अर्जित धन को चूसने के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

इस सब प्रेरणा का कितना लाभ हो रहा था, कहा नहीं जा सकता। इस समय एक घटना घटी, जिसने सुन्दरलाल तथा सूसन के जीवन को भारी धक्का दिया।

एक दिन सुन्दरलाल को यह पता चला कि उसके पिता को सोने के सट्टे में इतनी हानि हुई है कि उनका दिवाला निकले बिना नहीं रहेगा। चैम्बर वालों ने बताया कि उसके पिता को बाजार का पाँच करोड़ रुपया देना हो गया है। सुन्दरलाल तो इस सूचना से भौंचक्का रह गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुन्दनलाल को भी पता चला कि बिना बाजार का रुपया दिए वह काम नहीं कर सकता तो यह समझ कि दिवाला निकलेगा ही, उसने अपनी पत्नी को बुलाकर पूछा, ''कितना रुपया तुम्हारे पास रखा है?''

''क्यों?''

''सोने के व्यापार में बहुत घाटा हो गया है।''

''मेरे पास तीन लाख के लगभग है।''

''अच्छी बात है। रुपया और सब आभूषण एकत्रित कर लो। इसको यहाँ से निकालना आवश्यक हो गया है। अन्यथा कोर्ट इसको भी ताला लगवा देगी। परिणाम यह होगा कि हमारे पास पहनने के कपड़े भी नहीं रह जाएँगे।

''देखो रानी! मैं अब कार्यालय में जा रहा हूँ। वहाँ से एक घंटे के भीतर टेलीफोन करूँगा और तुम सब रुपया और आभूषण लेकर दिल्ली चलने को तैयार रहना।''

''इतना रुपया लेकर मैं अकेली कैसे जा सकूँगी?''

''यदि सुन्दरलाल पर विश्वास होता तो उसको साथ भेज देता, परन्तु उसको पता चला कि तुम्हारे पास इतना रुपया है, तो सब छीनकर अपनी रखैल के पास ले जाएगा।''

''तो फिर क्या करोगे?''

''देखो, तुम भूषणों और रुपयों को एक अटैची केस में बन्द करके रखो। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। एक काम तुम करना, सुखिया चौकीदार को तैयार रखना। कदाचित् उसको साथ ले जाना पड़े।''

सेठ कुन्दनलाल अपनी पत्नी को समझा-बुझाकर कार्यालय में जा पहुँचा। वहाँ सुन्दरलाल चैम्बर में टेलीफोन कर रहा था। सुन्दरलाल सोना बेच रहा था। पिता ने पुत्र को टेलीफोन में कहते सुना कि उसके पिछले सप्ताह का हिसाब बना दिया जाए और रुपये का चेक भेज दिया जाए।

सुन्दरलाल ने टेलीफोन बन्द किया तो पिता ने पूछा, ''कितना लाभ हुआ है तुमको?''

''पिछले सप्ताह में बीस हजार।''

''यह कैसे? तुमने माल खरीदा था अथवा बेचा था?''

''मैंने तो बेचा था।''

''परन्तु पांडे ने तो खरीदने की राय दी थी।''

सुन्दरलाल हँस पड़ा। उसने कहा, ''पिताजी! मैं तो कई महीने से देख रहा था कि पांडे की गिनती में कुछ गलती हो रही थी। जब वह खरीदने को कहता था, तो मैं बेचता था और जब वह बेचने को कहता था तो मैं खरीदता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था। यही कारण है कि पिछले छः मास से मैं लगातार लाभ में ही हूँ।''

''मैं पिछले छः मास से तो हानि ही उठा रहा हूँ। यदि तुम मुझको यह गिनती में गलती की बात बता देते, तो मैं भी बच जाता।''

''पर अब तो चैम्बर वाले आपको नोटिस दे रहे हैं।''

''क्या कह रहे हैं ?''

''टेलीफोन आया था कि आपके नाम पाँच-छः करोड़ रुपया हो गया है। इस कारण एक तो वे घाटे का रुपया तुरन्त चाहते हैं और दूसरे वे आगे व्यापार तबतक नहीं करने देंगे, जब तक नई जमानत जमा न हो जाए।''

''तो बात यहाँ तक हो गई है ? अब दिवाला निकालना ही पड़ेगा। मैं इस बात की दर्ख्वास्त देकर हरिद्वार चला जाऊँगा और अपना शेष जीवन भगवत भजन में व्यतीत कर दूँगा।''

''दिवाला पिटने के पश्चात् तो भगवान् भी सहायक नहीं होंगे।''

''यह मैं देख लूँगा। मेरे पास अभी इतना है कि मैं भगवान् को प्रसन्न कर लूँगा।''

सुन्दरलाल हँस पड़ा। उसने पूछा, ''कितना होगा आपके पास ?''

''गिना तो नहीं। तुम्हारी माँ को कह आया हूँ कि सब बटोर कर दिल्ली जाने के लिए तैयार रहे।''

''तो माँ अकेली जा रही है ? आप तो अब जा नहीं सकेंगे। यदि आपने जाने का यत्न किया तो पुलिस गिरफ्तार कर लेगी।''

''मैं समझता हूँ कि सुखिया साथ जाएगा।''

''सुखिया चोर है। वह तो माँ का जीवन ही ले लेगा।''

''तो क्या करूँ ? जीवन-भर में एक ही लड़का तो पैदा हुआ था; परन्तु वह अपनी रखैल के वश में है और विश्वास योग्य नहीं रहा।''

''यह तो पिताजी ! आप अन्याय कर रहे हैं। देखिए, मैंने आपसे एक पैसा भी नहीं लिया। माताजी के समझौता करा देने के पश्चात् मैंने आपको किसी प्रकार का धोखा नहीं दिया। आपको मुझपर भरोसा रखना चाहिए। यदि इस आड़े समय में, आपके काम मैं नहीं आऊँगा, तो धिक्कार है मुझपर।''

इसपर कुन्दनलाल गम्भीर विचार में लीन हो गया। आखिर अन्य कोई मार्ग न पा बोला, ''अच्छा, एक बात करो। तुम माँ के साथ जब्बलपुर चले जाओ।''

''और वहाँ सब सम्पत्ति उन चोरों के हाथ में दे दूँ। आपको इतना तो पता होना चाहिए कि वे अपनी बहनों और लड़कियों को लूट-लूटकर ही धनी हुए हैं। यदि कहीं माँ के भाई का दिल बेईमान हो गया तो एक कौड़ी भी नहीं मिलेगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तो फिर क्या करोगे?''

''एक बात हो सकती है। मैं माँ को सूसन के पास ले चलता हूँ। वहाँ सब रुपया गिनकर वह उसको सौंप आए। माँ यहाँ अपने घर में ही रहे। इससे लेनदारों को किसी प्रकार का संदेह नहीं होगा कि उनको धोखा देने का यत्न किया गया है।''

सेठ कुन्दनलाल गम्भीर विचार में पड़ गया। कुछ विचार कर उसने सुन्दरलाल की आँखों में देखते हुए पूछा, ''सुन्दर! धोखा तो नहीं दोगे?''

''पिताजी ' आप निश्चिन्त रहें। इससे सुगम और सुरक्षित स्थान आपको और कोई नहीं मिल सकता। मैं आपसे पृथक् तो हो ही चुका हूँ। आपने सबको और कारखानों को लिखा ही हुआ है। चैम्बर में भी मेरा और आपका खाता पृथक्-पृथक् है। ऐसी अवस्था में मेरे पास रखा धन सब प्रकार से सुरक्षित ही होगा।''

सेठ कुन्दनलाल की समझ में बात आ गई। वह समझता था कि उसका साला, जो जब्बलपुर में रहता है, यदि बेईमान हो गया तो वह उसका कुछ भी नहीं कर सकेगा और यदि लड़का बेईमान हुआ, तो भी रोटी खाने को तो देगा ही। उसने यह विचार कर कहा, ''ठहरो, तुम्हारी माँ को टेलीफोन कर समझा देता हूँ।''

उसने टेलीफोन उठा, घर का नम्बर घुमा दिया और जब सुन्दरलाल की माँ सुनने लगी, तो उसने सुन्दरलाल की योजना, कि रुपया और आभूषण सूसन के पास जाकर रख दे, बता दी।

बहुत बातचीत के पश्चात् सुन्दरलाल की माँ मानी। पश्चात् सेठ कुन्दनलाल ने कहा, ''सुन्दर तुम्हारे पास अपनी मोटर लेकर आ रहा है और बिना किसी नौकर को बताए, अटैची-केस लेकर उसके साथ चली जाओ और वहाँ पर सब कुछ गिन सूसन के हवाले कर दो।''

: 4 :

सूसन सुन्दरलाल को और उसके साथ अपनी सास को आते देख आश्चर्यचकित रह गई। सुन्दरलाल ने उसको सतर्क करने के लिए कह दिया, ''डार्लिंग! माँ आई है।''

''ओह!'' सूसन ने हाथ जोड़कर नमस्कार की। वह अब तक भारतीय रीति-रिवाज को भलीभाँति समझने लगी थी और अब भली-भाँति हिन्दुस्तानी बोलने भी लगी थी।

सुन्दरलाल की माँ ने उसकी पीठ पर हाथ फेरकर उसे आशीर्वाद दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सुन्दरलाल, जो अटैची-केस उठाए हुए समीप ही खड़ा था, बोला, ''सूसन! अपने सोने के कमरे में चलो, वहीं बात होगी।''

भीतर कमरे में पहुँच, सुन्दरलाल ने सूटकेस पलंग पर रख दिया और सूसन को कहने लगा, ''कागज-कलम लेकर लिख लो। माँ तुमको कुछ रखने के लिए दे रही है।''

सूसन ने राइटिंग पैड लेकर पार्कर पैन से लिखना आरम्भ कर दिया। माँ ने सूटकेस खोलकर उसमें से वस्तुएँ निकाल-निकालकर लिखानी आरम्भ कर दीं।

सौ-सौ रुपये के तीन हजार नोटों के बंडल थे। सुन्दरलाल गिनता जाता था और सूसन लिखती जाती थी। आभूषण लिखाते-लिखाते सुन्दरलाल एक कंठी को देख ठहर गया और उसको ध्यान से देखने लगा। वह कंठी शकुन्तला की थी। उसके पैन्डल पर उसका नाम हार के टुकड़े में लिखा था। इससे उसको कुछ सन्देह हुआ तो उसने ध्यान से सब आभूषण देखने आरम्भ कर दिए। उसकी अपनी हीरे के नग वाली अँगूठी भी उनमें थी। यह अँगूठी उसको शकुन्तला के पिता ने विवाह के समय पहनाई थी। वे सब आभूषण जो उसकी तिजोरी में रखे थे, जिनके विषय में उसको बताया गया था कि उसकी अनुपस्थिति में शकुन्तला एक दिन चुपचाप आई थी और सब कुछ ले गई थी, इस अटैची-केस में थे।

अब इन आभूषणों को देख सुन्दरलाल को विश्वास हो गया कि उसकी तिजोरी की, उसकी माँ ने चाबी लगाकर चोरी की है। शकुन्तला चोरी कराती तो आभूषण, जो उसके पिता ने दिए थे, अपनी सास के पास क्यों छोड़ जाती? उसने माँ के मुख की ओर देखकर पूछा, ''माँ! ये तो शकुन्तला के आभूषण हैं। तुम्हारे पास कैसे आ गए?''

उसकी माँ की हँसी निकल गई। सुन्दरलाल तो और भी गम्भीर हो गया। इसपर माँ ने कहा, ''जब तुम विलायत गए हुए थे, हम तुम्हारे दूसरे विवाह का निश्चय कर चुके थे। हमने यह विचार किया कि जब शकुन्तला को तुम्हारे नवीन विवाह का पता चलेगा, तो वह सब आभूषण और नकदी तिजोरी में से निकालकर ले जाएगी। इस कारण उसकी अनुपस्थिति में ही सब माल निकाल लिया था।''

''इस पर भी तुमने कहा कि शकुन्तला मेरी अनुपस्थिति में वहाँ आई थी और सब कुछ निकालकर ले गई है।''

''यह तो उसको बदनाम करने के लिए था, जिससे तुम उसको पुनः घर पर न ले आओ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कितना रुपया निकाला था?"

"अब ठीक स्मरण तो आ नहीं रहा। कुछ बीस-तीस हजार के लगभग था।"

"ठीक है। सूसन! जितना रुपया तुमने लिखा है, उसमें से तीस हजार निकाल दो। साथ ही ये आभूषण निकाल कर पृथक् कर लो। ये शकुन्तला के हैं। शेष आभूषण माँ के हैं, माँ के नाम लिख लो।"

इसपर माँ ने पूछा, "क्या उसके बाप का दिवाला निकल रहा है?"

सुन्दरलाल हँसकर चुप कर रहा।

सेठ कुन्दनलाल ने दिवाले की प्रार्थना कर दी और कोर्ट ने तुरन्त उसकी सम्पत्ति पर रिसीवर बैठा दिया। इस प्रकार लेनदारों की सूची बनने लगी। लेनदारों में, करोड़ीमल उसका सबसे बड़ा लेनदार सिद्ध हुआ। कुन्दनलाल भी इस बात को देखकर चकित रह गया।

जिस दिन दिवाला स्वीकार हुआ, उसी दिन सोमनाथ सूसन को मार्केट में मिल गया। सूसन फल खरीद रही थी। सोमनाथ ने आगे आकर कहा, "गुड मार्निंग, मिसेज भगेरिया! हाउ डू यू डू?"

"ओह! आप यहाँ क्या कर रहे हैं?"

"ठीक वही, जो आप कर रही हैं। मैं कुछ फल लेने आया था। देखिए, आज मेरे गरीबखाने में दावत है और विधिवत् निमन्त्रण मिस्टर एस० भगेरिया और मिसेज भगेरिया के नाम भेजा है। आप आकर गरीबखाने की रौनक बढ़ाएँगी, तो आभार मानूँगा।"

"क्या है आज, जो दावत दे रहे हैं?"

"तो निमन्त्रण-पत्र आपको नहीं मिला? मिस्टर भगेरिया को मैंने स्वयं दिया था।"

"नहीं मिला तो कुछ हानि नहीं हुई। पर है क्या?"

"एक मुकद्दमा जीता है और उसमें बहुत आय हुई है। विचार आया कि आए धन को बाँटकर खाया जाए।"

"किसका मुकद्दमा था?"

"सेठ करोड़ीमल का। उन्होंने मुझको इसमें दो लाख रुपया दिया है।"

"सच? कितनी लागत का मुकद्दमा था?"

"चार करोड़ रुपये का।"

"और वे जीत गए हैं क्या?"

"तभी तो मुझको फीस मिली है और यह दावत दे रहा हूँ।"

सूसन के मन में शकुन्तला पर चोरी के लाँछन की बात स्मरण हो आई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे वह वहाँ से जाने के लिए बोली, "अच्छा, 'बाई-बाई'।"

"तो आप आ रही हैं न?"

"कह नहीं सकती। घर जाकर राय करूँगी?"

उसी सायंकाल दावत थी। जब सुन्दरलाल सायंकाल घर पर आया तो सूसन ने पूछा, "आज सोमनाथ वकील के यहाँ क्या है?"

सुन्दरलाल विस्मय में सूसन का मुख देखने लगा। सूसन ने कहा, "वह आज मुझे मार्केट में मिला तो कहने लगा कि मैं अवश्य पहुँचूँ।"

"बड़ा दुष्ट है। उसने एक पाण्डेजी से मिलकर पिताजी को सट्टे में सोना खरीदने की प्रेरणा दी। वास्तव में वह सेठ करोड़ीमल से मिलकर पिताजी से यह काम कराता रहा है। जितना सोना पिताजी ने बेचा, उसका अधिक भाग करोड़ीमल ने खरीदा था। अतः जब दिवाला निकला तो पिताजी मुख्य रूप में करोड़ीमल के देनदार निकले और अब वह हमारे कारखानों का मालिक हो गया है।"

"कितने रुपये का लेनदार था वह?"

"चार करोड़ रुपये से ऊपर उसने ही लेना था।"

"ओह! तभी वह कह रहा था कि करोड़ीमल ने चार करोड़ रुपये का मुकद्दमा जीता है और उसने जिताया है। इससे सेठजी ने उसको दो लाख रुपये से ऊपर दिए हैं और वह इस लाभ के रुपये को अपने मित्रों में बाँटकर खा रहा है।"

"मैंने पिताजी को कहा था कि यह बहुत बड़ा बेईमान है और वे उसका कहा ही मानते थे, परन्तु यह तो मुझको भी पता नहीं था कि पाण्डे इसके कहे अनुसार ही ज्योतिष लगा-लगाकर पिताजी का सर्वनाश कर रहा है। यह तो आज ही पता चला है।"

"कुछ भी हो। यह सट्टे का व्यापार बहुत ही गन्दा व्यापार है।"

"हम और कुछ तो कर ही नहीं सकते।"

एकाएक सूसन को शकुन्तला के आभूषणों की बात स्मरण हो आई। उसने पूछा, "शकुन्तला के आभूषण इत्यादि कब उसको लौटाएँगे?"

"क्या जल्दी पड़ी है! उसके पिता ने इन्हीं आभूषणों की चोरी के प्रतिकार में पिताजी को नष्ट कर दिया है।"

"यह कैसे?"

"वह कह रहा है कि कुन्दनलाल ने मेरी लड़की को घर से चोर बनाकर निकाला है, तो मैंने उसको उसके घर से दिवालिया बनाकर निकलवा दिया है।"

सूसन इस रहस्योद्घाटन पर विस्मय में मुख देखती रह गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 5 :

जैसे जुए में, वैसे ही सट्टे में कमाई स्थिर नहीं रह सकती। कुछ जुआरी दूसरों से अधिक चतुर होते हैं और जब पांसा उलटा पड़ने लगता है तो वे खेलना बन्द कर देते हैं। यही बात सुन्दरलाल में थी। इसपर भी फोकट में आई धन-सम्पदा फोकट में ही जाती है। सुन्दरलाल को एक और व्यसन लग गया था। वह था नाच-गाना देखने-सुनने का। बम्बई की एक विख्यात नर्तकी की मधुर आवाज और नाचते समय उसके अंगों का लचकाव देख-देख सुन्दरलाल उसपर मोहित हो गया था। परिणाम यह हुआ था कि वह नित्य ही घर पर देरी से आने लगा। इसपर सूसन को उससे निराशा होने लगी। उसने कई बार समझाया था कि सोने के समय तो घर पर आ जाना चाहिए, परन्तु सुन्दरलाल यह कहकर टाल दिया करता था, ''तुम्हारे पास तो मोहन है, जो अपनी तोतली भाषा से तुम्हारा मन बहलाता रहता है। मुझको अपना मन बहलाने से मना क्यों करती हो?''

इसका परिणाम यह हो रहा था कि एक ओर सुन्दरलाल मद्य-सेवन अधिक करने लगा था और दूसरी ओर घर से उसका सम्पर्क कम होने लगा था। परिणामस्वरूप सूसन को शकुन्तला से अधिक सम्पर्क बनाने का अवसर मिल रहा था। शकुन्तला से मिलने पर अथवा ललिता के बताने पर और बिहारीलाल के समझाने पर सूसन देवगढ़ में फकीरचन्द के काम से भली-भाँति परिचय पा चुकी थी।

वह अपने मन में कभी विचार करती थी कि वे भी क्यों नहीं फकीरचन्द की भाँति, कोई फार्म खोल सकते? इस प्रकार विचार करने पर उसके विचार एक दिन उसके मुख से निकल पड़े।

उसने सुन्दरलाल को बिहारीलाल से सुने हुए विचार बता दिए। सुन्दरलाल रात बहुत देर करके और शराब में मदमस्त हो आया था और वह दिन के ग्यारह बजे तक बिस्तर पर करवटें लेता रहा था। सूसन उसके लिए चाय का प्याला लाई और चाय पिलाकर उसको सचेत करने लगी। सुन्दरलाल ने चाय पी और पलंग पर बैठा हुआ पूछने लगा, ''कितने बज गए हैं?''

''विचित्र जीवन हो गया है आपका! दिन-भर बिस्तर और घर में ही पड़े रहते हैं।''

''हाँ, और रात को गाने और नाच में डूबा रहता हूँ। इससे अच्छा जीवन और क्या हो सकता है?''

''देखिए, मैं इसको तो एक व्यर्थ का जीवन ही समझती हूँ। आप समाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के लिए कुछ करते नहीं और समाज से अर्जित धन की चोरी करते रहते हैं।''

''किसकी चोरी की है ?''

''यह मैं क्या जानूँ ? इतना जानती हूँ कि आपके पास जो कुछ भी है, उसके लिए आपने एक तिनका तक भी नहीं तोड़ा।''

''ओह! यह फिर समाज का भूत सवार होने लगा है ? मुझको समाज से क्या मतलब ? मैं हूँ, तुम हो और....और शराब है, नाच है, गाना है और किस बात की आवश्यकता है ?''

''मैं चाहती हूँ कि जीवन में कुछ सृजनात्मक (क्रिएटिव) काम करना चाहिए। देखिए, सब सृजनात्मक कामों में मेहनत मुख्य है और पूँजी उसकी सहायक होती है। दूसरी ओर परिकल्पी कामों में मेहनत-मजदूरी तो कुछ भी नहीं होती और पूँजी ही सबकुछ होती है। पूँजी का सदुपयोग तो तब ही समझा जाता है, जब इसका, मेहनत-मजदूरी के फल को कई गुणा अधिक करने में प्रयोग किया आए। आपके पास पूँजी है, परन्तु आप उसको सृजनात्मक कामों में लगाना नहीं जानते। यही कारण है कि आप परिस्थितियों के आश्रय ही रह रहे हैं।

''आपकी स्थिति उस नाविक की भाँति है, जिसकी नाव पर न पाल है न पतवार। ऐसी नाव तो भगवान् के भरोसे ही रह सकती है। यदि वायु और लहरों के झोंकों से वह किनारे पर आ लगती है अथवा वेग की आँधी में सागर में डूब जाती है, तो इसमें न तो नाविक को श्रेय है, न ही अश्रेय।

''मैं तो चाहती हूँ कि आप एक ऐसे जहाज पर सवार होकर सागर की यात्रा करें, जिस पर पाल हो, पतवार हो, डूबने से बचने के लिए रक्षा-पेटी (लाइफ बैल्ट) और रक्षा नौका (लाइफ बोट) हो। साथ ही जिसको चलाने के लिए एक प्रबल इंजिन भी उसमें लगा हो।''

''सूसन डार्लिंग! ये बहुत सुन्दर मनोद्गार हैं, परन्तु व्यावहारिक बात यह है कि इसके लिए धन चाहिए। यह प्रत्येक के भाग्य में नहीं कि वह ऐसे जहाज पर सवार हो, भव-सागर पार कर सके।''

''परन्तु कई लोग हैं, जिन्होंने ऐसे जहाज 'स्क्रैप' (क्षेप्य) से बना लिये हैं।''

''मुझको तो कोई ऐसा दिखाई नहीं देता। कम-से-कम भारत में तो कोई माई का लाल है नहीं।''

''एक के विषय में मैंने सुना है। यदि उसको चलकर देखा जाए और उसके ढंग का अध्ययन किया जाए, तो कैसा रहे ?''

''कौन है वह ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बिहारीलाल का भाई। जो कुछ उसके विषय में सुना है, वह अति विस्मयजनक और चमत्कारिक प्रतीत हुआ है।"

सुना तो सुन्दरलाल ने भी था, परन्तु उसको विश्वास नहीं हो रहा था। कई मास से सट्टे का काम वह आजकल कर नहीं रहा था। जब-जब भी उसने इसमें हाथ डाला था, उसको हानि हुई थी। इस कारण वह अपने अच्छे समय की प्रतीक्षा में था। इसपर भी वह खुले हाथों से व्यय कर रहा था, आज उसको विचार आया कि क्या हानि है फकीरचन्द के विषय में जानकारी प्राप्त करने में? वह विचार करता था कि कदाचित् वह भी इस प्रकार का कुछ कर सके।

उसने पूछा, "सूसन! तुम कहती तो ठीक हो; परन्तु मैं वहाँ जाऊँ कैसे और फिर वह मुझको बताएगा ही क्यों? यदि कुछ बताएगा, तो वह सब सत्य ही होगा, कैसे कहा जा सकता है?"

"देखिए, आपने एक बार बिहारीलाल को अपना मित्र कहा था। आप उससे मिलकर पहले यहीं पता करें यदि बिहारीलाल अपने भाई को लिख दे, तो कोई कारण नहीं कि वह आपको गलत बात बताए।"

"पर बिहारीलाल क्यों मुझको चिट्ठी लिखकर देगा?"

"नहीं देगा तो कोई अन्य उपाय विचार कर लेंगे।"

"तो तुम उसको बुला लो।"

"नहीं; मेरे कहने से वह नहीं आएगा। आप उससे मिलकर, उससे पुनः सम्बन्ध पैदा कर लें और फिर उससे बातचीत कर लें।"

सुन्दरलाल ने, एक समय बिहारीलाल और सूसन पर अनुचित सम्बन्ध रखने का संदेह किया था। इस कारण अब वह उसको मिलकर, उससे सम्बन्ध बनाए, यह उसको विचित्र-सा प्रतीत होता था। इस कारण उसने सूसन को कहा, "मैं बिहारीलाल का पता तो कर सकता हूँ, परन्तु अब इतने काल के पश्चात् उससे मैत्री बनाना कुछ अच्छा प्रतीत नहीं होता।"

"इसमें वैचित्र्य ही क्या है? आप अपनी मोटर में, दो-चार दिन उसके होस्टल के आगे से निकल जाया करें। अवश्य भेंट हो जाएँगी। फिर उसको बताइएगा नहीं कि आप उससे मिलने के लिए उत्सुक हैं। बस बातचीत होने लगेगी। इस प्रकार दो-तीन बार मिले, तो आप सब कुछ जान जाएँगे। तत्पश्चात् उससे चिट्ठी लेकर देवगढ़ जाने का विचार कर लेंगे।"

सुन्दरलाल को दिनभर कुछ काम तो रहता नहीं था। इस कारण उसी दिन से उसने मध्याह्न का भोजन कर, मोटर पर सवार हो बिहारीलाल के कॉलेज और होस्टल के चक्कर लगाने का निश्चय कर लिया।

पहले ही दिन तीसरे चक्कर में उसको बिहारीलाल अपने होस्टल से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
निकलता दिखाई दिया। सुन्दरलाल ने अपनी मोटर उसके समीप ले जाकर खड़ी कर दी। बिहारीलाल ने अपने साथ ही आकर खड़ी होती गाड़ी की ओर देखा तो उसमें सुन्दरलाल को देख, एक ओर होकर आगे बढ़ने लगा। इस पर सुन्दरलाल ने उसको आवाज दे दी, ''बिहारीलाल जी! रुष्ट हो गए हैं क्या?''

बिहारीलाल खड़ा हो, प्रश्नभरी दृष्टि से सुन्दरलाल की ओर देखने लगा। सुन्दरलाल गाड़ी से बाहर निकल आया और पूछने लगा, ''किधर जा रहे हो?''

''आप मुझसे बात कर रहे हैं क्या?''

''तुम बिहारीलाल नहीं हो क्या?''

''हूँ तो।''

''परन्तु आप कौन हैं?''

''ओह! तुम जानते नहीं? मैं सुन्दरलाल हूँ। सुन्दरलाल भगेरिया।''

''अच्छा, आप वही सुन्दरलाल हैं, जो सूसन के मित्र हैं?''

''मित्र नहीं, भई! पति हूँ।''

''अच्छा? क्षमा करना। मुझे विवाह होने का पता नहीं चला। खैर, ऐसा होता ही है। हाँ, तो क्या आज्ञा है?''

''खैर! पहिचाना तो सही। आप किधर जा रहे हैं? आज चित्त कुछ उदास है और अकस्मात् आप मिल गए हैं। एक बार पहले भी, एक ऐसे ही समय आपसे सहायता मिली थी। यदि किसी खास काम से न जा रहे हों, तो आइए, कहीं चाय पीएँगे।''

बिहारीलाल वास्तव में चाय पीने ही जा रहा था। आज शनिवार था और अपने स्वभावानुसार उसका किसी रैस्टोराँ में चाय लेने का विचार था। सुन्दरलाल से दो-चार स्पष्ट बातें करने के लालच में वह सुन्दरलाल की मोटर में बैठ गया। सुन्दरलाल ने गाड़ी चला दी और 'फ्लैटीज़' की ओर जाते हुए कहने लगा, ''एक दिन मैं सूसन का परिचय एक मित्र से कराने के लिए परेशान था। मित्र कोई ऐसा मिल नहीं रहा था, जिसको मैं अपने से कम चतुर समझता। मुझको किसी के, सूसन को बरगला लेने का भय समा रहा था। एकाएक तुम करोड़ीमल के घर पर मिल गए और तुम्हें सीधा-सादा और सरल-चित्त बालक मात्र समझ, अपना मित्र बनाकर सूसन के पास ले गया था।

''पीछे मुझको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि तुम तो बहुत ही चतुर और योग्य व्यक्ति हो और सूसन का तुम्हारी ओर विशेष झुकाव देखकर मैं डर गया। इस बात को एक साल व्यतीत हो गया है। सूसन अब माँ हो गई है और इतने वर्षों में उसने कुछ ऐसा सिद्ध कर दिया है कि वह अति नेक औरत है। ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था में आज अपने मन की खिन्न अवस्था में तुम्हें घूमने के लिए जाते देख, विचार आया कि पुनः पुरानी मित्रता क्यों न बना ली जाए? तुम्हारा क्या विचार है?''

''सच बताऊँ सुन्दरलाल जी!''

''हाँ, हाँ! मुझको तुम्हारे विचार जानकर बहुत प्रसन्नता होगी।''

''तो सुनिए। मैं आपका न तो मित्र हूँ और न ही शत्रु। जैसे रेलगाड़ी में यात्रा करते हुए साथी यात्रियों से परिचय हो जाता है, वैसा ही आपसे परिचय हो गया था। सूसन को मैं सदा अपनी बहन मानता रहा हूँ। मुझको ऐसा विदित हुआ था कि आप समझते हैं कि मैं सूसन पर अनुचित डोरे डाल रहा हूँ। यह जानकर मुझको दुःख नहीं हुआ था। मैं तो केवल यह समझा था कि जैसे एक दुर्बल आदमी के हाथों में एक भारी निधि पड़ जाए और तब, जैसे वह इस निधि के खो जाने के भय से आशंकित रहता है, वैसी ही आपकी अवस्था है। मैं अनुभव करता था कि आप सूसन जैसी स्त्री के पति होने के योग्य नहीं। किन्हीं कारणों से वह आपके अधिकार में आ गई है और आपको सदा भय लगा रहता है कि कोई उसको चुराकर न ले जाए। इस कारण आपका, साधु आदमियों को चोर समझ लेना स्वाभाविक ही था। इसीलिए आपके चित्त को शान्ति प्रदान करने के लिए, मैंने सूसन से तटस्थ रहना ही उचित समझा।''

''तुम्हारा कहना सत्य है। इसी कारण आज मेरे मन में पुनः तुमसे सम्बन्ध बनाने का विचार उत्पन्न हो उठा है।''

बिहारीलाल बातचीत के बहाव के इस ओर जाने की आशा नहीं करता था। उसने सुन्दरलाल को, सूसन के योग्य होने पर सन्देह किया था, परन्तु सुन्दरलाल ने इसको बुरा नहीं माना। इससे उसको विस्मय हुआ। इस कारण उसने अपने कथन में कटुता निकालने के लिए कह दिया, ''इसपर भी एक बात और है, जिससे मैं आपके सम्पर्क में कुछ अधिक आना नहीं चाहता था। आप धनी हैं और मैं एक निर्धन कृषक का भाई मात्र। हमारा समाज भिन्न-भिन्न है। हमारे विचार और व्यवहार में अन्तर है और हमारे जीवन के उद्देश्यों में भी समानता नहीं। मैं समझता था कि न तो मैं कभी आपको चाय इत्यादि पर निमन्त्रण दे सकता हूँ और न ही हम एक स्थान पर बैठकर, एक ही भाषा और विषय पर बातचीत कर सकते हैं।''

''यह तो ठीक है, परन्तु कभी-कभी भिन्न विचार और भाषा बोलने वालों का मेल-जोल हो जाता है। इसमें वेरायटी (विविधता) होने से विशेषता आ जाएगी।''

होटल में जाकर चाय पीते समय दोनों में अनेकानेक विषयों पर सिनेमा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थिएटर, यूरोपियन देशों के आचार-विचार और अपने देश के दर्शनीय स्थानों पर बातचीत होती रही। सुन्दर ने अपने उद्देश्य की ओर आज संकेत भी नहीं किया। एक घण्टाभर बातचीत के पश्चात् दोनों होटल से निकल आए और सुन्दरलाल उसको उसके होस्टल में छोड़ गया। जाने से पूर्व उसने कहा, "देखो बिहारीलाल! पिताजी का दिवाला निकल चुका है। वे हरिद्वार चले गए हैं। आजकल व्यापार में हलचल न होने से, मेरा काम न के बराबर है। इस कारण मैं दिनभर खाली रहता हूँ और मैं सत्य कहता हूँ कि तुम्हारे साथ यह एक घण्टा मेरे जीवन का अति मनोरंजक समय था। मैं समझता हूँ कि तुमसे मिलकर मुझको सदा प्रसन्नता होगी।" इतना कह सुन्दरलाल चला गया और बिहारीलाल इस मेल पर आश्चर्य करता हुआ मोटर जाती देखता रह गया।

: 6 :

इसके पश्चात् सुन्दरलाल और बिहारीलाल में कई बार भेंट हुई। आखिर एक दिन उसने बिहारीलाल को अपने घर पर मध्याह्न के भोजन का निमन्त्रण दे दिया। शनिवार था और नियमानुसार सुन्दरलाल बिहारीलाल के साथ 'फ्लैटीज़' में चाय ले रहा था। सुन्दरलाल ने पूछ लिया, "बिहारीलाल! कल रविवार है। यदि कोई विशेष काम न हो, तो खाना हमारे यहाँ खा लो?"

"आपके घर? देख लीजिए। पीछे फिर विचार बदल गया तो बहुत ही भद्द होगी। मेरा तो कुछ नहीं बिगड़ेगा। हाँ, बिचारी सूसन को बहुत ही दुःख होगा। जहाँ तक मैं समझता हूँ पिछली बार आपके मुझसे मेल-जोल रखने से मना करने पर उसको बहुत दुःख हुआ था।"

"एक बार भूल कर चुका हूँ। अब उसको दुहराने की आशा नहीं।"

इस प्रकार बिहारीलाल सूसन के घर पर, उसके साथ भोजन करने के लिए आमन्त्रित हो रविवार को वहाँ जा पहुँचा। सूसन ने उठकर दोनों हाथों से उसके हाथ पकड़ उसका स्वागत किया और उसे डाईनिंग हॉल में ले जाकर बैठाया। इस दिन भोजन करते-करते देवगढ़ के फार्म के विषय में बातचीत होने लगी। जब बिहारीलाल वहाँ पर कार्य करने की विधि बता चुका, तो सुन्दरलाल ने प्रश्न किया, "सेठ करोड़ीमल इसमें सफल क्यों नहीं हुए?"

"इस कारण कि काम करने वाला कोई आदमी नहीं मिला। साथ ही जो कुछ भी लाभ हुआ था वह सेठजी ने अपने प्रयोग में ले लिया था। उसे उन्हें पुनः फार्म में ही लगा देना चाहिए था। इससे ही किसी कारोबार में उन्नति हो सकती है।"

"इस समय आपके भाई साहब की आय कितनी होगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''पिछले वर्ष सेठजी के आदमी मोतीराम ने हमारे कपड़े के कारखाने को आग लगाकर भस्म कर दिया था और उससे हमको पाँच हजार से अधिक हानि हुई थी। इसपर भी गत वर्ष हमारी आय चालीस हजार के लगभग हुई थी।''

''आप कपड़े का कारखाना खोले हुए थे?''

''हाँ; एक पोल्ट्री फार्म, एक फर्नीचर की वर्कशॉप, एक आटा पीसने की चक्की, एक लकड़ी चीरने के लिए आरा मशीन है तथा एक कपड़ा छापने का कारखाना भी है।''

''तो यह फार्म कैसे हो गया? इसे तो ग्रामीण हस्तकला-गृह कहना चाहिए।''

''हाँ, ऐसा भी कहा जा सकता है। वास्तव में भाई साहब तो खेती-बाड़ी को भी एक हस्तकला मात्र ही समझते हैं। यह एक ऐसी दस्तकारी है, जिसके लिए एक मजदूर को बहुत कम समय देना पड़ता है। वर्ष में चार-पाँच महीने से अधिक काम नहीं होता और दिन-भर में दो-तीन घंटे से अधिक काम नहीं करना पड़ता। ये दूसरी हस्तकलाएँ किसानों और मजदूरों के लिए, रिक्त समय में करने के लिए हैं।''

''यदि हस्तकला-गृह ही खोलना है, तो नगर में ही क्यों न खोला जाए?''

''इसलिए कि गाँव में रहने के लाभ भी प्राप्त हो सकें। खुली हवा, धूप और स्वच्छता बम्बई जैसे नगरों में नहीं मिल सकती। साथ ही खेती-बाड़ी, जो देश में एक अत्यावश्यक और उपयोगी काम है, उसको चालू रखने के लिए अन्य काम भी आवश्यक हैं कि उनमें संलग्न व्यक्तियों के अवकाश को भरने के लिए अन्य काम भी वहीं खोल दिए जाएँ।''

इसपर सूसन ने कह दिया, ''मैं इनसे कह रही हूँ कि ये सट्टे का काम छोड़कर, किसी देहात में चलकर फार्मिंग करने चले चलें; परन्तु इनको सन्देह है कि उससे कोई विशेष लाभ नहीं होगा।''

''लाभ तो ऐसे ही हो सकता है, जैसे मैंने कहा है। यदि कोई यह कहे कि सट्टे के व्यापार की भाँति इसमें एक तिनका भी तोड़े बिना, लाखों की आय हो जाए, तो यह असम्भव है।''

''क्या हम देवगढ़ चलकर, स्वयं अपनी आँखों से, काम की गति-विधि देख सकते हैं?''

''यही ठीक होगा। किसी निश्चय पर पहुँचने से पूर्व, स्वयं जाकर देख लेना चाहिए। मैं समझता हूँ कि जमींदारों को सफलता तो तब ही मिल सकती है, जब मजदूरों के साथ खेत में खड़े होकर काम देखें। वास्तव में किसान स्वयं एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजदूर होता है। दस घंटे रोज काम करता है। पैसा लगाने से और मजदूरी का ठीक विधि से उपयोग करने पर, उसको लाभ होने लगता है। यह लाभ है तो उसकी अपनी मजदूरी का ही। यदि मजदूरी न हो तो लाभ भी नहीं हो सकता।''

बिहारीलाल का पूर्ण वृत्तान्त किसी प्रकार भी सुन्दरलाल में उत्साह नहीं भर सका था। इसके विपरीत सूसन पर उसके वृत्तान्त ने भारी प्रभाव उत्पन्न कर दिया था। वास्तव में वह एक किसान की लड़की थी। उसके पिता के अंगूरों के कई उद्यान थे और वह उन अंगूरों से शराब बना, उसको शराब के कारखाने में बेचता था।

वहाँ भी उसका पिता अपना पूर्ण समय अंगूरों के उद्यान की देख-भाल में नहीं लगाता था। वर्ष का बहुत कम भाग बगीचे में व्यय होता था। शेष समय, घर के सब आदमी किसी-न-किसी काम में लगे रहते थे। औरतें प्रायः कपड़ा बुनती थीं। पुरुष चित्र खींचते थे और फर्नीचर बनाने का करते थे। इस प्रकार सूसन-परिवार गाँव में मर्यादा-सम्पन्न और धनवान था।

अतः स्वाभाविक ही था कि बिहारीलाल का देहात का वर्णन उसकी समझ में आ गया। उसने कह दिया, ''बिहारी भैया! हम देवगढ़ जाएँगे। क्या तुम अपने भाई साहब के नाम हमें एक परिचय-पत्र दे सकते हो?''

''अवश्य। अन्यथा आपको यदि एक-आध रात वहाँ रहना पड़ा, तो कहाँ ठहरोगे? वहाँ एक मन्दिर है और उसके साथ यात्रियों के रहने के लिए स्थान भी है, परन्तु वहाँ आपको आराम नहीं रहेगा।'' सूसन ने तुरन्त अपना राइटिंग पैड निकालकर चिट्ठी लिखा ली। जब सुन्दरलाल बिहारी को कॉलेज होस्टल में छोड़ आया तो आते ही उसने कहा, ''सूसन डियर! मुझको इस काम में कुछ भी तत्व प्रतीत नहीं होता।''

''यह इस कारण कि आपने इस ढंग के काम को कभी किया नहीं। आप उस प्राणी की भाँति हैं, जो सागर की नीचे की तह में रहता है। उसको सागर के बाहर खुली हवा में लाकर रखा जाए, तो वह जीने में कठिनाई अनुभव करने लगता है।

''परन्तु आप विश्वास रखें कि एक बार आपको उस स्वतन्त्र, स्वच्छन्द वातावरण में रहने का स्वभाव पड़ा, तो फिर आपको बम्बई से घृणा हो जाएगी। साथ ही यहाँ की भाँति बेकार, गाड़ी लेकर इधर-उधर घूमना अखरने लगेगा।''

कई दिन के वाद-विवाद के पश्चात् यह निश्चित हो गया कि वे देवगढ़ जाएँगे और वहाँ जाकर अन्तिम निर्णय करेंगे।

बिहारीलाल ने उसी दिन, जब वह सूसन को परिचय-पत्र देकर आया था, अपने भाई को लिख दिया था कि सूसन और सुन्दरलाल कौन हैं। साथ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने लिखा था कि वे उनका फार्म देखना चाहते हैं।

देवगढ़ से फकीरचन्द का पत्र आया कि वे आ सकते हैं। वह पत्र बिहारीलाल ने सूसन को दिया और इसके बाद उनका वहाँ जाना निश्चित हो गया। सुन्दरलाल, सूसन, बेबी मोहन और एक नौकर, ये चार व्यक्ति जा रहे थे। सूसन ने जाने से पूर्व शकुन्तला से मिलना आवश्यक समझा। शकुन्तला को अभी तक यह नहीं बताया गया था कि तिजोरी में से उसके आभूषण और रुपयों के, उसकी सास द्वारा चुराए जाने का प्रमाण मिल चुका है। सूसन का विचार था कि यदि उसको उसकी वस्तुएँ मिलनी ही नहीं, तो फिर उनके मिल जाने के विषय में बताना ठीक नहीं। इस कारण वह इस विषय पर चुप थी।

सूसन ने शकुन्तला और ललिता से मिलकर जब यह बताया कि वे देवगढ़ में कोई भूमि लेकर फार्मिंग करने का विचार रखते हैं, तो दोनों बहिनों ने, उनके इसमें सफल होने में अपना सन्देह प्रकट किया। इसपर सूसन ने कहा, ''देखो शकुन्तला बहिन! यदि मुझे वह स्थान पसन्द आया, तो मैं अकेली ही वहाँ पर रहकर, फार्म बनाने का यत्न करूँगी।''

इससे तो शकुन्तला और ललिता उसका मुख देखती रह गईं। इसपर ललिता ने पूछा, ''तो क्या जीजाजी से कोई झगड़ा हो गया है?''

''झगड़ा तो नहीं हुआ, परन्तु मैं देखना चाहती हूँ कि उनको मेरे प्रति कितना प्रेम है। मैं बम्बई में सुख अनुभव नहीं कर रही। देखती हूँ कि वे मेरे सुख के लिए बम्बई छोड़ने के लिए तैयार भी हैं अथवा नहीं? वैसे तो हमारे पास इतना है कि हम अब और पैसा कमाए बिना जीवन यापन कर सकते हैं।''

''सूसन बहिन!'' ललिता ने कह दिया, ''मुझे तो तुम्हारे इस विचार पर प्रसन्नता ही हुई है। यदि तुम देवगढ़ में पहुँच गई, तब तो तुम मेरी पड़ोसिन हो जाओगी और जीजाजी का शकुन्तला बहिन से सम्पर्क बन जाना स्वाभाविक ही है।''

सूसन हँस पड़ी और कहने लगी, ''तो तुमको विश्वास है कि तुम्हारा विवाह वहाँ ही होगा?''

''विश्वास ही नहीं प्रत्युत यह बात निश्चित है।''

''क्या वहाँ से कोई समाचार आया है?''

''समाचार तो नहीं, परन्तु मेरा मन कहता है कि वह घर मेरा है?

: 7 :

सूर्यकान्त में बहुत-कुछ परिवर्तन आ चुका था। इसपर भी उसके मस्तिष्क में से अभी तक श्रमिकों के विदोहन का भाव गया नहीं था। कहीं भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजदूरों से काम करा कर, लाभ करने वाले को वह शोषणकर्त्ता ही मानता था। इसपर भी वह देख रहा था कि फकीरचन्द गाँव में एक बड़ी भारी शक्ति बनता जाता है और वह भी उससे बहुत से काम करा सकता है।

एक दिन वह आकर कहने लगा, ''फकीरचन्द जी! गिरधारी के मकान के पीछे, नीची जगह पर पानी एकत्रित हो जाने से मच्छर एकत्रित हो जाते हैं और फिर उससे मलेरिया फैलता है। इसका कोई उपाय हो जाए तो बहुत ही अच्छा हो।''

सूर्यकान्त के ऐसा कहने पर फकीरचन्द ने यह समझा कि सूर्यकान्त समझता है कि गाँव वालों के स्वास्थ्य का उत्तरदायित्व भी उस पर होना चाहिए। फकीरचन्द ने इस विचार की उपेक्षा नहीं की। उसने एक-दो दिन तक विचार कर एक योजना बना डाली। एक दिन उसके कहने पर चौधरी रामहरष ने गाँव के जमीदारों और मजदूरों की सभा बुलाई। फकीरचन्द वहाँ पहुँचकर सबको समझाने लगा कि उस गड्ढे के कारण गाँव के बहुत से लोग प्रतिवर्ष बीमार पड़ जाते हैं। यदि वह गड्ढा भर दिया जाए, तो वहाँ पानी एकत्रित नहीं हो सकेगा और मलेरिया ज्वर नहीं फैलेगा।

सबने उसकी योजना को स्वीकार किया, परन्तु गड्ढा भरने के खर्चे का प्रश्न था। इस प्रश्न पर फकीरचन्द ने कहा, ''यह काम सब की भलाई का है। इस कारण हम सबको, इसके लिए यत्न करना चाहिए। मेरा विचार है कि जितने भी लोग गाँव में मजदूरी कर सकते हैं, वे सप्ताह में एक दिन इस काम को किया करें। उस दिन सब काम करने वालों का खाना मेरे घर पर होगा। साथ ही गाँव के पानी को गाँव से दूर ले जाकर डालने का प्रश्न है। उसके लिए गाँव में नालियाँ बननी चाहिएँ। उनपर सीमेन्ट और ईंटें' लगेंगी। वह हम, भूमिपति, थोड़ा-थोड़ा चन्दा डालकर खरीद देंगे।''

जहाँ तक मजदूरों की मेहनत का प्रश्न था, सब तैयार हो गए! विशेष रूप में जब उनको यह पता चला कि काम करने के दिन भोजन फकीरचन्द के घर से मिलेगा। सब जानते थे कि इस प्रकार काम वाले दिन एक छोटी-मोटी दावत हो जाएँगी।

कठिनाई ईंट और सीमेंट के लिए रुपया एकत्रित करने में हुई। इसमें भी फकीरचन्द ने युक्ति से काम लिया। उसने स्वयं पहिले दो सौ रुपया लिखा दिया। पश्चात् अन्य भूमिपति कुछ-न-कुछ देने पर विवश हो गए। सब मिल-मिलाकर चार-साढ़े चार सौ रुपये एकत्रित हो गए। खर्चा तो इससे भी अधिक होने वाला था। सूर्यकान्त का अनुमान था कि छः-सात सौ रुपये के लगभग खर्चा होगा। फकीरचन्द ने कह दिया कि यदि सब भूमिपति अपना लिखाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ चन्दा दे दें, तो शेष घाटा वह पूरा कर देगा। इस प्रकार योजना का श्रीगणेश हो गया।

इस सब मंत्रणा का परिणाम यह हुआ कि तीन मास के भीतर ही न केवल गड्ढा भर गया, प्रत्युत गाँव में नालियाँ बन गईं और गाँव का गंदा पानी, गाँव के नीचे, दूर ले जाकर नदी में डाला जाने लगा।

सूर्यकान्त इस योजना की सफलता को देखकर समझ गया कि संगठनकर्त्ता की महत्ता कितनी है। इस प्रकार गाँव के कार्य हो रहे थे कि सूसन और सुन्दरलाल वहाँ आ पहुँचे। बैल ताँगे में से एक गोरी औरत और एक श्यामवर्ण के आदमी को उतरते देख, फकीरचन्द समझ गया कि कौन आया है। सूसन की गोद में बेबी था और नौकर ताँगे के साथ-साथ पैदल आया था।

फकीरचन्द इस समय मध्याह्नका भोजन करने आया हुआ था। उसने इनको आते हुए देख, मकान के दरवाजे पर आ, इनका स्वागत किया और सन्तू को उनका सामान उठवाकर भीतर रखने के लिए कह दिया।

''तो आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ?'' सुन्दरलाल ने पूछा।

''जी हाँ, इन बहिनजी को देखकर तो सन्देह के लिए स्थान ही नहीं था। बिहारीलाल ने इनका और आपका परिचय तथा रूप-रेखा लिखकर भेज दी थी।''

फकीरचन्द ने सूसन को घर के भीतर ले जाकर, उसका माँ से परिचय करा दिया। फकीरचन्द की माँ समझती थी कि वह गोरी औरत हिन्दुस्तानी में बातचीत नहीं कर सकेगी। इस कारण उसका विचार था कि वह उसकी सेवा-सुश्रूषा से बची रहेगी। साथ ही जब उसने उनके नौकर को साथ देखा तो निश्चिन्त हो गई।

परन्तु फकीरचन्द के परिचय कराने के पश्चात् जब सूसन ने माँ के चरण स्पर्श कर 'पाँव लागूँ' कहा, तो वह विस्मय में मुख देखती रह गई। वह समझ गई कि इससे मेलजोल बनाए बिना नहीं रहा जा सकेगा। अतः उसने उसकी पीठ पर हाथ फेरकर आशीर्वाद दिया और कहा, ''बेटा! आराम करो। अभी भोजन बन जाएगा, तो आपको बुला लूँगी।''

कमरे में, जहाँ उनको ठहरने के लिए कहा गया था, दो पलँग लगे थे। एक ओर ड्रेसिंग टेबल रखी थी। उसके साथ कुर्सी और मेज भी थी। उनको वहाँ ठहराते हुए फकीरचन्द ने कहा, ''आपको बम्बई जैसा आराम तो यहाँ मिल नहीं सकता। यह देहात है। इसपर भी यत्न किया जाएगा कि आपको कम-से-कम कष्ट हो। आपको स्नान करना है क्या?''

''नहीं, हम स्नान करके आए हैं। भैया फकीरचन्द आप हमारी चिन्ता न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें। हम अपने आप अपना प्रबन्ध कर लेंगे।''

''भोजन यहाँ कमरे में करेंगे अथवा चौके में?''

सुन्दरलाल हँस पड़ा। उसने कहा, ''यूँ तो घर पर हम डाईनिंग टेबल पर खाते हैं, परन्तु ये चौके में भी खा सकती हैं।''

इसपर सूसन ने कह दिया, ''हम चौके में खाएँगे।''

इस प्रकार बात तय हो गई। भोजन बनने में आधा घण्टा और लग गया और तब फकीरचन्द तथा दोनों मेहमान, चौके में आ गए। रामरखी ने भोजन परस दिया और वे खाने लगे। भोजन के समय सूसन ने अपनी इच्छा प्रकट करते हुए कहा, ''मैं चाहती हूँ कि फार्मिंग का काम किया जाए।'' इसपर फकीरचन्द ने कहा, ''बिहारीलाल ने मुझको इस विषय में लिखा था। मैंने लिख दिया था कि आप आकर अपने लिये स्वयं निश्चय कर सकते हैं।''

''आपका पत्र बिहारीलाल ने हमको दिखाया था। हम कल से अपना निरीक्षण का काम आरम्भ करेंगे और आशा करते हैं कि दो-तीन दिन में किसी निर्णय पर पहुँच, अपना भावी कार्यक्रम बनाएँगे।''

''तबतक आप हमारे यहाँ रहिए और जिस विषय में आप मेरी सम्मति अथवा जानकारी चाहेंगे, वह मैं दूँगा।''

भोजन समाप्त हुआ तो फकीरचन्द कुछ देर आराम कर पुनः काम पर चला गया और सूसन तथा सुन्दरलाल अपने कमरे में आराम करने के लिए चले गए।

वह लगभग तीन बजे मध्याह्नोत्तर जागी, तो कमरे से बाहर निकल फकीरचन्द की माता के पास जा पहुँची।

इस समय सूसन साड़ी पहिने हुए थी। रामरखी चर्खा कात रही थी। सूसन उसके पास चटाई पर जा बैठी और उसको कातते देखने लगी। रामरखी सूत तो बहुत ही बारीक कातती थी, परन्तु यह कातना बहुत ही धीमी गति से चल रहा था। कुछ देर तक उसको कातते देख, सूसन ने पूछ ही लिया, ''एक घण्टे में कितना कात लेती हैं?''

''कुछ अधिक नहीं। एक-पौना तोला सूत एक घण्टे में काता जा सकता है। मैं दो से तीन घण्टे नित्य कातती हूँ। इस प्रकार महीने में पौन सेर सूत कात लेती हूँ। वर्ष में आठ-नौ सेर हो जाता है। इससे मेरे तीन कुरते, तीन सलवारें और दो दुपट्टे तो बन ही जाते हैं।''

''पर आप इससे कोई तेज चलाने वाला चर्खा नहीं बना सकतीं?''

''अभी तक तो मुझको मिला नहीं। जब मिल जाएगा, तो उस पर काम कर लिया करूँगी?''

 Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप कोई अन्य काम क्यों नहीं कर लेतीं, जो इससे अधिक मूल्यवान हो ?"

"जी तो करता है, परन्तु मुझको इसके तथा रोटी बनाने के अतिरिक्त कुछ आता भी तो नहीं। हाँ, कपड़ा सीने की मशीन चला लेती हूँ परन्तु घर-भर के कपड़े तो सप्ताह में एक-आध दिन काम करने से ही बन जाते हैं।"

"यहाँ शहतूत के पेड़ होते हैं क्या ?"

"खूब होते हैं।"

"तब तो रेशम कातने का काम बहुत ही अच्छी तरह से हो सकता है।"

"यहाँ की जलवायु कदाचित् उसके अनुकूल नहीं।"

"उसका प्रबन्ध तो किया जा सकता है।"

"देखो बेटी! तुम हाथ से काम करने को ठीक नहीं समझतीं क्या ?"

"माँजी! मैं एक किसान की बेटी हूँ और किसान के घर में पली और बड़ी हुई हूँ। हमारे पिता रेशम के कीड़े पालते हैं और रेशम कातकर कपड़ा बुनने वालों के पास बेच देते हैं।"

"तो कपड़ा घर पर नहीं बुनते!"

"नहीं, यहाँ आकर मैंने गांधीजी का खद्दर के विषय में व्याख्यान सुना है। मैं उनसे सहमत नहीं हूँ। वे चाहते हैं कि प्रत्येक परिवार कपड़े के विषय में स्वावलम्बी हो। मैं इस बात को गलत समझती हूँ।

"कपड़ा बुनने में कई प्रकार के कार्य हैं। अच्छी बात तो यह है कि एक परिवार एक कार्य को सीख ले और वह केवल उसी कार्य को करे। कपड़े तैयार करने की अन्य प्रक्रियाओं को दूसरे परिवार करें। इस प्रकार पूर्ण कार्य के एक-एक अंग में, एक-एक परिवार निपुणता प्राप्त कर लेगा। इससे ही काम में वृद्धि और आर्थिक स्थिति में उन्नति हो सकेगी।

"पिताजी अपने घर में रेशम के कीड़े पालते हैं और जब कीड़े रेशम तैयार कर लेते हैं, तो रेशम चर्खी पर बट देते हैं। इस काम के लिए उन्होंने हथ-चर्खियाँ बनवाई थीं। इस प्रकार हमारे परिवार की आय लगभग चार-पाँच सौ रुपये मासिक की हो जाती है।"

रामरखी को सूसन की बातों से कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि वह उसी ढंग से विचार करती है, जिस ढंग से फकीरचन्द विचार करता है। फकीरचन्द के मस्तिष्क में रेशम के काम का विचार नहीं आया था।

रात को फकीरचन्द आया तो सुन्दरलाल के साथ उसकी बहुत बातें हुईं। फकीरचन्द ने सेठ करोड़ीमल के लड़के रामचन्द्र की बात भी बताई। इसपर सुन्दरलाल ने बताया, "वह तो महामूर्ख लड़का है। अपने पिता के मरने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवाला निकालेगा।''

''इसपर भी आपको यह समझ लेना चाहिए कि यह एक व्यवसाय है, व्यापार नहीं और साथ ही यह सट्टेबाजी भी नहीं।

''यह आवश्यक नहीं कि एक व्यापारी आदमी व्यवसायी भी हो। इसी प्रकार एक आदमी, जो नौकर की प्रवृत्ति रखता है, वह न तो व्यवसायी हो सकता है, न ही व्यापार कर सकता है।

''हमारे यहाँ एक सूर्यकान्त है। वह आन्दोलन करने में और दूसरों के काम में मीन-मेख निकालने में बहुत ही चतुर है, परन्तु वह न तो किसी व्यवसाय में लग सकता है और न ही स्वतन्त्र रूप से विचार कर सकता है। वह जब यहाँ आया तो मजदूरों का संगठन कर, ऊधम मचाने लगा; परन्तु जबसे मैंने उसको नौकर रख, उससे काम लेना आरम्भ किया है, वह मेरे अधीन काम करने में सफल हो रहा है। वह नौकर रहने के लिए ही बना है।''

अगले दिन फकीरचन्द, सुन्दरलाल और सूसन को फार्म दिखाने के लिए ले गया। उसको देवगढ़ आए पाँच वर्ष से ऊपर हो चुके थे और लगभग चार सौ एकड़ भूमि वह काश्त में ले आया था। शेष में उसने जंगल ही रहने दिया था। उस चार सौ एकड़ में ही आम, नींबू, संतरे, पपीते की बगिया थी। गेहूँ, मूँगफली, अरहर तथा गन्ने के खेत थे। आरा मशीन, चक्की, कपड़ा बुनने और कपड़ा छापने का कारखाना था।

सूसन और सुन्दरलाल ने करोड़ीमल की भूमि भी देखी। एक हजार एकड़ में से सौ एकड़ के लगभग जंगल काटा जा चुका था। वहाँ काम नहीं हो रहा था।

मध्याह्न के समय दोनों वापस लौट आए। इस समय तक, सुन्दरलाल का विचार था कि उन्होंने सब कुछ देख लिया है। अतः मध्याह्नोत्तर वे आराम करते रहे। सूसन फकीरचन्द की माता के पास बैठ बम्बई, ललिता, शकुन्तला और बिहारीलाल के विषय में बातें करती रही। रामरखी उसकी बातें सुनते हुए अपना चर्खा भी कात रही थी। उसी सायंकाल सुन्दरलाल ने फकीरचन्द से, उसके काम की आय के विषय में कई प्रश्न किए और फकीरचन्द ने बताया, ''मैं देहात के विचार से वेतन अधिक देता हूँ, परन्तु काम डटकर लेता हूँ। जो व्यक्ति काम नहीं करता, उसको नौकर नहीं रखता। नौ घण्टे नित्य काम लेता हूँ। और प्रत्येक काम करने वाले से कोई-न-कोई काम लेता रहता हूँ। उसको खाली नहीं बैठने देता।

''मेरे पूर्ण व्यवसाय की आय चालीस हजार तक होने लगी है। इसमें से दस हजार पिछले कामों में उन्नति करने और नए-नए कामों को प्रारम्भ करने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
व्यय करता हूँ। पन्द्रह हजार के लगभग मैं कल्याणकारी कामों में व्यय करता हूँ। इनमें कर्मचारियों के बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध, उनके लिए दूध, पुस्तक, कपड़े इत्यादि का प्रबन्ध करता हूँ। कर्मचारियों के अधीन स्त्रियों और बच्चों को दस्तकारी और अन्य आय-वृद्धि के कामों को सिखाने का प्रबन्ध करता हूँ। पाँच हजार के लगभग दान-दक्षिणा में व्यय हो जाता है। शेष अपने खाने-पीने और किसी आपत्तिकाल में आवश्यकता के लिए सुरक्षित रखता हूँ।''

इन आँकड़ों को सुनकर सुन्दरलाल का मुख उतर गया। इसके विपरीत सूसन बहुत प्रसन्न थी। वह दिन भर न केवल फकीरचन्द के काम को देखती रही थी, प्रत्युत उसमें और उन्नति के लिए स्थान पर विचार भी करती रही थी।

रात के भोजनोपरान्त सुन्दरलाल और सूसन परस्पर विचार करने लगे, तो एक लम्बे वाद-विवाद में पड़ गए। सूसन का कहना था, ''यह स्थान बहुत सुन्दर है। आप करोड़ीमल की भूमि ले लीजिए। मैं समझती हूँ कि हम फकीरचन्द से अधिक आय कर सकेंगे।''

सुन्दरलाल अपनी चारपाई पर लेटा हुआ था। लेटे-लेटे ही उसने कह दिया, ''मैं तो आज इतना थक गया हूँ कि मेरा मस्तिष्क काम नहीं करता। चार घण्टे लगातार पैदल चलना पड़ा है। यह मैंने अपने जीवन-भर में कभी नहीं किया। यदि ऐसा मुझको नित्य करना पड़ा, तो एक मास में ही 'बोलो राम' हो जाएगा।''

सूसन हँस पड़ी। उसने कहा, ''नित्य करने से अभ्यास हो जाएगा। आपको बचपन से ही मोटर में आने-जाने का अभ्यास है और इतनी थोड़ी-सी मेहनत करने से ही आप व्याकुलता अनुभव करने लगे हैं।''

''पर मैं पूछता हूँ कि इतना कुछ करने पर भी वर्ष में दस-बारह हजार बचा लेना, कुछ भारी प्रलोभन नहीं है। मैं इतने में सन्तुष्ट नहीं हो सकता।''

''इस कार्य में एक बढ़िया बात यह है कि जहाँ हमको लाभ होगा वहाँ देश और समाज के लिए भी तो यह हितकर होगा।''

''होगा। हमको इससे क्या? देश के हित के लिए हमने सरकार को नियत कर रखा है। उसको मैं टैक्स देता हूँ और धर्म के लिए मैं दान-दक्षिणा भी देता हूँ।''

सूसन ने लाख यत्न किया कि वह सुन्दरलाल को कृषि के व्यवसाय के गुण समझाए, परन्तु सुन्दरलाल ने तो देखा था कि घर बैठे-बैठे, टेलीफोन पर बात करने मात्र से हजारों इधर के उधर हो जाते हैं। यदि वर्ष में एक-दो दिन भी अनुकूल बैठ गए, तो जो कुछ यहाँ पर तीन सौ पैंसठ दिन में पैदा किया जा सकता है, वह भी उसकी तुलना में तुच्छ ही रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 8 :

सूसन और सुन्दरलाल एकमत नहीं हो सके। तीन दिन तक विचार होता रहा। अनेकों योजनाएँ बनाई जाती रहीं और आस-पास के जंगल और खेतों का मानचित्र देखकर अध्ययन होता रहा, परन्तु दोनों में मतभेद बना रहा। सूसन ने एक रात फकीरचन्द को बीच में डाल दिया। भोजन के समय बात आरम्भ हो गई। सूसन ने पूछा, "भैया! यहाँ का जलवायु कैसा है?"

"बहुत अच्छा।"

"और यहाँ के व्यवसाय से आप सन्तुष्ट हैं?"

सुन्दरलाल ने बात बीच में ही काटकर कहा, "मैं समझता हूँ कि इस गाँव में एक हजार एकड़ भूमि में से, अधिक-से-अधिक बीस हजार वार्षिक पैदा कर सकेंगे। यह भी उस अवस्था में ही हो सकता है, जब मजदूर अनुकूल रहें। देखो भैया! एक नया मत अब पैदा हो गया है। यह है कम्यूनिज्म। इसका जन्म हुआ है इंग्लैण्ड में, परन्तु यह पनपा है रूस में। इसकी तरंगें अब भारतवर्ष में भी आने लगी हैं। मजदूर संगठित हो रहे हैं और उनके संगठन का प्रभाव देहातों में भी आएगा। तब तुम कितना भी वेतन मजदूरों को दो, वे तुमसे सन्तुष्ट नहीं रहेंगे और तुम्हारा काम पूरा नहीं करेंगे। साथ ही निरन्तर अधिक वेतन के लिए माँग करते रहेंगे। यह तब तक जारी रहेगा, जब तक तुम दिवाला निकालकर यहाँ से भाग नहीं जाते। इस कारण मैं तो कोई ऐसा काम करना चाहता हूँ, जिसमें एक-दो वर्ष के भीतर ही मेरे पास जीवन-भर के लिए घन एकत्रित हो जाए।"

फकीरचन्द ने कहा, "सुन्दर भैया! मैं अभी इस व्यवसाय में, वर्तमान साधनों और पूँजी से अधिक आय की आशा नहीं रखता।

"रहा मजदूर और मालिक का झगड़ा। इस झगड़े में भारी भ्रम काम कर रहा है। मजदूरों के मन में यह बात बैठा दी गई है कि उनके हित तो सरकार के हाथों में ही सुरक्षित रह सकते हैं। साथ ही वे यह समझते है कि सरकार उनकी इच्छा के अनुसार काम करेगी। यह दोनों भ्रम चिरकाल तक रह नहीं सकते। यत्न तो यह होना चाहिए कि मालिक अपना व्यवहार अभी से ऐसा बना लें, जिससे मजदूरों के ये भ्रम तुरन्त ही निवारण कर दिए जाएँ। यह सम्भव है। मैं इस प्रकार से ही कार्य कर रहा हूँ। इसपर भी मैं मानता हूँ कि मेरे अकेले के करने से कदाचित् यह भ्रम दूर न हो सके। तब एक बार तो यहाँ भी विप्लव हो सकता है, परन्तु अन्त में होगा वही, जो मैं कहता हूँ। कारोबार सरकार के हाथ में पनप नहीं सकता। सरकार उसको चलाने के लिए एकाधिकार प्राप्त करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब लोग उससे ऊब जाएँगे और पुनः समझदारी का आविर्भाव होगा।''

''फकीरचन्द! तुम कम्यूनिस्टों को जानते नहीं। ये थोड़ी-सी शक्ति प्राप्त कर ऊधम मचा देते हैं।''

इसपर सूसन ने कहा, ''कल को देवगढ़ में भूचाल आने की सम्भावना है, जिससे सब बना-बनाया काम बिगड़ जाने वाला है। आप चाहते हैं कि आज ही सबकुछ छोड़ दिया जाए?''

''देखो सूसन! भूचाल के विषय में तो कोई निश्चितरूपेण नहीं कह सकता कि यह आएगा अथवा नहीं, परन्तु यह वर्ग-युद्ध तो आ रहा है और वेग से आ रहा है। इसकी लपेट में सब कुछ आने वाला है।''

''मैं ऐसा नहीं मानता।'' फकीरचन्द ने कहा, ''युद्ध पैसे वालों की भूल के कारण आरम्भ हुआ है। यह कुछ अंशों में मजदूरों में उचित शिक्षा के अभाव के कारण भी है।

''पैसे वाले अपने नौकरों को अपने व्यापारिक परिवार का अंग नहीं मानते। उनको वेतन मात्र देने से ही अपना कर्तव्य पूरा हुआ मानते हैं। वास्तव में यह इस प्रकार है नहीं।

''कोई भी उद्योग अथवा धंधा, जिसमें कई लोग मिलकर काम करते हों, एक संयुक्त परिवार का रूप धारण कर लेता है। उसमें वेतन का निश्चय तो सर्वथा आनुमानिक ही होता है। अतएव इसमें संलग्न व्यक्तियों के वेतन का अनुपात समय और अवस्था के साथ परिवर्तित होना चाहिए। यदि मालिक स्वेच्छा से ऐसा कोई प्रबन्ध कर सकें, तो आधे से अधिक संघर्ष तो यहीं समाप्त हो जाएगा।

''मैं यह मानता हूँ कि एक उद्योग में काम करने वाले सब कर्मचारी एक समान भाग के भागी नहीं हो सकते; परन्तु कौन कितना भागीदार है, यह निर्णय सर्वथा काल्पनिक है। अतएव मालिक और नौकर को अपने-अपने भाग की तुलना समय और परिस्थिति के अनुसार निश्चित करनी चाहिए।

''मजदूर यह समझते हैं कि मालिक और मजदूर के वेतन में तुलना का निश्चय करने के लिए सरकार ही मालिक बन जाए। इसका अभिप्राय यह होगा कि मालिक केवल प्रबन्धक मात्र ही रह जाएगा। मालिक होगी सरकार अर्थात् राज्याधिकारी। अव्यवस्था होने पर घाटे का उत्तरदायित्व किसी पर भी नहीं होगा। अतः काम में व्यवस्था रहनी कठिन हो जाएँगी।

''जब मालिक सरकार हो और सरकार के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने वाली कोई अन्य संस्था न हो, तो निस्सन्देह उत्पादन-मूल्य बढ़ जाएगा और पूर्ण जाति हानि उठाएगी। साथ ही, जो भी वेतन राज्याधिकारी निश्चय कर देगा, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद प्रमाण हो जाएगा और उसके विरुद्ध न तो कोई कुछ कह सकेगा, न ही उसे अस्वीकार कर सकेगा।

"जब सरकार से इतर कोई मालिक हो, तो नौकर, कम वेतन होने पर, मालिक से झगड़ा कर सकता है। उसको डरा-धमका सकता है और काम छोड़कर अन्यत्र जा सकता है। ऐसी अवस्था में सरकार एक तीसरी पार्टी होने से न्याय के लिए हस्तक्षेप कर सकती है। सरकार के ही मालिक होने पर, ऐसा कुछ नहीं हो सकता।"

सुन्दरलाल फकीरचन्द की इस लम्बी व्याख्या को सुन मुस्कराता रहा। जब फकीरचन्द कह चुका तो उसने कहा, "यह सब हवाई घोड़े दौड़ाए जा रहे हैं। इनमें कुछ भी तत्व नहीं है।"

इसपर सूसन ने फिर कहा, "मैं तो यह कहती हूँ कि फकीर भैया की नीति से कार्य करने से देहात के रहने वालों का जीवन-स्तर ऊँचा होगा। इससे अयुक्तिसंगत व्यवहार के होने की सम्भावना कम-से-कम हो जाएगी। और फिर आज से बीस वर्ष पश्चात् क्या होगा अथवा क्या नहीं होगा, उसका अनुमान लगाकर, आज ही अकर्मण्य हो बैठ जाना कहाँ की बुद्धिमत्ता है?"

"क्या बम्बई के सट्टा मार्केट का काम अकर्मण्यता है?"

"अकर्मण्यता ही नहीं, प्रत्युत् पाप भी है। यदि जुआ खेलना पाप है, तो सट्टे का कार्य ऐसा क्यों नहीं?"

"नहीं सूसन! तुम नहीं समझतीं। सट्टा बाजार में बड़े-बड़े दिमाग काम करते हैं। वहाँ पर अक्ल का अक्ल से सामना होता है।"

"मैं आपसे इस विषय पर मतभेद रखती हूँ। आओ हम परस्पर मतभेद स्वीकार कर लें।"

"परन्तु कार्य करने में हम परस्पर मतभेद नहीं रख सकते।"

"तो आप मेरा कहना मान जाइए। हमको यहाँ पर अपने विचारों का परीक्षण कर लेना चाहिए।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ कि तुम मेरे साथ बम्बई चलो और वहाँ हम अपने भाग्य की परीक्षा करेंगे।"

"मैं भाग्य के भरोसे बैठना नहीं चाहती।"

"और मैं यहाँ कुलियों का काम नहीं कर सकता।"

"क्या मैं एक कुली की लड़की हूँ?"

"और क्या?"

यह सुन सूसन का मुख क्रोध से तमतमा उठा। वह भी क्रोध में कुछ कहने ही वाली थी कि रामरखी, जो अभी तक उनकी बातें ही सुन रही थी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोल उठी, ''सूसन बेटी! इसमें क्रोध की क्या बात है? कुली का काम कोई घृणा की बात नहीं होती।

''देखो, मैं तुम दोनों को एक सुझाव देती हूँ। दोनों विचार कर लेना। सेठ करोड़ीमल का फार्म अब खाली पड़ा है। उसका पट्टा ले लो। एक मकान यहाँ बना लो। इस फार्म का काम करो और बम्बई में सट्टे का काम भी। मुख्य रूप से सूसन यहाँ रहे और सुन्दरलाल बम्बई में और फिर दोनों, दोनों स्थानों पर आते-जाते रहा करो जिससे परस्पर प्रेम भी बना रहे और एक-दूसरे के साथी भी बने रहो।''

''पर माँजी!'' सुन्दरलाल ने कहा, ''मैंने इससे विवाह किया है इसको अपने पास रखने के लिए। इससे यहाँ पर व्यवसाय कराने के लिए नहीं।''

''ठीक है बेटा! परन्तु मैंने कब कहा है कि यह तुमको छोड़ दे। न ही तुम दोनों कोई पृथक् व्यवसाय कर रहे हो। व्यवसाय तो दोनों का ही होगा। जितना सुख तुमको यहाँ इससे मिलेगा, उतना ही तुम इसके पास आओगे। अथवा जितना सुख तुम इसको बम्बई में दोगे, उतना ही अधिक यह तुम्हारे पास रहेगी। समझे?

''अब तुम जाओ और सो रहो। वाद-विवाद छोड़ मेरी योजना पर विचार करो। भगवान् तुम दोनों को सुमति दे और तुम एकमत होकर इस भवसागर में यात्रा कर सको।''

इतना कह रामरखी उठ पड़ी। फकीरचन्द ने भी कहा, ''विवाद में तो कभी कोई नहीं हारता। संसार में सफल वे होते हैं, जो अपने में संसार के अनुकूल होने की शक्ति रखते हैं। संसार में झगड़ा करने वाले सदा मुँह की खाते हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षष्ठ परिच्छेद

अगले दिन प्रातः का अल्पाहार करते समय सुन्दरलाल फकीरचन्द की माँ से कहने लगा, ''माँजी! हमने आपकी राय मानने का निर्णय कर लिया है।''

''ओह! तब तो मुझे अपनी सफलता पर स्वयं बधाई लेनी चाहिए।''

''पर माँजी!'' सूसन ने हँसते हुए कहा, ''आप तो पहले ही सफलता की मूर्ति हैं। आपके आशीर्वाद से मैं सफल हुई हूँ। मैं इनको विश्वास दिला सकी हूँ कि मैं जीवन-भर इनकी निष्ठावान पत्नी बनी रहूँगी और इनसे यहाँ के कार्य के लिए कुछ नहीं लूँगी।''

''तब तो तुम वास्तव में बधाई की पात्र हो। अच्छा बेटी सूसन अब क्या योजना है तुम्हारी?''

''ये आज ही झाँसी जाएँगे और राजा साहब से करोड़ीमल की भूमि का पट्टा बदलवाने की अनुमति ले लेंगे। मैं बम्बई जा रही हूँ और सेठ करोड़ीमल से पट्टा अपने नाम कराने का यत्न करूँगी। मैं आशा करती हूँ कि इसमें सफल हो जाऊँगी। कदाचित् वे कुछ माँगेंगे।

''तदनन्तर मैं यहाँ आ जाऊँगी आते ही अपने रहने के लिए एक लकड़ी की कुटिया बना लूँगी और काम आरम्भ कर दूँगी। जब तक कुटिया नहीं बनेगी, आपके पास रहूँगी। आशा करती हूँ कि आप अस्वीकार नहीं करेंगी और भैया फकीरचन्द से भी यथासम्भव सहायता की आशा करती हूँ।''

प्रारम्भिक कामों में तीन मास लग गए। सेठ करोड़ीमल को मनाना अति कठिन काम सिद्ध हुआ। उसको मनाने में शकुन्तला और पन्नादेवी की सहायता लेनी पड़ी। उसने बम्बई में पट्टा बदलने की रजिस्ट्री कर दी। बदले हुए पट्टे पर राजा साहब की स्वीकृति ले ली गई। इसके पश्चात् एक दिन सूसन, इस बार अकेली, फकीरचन्द के मकान के बाहर अपना सामान लिये हुए आ पहुँची।

उसी दिन से सूसन ने काम आरम्भ कर दिया। सूसन ने फकीरचन्द के काम की पुनरावृत्ति की। परिस्थितियाँ और प्रारम्भिक पूँजी के कारण अन्तर तो था, परन्तु सिद्धान्त में कहानी वही थी, जो फकीरचन्द की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरे वेतन पर आदमी रखकर, उनसे पूरा काम लेना, बचत से व्यय कम करना और बचे हुए रुपयों को पूँजी के रूप में प्रयोग करना। अवकाश के समय अपने को और अपने कर्मचारियों को उपजाऊ कामों में लगाए रखना; ये थे सिद्धान्त, जिनपर फकीरचन्द ने काम किया था और जिनका सूसन ने भी पालन किया।

जब मकान बन गया और उसमें रहने के लिए सब प्रकार की सुविधाओं और सुख का प्रबन्ध हो गया, तो सूसन ने सुन्दरलाल को अपने कार्य का विवरण लिखकर कहा कि वे अब आकर कुछ दिन तक काम का अध्ययन करें।

सुन्दरलाल आया और तीन दिन रहकर वापस बम्बई चला गया। वह सूसन के प्रबन्ध की आलोचना तो नहीं कर सका, परन्तु उसको यह कुटिया बम्बई जैसी सुखप्रद और रसमयी प्रतीत नहीं हुई। सूसन का विचार था कि यह दो कमरों वाली कुटिया अति सुखप्रद प्रतीत होगी, परन्तु वह एक बात भूल रही थी कि बम्बई में सुन्दरलाल अकेला तथा बेकार रहने के कारण, नियंत्रण के अभाव में बहुत सीमा तक उच्छृंखल हो चुका था। क्लब, स्विमिंग पूल, सिनेमा-थियेटर आदि देवगढ़ में नहीं थे।

सूसन को सुन्दरलाल के शीघ्र ही बम्बई भाग जाने पर निराशा हुई, परन्तु उसने अपने जीवन का एक लक्ष्य बना लिया था। वह अपने लड़के को एक सफल जमींदार बनाने का निश्चय कर चुकी थी। इस लक्ष्य-प्राप्ति में, सफलता प्राप्त करने के लिए वह इतनी लीन हो गई कि सुन्दरलाल के भाग जाने को भूल गई और काम में लगी रही।

समय व्यतीत हो गया। भूमि समतल हो गई। फलों की पेड़ियाँ लगा दी गईं और लकड़ी उपयोगी रूप में परिवर्तित कर, अच्छे मूल्य पर बेची जाने लगी। इसके साथ-साथ उसने अपनी कुटिया के चारों ओर एक सुन्दर पुष्प-वाटिका बनवानी आरम्भ कर दी।

इन सब कामों में व्यस्त रहने पर भी वह सुन्दरलाल और बिहारीलाल को पत्र लिखती रहती थी। देवगढ़ में आने में शकुन्तला से विशेष सहायता मिली थी, इस कारण वह उसको वहाँ की प्रगति विशेष रूप में लिखती रहती थी।

सुन्दरलाल तो कभी मास में एक-आध बार उसके सब पत्रों का इकट्ठा ही उत्तर दे देता था। शकुन्तला, ललिता और बिहारीलाल नियम से उसके पत्रों का उत्तर दिया करते थे।

सुन्दरलाल को देवगढ़ से लौटे छः मास से ऊपर हो चुके थे। इसपर भी उसने इधर आने की इच्छा प्रकट नहीं की थी। सूसन इससे किसी अनिच्छित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार की आशंका करने लगी थी। उसको विस्मय तो इस बात का था कि सुन्दरलाल ने उसको बम्बई आने के लिए कभी नहीं लिखा था। एक दिन सूसन ने बिहारीलाल को लिखा, ''भैया! तुम्हारे जीजाजी आजकल पत्रों का ठीक उत्तर नहीं देते। किसी दिन उनसे मिलकर, बिना पूछे, इसका कारण जानने का यत्न करो। मुझको कुछ सन्देह होने लगा है। यह केवल मात्र नारी में विद्यमान ईर्ष्या के कारण भी हो सकता है। इस पर भी जब तक तुम इस विषय पर लिखोगे नहीं, मेरे मन में शान्ति नहीं होगी।''

इस पत्र के पन्द्रह दिन के पश्चात् बिहारीलाल का पत्र आया। उसमें उसने केवल दो पंक्तियाँ लिखी थीं–

''सूसन बहिन! तुमको बम्बई में आए बहुत दिन हो गए हैं। मैं समझता हूँ कि तुमको यहाँ आकर अपने परिचितों पर दयादृष्टि रखनी चाहिए। मैं तुमसे मिलने की बहुत इच्छा रखता हूँ।''

इस समय खेतों में सिंचाई का काम हो रहा था। फसल के अच्छे तथा बुरे होने में इस काल को वह कठिन समझती थी। इसपर भी बिहारीलाल के पत्र से वह चिन्ता अनुभव करने लगी थी। अत: एक दिन वह फकीरचन्द के पास गई और बोली, ''मुझको एक सप्ताह के लिए बम्बई जाना है। इस समय सिंचाई हो रही है। मैं कभी नहीं जाती यदि कार्य आवश्यक न होता। आप मेरी सहायता कर दीजिए।''

फकीरचन्द ने शेषराम को सूसन के फार्म पर भेज दिया। उसका विचार था कि वह काम को सुचारु रूप से कर सकेगा।

इस प्रकार प्रबन्ध कर सूसन एकाएक बम्बई जा पहुँची। प्रात: छ: बजे उसने अपने घर की घंटी बजाई तो नौकर रामू ने दरवाजा खोल दिया और वह मालकिन को देख अवाक् खड़ा रह गया।

सूसन ने उसको इस प्रकार खड़े देख पूछा, ''रामू क्या है?''

''कुछ नहीं मालकिन! सेठजी भीतर हैं, परन्तु....'' वह आगे कुछ कह नहीं सका।

उसे चुप देख सूसन ने सब समझ कहा, ''चिन्ता न करो। मुझे सब मालूम है।''

इतना कह वह बैठक में सोफा पर जा बैठी और रामू से बोली, ''मेरा सामान नीचे टैक्सी में है। उसको ऊपर ले आओ।''

उसके अपने कमरे का दरवाजा बन्द था और भीतर कोई था। वह बाहर बैठक में बैठी कमरे का दरवाजा खुलने की प्रतीक्षा करने लगी।

लगभग आठ बजे दरवाजा खुला और एक औरत नाईट-गाउन पहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कमरे में से निकली। यह औरत श्याम वर्ण की, सुगठित शरीर और मोटे नख-शिख की थी। वह ड्राइंग-रूम में एक गोरी औरत को निश्चिन्त बैठे देख विस्मय कर रही थी कि सूसन ने पूछ लिया, "ओह! तो यह तुम हो? आओ, इधर आ जाओ। तुमसे ही मिलने आई हूँ।"

वह झिझकती हुई उसके सामने आकर खड़ी हो गई। सूसन ने सोफा पर अपने सामने बैठने का निमंत्रण दे दिया। वह बैठी तो सूसन ने पूछा, "तुम कौन हो?"

"चेतन।"

"क्या हो? कहाँ रहती हो और कब से यहाँ आई हो?"

"पर बहन जी! पहले आप ही बताइए न कि आप कौन हैं? कहाँ से आई हैं और किस मतलब के लिए यहाँ बैठी हैं?"

"यह तो तुम्हारे मित्र बता देंगे। हाँ, तुम्हारे विषय में उनको बताते हुए लज्जा लगेगी। इसलिए तुमसे ही पूछ रही हूँ।"

"लज्जा की कोई बात नहीं। अच्छा, उनको आ जाने दो। वे ही हमारा परिचय करा देंगे।"

"अच्छी बात है, रामू!" सूसन ने नौकर को आवाज दी। जब वह आया तो उसने कहा, "स्नानादि से निवृत्त हो चुकी हूँ। 'ब्रेक-फास्ट' लगा दो। इन बहन जी के लिए भी एक प्याला चाय ला दो, जिससे इनकी नींद खुल जाए।"

रामू मुस्कराया और रसोईघर की ओर चला गया। सूसन उठी और अपने कमरे में चली गई। सुन्दरलाल रात मद्यपान करता रहा था, इस कारण अभी तक सो रहा था। सूसन ने उसको उठाने का यत्न किया, परन्तु वह जागा नहीं। केवल करवट बदलकर फिर खुर्राटे भरने लगा।

सूसन पलंग के पास एक कुर्सी लेकर बैठ गई। दूसरी औरत अपने हाथ में चाय का प्याला लिये हुए कमरे में आ गई और मुस्कराते हुए सूसन और सुन्दरलाल की ओर देखने लगी।

रामू कहने आया कि 'ब्रेक-फास्ट' तैयार है, तो सूसन ने कह दिया, "लगाकर यहीं ले आओ।"

इसपर दूसरी औरत, जो चाय पी चुकी थी, खाली प्याला रामू को वापस कर हँसने लगी। जब सूसन ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो वह खड़ी-खड़ी ही कहने लगी, "मालूम होता है कि तुम इस पशु की पत्नी हो।"

"पशु की? तुम इस पशु के पास क्या लेने आई हो?"

इसपर उस औरत ने अपने कपड़े, जो एक ओर हैंगर पर टँगे थे, पहनने आरम्भ कर दिए। कपड़े पहनते हुए वह कहने लगी, "पति-पत्नी में जो मधुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्तालाप होने वाला है, मैं उसमें विघ्न नहीं बनना चाहती। इस कारण मैं समझती हूँ कि अब चले ही जाना चाहिए।''

''कहाँ जा रही हो ?''

''अपने घर।''

''कहाँ है वह ?''

''जहाँ मैं रहती हूँ। देखो बहिन! तुमको वहाँ आने की आवश्यकता नहीं होगी। यदि इस पशु को आवश्यकता होगी, तो यह मेरा पता जानता है।''

यह कहते हुए वह कपड़े पहनती गई। सूसन ने सुन्दरलाल को फिर उठाने का यत्न किया। इसपर आँख मूँदे हुए ही सुन्दरलाल ने नींद में कह दिया, ''चेतन डियर। अभी थकावट दूर नहीं हुई। तुम चाय पी लो। मैं अभी आधे घंटे में उठूँगा।''

इसपर वह औरत खिल-खिलाकर हँस पड़ी और संकेत से सूसन को सलाम कर कमरे से बाहर निकल गई।

एकाएक वह पुनः लौट आई और सुन्दरलाल के तकिए के नीचे से सौ-सौ रुपये के कुछ नोट, जो वहाँ रखे थे, उठा जेब में डाल बोली, ''यह तो भूल ही चली थी।'' पश्चात् वह पुनः सलाम कर चली गई।

जब सुन्दरलाल आँखें मलता हुआ जागा और पलंग पर उठ कर बैठा तो सूसन को सामने बैठा देख आश्चर्य करने लगा।

इसपर सूसन ने पूछा, ''क्या देख रहे हो ?''

''यहाँ तो कोई और थी। वह कहाँ चली गई है ?''

''जहाँ से आई थी।''

''और तुम कब आई हो ?''

सूसन के माथे पर त्योरी चढ़ गई। उसके मन में सुन्दरलाल के प्रति ग्लानि भर गई थी। वह उसको दो-चार जली-कटी सुनाने वाली थी कि उसको शकुन्तला की बात स्मरण हो आई। शकुन्तला ने एक बार कहा था कि पति तो पति ही है। वह अच्छा अथवा बुरा, त्याज्य नहीं हो सकता। सूसन के यह पूछने पर कि पति के ऐसा होने पर भी क्या उससे यौन-सम्बन्ध रहना चाहिए तो उसने कहा था कि यौन-सम्बन्ध के न होने पर भी, बच्चों का पिता होने के कारण, पति तो पति ही रहेगा।

यद्यपि वह शकुन्तला की इस जीवन-मीमांसा को स्वीकार नहीं करती थी, तो भी वह अपने बच्चे का ध्यान कर सुन्दरलाल से पृथक् होने में अपार कठिनाई अनुभव करती थी।

इस विचार के आते ही उसके माथे से त्योरी उतर गई। इतने काल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सुन्दरलाल परिस्थिति को समझ गया। अब वह खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, ''मैं यहाँ बहुत उदास रहता था। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे पास यहाँ रहा करो।''

''यहाँ रहने से क्या होगा, जो आपके देवगढ़ रहने से नहीं हो सकता?''

''वहाँ न बिजली है न पानी। कैरोसीन तेल के लैम्प की रोशनी और कुएँ का पानी, कच्ची सड़क और बैलगाड़ी की सवारी; साथ ही गँवार आदमियों की यह संगत, मुझको जंगलीपन प्रतीत होता है और मैं तो सभ्य समाज का एक अंग हूँ।''

''और जो कुछ आप यहाँ कर रहे हैं, वह सभ्य समाज की बातें ही हैं क्या?''

सुन्दरलाल हँस पड़ा। उसने सूसन का हाथ पकड़कर पलँग पर घसीटने का यत्न किया, परन्तु सूसन ने झटका देकर अपने को छुड़ा लिया और कहा, ''आप स्नानादि से निवृत्त हो जाइए। मैं ब्रेक-फास्ट ले चुकी हूँ। आज ही सायंकाल यहाँ से लौट जाना चाहती हूँ।''

''बस? तो आई किसलिए थीं?''

''आपके दर्शन करने। कर लिये हैं और मन तृप्त हो गया है।''

''एक-दो दिन तो ठहर जाओ। चार सौ मील की यात्रा कर आई हो और बिना विश्राम किए यहाँ से भाग रही हो?''

''मैं थकी हुई नहीं। मेरा काम वहाँ मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।''

''तो काम मुझसे भी प्यारा है?''

''हाँ, वह काम आत्मा के बन्धनों से सम्बन्ध रखता है। आपका प्यार शरीर का बन्धन मात्र है।''

''क्या मतलब?''

''मतलब समझाने से कौन समझता है? समय, परिस्थिति सबकुछ समझा देती है। अतः आपको समझाने के लिए उचित समय और परिस्थिति की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। अब उठिये, आपके साथ तनिक बाजार जाना है।''

: 2 :

सूसन उसी दिन लौट गई। सुन्दरलाल ने जब बहुत आग्रह किया तो उसने कह दिया, ''वहाँ चले आइए।''

देवगढ़ पहुँचकर उसने शकुन्तला को लिखा, ''मैं बम्बई गई थी, परन्तु वहाँ की अवस्था देख, मन में इतनी ग्लानि भर गई कि एक रात भी वहाँ रहने को चित्त नहीं किया। दिन-भर अनिश्चित, अनायोजित और निरुद्देश्य घूमती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रही। न किसी से मिलने को चित्त किया और न ही अधिक ठहरने को।

"शकुन्तला बहन! तुमको तथा ललिता को मुख दिखाने को भी चित्त नहीं किया। मैं तुमको अपने घर की बात बताती हूँ। जब मैं अभी उनकी पत्नी नहीं बनी थी और तुमसे मिली थी, तो यह विचार कर कि वे तुमको छोड़कर मुझसे विवाह कर रहे हैं, मन में गर्व अनुभव करती थी। मैं अपने में कुछ बात तुमसे श्रेष्ठ मानती थी। यह एक कारण था कि बिना विवाह के उनकी पत्नी बन गई। मैं समझती थी कि रुपया मेरे पास होने से मुझको किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं रह जाएगी। वे मुझको छोड़कर नहीं जाएँगे, क्योंकि मैं अपने को तुमसे सुन्दर मानती थी। परन्तु उस दिन यह देख कि वे मुझसे और तुमसे भी अधिक असुन्दर औरत से, जो असभ्य, निर्लज्ज तथा अशिक्षित है, सम्बन्ध बनाए हुए हैं, गर्व-हीन हो, अपने को अति तुच्छ मानने लगी हूँ।

"मुझको अपनी धारणा कि मिस्टर भगेरिया ने मुझको तुम पर उपमा, सुन्दर मानकर दी है, असत्य प्रतीत होती है। जब यह पता चला कि उसने मुझ और तुम दोनों पर एक वेश्या की उपमा दी है, तो मैं अपने मन में बहुत ही हीनता अनुभव करने लगी हूँ। मुझको तुम्हारा यह कहना कि रुपये की गारण्टी पर किसी की पत्नी बनना तो वेश्यापन है, ठीक ही प्रतीत होने लगा है।

"आज जब मैं अपने बच्चे के भविष्य के विषय में विचार करती हूँ तो विवाह को एक आर्थिक प्रपंच मानने को चित्त नहीं करता। तुमने तो कहा था कि धर्म का सम्बन्ध है। उस दिन की बात मुझको आज समझ में आ रही है। इससे मैं अपने आप में पतित हो गई अनुभव करने लगी हूँ।

"पहले मैं उनके यहाँ आने की सदा प्रतीक्षा किया करती थी। अब तो मैं यह चाहती हूँ कि वे न आए तो ही ठीक है। यूँ तो यदि उनमें किंचित् मात्र भी लज्जा है, तो वह स्वयं यहाँ नहीं आएँगे।

"मैं अब अकेलापन अनुभव कर रही हूँ। इस पर भी, जो कुछ यहाँ निर्माण करने की योजना मैंने बनाई है, वह मैं अपने जीवन का एक भाग समझने लगी हूँ। मैं उसको अब छोड़ नहीं सकती। यदि ऐसा न होता मैं बम्बई लौट जाने के स्थान फ्रांस लौटने की योजना बना चुकी होती।

"मैं कभी विचार करती हूँ कि कितना अच्छा हो कि तुम भी बच्चों के साथ यहाँ आ जाओ। तुमको साथ रखने से मेरा साहस दोगुना हो जाएगा। क्या यह सम्भव हो सकता है?

"पत्र अवश्य लिखते रहना। बिहारीलाल को मैं स्वयं लिख रही हूँ।"

उसने बिहारीलाल को भी लिखा, "बिहारी भैया! इस परदेश में जहाँ की मैं अभी नागरिक भी नहीं, तुम और शकुन्तला बहिन का आश्रय पाकर, मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने मन में उत्साह और निर्भयता अनुभव करती हूँ। इधर दादा फकीरचन्द और माताजी की सहायता और प्रोत्साहन मुझको भवसागर में डूबने से बचाए हुए है। तुम्हारे कहे अनुसार मैं बम्बई गई थी और जो कुछ वहाँ देख आई हूँ, उससे पुनः बम्बई जाने में रुचि नहीं रही।

"में वहाँ आपसे मिल नहीं सकी। यह समयाभाव के कारण नहीं था। यद्यपि मैं वहाँ दस घंटे रही थी, तो भी समय इतना था कि मैं सुगमता से तुमसे, शकुन्तला से और ललिता से मिल घंटों ही बैठ बातें कर सकती थी, परन्तु मन की अवस्था अनुकूल न होने के कारण, बिना किसी से मिले चली आई हूँ।

"अब तो तुम्हारे दर्शन देवगढ़-में ही होंगे। परीक्षा के पश्चात् तो तुम यहाँ आओगे ही।"

सूसन ने अपने मन की पूर्ण भावना और उस भावना बनने में कारण को फकीरचन्द की माँ से वर्णन कर दिया। रामरखी ने कहा, "तो तुम वहाँ ही क्यों नहीं रह गई?"

"मुझको वहाँ रहने में कुछ भी लाभ प्रतीत नहीं हुआ। इसके विपरीत मैं समझती हूँ कि यहाँ रहने से मैं अपने कार्य में सिद्धि प्राप्त कर सकूँगी।"

"देखो बेटी! तुम वहाँ रहतीं तो उसको कुमार्ग में जाने से रोक सकती थीं।"

"तो मैं उनपर जेल के दारोगा के समान देखभाल करने के लिए वहाँ रह जाती? नहीं माँजी! यह ठीक न होता। मैं अपने को यहाँ स्वतन्त्र रहने के योग्य बनाना चाहती हूँ। तब ही मैं उनको यहाँ लाने में सफल हो सकूँगी।

"माँजी! मैंने इन विषय पर बहुत विचार किया है। यह व्यवसाय, जो मैं यहाँ कर रही हूँ, बम्बई में की जा रही हेरा-फेरी से सौ गुना उत्तम है। जिस प्रकार का व्यापार वे करते है, वह तो पाप है। कम-से-कम समाज को उस प्रकार के व्यापार की किंचित् मात्र भी आवश्यकता नहीं। इसके विपरीत जो कुछ यहाँ किया जा रहा है, वह तो समाज की रीढ की हड्डी का पोषण करने वाला है।"

रामरखी इतनी दूर की बात नहीं जानती थी। इसपर भी वह यह तो देख रही थी कि फकीरचन्द गाँव के अनेकों रहने वालों की जीविका का साधन बन रहा है। यदि सूसन अपने प्रयास में सफल हो गई तो गाँव की आर्थिक समस्या पूर्णरूप से सुलझ जाएगी।

मार्च के अन्त में फसलें पकने लगी थीं और कटाई कराना और माल का खलिहानों में भरना आरम्भ हो गया था। सूसन पूर्ण कार्य अपनी देख-भाल में करा रही थी। इससे कार्य सतर्कता और सुचारु रूप से हो रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय सूसन को बम्बई से एक तार मिला। उसमें लिखा था 'मैं कल प्रातः की गाड़ी से जिरौन स्टेशन पर पहुँच रही हूँ। शकुन्तला।'

सूसन इस तार को पढ़कर उछल पड़ी। उसको विस्मय और साथ ही अपार प्रसन्नता भी हुई। अब तक उसने अपनी लकड़ी की-कुटिया में दो कमरे और बनवा लिये थे। इससे वह मन में शकुन्तला के रहने और उसके आराम के विषय में विचार करने लगी।

उसने शकुन्तला को देवगढ़ में आकर रहने का निमन्त्रण दिया था परन्तु यह बात तीन मास पुरानी हो चुकी थी। उसके पश्चात् लगभग दस-बारह चिट्ठियाँ आ-जा चुकी थीं। परन्तु इस विषय पर किसी की ओर से भी चर्चा नहीं हुई थी। आज एकाएक शकुन्तला के आने के समाचार से उसकी प्रसन्नता का पारावार नहीं रहा।

अगले दिन वह अपना घोड़ा-ताँगा लेकर गाड़ी के समय, जिरौन स्टेशन पर जा पहुँची। शकुन्तला आई तो उसके बच्चे भी साथ थे। उनको रेलगाड़ी से उतार और उनका सामान ताँगे में रखवा तथा उनको बैठा, घर की ओर आते हुए सूसन ने पूछ लिया, "शकुन्तला बहिन! सदा के लिए आई हो न?"

"तुम्हारा निमन्त्रण कितने काल के लिए था?"

"यही तो पूछ रही हूँ कि पूर्ण निमन्त्रण स्वीकृत मानूँ न?"

"देखो, क्या होता है? घर से तो यही विचारकर निकली हूँ। एक बात का भय लगा रहता है। वह यह कि इनके पिता कहीं यहाँ न आ धमकें। अब बच्चे बड़े और सज्ञान हो रहे हैं। अभी तक तो इनके मस्तिष्क में अपने माता-पिता के लिए श्रद्धा और भक्ति है। मैं उसको छिन्न-भिन्न नहीं होने देना चाहती।"

सूसन शकुन्तला को अपने घर ले गई। यह नदी के पार था और नदी के इस ओर ताँगा खड़ा करने के लिए सूसन ने एक तबेला बनाया हुआ था। नदी के पार अभी तक तो नौका से ही जाया जाता था। वहाँ जाकर सूसन ने शकुन्तला के लिए दो कमरे पृथक् दे दिए।

अगले दिन सूसन शकुन्तला को बिहारी की माँ से मिलाने ले गई। शकुन्तला और सूसन में इतना स्नेह देख रामरखी को भारी आश्चर्य हुआ। "तो तुम भी आ गई हो?" रामरखी ने पूछा।

"हाँ माँजी! अभी एक और यहाँ आने की प्रतीक्षा कर रही है।"

रामरखी समझी नहीं और प्रश्न-भरी दृष्टि में उसका मुख देखने लगी। इसपर शकुन्तला ने कहा, "ललिता यहाँ आकर आपकी सेवा में रहना चाहती है।"

रामरखी ने कुछ गम्भीर होकर कहा, "मैंने और फकीरचन्द ने इस विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर बहुत विचार किया है। फकीरचन्द का कहना है कि सेठजी की अनुमति के बिना, उनकी लड़की से विवाह करना उचित नहीं होगा।''

''यह तो ठीक बात नहीं माँजी! यों तो कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि पिताजी मान जाएँगे और स्वयं ही कन्या-दान करेंगे; परन्तु मैं पूछती हूँ कि यदि आपकी यह धारणा बनी रही, तो लड़कियों के जन्मसिद्ध अधिकारों का क्या होगा? क्या लड़कियों को अपना वर वरण करने की भी स्वतन्त्रता नहीं? क्या वे अपने माता-पिता तथा पति की अधीनता के लिए ही पैदा हुई हैं?''

''समय आने पर विचार कर लेंगे। कितने वर्ष की हो गई है ललिता?''

''वैसे तो उसके वयस्क होने में अभी डेढ़ वर्ष है, पर सम्भव है उससे पहले ही बात बन जाए।

''देखिए माँजी! सूसन बहिन की चिट्ठी गई थी कि मैं उसके पास आकर रहने लगूँ। मैं पत्र पर तीन मास तक विचार करती रही। यह विचारकर कि पिताजी कहीं इसे अस्वीकार न कर दें, मैं उनको कहने से डरती थी। उनसे लड़कर मैं यहाँ आ नहीं सकती थी। अब जीवन में वे ही तो मेरा आश्रय रह गए हैं।

''ललिता के आग्रह पर मैंने माँ, से बात की। वे मेरे प्रस्ताव को सुन स्तब्ध रह गईं। फिर कुछ विचारकर बोलीं, 'कदाचित् यह भगवान् की ओर से ही कोई प्रपंच हो रहा है। क्या जाने यह ललिता के लिए जाने का मार्ग खुल रहा हो। मैं तुम्हारे पिता से बात करूँगी।''

''दो दिन पश्चात् पिताजी ने भोजन के समय अपने-आप ही बात चला दी। उन्होंने मुझसे पूछ लिया, 'शकुन्तला! तुम अपनी सौकन के साथ रहने के लिए जाना चाहती हो?'

''इस प्रश्न से मेरा हृदय बैठने लगा। मैं पिताजी से झगड़ा करना नहीं चाहती थी। मैंने धीरे से कहा, 'सूसन ने निमन्त्रण दिया है।''

'क्या लिखती है?'

''इसपर मैंने इनका पत्र निकालकर सुना दिया। पत्र सुन वे कुछ देर चुप बैठे रहे। फिर पूछने लगे, 'सूसन के फार्म का क्या हाल है?'

''उसने लिखा है कि वर्ष के अन्त तक दस-पन्द्रह सहस्र की आय हो जाएगी और उसका अनुमान है कि पाँच वर्ष में फार्म पचास हजार की आय देने लगेगा।

'' 'सत्य?' फिर कुछ विचारकर उन्होंने कहा, 'मेरी गिनती से भी यही अनुमान निकला था, परन्तु मुझको कोई वहाँ काम करने वाला नहीं मिला। राम तो देहात में रह ही नहीं सका। अच्छा देखो,' उन्होंने मेरी आँखों में देखते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, 'मैं तुमको एक लाख रुपये का ड्राफ्ट दे देता हूँ, जिससे तुम अपना रुपया वहाँ लगाकर, फार्म की उन्नति में हाथ बँटा सको। साथ ही मैं चाहता हूँ कि सूसन के साथ तुमको भिखारियों की भाँति नहीं रहना चाहिए।'

"इस प्रकार मैं एक लाख रुपया लेकर यहाँ आ पहुँची हूँ। कल मैं ललितपुर में अपना हिसाब बैंक में खोलने जा रही हूँ।

"सूसन बहिन का तो कहना है कि इस कार्य में इतने रुपये की आवश्यकता नहीं, जितनी मेहनत और देखभाल की है। इनकी अनुमति से ही मैं यह रुपया बैंक में जमा कराने जा रही हूँ।

"माँजी! इसी प्रकार एक दिन ललिता भी आभूषणों से लदी-फदी यहाँ चली आएगी।"

रामरखी मुस्कराती रही। उसने इसके उत्तर में कुछ नहीं कहा।

: 3 :

अगले वर्ष बिहारीलाल बी०ए० की परीक्षा देकर देवगढ़ आ गया। उसको यह तो विदित था कि शकुन्तला और सूसन ने अपने कार्य के क्षेत्र को फकीरचन्द से भी अधिक विस्तृत कर लिया है।

नदी पर नौकाओं का पुल बाँधा गया था, जो वर्ष में नौ मास तक खुला रहता था और लोग नदी के आर-पार सुगमता से आते-जाते थे।

सूसन ने रेशम पैदा करने और उसको रँगने का काम खोल दिया था। रेशम के कीड़ों को पालने के लिए नदी के किनारे, जंगल के एक भाग में लकड़ी के शेड डालकर प्रबन्ध कर लिया गया था। वहाँ पर ही रेशम बटने और अटरने के करघे लगाए गए थे, जो हाथ से चलते थे। इस प्रकार सूसन के स्वप्न साकार होने लगे।

सूसन का अनुमान था कि जब यह काम पूरे बल से होने लगेगा, तो केवल इससे ही बीस हजार आय की आशा की जा सकती है।

रेशम और कपड़ा रँगना भी सूसन ने यहाँ आरम्भ करवा दिया था। ये सब काम देवगढ़ के लोगों को भी सिखाए जा रहे थे। सूसन ने लकड़ी के सन्दूक, जिनमें रेशम के कीड़े पाले जाते थे, गाँव के कई लोगों के घरों में रखे थे। वह कीड़ों के अण्डे अपने फार्म पर पैदा करती थी और गाँव वालों के पास बेच देती थी। साथ ही उसने रेशम अटरने और बटने की लकड़ी की चरखियाँ दे रखी थीं, जिनसे वे रेशम की अट्टियाँ बनाकर सूसन के पास बेच जाते थे। फिर वह उन अट्टियों को रँगकर अथवा ऐसे ही बम्बई बेचने के लिए भेज देती थी।

इसके अतिरिक्त सूसन ने फलों के बगीचे लगवाए थे। उनमें नींबू, पपीता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो अभी तैयार हो रहे थे। सन्तरे, अंगूर, अनार, अमरूद आदि अभी फल नहीं देने लगे थे।

लकड़ी के फर्नीचर का काम और लोहार के काम के लिए उसने फकीरचन्द के साथ साझेदारी कर ली थी। फकीरचन्द द्वारा खोले गए उद्योग-धन्धों के सिखाने के काम में भी वह अपने भाग का खर्चा देने लगी थी।

इसके साथ ही देवगढ़ से दोनों फार्मों तक पक्की सड़क बनवा ली थी। देवगढ़ से जिरौन तक सड़क तो डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने बनवा रखी थी। परिणाम यह हो रहा था कि अब दोनों फार्मों का माल सुगमता से बैलगाड़ियों में स्टेशन तक ले जाया जा सकता था।

बिहारीलाल ने गाँव में जीवन का स्पन्दन देखा। यह देख उसको वह दिन स्मरण हो आया, जब वह अपनी माँ और भाई के साथ बैलगाड़ी में, जो उन्होंने जिरौन से देवगढ़ आने के लिए दो रुपये में की थी, हिचकोले खाते हुए वहाँ पहुँचा था। अब तो गाँव के कई आदमियों ने घोड़े-ताँगे रख लिये थे और चार-चार आने में देवगढ़ से स्टेशन तक सवारी लेकर जाते थे।

एक दिन सूसन ने बिहारीलाल को एक नीले कागज पर एक नक्शा दिखाया। यह एक बिजलीघर बनाने की योजना थी। सूसन ने बताया, ''मैं और तुम्हारे भाई साहब इसमें साझीदार हैं। नदी के तीन मील ऊपर से, नहर लाई जाएँगी और उस पहाड़ी के पास, जहाँ नदी तेजी से नीचे को बहती है, बिजली की मशीन लगेगी और नहर के पानी से चलेगी। प्रान्तीय सरकार से स्वीकृति ले ली गई है। वह नहर राजा साहब की जमीन पर से आने वाली है। उनसे भी लिखत-पढ़त हो गई है। हम इस पर पचास हजार रुपया व्यय करने वाले हैं। नहर हम बनवा देंगे और मशीन बम्बई की एक फर्म लगा देगी।

''हमारी यह योजना दो वर्ष में पूरी होगी और मैं आशा करती हूँ कि उसके पश्चात् बम्बई और देवगढ़ में कोई अन्तर नहीं रह जाएगा।''

''एक अन्तर तो रहेगा ही।'' बिहारीलाल ने कहा, ''एक स्थान पर अतुल धन-सम्पद् के साथ-साथ नग्न निर्धनता विद्यमान है और दूसरे स्थान पर सब खाते-पीते लोग होंगे।''

एक दिन माँ ने बिहारीलाल से बम्बई के विषय में पूछते हुए ललिता के विषय में पूछ लिया, ''कैसी है वह अब ?''

''ठीक है! मैं आने से पहले उससे मिलने गया था। मैंने उससे पूछा था, 'शकुन्तला से मिलने चलोगी ?' वह बोली, 'हमें न कोई ले जाता है, न कोई भेजता है।' इतना कहते-कहते उसकी आँखें भर आई थीं और वह अपने कमरे की ओर भाग गई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने उसकी माँ से मिलकर इस घटना का वर्णन किया, तो वह कहने लगी, 'अब विवाह हो जाना चाहिए। प्रश्न तो यह है कि इस बात को कौन, किस प्रकार आरम्भ करे? अन्तिम पत्र जो सेठजी और फकीरचन्द के भीतर लिखे गए हैं, बहुत बड़ी बाधा बन रहे हैं। उनकी उपस्थिति में, मेरा कुछ कहने का साहस नहीं होता। मैं तो ललिता के इक्कीस वर्ष की होने की प्रतीक्षा कर रही हूँ और विचार कर रही हूँ कि अपनी समस्या को वह स्वयं ही सुलझाने में सफल हो सकेगी।

"उधर एक और समस्या उत्पन्न हो रही है। रामचन्द्र का विवाह शीघ्र ही होने वाला है। सुना है कि राम की बहू बहुत तेज मिजाज है। उसके आने से पूर्व ही यदि ललिता के हाथ पीले कर सकती, तो कदाचित् मैं भी सेठ कुन्दनलाल की भाँति हरिद्वार में जाकर रहने लगती।"

" 'माँ जी!' मैंने कहा, 'क्या इस विषय में हम कुछ नहीं कर सकते?'

" 'मैंने तो अपने को भगवान् के भरोसे छोड़ रखा है।' यह ललिता की माँ ने कहा।

"इस परिस्थिति में," बिहारीलाल ने अपनी माँ से कहा, "यदि हम थोड़ा-सा यत्न करें, तो कुछ तो किया ही जा सकता है।"

इसपर रामरखी गहरी सोच में पड़ गई। वह दीर्घ निःश्वास लेकर बोली, "यदि बात आरम्भ करने का प्रश्न है, तो वह मैं कर सकती हूँ। समस्या बात आरम्भ करने की नहीं है। वह है फकीरचन्द से पूछकर बात करने अथवा पहले बात कर फिर पीछे पूछने की। यदि इस बार बात विफल हुई तो फिर फकीरचन्द को दुबारा नहीं कहा जा सकेगा।"

बिहारीलाल ने अपनी विचार की हुई बात कह दी, "माँ! तुम एक पत्र लिखो। उसका लेख मैं बना देता हूँ। तुम हस्ताक्षर कर देना। साथ ही शकुन्तला बहिन से एक पत्र लिखवा देता हूँ। मैं समझता हूँ कि काम बन जाएगा और एक-आध मास में ही भाभी तुम्हारे चरण स्पर्श कर, आशीर्वाद की भागी बन सकेगी।"

"अच्छा, लिखकर दिखाओ कि तुम क्या चाहते हो।"

बिहारीलाल ने एक पत्र अपनी माँ की ओर से ललिता की माँ को लिख दिया। उसने लिखा—

"प्रिय बहिन जी!

राम राम। एक दुर्घटना के घटने से, जो कदाचित् भ्रम के कारण अथवा किसी भूल के कारण घट गई थी, दो भाग्य से मिलने वाले प्राणियों के भीतर एक दीवार खड़ी हो गई है। मैं इस बात को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभव करती हूँ और चाहती हूँ कि जैसे भी हो, इस दीवार को गिराकर मार्ग साफ कर दिया जाए।

"अतः बहिन जी! मैं आपसे और सेठजी से निवेदन करती हूँ कि वे पिछली बातों को भूल, ललिता और फकीरचन्द के भाग्य का मेल होने की स्वीकृति दे दें।

"हमें इसमें भारी प्रसन्नता होगी और जहाँ तक मुझको पता चला है, ललिता को भी इससे सुख और सन्तोष मिलेगा।

"मैंने अभी फकीरचन्द से बात तो नहीं की, परन्तु मैं विश्वासपूर्वक कहती हूँ कि वह माँ के आग्रह की अवहेलना नहीं करेगा। मुझको भय सेठजी का है। इसलिए आपसे प्रार्थना कर रही हूँ कि आप बच्चों के सुख के मार्ग से बाधा दूर करने में हमारी सहायता करें।"

जब बिहारीलाल ने यह लिखकर माँ को सुनाया, तो उसने चिन्ता के भाव में कहा, "इसमें कुछ अपनी हेठी की गन्ध आती है। मुझे तो झुकने में शोभा दिखाई देती है, परन्तु फकीर न जाने क्या समझेगा?"

"वह मैं निपट लूँगा माँ! यदि कहीं हमारी योजना असफल हुई, तो पूर्ण दोष अपना मान लूँगा। कह दूँगा कि मैंने खाली कागज पर तुम्हारे हस्ताक्षर करवा लिये थे।"

"तो तुम ललिता को यहाँ लाने के लिए बहुत ही उत्सुक हो?"

"माँ! मैं उसको माँ कह चुका हूँ और अब पुत्र बनने से पीछे नहीं हट सकता।"

"अच्छी बात है। जब तुम कहते हो तो मैं भी अपने भाग का उत्तरदायित्व लेने से पीछे नहीं हट सकती। चिट्ठी भेज दो और मैं स्वयं ही इस विषय में फकीरचन्द से बात करूँगी।"

इस प्रकार चिट्ठी बम्बई भेज दी गई। बिहारीलाल ने शकुन्तला को कहकर एक चिट्ठी उसकी ओर से भी लिखवा दी और एक सप्ताह के भीतर ही सेठजी का पत्र आया। इसमें उन्होंने लिखा—

"बेटा फकीरचन्द! मैं पूर्ण घटना को लिखकर तुमको दुःखी करना नहीं चाहता। केवल इतना ही बताना पर्याप्त होगा कि मनुष्य के कार्य संस्कारों, परिस्थितियों तथा समय के अधीन होते हैं। ये तीनों ही वस्तुएँ बदलने वाली हैं। इससे कुछ अधिक लिख नहीं सकता। मैं भ्रम में फँसा हुआ, तुमको फँसाने का षड्यन्त्र कर बैठा।

"भला हो भगवान् का कि लक्ष्मीधर बक गया। अब मुझे पिछली पूर्ण घटना पर पश्चात्ताप हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदि तुम अब अपने पूर्व निश्चय पर फूल चढ़ाओ, जैसाकि तुम्हारी माँ के पत्र से प्रतीत होता है कि यह हो सकेगा, तो मैं लड़की को लेकर अपने कुछ सम्बन्धियों के साथ वहाँ आ जाऊँगा और ललिता का विवाह तुमसे कर जाऊँगा।

"बेटा! हम मनुष्य हैं और भूलें करते हैं, परन्तु भगवान्, जो हमारे हृदय में बैठा है, सद्प्रेरणा देकर, हमको राह दिखाता रहता है। पत्र का उत्तर आते ही मैं वहाँ आने का प्रबन्ध करूँगा।"

पत्र फकीरचन्द को मिला, तो उसको, एक ओर तो माँ पर क्रोध चढ़ आया और दूसरी ओर सेठजी के अपने किए पर पश्चात्ताप करने से विस्मय तथा प्रसन्नता हुई। पत्र को पढ़ते हुए वह कितनी ही देर तक बैठा विचार करता रहा। रात के भोजन के समय उसने माँ से पूछ लिया, "माँ! तुमने सेठ करोड़ीमल को कोई पत्र लिखा था।"

"सेठ को नहीं, पन्ना देवी को लिखा था। उसमें यही लिखा था कि बड़ों के हठ ने दो बच्चों के भीतर दीवार खड़ी कर रखी है। क्यों? कुछ सन्देश आया है वहाँ से?"

"माँ! तुमने ठीक नहीं किया। मेरे पूछे बिना तुमने उनसे क्षमा माँग ली प्रतीत होती है। मैं तो कुछ ऐसी घटना की आशा, तब से ही कर रहा था, जब से ललिता की बहिन यहाँ आई है।"

"क्षमा की बात तो मैं जानती नहीं। इतना जरूर लिखा था कि यह व्यापार का झगड़ा सम्बन्धों में बाधक नहीं बनना चाहिए।"

"तो तुम मुझको विवाह करने के लिए कहती हो?"

"मैं तो पाँच वर्ष से कह रही हूँ?"

"ललिता से?"

"मैं उसको आशीर्वाद दे चुकी हूँ फकीर! क्या मेरा आशीर्वाद निष्फल करना चाहते हो?"

इसने फकीरचन्द का मुख बन्द कर दिया। उसने भोजन के लिए बैठते हुए कहा, "तो समधिन से पूछ लो कि वे विवाह के लिए कब आ रहे हैं। साथ ही लिखें कि कितने आदमी उनके साथ आएँगे, जिससे उनके ठहरने और भोजनादि की व्यवस्था की जा सके।"

"जुग-जुग जियो बेटा! तुमने मेरा मान रख लिया है। मैं बहुत ही प्रसन्न हूँ। माँ के अन्तःस्थल से निकला आशीर्वाद सदैव तुम्हारी रक्षा करेगा और तुमको सुखी रखेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 4 :

सूसन जब सुन्दरलाल को यह कह कि वह देवगढ़ में आ जाए, बम्बई से चली आई तो सुन्दरलाल और भी निराशा में डूब गया। निराश व्यक्ति के लिए पथ-भ्रष्ट होना बहुत ही सहज है। सट्टे में उसको फिर कुछ आय हुई थी। परन्तु मदिरापान, जुआ और वेश्या-गमन तो सोने के पहाड़ों को भी गला देने की सामर्थ्य रखते हैं। ज्यों-ज्यों उसके पास धन कम होता गया, एक जुआरी की भाँति उसकी रुचि इन व्यसनों में अधिक होती गई।

बम्बई से आने के पश्चात् सूसन ने एक पत्र उसको लिखा था। उसमें उसने लिखा था, ''डियर लाल! मैं समझती हूँ कि आपका बम्बई में रहना अति हानिकारक है। आप अब पीने लगे हैं, वह भी इतनी, जितनी कि मेरे पिता के घर में, जहाँ यह बिना मूल्य के प्राप्य थी, नहीं पी जाती थी। आप वेश्यागामी हो गए हैं। इसलिए नहीं कि आपको अपनी पत्नी उपलब्ध नहीं। आपको विदित है कि शकुंतला बम्बई में विद्यमान है और वह आपको कभी इंकार न करती। इसपर भी आपने गन्दी नाली का पानी पीना स्वीकार किया।

''लाखों रुपये तो यहाँ नहीं हैं, परन्तु जितना आपके खाने-पीने के लिए चाहिए, उससे बहुत अधिक आपको मिल जाएगा। कहा मान लीजिए। इसी में आपका और मेरा कल्याण है।''

सुन्दरलाल ने पत्र का उत्तर नहीं दिया। उत्तर न आने से सूसन ने भी उसका ध्यान छोड़ दिया। वह समझती थी कि सुन्दरलाल अपने पिता की भाँति दिवाला निकालेगा। तब उसका समय आएगा और वह उसको कीचड़ में से निकालने में सफल हो सकेगी।

जब तक बिहारीलाल वहाँ रहा, वह उसके द्वारा सुन्दरलाल के समाचार पाती रही। बिहारीलाल उसको लिखता रहता था कि मैरीन ड्राइव वाले मकान में दिन-रात राग-रंग मचा रहता है।

यह सब समाचार बिहारीलाल सुन्दरलाल के नौकर रामू से पाता था और जब भी वह वहाँ जाता और समाचार पाता, तो वह रामू को एक रुपया इनाम का दे आता था। बिहारीलाल का अंतिम पत्र, जो उसने परीक्षा के पश्चात् लिखा था, इस प्रकार था—''सूसन बहिन! परीक्षा समाप्त हुई। मेरी इच्छा अब और आगे पढ़ने की नहीं है। अतः अब कॉलेज और बम्बई को अंतिम नमस्कार कहकर आ रहा हूँ। चलने से पूर्व बम्बई और पूना की सैर करने का विचार है। इस कारण देवगढ़ पहुँचने में कुछ दिन लग जाएँगे।

''मैं कल मेरीन ड्राइव वाले मकान पर गया था। वहाँ उस फ्लैट को,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें आप रहती थीं, ताला लगा था और बाहर सरकारी कुर्की का कागज लगा था। मैं अभी इसका अर्थ समझने का यत्न ही कर रहा था कि रामू मुझको दरवाजे के बाहर खड़ा देख सलाम कर कहने लगा, 'बाबू! बहुत दिन के बाद आए हो?'

"मैंने उत्तर दिया, 'मेरी परीक्षा थी। इस कारण फुर्सत नहीं मिली। क्या हुआ है?' मैंने पूछा।

"उसने बताया, 'यहाँ का राग-रंग तो चल ही रहा था। सेठजी खुले हाथ रुपया खर्च कर रहे थे। कदाचित् वे उधार भी लेते रहे हैं। उधार देने वालों ने नालिश कर दी है और सब समान की कुर्की हो गई है। मकान तो मेम साहब के नाम है, कुर्क नहीं हो सका, परन्तु सामान और बर्तनों को ताला लग गया है।

'मैंने नीचे के फ्लैट वालों की नौकरी कर ली है। आज आपको ऊपर चढ़ते देखा, तो बताने चला आया हूँ।"

'सेठजी का कुछ पता है?'

'हाँ, वे चेतन वेश्या के घर जाकर रहने लगे हैं।'

"रामू ने पता बताया तो मैं मकान देखने चला गया। कुछ समय तक मकान के नीचे प्रतीक्षा करने पर, सुन्दरलाल मकान से उतरता दिखाई दिया। मैं बिजली के खम्भे के पीछे छिप गया और वह लड़खड़ाते कदमों के साथ एक ओर चला गया।"

इस पत्र के नीचे बिहारीलाल ने चेतन का पता लिखा था।

इस पत्र के आने पर सूसन और शकुन्तला में विचार-विमर्श होने लगा। शकुन्तला का विचार था कि सुन्दरलाल के पास अभी भी रुपया है, अन्यथा वह वेश्या के घर पर न जाता और न ही वह उसको अपने घर में घुसने देती।

पत्र लिखा गया, परन्तु अभी भी उत्तर नहीं आया। इससे दोनों औरतों ने यह समझा कि सुन्दरलाल ने लेनदारों से छिपाकर अवश्य बहुत-सा रुपया रखा हुआ है।

बिहारीलाल देवगढ़ पहुँचा तो दोनों औरतों ने उससे अपने पति के विषय में और सूचना प्राप्त की और अभी चुप रहने के अतिरिक्त और कोई उपाय ठीक नहीं समझा। बिहारीलाल का निश्चित मत था कि निरन्तर लिखते रहना चाहिए और इस घर का द्वार उसके लिए सदैव खुला रहना चाहिए। उसका विचार था कि उसको इस बात का विश्वास होना चाहिए कि उसको इस घर में मान और सुख मिलता रहेगा। इतना तो वह भी समझता था कि जब तक उसके पास रुपया है, तब तक वह यहाँ नहीं आएगा।

ऐसा ही किया गया। अनुमान के अनुसार सुन्दरलाल का उत्तर नहीं आया। इसपर भी पत्र लिखा जाता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय ललिता के विवाह की बात हो गई और सेठ करोड़ीमल ने लिख भेजा कि माघ शुक्ला त्रयोदशी को विवाह का मुहूर्त निकलता है और वह लगभग बीस आदमियों के साथ आएगा; फकीरचन्द को किसी प्रकार का प्रबन्ध नहीं करना चाहिए। वह अपने साथ हर प्रकार का खाने-पीने तथा रहने का सामान लेकर आएगा। करोड़ीमल ने शकुन्तला को लिखा कि नदी के पार खेमें लगाने के लिए भूमि ठीक करा दे। इसके अतिरिक्त अन्य किसी बात के प्रबन्ध करने की आवश्यकता नहीं। शकुन्तला ने अपने पिता को पत्र लिखा कि यदि हो सके तो अपने दामाद को साथ लेते आएँ।

सेठ करोड़ीमल की समझ में नहीं आया कि ऐसा क्यों लिखा गया है। इसपर भी उसने लड़की की बात पूरी करने का निश्चय कर लिया और वह लिखे पते पर जा पहुँचा।

मकान पर पहुँच उसने देखा कि वहाँ सारंगी-तबला बज रहा है और चेतन पाँव में घुंघरू बाँध कमरे में बीचो-बीच बैठी है। बहुत से लोग उसका नाच देखने के लिए कमरे की दीवार के साथ-साथ, बड़े-बड़े तकियों का आश्रय लिये बैठे थे। सेठ पहुँचा तो चेतन ने प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। सेठ ने पूछा, ''सुन्दरलाल कहाँ है?'' चेतन ने उंगली के संकेत से एक नौकरानी को कह दिया। वह नौकरानी सेठजी के पास आई और बोली, ''चलिए, आपको सुन्दरलाल के पास ले चलूँ।''

सेठ करोड़ीमल उस नौकरानी के साथ ऊपर की मंजिल पर जा पहुँचा। वहाँ एक अति गंदे कमरे में, छोटी-सी खाट पर, मैले बिस्तर पर और कई दिन के मैले कपड़े पहने सुन्दरलाल लेटा हुआ था। सुन्दरलाल की मूँछ-दाढ़ी बढ़ रही थीं। उसका मुख पीला पड़ गया था और गाल तथा आँखें धँस गई थीं।

करोड़ीमल सुन्दरलाल की भयानक सूरत देख भयभीत खड़ा रह गया। सुन्दरलाल ने सेठ की ओर देखा तो आँखें बन्द कर पड़ा रहा। वास्तव में वह विचार कर रहा था कि वह क्यों आया है।

सुन्दरलाल को चुप देख करोड़ीमल ने पूछा, ''सुन्दरलाल! क्या तकलीफ है तुमको?''

''यकृत में कैन्सर हो गया है। डाक्टरों ने जवाब दे दिया है। चेतन ने मरने के लिए यह स्थान दे रखा है?''

''चलो मेरे साथ। मैं तुम्हारी चिकित्सा कराऊँगा।''

''व्यर्थ है। सब डाक्टरों की राय है कि कैंसर है और इसकी कोई चिकित्सा नहीं।''

''नहीं है तो न सही। परंतु इस रंडी के घर में मरने से तो अपने घर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलकर मरना ठीक रहेगा।''

''अपना घर?'' वह हँस पड़ा। उसने पूछा, ''वह कहाँ है?''

''देवगढ़ में। शकुन्तला भी आजकल सूसन के पास ही रहती है। सुना है कि उन्होंने बहुत ही सुन्दर मकान बना लिया है।''

''सूसन के पत्र तो आते रहते हैं। परन्तु यह विचार कर कि मरने के समय उसको कष्ट देने क्यों जाऊँ, मैं यही पड़ा हुआ हूँ। अब यह सुन कि शकुन्तला भी वहाँ है, आश्चर्य हुआ है।''

''क्यों, आश्चर्य क्यों हुआ? सूसन बहुत ही अच्छी लड़की है। तुमको विदित होना चाहिए कि मैं अपनी भूमि उसके नाम करने के लिए तैयार नहीं था, परन्तु शकुन्तला के आग्रह को मैं टाल नहीं सका। उस भूमि पर सूसन ने स्वर्ग निर्माण कर लिया है।''

कुछ विचार कर सुन्दरलाल ने कहा, ''चित्त नहीं करता। मरने के लिए युवा-पत्नियों के पास जाने में लज्जा लगती है।''

''और इस जने-खने की बीवी के घर मरने में लज्जा नहीं लगेगी? इससे बाप-दादाओं का नाम रोशन करोगे न?''

''पर मुझसे हिला भी नहीं जाता। मैं वहाँ जा नहीं सकूँगा।''

''अधिक-से-अधिक आराम के साथ ले जाने का प्रबन्ध कर दूँगा।''

''ले जाने का? तो आप भी वहाँ चल रहे हैं?''

''हाँ, ललिता का विवाह फकीरचन्द के साथ हो रहा है। मैं वहाँ जाकर कर रहा हूँ। शकुन्तला ने लिखा है कि तुम्हें साथ ले चलूँ।''

''तो ललिता का विवाह वहीं होगा?''

''हाँ, माघ पूर्णिमा त्रयोदशी को विवाह होगा। आज नवमी है। कल हम यहाँ से चलेंगे। सामान इत्यादि भेजा जा चुका है। काम करने के लिए नौकर भी भेजे जा चुके हैं।''

''जी तो करता है पर विश्वास नहीं होता कि वहाँ तक पहुँच सकूँगा। मैं जब हिलता-डुलता हूँ, तो असह्य वेदना होती है।''

''मेरा विचार है कि तुम्हें चलना चाहिए। यदि यह सत्य है कि तुमको कैंसर है और तुम वहाँ नहीं गए, तो दोनों औरतें तुमको इस अंतिम समय में, उनसे तटस्थ रहने के लिए हठ करने पर जीवन भर क्षमा नहीं करेंगी और भगवान् जाने तुम्हारी आत्मा किस यंत्रणा में फँसी रहेगी।''

सुन्दरलाल मान गया। करोड़ीमल गया और स्ट्रेचर लाकर सुन्दरलाल को उठवाकर ले गया। उसको ले जाने में पूरी सावधानी की गई, इसपर भी वह पूर्ण मार्ग-भर वेदना से तड़फड़ाता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़ीमल को सुन्दरलाल की दशा देख अपने किए पर पश्चात्ताप होने लगा। अपने घर की तलाशी ली जाने पर क्रुद्ध होकर उसने सेठ कुन्दनलाल और सुन्दरलाल की जड़ों में तेल देने का षड्यन्त्र किया था। वकील सोमनाथ और पांडे ज्योतिषी को उसने तीन लाख रुपया देकर अपनी योजना सफल कराई थी। आज उसको अपने किए पर पश्चात्ताप हो रहा था। अपने हाथों से ही उसने अपनी लड़की के सुहाग को आग लगाई थी। एक बार वह ललिता का भी यही कुछ करने जा रहा था। उसकी पूर्ण योजना ललिता के सत्याग्रह ने विफल कर दी थी।

विवाह से दो दिन पूर्व सेठ और उसके कुछ सम्बन्धी तथा मित्र जिरौन पहुँच गए। वहाँ इन लोगों के ले जाने के लिए सवारी का प्रबन्ध किया हुआ था। सुन्दरलाल के लिए सेठ स्ट्रेचर बम्बई से ही साथ लाया था। शकुन्तला अपने सम्बन्धियों के स्वागत के लिए स्टेशन पर आई हुई थी। उसको सुन्दरलाल के आने का भी पता था, परन्तु वह यह नहीं जानती थी कि वह इस हालत में आ रहा है।

जब गाड़ी में से उसको स्ट्रेचर पर डाले हुए निकाला गया, तो वह उसका मुख देख मूर्तिवत् खड़ी रह गई।

सुन्दरलाल की हजामत इत्यादि करवा दी गई थी। उसके शरीर को स्पंज करवा कर, साफ-सुथरे कपड़े पहना दिए गए थे। इस पर भी उसके पिचके गाल और भीतर धँसी हुई आँखें छिपाई नहीं जा सकी थीं। न ही उसके चल सकने में असमर्थता छिपी रह सकी। शकुन्तला ने समीप जाकर पूछा, ''यह क्या हो गया है आपको?''

''अब तो अंतिम घड़ियाँ हैं। मैं तुम दोनों से क्षमा माँगने चला आया हूँ। आशा तो है कि विवाह तक जीवित रहूँगा।''

शकुन्तला की आँखों में आँसू भर आए। वह उनको छिपाने के लिए अन्य लोगों का प्रबन्ध करने के बहाने वहाँ से टल गई। जब सब लोग ताँगों में चढ़-चढ़कर चले गए, तो वह स्ट्रेचर उठाने वालों के साथ-साथ पैदल ही चल पड़ी। ताँगे में झटके लगने का भय था।

सूसन ने सुन्दरलाल की हालत खराब देख, उसको अपने कमरे में ले जाकर लिटा दिया। सेठ ने जब उनको उसकी बीमारी का हाल बताया, तो दोनों भौंचक्की रह गईं। यह तो निश्चय-सा ही था कि वे विधवा होने जा रही हैं।

सेठ करोड़ीमल अपने साथ एक डॉक्टर लाया था। उसको सुन्दरलाल की सेवा-सुश्रूषा में लगा दिया गया। डॉक्टर से कहा गया कि विवाह तक उसके जीवन को लम्बा करने का पूरा यत्न करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललिता का विवाह हो गया। फकीरचन्द को बहुत-कुछ दिया गया। शकुन्तला का अनुमान था कि वह उससे बहुत ही अधिक होगा। जब ललिता की विदाई हो गई तो सब लोग खेमों में पहुँच, बम्बई जाने की तैयारी करने लगे। सेठ करोड़ीमल और पन्नादेवी सुन्दरलाल से मिलने आए। सूसन और शकुन्तला पहले ही वहाँ उपस्थित थीं। डॉक्टर के विचारानुसार वह दम तोड़ रहा था।

सुन्दरलाल ने सेठजी को कहा, ''ललिता के विवाह की बधाई देता हूँ। मुझे शोक है कि मैं उसको कुछ भेंट नहीं दे सका।''

''सूसन और शकुन्तला ने उसको बहुत-कुछ दिया है और वह सब तुम्हारा ही है।''

''मैं चल रहा हूँ।''

''साथ ही?''

''हाँ, पर अब स्ट्रेचर की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मुझको यही दुःख हो रहा है कि मैंने सूसन का जीवन खराब किया है। सूसन डीयर क्षमा...'' वह आगे कह नहीं सका, उसके गले में कुछ अटक गया था।

वह थूकने लगा तो उसको रक्त का वमन हो गया और देखते-ही-देखते पाँच मिनट के भीतर वह ठंडा हो गया।

●●

Central Library
167919
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167919

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 084.9143 GUR-D आगत संख्या 167919

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षा: एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

लेखक की कुछ अन्य रचनाएं

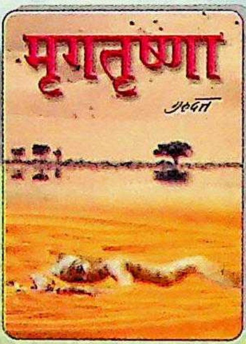

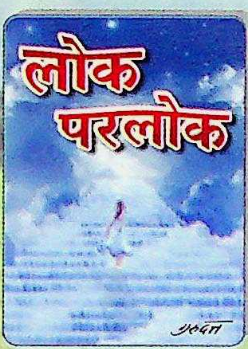

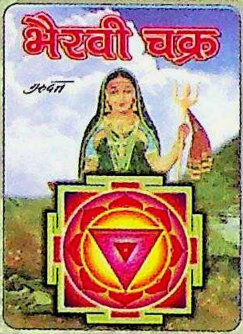

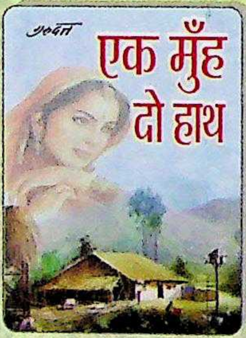

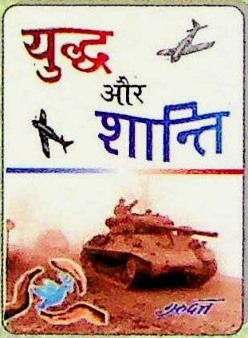

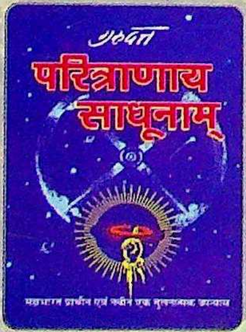

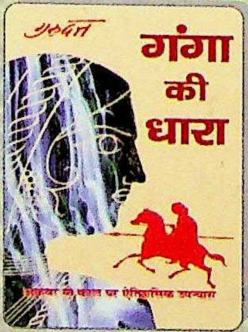

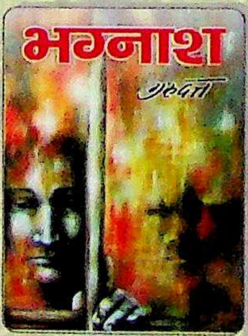

हिन्दी साहित्य सदन
www.hindisahityasadan.com
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110 005. फोन : 23553624, 23551344
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar